Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

देवी महात्म्य

मातेश्वरी श्री दुर्गाजी परमेश्वर की उन प्रधान शक्तियों में से एक हैं जिनको आवश्यकतानुसार समय-समय पर उन्होंने प्रगट किया है, जैसे—

एकैव शक्तिः परमेश्वरस्य, भिन्नाचतुर्धा व्यवहार काले।
पुरुषेषु विष्णुः भोगे भवानी समरे च दुर्गा प्रलये च काली॥

उसी परमेश्वर की दुर्गा शक्ति की उत्पत्ति तथा उसके चरित्रों का वर्णन मार्कण्डेय पुराणान्तर्गत देवी माहात्म्य में है। वह देवी माहात्म्य ७०० श्लोकों में वर्णित है। अतः वह माहात्म्य 'दुर्गा सप्तशती' के नाम से लोक में विख्यात है। उसी माँ दुर्गा शक्ति की उपासना भारतीय चिरकाल से करते चले आते हुए शक्तिशाली बने हुए थे। इसीलिए माँ के चरित्र में वर्णित है कि:—

या देवी सर्व भूतेषु शक्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः॥

जब तक माँ अपने उपासकों में शक्ति रूप होकर स्थित थी तब तक किसी की सामर्थ्य नहीं थी जो सामने आ सके और जो कोई आया भी तो उसने वह मुँह की खाई कि छटी का दूध याद आगया।

दुर्गा सप्तशती

श्री वेदव्यास रचित मार्कण्डेय पुराणान्तर्गत दुर्गा सप्तशती विविध पुरुषार्थ साधिका, कर्मोपासना ज्ञानोत्तम सिद्धान्त प्रतिपादिका, वेद वेदांग वेदान्त तत्व प्रकाशिका, सकल भक्ताभीष्ट वरप्रदा, अभयदा एवं अशरण शरणदा है। इसमें जिस विशद, विमल चरित्र का वर्णन है, उसका संक्षेप में वर्णन, हम अपने पाठकों की जानकारी के लिए, यहाँ करते हैं। वास्तव में अस्त्र-शस्त्र धारिणी श्री भगवती के जिस युद्ध का वर्णन वेद में समास रूप से है, उसी को श्री वेदव्यासजी ने अपने ज्ञान-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

चक्षु द्वारा देखकर, मार्कण्डेयपुराण में विशद रूप से लिखा है। वह कथा तीन चरित्रों में वर्णित है और उसकी संक्षिप्त कथा इस प्रकार है:—

प्रथम चरित्र

दूसरे मनु के राज्याधिकार में 'सुरथ' नाम का चैत्रवंशोद्भव राजा राज्य करता था। शत्रुओं तथा दुष्ट मन्त्रियों के कारण उसका राज्य, कोष आदि सब कुछ उसके हाथ से निकल गया। राजा हतश्री होकर जंगल में चला गया और वहाँ 'मेधा' नामक ऋषि के आश्रम में पहुँचा। वहाँ पहुँचने पर भी राजा 'सुरथ' मोहवश प्रजा, पुर, शूर, हाथी, धन कोष और दासों की अर्थात् अल्प नाशवान पदार्थों की चिन्ता करके दुखी हुआ। राजा सुरथ की वही दशा हुई जो भगवद्भक्ति विहीन पुरुषों की हुआ करता है।

इसी 'मेधा' ऋषि के आश्रम में 'समाधि' नाम के वैश्य से राजा 'सुरथ' की भेंट हुई। यद्यपि यह वैश्य अपने धन लोलुप स्त्री पुत्रों द्वारा घर से निकाल दिया गया था तब भी उनके दुर्व्यवहार को भूल कर उनके वियोग में दुखी था।

इस प्रकार ये दोनों दुखी जीव 'मेधा' ऋषि की सेवा में उपस्थित हुए। शिष्टाचार पूर्वक अभिवादन कर के ये दोनों ऋषि के पास बैठ गए। राजा ने ऋषि से कहा—जिस विषय में हम दोनों को दोष दीखता है, उसकी ओर भी ममतावश हमारा मन जाता है। मुनिवर, यह क्या बात है कि ज्ञानी (बुद्धिमान) पुरुषों को भी मोह होता है।

महर्षि उनको मोह का कारण बतलाते हुए कहने लगे-इसमें कुछ आश्चर्य नहीं करना चाहिये कि ज्ञानियों को भी मोह होता है, क्योंकि महामाया भगवती अर्थात् भगवान् विष्णु की योग निद्रा (तमोगुण प्रधान शक्ति) ज्ञानी (बुद्धिमान्) पुरुषों के चित्त को भी बलपूर्वक खींच

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कर मोहयुक्त कर देती है, वही भक्तों को वर प्रदान करती है और 'परमा' अर्थात् ब्रह्मज्ञान स्वरूपा है।

राजा सुरथ ने भगवती की ऐसी महिमा सुनकर, मेधा ऋषि से 'हे द्विज ! हे ब्रह्मविदांवर ! (ब्रह्मज्ञानियों में श्रेष्ठ) के सम्बोधन से तीन प्रश्न किये:—

(१) वह महामाया देवी कौन है ? (२) वह कैसे उत्पन्न हुई ? और (३) उसकी कर्म तथा प्रभाव क्या है ? मुनि ने उत्तर दिया:—

"नित्यैव सा जगन्मूर्तिस्तया सर्वं मिदं ततम् ॥"

अर्थात् वह मूर्ति नित्या है, और उसी से यह सब व्याप्त है। तब भी उसकी उत्पत्ति देवताओं की कार्य्यसिद्धि के अर्थ कही जाती है।

प्रथम चरित्र की संक्षिप्त कथा

जब प्रलय के पश्चात् भगवान् विष्णु शेषशय्या पर योग निद्रा में निमग्न हुए, तब उनके कानों के मैल से मधु और कैटभ नाम के दो असुर उत्पन्न होकर हरि-नाभि-कमल-स्थित ब्रह्माजी को ग्रसने चले। तब ब्रह्माजी भगवान् की योगनिद्रा की षट्तुरीया शक्ति के रूप में सुन्दर सरस स्तुति (रात्रिसूक्त) परम प्रेम पूर्वक करने लगे और उसमें उन्होंने ये तीन प्रार्थनाएँ कीं—(१) भगवान् विष्णु को जगा दीजिये। (२) उन्हें असुर द्वय के संहारार्थ उद्यत कीजिये। और (३) असुरों को विमोहित करके भगवान् द्वारा उनका नाश कराइये। श्री भगवती ने स्तुति से प्रसन्न होकर ब्रह्माजी को दर्शन दिया। उस (योग निद्रा) से मुक्त होकर श्रीभगवान् उठे और असुरों को ब्रह्माजी को ग्रसने के लिए उद्यत देख उनसे युद्ध करने लगे। तदुपरान्त दोनों असुर योगनिद्रा से मोहित होगए और उन्होंने श्रीभगवान् से वर माँगने को कहा। अन्त में उसी वरदान के अनुसार वे न्भगवा के हाथों मारे गये।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

इस कथा से श्री ब्रह्माजी ने यह उपदेश दिया कि जो भगवती की उपासना करते एवं कर्तृत्व के अभिमान तथा सुकृत-दुष्कृत रूपी कर्मफल को त्याग कर अपने विहित कर्म में प्रवृत्त रहते हैं उनका जीवन शान्तिपूर्वक निर्विघ्न रूप से व्यतीत होता है। यही ब्राह्मी स्थिति है, जिसे पाकर मनुष्य मोह-ग्रस्त नहीं होता। महर्षि मेधा; सुरथ राजा तथा समाधि नाम वैश्य दोनों जिज्ञासुओं के निराकरणार्थ कर्म के उच्चतम सिद्धान्त का निरूपण करके उपासना तथा ज्ञानयोग के तत्व को भगवती के अन्यान्य प्रभावों द्वारा वर्णन करने लगे।

मध्यम चरित्र

मध्यम चरित्र की कथा का सारांश इस चरित्र में ऋषि ने राजा सुरथ तथा समाधि नाम वैश्य के प्रति मोहजनितसकामोपासना द्वारा अर्जित फलोपभोग के निराकरण के लिए निष्कामोपासना का उपदेश किया है। चरित्र की संक्षिप्त कथा इस प्रकार है--

प्राचीन काल में महिष नामक एक अति बलवान असुर उत्पन्न हुआ। वह अपनी शक्ति से इन्द्र, सूर्य, चन्द्र, यम, वरुण, अग्नि वायु तथा अन्य सुरों को हटाकर स्वयं इन्द्र बन गया और उसने समस्त देवताओं को स्वर्ग से निकाल बाहर किया। अपने स्वर्ग सुख भोगैश्वर्य से वंचित होकर दुखी देवगण साधारण मनुष्यों की भाँति मर्त्यलोक में भटकने लगे। अन्त में व्याकुल होकर वे लोग ब्रह्माजी के साथ भगवान विष्णु और शिवजी के निकट गये और उनके शरणागत होकर उन्होंने अपनी कष्ट कथा कही।

देव-वर्ग की करुण कहानी सुन लेने पर हरि-हर के मुख से महत्तेज प्रगट हुआ। इसके पश्चात् ब्रह्मा, इन्द्र, सूर्य, चन्द्र, यमादि देवताओं के शरीर से भी तेज निकला। यह सब एक होकर, तीनों

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

लोकों को प्रकाशित करने वाली एक दिव्य देवी के रूप में परिणत हो गया।

विधि-हरि-हर त्रिदेवों तथा अन्य प्रमुख सुरों ने अपने-अपने अस्त्र-शस्त्रों में से दिव्य प्रकाशमयी उस तेजोमूर्ति को अमोघ अस्त्र-शस्त्र दिये। तब श्रीभगवती अट्टहास करने लगी। उनके उस शब्द से समस्त लोक कम्पायमान होगये।

तब असुर राज महिष "आः यह क्या है ?" ऐसा कहता हुआ सम्पूर्ण असुरों को साथ लेकर उस शब्द की ओर दौड़ा। वहाँ पहुँच कर उसने उस महाशक्ति देवी को देखा, जिसकी कान्ति त्रैलोक्य में फैली है और जो अपनी सहस्र भुजाओं से दिशाओं के चारों तरफ फैलकर स्थित है। इसके पश्चात् असुर देवी से युद्ध करने लगे।

श्रीभगवती और उनके वाहन सिंह ने कई करोड़ असुर सैन्य का विनाश किया। तत्पश्चात् श्रीभगवती के द्वारा चिक्षुर, चामर, उदग्र, कराल, वाष्कल, ताम्र, अन्धक, अतिलोम, उग्रास्य, उग्रवीर्य, महाहनु, बिडालास्य, महासुर, दुर्धर और दुर्मुख—चौदह असुर सेनापति मारे गये। अन्त में महिषासुर, भैंसा, हाथी, मनुष्यादि के रूप धारण करके श्रीभगवती से युद्ध करने लगा और मारा गया।

अपने समग्र शत्रुओं के मारे जाने पर देवगण ने प्रसन्न होकर आद्या शक्ति की स्तुति की और वर माँगा—

जब-जब हम लोग विपद्ग्रस्त हों तब-तब आप हमें आपदाओं से विमुक्त करें और जो मनुष्य आपके इस पवित्र चरित्र को प्रेमपूर्वक पढ़ें या सुनें वे सम्पूर्ण सुख और ऐश्वर्यों से सम्पन्न हों।"

श्रीभगवती देवताओं को ईप्सित वरदान देकर अन्तर्धान हो गईं। इस चरित्र में मेधा-ऋषि ने इन्द्रादि देवगण के राज्याधिकार का अपहरण, आत्म-शक्ति द्वारा उनके दुःखों का निराकरण तथा पुनः

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

स्वराज्य प्राप्ति का वर्णन करके सुरथ राजा के शोक मोह के निवारण के लिए उसी आत्म-शक्ति की भक्ति का उपदेश किया है।

उत्तर चरित्र

मध्यम चरित्र में मोह का कारण कर्मफलासक्त देवों द्वारा दिलाया जाकर, उत्तम चरित्र में परानिष्ठा ज्ञान के बाधक आत्म मोहन अहंकारादि के निराकरण का वर्णन किया गया है।

उत्तम चरित्र की कथा का सारांश

पूर्वकाल में शुम्भ और निशुम्भ दो महा पराक्रमी असुर हुए। उन्होंने इन्द्र का त्रैलोक्य का राज्य और यज्ञों का भाग छीन लिया। वे दोनों ही सूर्य, चन्द्र, कुबेर, यम, वरुण, पवन और अग्नि के अधिकारों के अधिपति बन बैठे और उन्होंने सुर समाज को स्वर्गलोक से निकाल दिया। तब बड़े ही दुखी होकर सशोक देवतागण मृत्युलोक में आए। देवताओं को बार-बार का यह क्लेश अत्यन्त असहनीय हुआ और वे सदा के लिए इससे छुटकारा पाने का उपाय सोचने लगे। अन्त में वे हिमाद्रि पर्वत पर जाकर दयार्द्र हृदया श्री दुर्गा देवी के चरण कमलों की दिव्य ज्ञानमयी बन्दना करने लगे। श्रीभगवती पार्वती अपने वचनानुसार हिमालय पर्वत पर गङ्गाजी के किनारे प्रकट हुईं और उन्होंने सुरों से पूछा—'तुम किसकी स्तुति कर रहे हो? उनके इतना कहते ही उनके शरीर से शिवा निकलकर कहने लगीं—"ये शुम्भ-निशुम्भ से लड़ाई में हारे हुए स्थानच्युत किए हुए सब देवगण इकट्ठे होकर मेरी स्तुति कर रहे हैं।"

पार्वती के शरीर से अम्बिका उत्पन्न हुई, एतदर्थ ये कौशिकी नाम से प्रसिद्ध है और भगवती पार्वती के शरीर से शिवा के निकल जाने पर उनका वर्ण काला हो गया। अतएव ये कालिका के नाम

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मे विख्यात होकर हिमालय पर रहने लगीं, तत्पश्चात् परम सुन्दरी अम्बिका को शुम्भ निशुम्भ के भृत्य चण्ड मुण्ड ने देखा। और उन दोनों ने शुम्भ से जाकर उसके अतुल सौन्दर्य्य की प्रशंसा की। उसने अपने भृत्यों की बात सुन कर सुग्रीव नामक असुर को अम्बिका को ले आने के लिए भेजा।

सुग्रीव ने भगवती के पास पहुँच कर शुम्भ निशुम्भ के ऐश्वर्य्य की बड़ी प्रशंसा की, और उससे परिग्रह की बात कही।

भगवती ने गम्भीर भाव से मुस्कराते हुए कहा—तूने जो कुछ कहा सब सत्य है; परन्तु इस विषय में मैंने जो प्रतिज्ञा करली है उसे मैं झूठी कैसे करूँ। जो मैंने अज्ञानता से प्रतिज्ञा की है उसे सुन. वह प्रतिज्ञा यह है—

जो लड़ाई में मुझको जीत लेगा, जो मेरे दर्प (घमण्ड) को दूर कर देगा, जो सारे संसार में मेरे प्रतिबल (बराबर ताकत वाला) होगा, वही मेरा स्वामी होगा। इसलिए महाअसुर शुम्भ निशुम्भ यहाँ आवें और मुझको जीत कर जल्दी ही विवाह करलें।

दूत ने कहा—हे देवि ! तुझको घमण्ड हो गया है। मेरे सामने ऐसी बात मत कह। तीनों लोक में ऐसा कौन मनुष्य है जो शुम्भ निशुम्भ के सामने ठहर सके। सुन, लड़ाई में राक्षसों के सामने सब देवता भी नहीं ठहर पाते, तब हे देवि ! तू अकेली स्त्री कैसे ठहर सकती है। इसलिये तू मेरे कहने से शुम्भ निशुम्भ के पास चली चल; नहीं तो बाल पकड़ कर घिसटती हुई अपनी प्रतिष्ठा बिगड़वा कर कहीं मत जाना। देवी ने कहा—जो तूने कहा सब सच है शुम्भ ऐसा ही बलवान है और निशुम्भ भी बहुत वीर्य्यवान् है, पर क्या करूँ, मन्द बुद्धि होने के कारण मैंने ऐसी प्रतिज्ञा करते समय पहिले नहीं विचारा, अब लाचार हूँ। अब तू जाकर मैंने जो कुछ कहा है वह राक्षसाधिप शुम्भ को समझा कर कहना वह (शुम्भ) जो उचित समझे सो करे।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सुग्रीव ने शुम्भ निशुम्भ के निकट जाकर भगवती अम्बिका की प्रतिज्ञा विस्तार पूर्वक कह सुनाई। असुरेन्द्रों ने कुपित होकर धूम्रलोचन नामक असुर को भेजा। भगवती ने धूम्रलोचन को हुङ्कार मात्र से भस्म कर दिया और भगवती ने तथा उसके वाहन सिंह ने असुर-सेना का विनाश कर दिया। तदुपरान्त असुरराज शुम्भ ने चण्ड-मुण्ड दोनों को बहुत बड़ी सेना के साथ भगवती कौशिकी को पकड़ लाने अथवा मार डालने के लिए भेजा। वे सब हिमालय पर जाकर भगवती को पकड़ने का प्रयत्न करने लगे। तब अम्बिका ने शत्रुओं पर अत्यन्त कोप किया और उसके ललाट से एक भयानक काली देवी प्रकट हुई। उसने असुर सेना का विनाश किया, और चण्ड-मुण्ड का शिर काट कर अम्बिका के पास ले गई; इसी कारण उसका नाम चामुण्डा हुआ।

चण्ड-मुण्ड के बध का समाचार सुनकर असुरेशों ने एक बड़ी सेना, जिसमें सात सेना-नायकों का विभाग था, भगवती से युद्ध करने के लिए भेजी। उस समय ब्रह्मा, विष्णु, शिव, इन्द्र, महावराह, नृसिंह स्वामिकार्तिक इन सात प्रमुख देवों की शक्तियाँ असुरसेना से युद्ध करने के लिए आयीं। फिर अम्बिका के शरीर से अत्यन्त भयङ्कर शक्ति निकली; और भगवती ने शुम्भ-निशुम्भ के पास शिवजी को दूत रूप में भेज कर उनसे कहलाया—'यदि तुम अपना कल्याण चाहते हो तो देवताओं को उनके छीने हुए लोक एवं यज्ञाधिकार लौटा दो और पाताल में जाकर रहो।'

बल से उन्मत्त शुम्भ-निशुम्भ ने देवी की बात नहीं मानी और युद्धस्थल में सेना सहित उपस्थित हो गये। भगवती ने देवशक्तियों की सहायता से असुर सैन्य का संहार करना प्रारम्भ किया और असुर युगल का रक्तबीज नामक एक सेनाध्यक्ष भगवती देवशक्तियों से युद्ध करने लगा। उसके शरीर से शोणित के जितने बिन्दु पृथ्वी पर गिरते थे, उतने ही रक्तबीज उत्पन्न हो जाते थे। अन्त में देवी ने चामुण्डा को आज्ञा दी कि वह अपने मुख का विस्तार करके रक्तबीज

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

के शरीर के रक्त को अपने मुख में ले और उससे उत्पन्न असुरों को भक्षण करे। चामुण्डा ने ऐसा ही किया और भगवती ने उस असुर का शिर काट डाला। तत्पश्चात् निशुम्भ भगवती से युद्ध करने लगा और मारा गया। तब शुम्भ ने क्रोधित होकर अम्बिका से कहा—'तू दूसरों के बल का सहारा लेकर अभिमान करती है।"

श्रीभगवती ने उत्तर दिया—'संसार में "मैं" एक ही हूँ; ये समस्त विभूतियाँ मेरी ही रूपान्तरमात्र हैं। ये मुझ से ही प्रगट हुई हैं और मुझ में ही विलुप्त हो जायँगी।'

इसके पश्चात् नव शक्तियाँ, जो देवी के शरीर से निकली थीं, उसी में प्रविष्ट हो गईं और शुम्भ भी देवी के युद्ध-कौशल से मारा गया। देवगण ने हर्षित होकर ३४ श्लोकों में अम्बिका की स्तुति की। अन्त में देवी प्रसन्न होकर बोली—'संसार का उपकार करने वाला वर माँगो।'

देवताओं ने कहा—'जब जब हमारे शत्रु उत्पन्न हों तब तब उनका नाश हो।'

भगवती आद्याशक्ति ने 'एवमस्तु' कहा, और भविष्य में सात बार भक्त रक्षणार्थ अवतार लेने की कथा तथा दुर्गा चरित्र के पाठ का महात्म्य वर्णन करके अन्तर्धान होगई।

भगवती चण्डिका अपनी स्तुति का माहात्म्य और उसका फल तथा पूजा विधि कह कर अन्तर्द्धान हो गई। और मेधा ऋषि ने उसी महाशक्ति को धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष फलप्रदा कहकर यह उपदेश किया—'हे महाराज! आप उसी परमेश्वरी की शरण में जाइये। वह अपनी आराधना से प्रसन्न होकर मनुष्यों को भोग, स्वर्ग एवं मोक्ष प्रदान करती है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

राजा सुरथ और समाधि नाम वैश्य श्रीभगवती के चरित्र तथा महर्षि 'मेधा' के उपदेश को सुनकर उन महादेवी भगवती को प्रसन्न करने के लिए नदी तट पर महती तपश्चर्य्या एवं उपासना करने लगे। जगद्धात्री चण्डिका ने प्रसन्न होकर उन दोनों को दर्शन दिये और कहा—"मैं तुम दोनों से प्रसन्न हूँ, तुम जो कुछ माँगोगे वही मैं तुम्हें दूँगी। आद्या देवी की बात सुन राजा ने यह विचार किया—'मेरे लिए अपना क्षात्रकर्म करना ही उचित है। अपने आश्रित जनों को कष्ट में छोड़ कर अकेले वन में चले आना क्षात्रधर्म के विरुद्ध है। यदि मैं ब्रह्माजी के समान अपने कर्तृत्व के अहंकार को भुलाकर उसी महामाया की आराधना करता तो वह महाशक्ति जैसे उसने मधुकैटभ से ब्रह्मा की रक्षा की थी, वैसे हमारी भी करती। राजधर्म का आदर्श कर्मयोग के उत्तम सिद्धान्त पर स्थित है। अतएव मुझे चाहिये कि जिस प्रकार इन्द्रादि देवताओं ने अधिकार से निकला हुआ स्वराज्य भगवती की कृपा से प्राप्त किया था, उसी प्रकार अपने गए हुए राज्य को पुनः प्राप्त करूँ और न्याय नीति से अपनी समस्त प्रजा को सुखी बनाऊँ।'

इस विचार के पश्चात् राजा ने आगामी जन्म में अखण्ड राज्य और इस जन्म में निज बल से शत्रु शक्ति का नाश करके अपना गया हुआ राज्य प्राप्त करने का वर मांगा।

महादेवी भगवती ने उसे कुछ ही दिनों में शत्रुओं पर विजयी होकर स्वराज्य प्राप्त करने तथा दूसरे जन्म में भूमण्डल पर सूर्यसुत सावर्णिः नामक मनु होने का वर प्रदान किया।

जब श्री भगवती ने वैश्यवर्य्य समाधि से वर मांगने को कहा तो उसने विचार किया--यह संसार दुःखमय है। देवताओं का कई बार अधिकारच्युत होना, और सुरथ राजा का राज्यभ्रष्ट होना यह प्रमाणित करता है कि सांसारिक भोगैश्वर्य अनित्य है। जिस तुच्छ सांसारिक सुख में मेरा मोह था। वह वास्तव में दुःखरूप ही

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

था। जब त्रैलोक्य पर्वत का सुख अनित्य है; तब मुझे इससे विरक्त होकर इस परमेश्वरी की अनुकम्पा से ऐसा ज्ञान प्राप्त करना चाहिये जिससे नित्य अक्षय सुख स्वरूप में प्रविष्ट हो सकूं। निवृत्ति मार्ग पथिक ज्ञाननिष्ठ समाधि नामक वैश्य ने अपने नाम जाति को सार्थक करने वाले उपर्युक्त विचार से अनन्तर श्रीदेवीजी से मोह विनाशक ज्ञान मांगा। उसे मनोवाञ्छित वर की संसिद्ध के लिए ज्ञान देकर श्री दुर्गा शीघ्र अन्तर्द्धान होगई।

जिस प्रकार भगवती की आराधना से राजा सुरथ और समाधि नाम वैश्य का मनोरथ सिद्ध हुआ उसी प्रकार हर एक व्यक्ति का, जो भगवती का अनन्य भक्त होकर उपासना करे, मनोरथ सिद्ध हो सकता है। देवी की उपासना करने का मार्ग सुगम नहीं है और उसको हर एक जानता भी नहीं है। इसीलिए मनोरथ की सिद्धि आज कल होना कठिन ही नहीं असम्भव सा होगया है। जब सिद्धि नहीं होती तब लोगों का विश्वास उस पर न रहना एक स्वाभाविक बात है। यद्यपि माँ भगवती इतनी दयार्द्र हृदया है कि केवल १०० बार दुर्गा सप्तशती का पाठ मात्र करने से मनोरथ सिद्ध कर देती हैं, पर होना चाहिये एकाग्रचित्त होकर, तन्मय होकर विधि विधान से। यदि ऐसा नहीं होता तो हमारे मनोरथों की सिद्धि नहीं हो सकती। आजकल जो प्रायः सिद्धि नहीं होती उसका मुख्य कारण विधि विधान का न जानना ही है। आजकल जो पाठ होते है वे प्रायः अधम रीति से किये जाते हैं जिनका फल नहीं मिलता। क्योंकि शास्त्र में लिखा है कि:—

गीती शीघ्री, शिरः कम्पी तथा लिखित वाचकः।
अनर्थज्ञोल्प कण्ठश्च षडैते पाठकाऽधमाः ॥

पाठ इस प्रकार करना।

माधुर्यमक्षरव्यक्तिः पदच्छेदस्तु सुस्वरः। धैर्यलय समर्थं च षड़ेते पाठका गुणाः।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अर्थात्—गाकर पाठ करना, जल्दी-जल्दी पाठ करना, पाठ करते में हिलते जाना, जैसा शुद्धाशुद्ध लिखा है वैसा ही पाठ करना अर्थ के जाने विना पाठ करना और अल्पकण्ठ अर्थात् आधा पढ़ना आधा न पढ़ना—इतने प्रकार के ६ पाठ अधम पाठ कहलाते हैं अधम पाठ करने से ही सिद्धि नहीं होती।

भगवती की आराधना विधि विधान से करने का ज्ञान प्राप्त कराने के लिए ही यह संग्रह 'दुर्गार्चन स्तुति' के नाम से किया गया है। इसमें कलश स्थापन से लेकर पूर्णाहुति तक का विधान सप्रमाण दिया है। इसमें जितना भी परिश्रम किया गया है वह उसी समय सार्थक समझा जा सकेगा जब कि जिज्ञासु जन इससे लाभ उठावेंगे। इस विषय के ज्ञाता विद्वानों से निवेदन है कि उनके विचार में यदि इसमें कोई त्रुटि हो अथवा और कोई दोष हो तो वे कृपा कर उसकी सूचना संग्रहकर्त्ताजी को देदें जिससे उचित जँचने पर अगले संस्करण में संशोधन कर दिया जा सके। मुझे विश्वास है कि भक्तजन इससे लाभ उठाकर मेरे प्रयत्न को सफल करेंगे।

सर्वेतु सुखिनः सन्तु सर्वे सन्तु निरामयः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःख भाग्भवेत्॥

विशेष द्रष्टव्य।

सम्पूर्ण उपासकों को विदित हो कि मन्त्र की उपासना के लिये पूर्व में गुरु मुख द्वारा मन्त्रोपदेश ग्रहण करने के उपरान्त मन्त्र के १० संस्कार तदनन्तर सेतु, महासेतु, मुखशोधन, कुल्लुका, शापोद्धार, संजीवन, उत्कीलन, निर्मलीकरण, आदि विषयों को गुरु द्वारा जानकर प्रयोग करने से जल्दी सिद्धी होती है इसलिये इन सब भेदों को गुरु द्वारा जाने।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

रुद्रकल्पे वरणद्रव्याणि ॥

भोजनं भोजनाधारश्छत्रोपानत्कमण्डलुः ।
आसनं वसनं मुद्राकर्णभूषोपवीतकम् ॥
एतद्दशविधं देयं पदं वरण सिद्धये ।
पदाभावेत्रयं देयं पात्र वस्त्रांगुलीयकम् ॥ १ ॥

अथ प्रेतवाधाशान्तिकरण विधिः ॥

आचम्य प्राणानायम्य ॥ अद्येत्यादि देशे च मम शास्त्रोक्त पुण्य फलावाप्तये अमुक तीर्थे मध्यान्हे स्नान विधिना सन्ध्या स्नानमहं करिष्ये ॥ सन्ध्या तर्पण नित्य कर्म विधाय ॥ अत्राद्य देशे च मम प्रेत चतुर्दशि महा पर्वणि निमित्तं तिलपिंड विष्णु तर्पण करणे अधिकारार्थं महा विष्णु प्रीत्यर्थं विष्णोः षोड़शोपचारैः न्यासपूर्वकं विष्णु पूजन महं-करिष्ये ॥ अनया यथाकृतपूजया महापापहारि विष्णु प्रसादात् परिपूर्णतामस्तु ॥ अस्तु ॥ चरणामृतं ॥ आचमनं ॥ प्राणायामः ॥ ओं अपवित्रः पवित्रो वा० ॥ दी० पांसुरे ॥ अपसव्यम् ॥ दक्षिणाभिमुखः ॥ सप्त व्याधा० ॥ तिरश्चिरिन्द्रोनुष्टुप् ॥ एतोन्विन्द्रं ॥ अवत्सार सोमपवमानो गायत्रि० ॥ नरत्स० ॥ अपसव्यं ॥ तिलपिंड दान उपहाराणां पवित्रतास्तु ॥ मधुव्वाता० ॥ मधु ३ ॥ अत्राद्य कार्तिक मासे शुक्लपक्षेचतुर्दश्यां तिथौ —प्रेत चतुर्दशिनिमित्तं अनिर्देष्टाप्रेतक संभव सकल पीड़ोपशान्त्यर्थं सर्वेषां पूर्वजानां उद्धरणार्थं तिलपिंड दान विष्णुतर्पणमहं करिष्ये ॥ (पातितवाम जानुः) ओं अपहतारेखाकरणं ॥ उल्मुकधारणम् ॥ अवनेजन मंत्रः ॥ पितृवंशे ॥ इमं तोयं तिलैर्मिश्रं अवनेजन संज्ञकम् ॥ ददामितेभ्यः प्रेतेभ्यो ये पीडां कुरुते मम ॥ पिंड दानम् ॥ इमं तिल मयं पिंडं मधु सर्पि समन्वितं ॥ ददामितेभ्यो प्रेतेभ्यः ये पीड़ां कुरुते मम ॥ ये केचित्तामसाः प्रेताभूमौ तिष्ठन्ति सर्वदा ॥ तिल पिंड प्रदानेन गतिं गच्छन्ति ते

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ध्रुवम् ॥ तमो रूपाश्च ये केचिद्वर्तते पितरा मम ॥ पिनाक पिंड दानेन ते तृप्यन्तु क्षुधान्विता ॥ अवनेजन मंत्रः ॥ पितृवंशे ॥ इमं तोयं तिलैर्मिश्रं अवनेजन संज्ञकम् ॥ ददामि तेभ्यः प्रेतेभ्यो ये पीड़ां कुरुते मम ॥ ओं नमोवः पितरो० दत्त ॥ वस्त्रादि पूजा कुर्यात् ॥ तत्र मन्त्रः ॥ इमं तोयं तिलैर्मिश्रं अवनेजन संज्ञकं ॥ ददामि तेभ्यः प्रेतेभ्यो ये पीड़ां कुरुते मम ॥ पिंडार्चनं नैवेद्यं ते स्वधा ॥ अनेन प्रेतचतुर्दशि निमित्तं श्राद्धं तिलपिंडदानं परिपूर्णतामस्तु ॥ अस्तु ॥ गयायां पिंड दानेन या० सर्ग्रे० ॥ सव्यम् ॥ आचमनं ॥ ईशान विष्णु० ॥ दीर्घायुर्भव० ॥ सुप्रोक्षितादि० अस्तु ॥ पिंडाग्रे विष्णु तर्पणम् ॥ विष्णुसूक्तेन ॥ सहस्रशीर्षा ३२ अ. १६ मंत्र य० सं ऋचाप्रति ॥ अतोदेवा० ॥ विष्णोर्नुकं वीर्या० ॥ अतसीपुष्प संकाशं-३मन्त्र ॥ प्रार्थना मंत्रः दिव्यन्तरिक्षं भूमिस्थ सात्विकाराजसास्तथा ॥ प्रेताश्च तामसाज्ञेया शान्तिर्गच्छन्तु तर्पिता ॥ अस्य प्रेतचतुर्दशिनिमित्तं तिलपिंड दानं विष्णु तर्पण सिद्धयर्थं यथा संपन्नान्नेन तृप्ति पर्यन्तेन भोजनेन ब्राह्मणमेकमहं तर्पयिष्ये ॥ तेन अनिर्देष्टा प्रेतक प्रीयन्तां नमम ॥ अस्य तिलपिंडदान विष्णु तर्पण प्रतिष्ठा सिद्धयर्द्धं रजत दक्षिणा निष्क्रय एतं मनसि संकल्पितं द्रव्यं कस्मैचिद्ब्राह्मणाय तुभ्यमहं संप्रददे ॥ सव्यं ॥ दक्षिणाः पान्तु ॥ तिलकं कुर्यात् ॥ आशिषः प्रतिगृह्यतां ॥ अपसव्यम् ॥ क्षमध्वं क्षमस्व ॥ स्वर्गंगच्छ ॥ संचरणमभ्युक्ष ॥ सव्यम् ॥ स्वस्ति भवन्तो ब्रुवन्तु ॥ ओं स्वस्ति० अस्य प्रेत चतुर्दशि निमित्तं तिल पिंड दानं विष्णु तर्पण करणे यन्न्यूनं यदतिरिक्तं तत्सर्वं श्री विष्णोः प्रसादात्सर्वं परिपूर्णमस्तु ॥ शास्त्रोक्त पुण्यफलावाप्तिरस्तु ॥ यस्य स्मृत्याच० ॥ अपसव्यं ॥ धारा ॥ आमावाजस्य प्रसवोजगम्यादे मेद्यो वा पृथिवी विश्वरूपे आमागन्ता पितरा मातराचा मा सोमो अमृतत्वेन गम्यात् ॥ सव्यं ॥ आचमनं ॥ आयुः प्रजां० ॥ तिल पिण्ड दान विधिः ॥

अथ अक्षयनवम्यां अश्वत्थ मूले तर्पणम् ॥ उपहार ॥ कलश ३ ॥ कच्चा दूध, तिलाक्षत, सर्वोषधी, ॥ मुंद्रापन ॥ पूगीफल ॥ आर्द्रदर्भा ॥ सालिग्राम ॥ चन्दन, तुलशी, धूप, दीप, नैवेद्य, पान, तन्दुलादि गृहीत्वा

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

उदकाश्रये अश्वत्थसनिधौ गच्छेत् ॥ स्नानं, नित्य कर्म प्राणायामान्तं-कृत्वा, आचम्य ॥ अद्येत्यादि देशे च कार्तिकमासे शुक्लपक्षे नवम्यां तिथौ वासरे अक्षयनवमी युगादि पर्वणि निमित्तं अश्वत्थमूले श्री महा-विष्णोः षोडशोपचारैः पूजनपूर्वकं योगेश्वरादि देवतानां पितृणां माता महानां ॥ एकोद्दिष्टानां अन्येषां श्लोकोक्तानां च प्रीत्यर्थं शास्त्रोक्त फल अवात्यर्थं अश्वत्थमूले तर्पण महं करिष्ये ॥ पूर्वे षोडशोभिरुपचारैः श्री महाविष्णोः पूजनं कुर्यात् ॥ अश्वत्थ पूजन मन्त्रः ॥ ॐ अश्वत्थेवोनिषदनं पर्णेवोवसतिष्कृता ॥ गोभाजऽइत्किलासथयत्स न-वथ पूरुषम् ॥ कलशं पूरयित्वा ॥ तिलाक्षतं दुग्धं सर्वोषधी मुंद्रापन प्रक्षि-पेत् ॥ अथपूजा मन्त्रः ॥ ॐ योगेश्वराय पादौतु योगगम्याय जानुनि ॥ महायोगायऊरुभ्यां गुह्ये पुष्टि प्रदाय च ॥ कट्यां च योगयज्ञाय नाभौ-नारायणाय च ॥ योगात्मने च उदरे विश्वनाथाय वै हृदि ॥२॥ कण्ठे विश्व-सृजे पूज्यो बाह्वोः विश्वेश्वराय च ॥ आस्ये च विश्वपुरुषाय नाड्यां नागे-श्वराय च ॥३॥ कर्णौ कृष्णायदेवाय जगन्नाथाय चाक्षिणी ॥ भ्रुवौ भगवते पूज्यो ललाटे पीतवाससे ॥४॥ एवं सम्पूज्यदेवेशं शिरो वै यज्ञमूर्तये ॥ ज्ञाना-त्मने तथा बाहू स्वनात्मा चायुधानि च ॥५॥ नमस्ते देव देवेश योगेश्वर जगत्पते ॥ नमस्ते सृष्टिनाथाय जगदादि नमो नमः ॥६॥ योगेश्वराय सर्वाङ्गं एष देवार्चनं विधिः ॥ सम्प्राप्य वारुणं योगं कार्तिके नवमीसिते ॥७॥ अप्रतिगृह्यतां देव सर्व कामप्रदोभव ॥८॥ प्रथम कलशः ॥ योगेश्व-राय देवाय योगगम्यायवेधसे ॥ परमात्मस्वरूपायक्षेत्रज्ञाय हराय च ॥१॥ शिवायशिवरूपाय ब्रह्मणे विश्वरूपिणे ॥ जलशायि जगज्योतिः केशवः श्रीयतामिति ॥२॥ अपसव्येन द्वितीयकलशमादाय ॥ पिता पिता महश्चैव तथैवप्रपितामहः ॥ मातापितामहीचैव तथै व प्रपिता मही ॥३॥ मातामह-स्ततःपश्चात्प्रमाता महएवच ॥४॥वृद्धःप्रमातामहपश्चात्तृप्तिर्गच्छंतिशाश्वती अन्येयेममहस्तेन एको दिष्टाश्चगोत्रिणः ॥ तेभ्योनीरं मयादत्तं तृप्तायान्तु परांगतिम् ॥५॥ तृतीय कलशमादाय ॥ वृक्षयोनिगतायेच वियोनि चापि

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

येगताः ॥ मुद्गलत्वगताये च ये च प्रेतत्वमागताः ॥६॥ भूतयोनिगता ये च कृमियोनिगताश्चये ॥ ते सर्वे तृप्तिमायान्तु गच्छन्तु गति मुत्तमाम् ॥७॥ ममहस्तेन नीरेण वोधिभूलेतुसिंचता ॥ आप्लुवन्ति मे पितरो परांतृप्ति जगत्पते ॥८॥ सव्यं ॥ आचमनम् ॥ पुरुषसूक्तेन तर्पणम् ॥ सुप्रोक्षादि करणम् ॥ अस्य अक्षयनवमी युगादि तर्पण प्रतिसिद्धयर्थं यथासम्पन्नान्नेनतृप्ति पर्यन्तेन भोजनेन ब्राह्मणमेकमहं तर्पयिष्ये ॥ दक्षिणा संकल्पः ॥ अनेन अश्वत्थरूपी महाविष्णोः पूजनेन योगेश्वरादि श्लोकोक्ता देवतामातरो पितरो माता महाएकोद्दिष्टा अन्याश्च श्लोकाक्ताः प्रीयन्ताम् ॥ अस्य अक्षय नवमी तर्पण कृतस्यविधेः यन्न्यूनं यदतिरिक्तं तत्सर्वं श्री महाविष्णोः प्रसादात् ब्राह्मणानां प्रसादाच्च सर्वं पूर्णतामस्तु शास्त्रोक्त पुण्यफलावाप्तिरस्तु ॥ इति तर्पण विधिः ॥

अथ वालक संस्कारः ॥

मधुलाजाभ्यां नाड़ी छेदनात्प्राक् स्वर्णशलाकया यज्ञदारुशिखया श्वेतदूर्वया वा वालकस्य जिह्वामोष्ठं वा दक्षिण पाणिना त्रिवारं सम्मार्ज्य तत्र पिता पंक्त्याकारेण मूलमन्त्रं विलिख्य देवीं पूजयेत् ॥ तदुक्तं मत्स्य सूक्ते । अथवा मधुलाजाभ्यां जिह्वायां वालकस्य च ॥ नाड़ी छेदाद्यथापूर्वं लिखेत्स्वर्ण शलाकया ॥ मूलमन्त्रं लिखेन्मन्त्री यस्योष्ठे श्वेतदूर्वया ॥ वाक्योच्चारणतो वालो वाग्मी द्रुतकविर्भवेत् ॥ महोग्रताराकल्पे ॥ नैमित्तिक संस्कारानन्तरमेवमन्त्रलिखनं कार्यम् ॥ तदुक्तं महोग्रे ॥ जन्म संस्कारकं नाम पुत्रे जाते प्रशस्यते ॥ जिह्वायान्तु लिखेन्मन्त्रं यज्ञदारु कुशेन वा ॥ वारत्रयन्तु संमार्ज्य दक्षिणेनैव पाणिना ॥ मूलमुच्चार्य प्रत्येकं पंक्तिं कुर्यात् सुशोभनम् ॥ आदौ संस्कार कर्तव्यस्तदन्ते विलिखेन्मनुम् ॥ गन्ध चन्दन पुष्पैश्च पूजयेत्तारिणीं शिवाम् ॥ उत्तराभिमुखो

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

भूत्वा स्थापयेत्पीठ मुत्तमम् ॥ पूजयेत्तारिणीं देवीं नाना भक्ष्यैः सुशोभनैः ॥ कविर्वाग्मी भवेत्पुत्रः सत्यवादी जितेन्द्रियः ॥ अत्र तारिणी पदमुप लक्षणम् देवी मात्रमेव बोद्धव्यम् ॥ बृहत्श्री क्रमादि तन्त्रे बालक संस्कार दर्शनात् ॥ तदुक्तं तत्रैव ॥ बालकस्यतु जिह्वायां त्रिदिनाभ्यन्तरे लिखेत् ॥ मधुना श्वेतदूर्वाभिर्लिखेत्स्वर्णशलाकया ॥ आम्बं वाग्भवकूटञ्चलिखेद्वै जननान्तरम् ॥ आम्बमित भैरव्या वाग्भव कूटमित्यर्थः ॥ अथैकादशाहे देवतां सम्पूज्य मन्त्रं लिखेदिति कश्चित् ॥ अथ यदिपिता दूरेस्था भवति पितृव्योमातुलो वा मन्त्रं लिखेदिति ॥ तदुक्तं महोग्रे ॥ पितुर्भ्राता लिखे-न्मन्त्रं मातुर्भ्राताथवा पुनः ॥ पितुरेव लिखेन्मन्त्रं नान्य एव कदाचन ॥ मातुः क्रोड़े तु संस्थाप्य दर्भानास्तीर्ययत्नतः ॥ शान्ति कुर्याद्बालकस्य ब्राह्मणैः सह साधकः ॥

शान्ति मन्त्रः ॥

इदं पुत्रं कामयतः कामजानामिहैवहि ॥ देवेभ्यः पुष्णाति सर्व मिदं मज्जननं शिवशान्तिस्तारायै केशवेभ्यस्तारायै रुद्रेभ्य उमायै शिवाय शिव यशसे ॥ इत्यनेन कुशोदकेन शांतिं कुर्यात् ॥

तन्त्रोक्त नवग्रह मन्त्राः ॥

ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः ॥ स्रां स्रीं स्रौं सः चन्द्रमसे नमः ॥ क्रां क्रीं क्रौं सः कुजाय नमः ॥ त्रां त्रीं त्रौं सः बुधाय नमः ॥ ज्रां ज्रीं ज्रौं सः बृहस्पतये नमः श्रां श्रीं श्रौं सः शुक्रायनमः ॥ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः शनिश्चराय नमः ॥ द्रां द्रीं द्रौं सः राहवे नमः ॥ प्रां प्रीं प्रौं सः केतवे नमः ॥ उों रांराधिकायै नमः ॥ नन्यासं योषितानां च न ध्यानं न च पूजनम् ॥ केवलं जप मात्रेण मन्त्राः सिद्ध्यन्ति योषिताम् ॥ वैछिन्नत्वादिक दोषा ये पंचाशन्मन्त्र संस्थिता ॥ तैर्दोषैः सकला व्याप्ता मनवः सप्त कोटयः ॥ अतस्तद्दोष शान्त्यर्थं संस्कार दशकं चरेत् ॥ मन्त्र महो दधौ ॥२० ॥६७॥

जननं दीपनं चैव बोधनं ताड़नं तथा ॥ अथाभिषेको विमली करणं जीवनं तथा ॥ तर्पणं गोपनं चैव आप्यायनमिति स्मृतम् ॥ संस्कार

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

दशकं प्रोक्तं मनूनां दोष नाशनम् ॥ यह १० संस्कार मन्त्र सहित चौथे संस्करण की संध्या में सविस्तर छपे हैं। मंगवाइये।

अथ वाराहीमायातन्त्रयोश्चण्डी पाठ फलम् ॥

॥ श्री शिवउवाच ॥

चण्डी पाठ फलं देवि शृणुष्वगदतोमम । एकावृत्यादि पाठानां यथावत् कथयामिते ॥ सङ्कल्प्य पूर्वं सम्पूज्य न्यस्याङ्गे च मनुं सकृत् ॥ पाठाद्बलिप्रदानाद्धि सिद्धि माप्नोति मानवः ॥ उपसर्गोपशान्त्यर्थं त्रिरावृत्तं पठेन्नरः । ग्रहोपशान्तौ कर्तव्यं पञ्चावृत्तंवरानने ॥ महाभये समुत्पन्ने ॥ सप्तावृत्ति मुदीरयेत् । नवावृत्ताद्भवे च्छान्तिर्वाजपेयफलं लभेत् ॥ राजवश्याय भूत्यैच रुद्रावृत्ति मुदीरितम् । अर्कावृत्तेर्काम्यसिद्धिर्वैरिहानिश्च जायते ॥ मन्वावृत्तादि पूर्वस्य तथा स्त्री वश्यतांनयेत् । सौख्यं पञ्चादशावृत्ताच्छ्रियमाप्नोतिमानवः ॥ कलावृत्तात्पुत्र पौत्र धनधान्यागमंविदुः । राज्ञां भीति विमोक्षाय वैरस्योच्चाटनायच ॥ कुर्यात्सप्तदशावृत्तं तथाष्टादशकं प्रिये । महात्रणविमोक्षाय विंशावृत्तं पठेन्नरः ॥ पञ्च विंशावर्तनाच्च भवेद्बन्धविमोक्षणम् । संकटे समनुप्राप्ते दुश्चिकित्सामये तथा ॥ जातिध्वंसे कुलोच्छेदे आयुषोनाश आगते ॥ वैरिवृद्धौ व्याधि वृद्धौ पुरनाशे प्रजाक्षये ॥ तथैव त्रिविधोत्पाते महोत्पातोपपातके ॥ कुर्याद् यत्नाच्छतावृत्तंततः संपद्यते शुभम् ॥ नश्यन्ति विपदस्तस्य अन्तेयाति पराङ्गतिम् ॥ श्रियोवृद्धिः शतावृत्ताद्राज्य वृद्धिस्तथापरे ॥ मनसाचिन्तितंदेवि सिद्धये-दष्टोत्तराच्छतात् ॥ शताश्वमेधयज्ञानां फलमाप्नोति सुव्रते ॥ सहस्रावर्तमाल्लक्ष्मीरावृणोति स्वयं स्थिरा ॥ भुक्त्वा मनोरथं कामान्नरो मोक्षमवाप्नुयात् ॥ यथाश्वमेधः क्रतुराड् देवानां च यथा हरिः ॥ स्तवानामपि सर्वेषां तथासप्तशतीस्तवः ॥ अथवा बहुनोक्तेन किमेतेन वरानने॥ चण्ड्याः शतावृत्तिपाठात्सर्वाः सिद्ध्यन्तिसिद्धयः ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अग्नेःसम्मुख करण प्रकारप्रश्न ॥

आहुती देवमुत्पाद्यपश्चात्कर्मसमाचरेत् ॥ अधोवक्त्रोर्ध्वपादश्च प्राङ्मुखोहव्य वाहन ॥ तिष्ठत्येवंप्रभावेन आहुती कस्य दीयते ॥ अस्योत्तरः ॥ सपवित्राम्बु हस्तेन वन्हेःकुर्यात्प्रदक्षिणम् ॥ हव्यवाट्सलिलं दृष्ट्वाविभीतो संमुखो भवेत् ॥

शस्त्रास्त्रमन्त्रैर्होतव्यं पायसं घृतसंयुतम् ॥

दुर्गाभक्तितरङ्गिण्यादि गौडग्रन्थेष्वपि नवम्यां होम उक्तः ॥ डामरतन्त्रे विशेषः ॥ पायसंसर्पिषायुक्तं तिलैः शुक्लैर्विमिश्रितम् । होमयेद्विधिवद्भक्त्या दशांशेन नृपोत्तम ॥ रुद्राध्यायेयथा होमोमन्त्रेणैके न साध्यते॥ तथा स्तोत्रं जपेद्धोमं श्लोकेनैकेन साधयेत् ॥ यद्वासप्तशती जाप्ये होमे मन्त्री नवाक्षरः ॥ कृत्य रत्नावल्यां देवीपुराणे च ॥ पूजयेत्तिल होमैश्च दधिक्षीर घृतादिभिः ॥ मन्त्रश्च जयन्तीत्यादि ॥ मार्कण्डेयपुराणगत सप्तशतीस्तवेन प्रतिश्लोकंच स्वाहान्तेनतिलपायसेन होमं कुर्वन्ति ॥ प्रतिश्लोकंच जुहुयात्पायसं तिलसर्पिषा" इति रहस्य ग्रन्थ वचनात् ॥ पुरश्चरणकार्येतु विल्वपत्रयुतै स्तिलैः ॥ इति वचनाद्विल्वपत्र युतैस्तिलैर्होम इति स्मार्तः॥ रुद्रयामलेपि "प्रधान द्रव्य मुद्दिष्टं" पायसान्नंतिलास्तथा ॥ किंशुकैः सर्षपैः पूगैर्लाजादूर्वाङ्कुरैस्तथा ॥ यवैर्वाश्रीफलैर्दिव्यैर्नानाविधफलैस्तथा । रक्त-चन्दन खंडैश्चगुग्गुलैश्चमनोहरैः॥ प्रतिश्लोकंच जुहुयात् सर्व द्रव्याणि च क्रमात्॥ पायसान्नेन जुहुयात्पूजिते हेमरेतसि ॥ म० म-१८-१४७

आयुःक्षयंयवाधिक्यंयवसाम्यंधनक्षयः सर्वकामसमृद्ध्यर्थंतिलाधिक्यं सदैवहि ॥ हवनेआहुतिदान प्रकारः ॥ सकारे सूतकंविद्याद्धकारे मृत्युमादिशेत् ॥ आहुतिस्तत्र दातव्यःयत्र आकार दृश्यते॥ अग्निर्ज्वालने विधिः ॥ वस्त्रवाते भवेद्व्याधिः शूर्पेण च धनक्षयः ॥ पाणिना जायतेमृत्युः कर्मसिद्धर्मुखेन तु ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तन्त्रान्तरोक्त होम द्रव्यम् ॥

यवस्यभागाश्चत्वारो तदर्द्धं तण्डुलं स्मृतम् ॥ तदर्द्धं च तिलंज्ञेयं-शर्कराचतदर्द्धिका ॥ होमद्रव्यमितिख्यातं घृतंशर्करया समम् ॥

पाठान्तरम् ॥

तिलार्द्धन्तुयवाप्रोक्तायवार्द्धं तण्डुलास्तथा ॥ तण्डुलैस्त्रिगुणं चाज्यं यथेष्टं शर्करामता ॥ तिलाधिक्येभवेल्लक्ष्मी यवाधिक्ये दरिद्रता ॥ घृताधिक्येभवेन्मुक्तिः सर्वसिद्धिस्तुशर्करा ॥

सृष्टिक्रम पाठ व्यवस्था ॥

"मार्कण्डेय उवाच सावर्णिः सूर्यतनयः" इत्यारभ्य "सूर्याज्जन्म-समासाद्य सावर्णिर्भवितामनुः" इत्यन्तं शान्ति कर्मणिज्ञेयम् ॥

स्थितिक्रमस्तु ॥

"ऋषिरुवाच ॥ पुराशुम्भनिशुम्भाभ्यामसुराभ्यांशची पतेः" ॥ इत्यादि शक्रादिस्तव समाप्ति पर्यन्तं स्थितिकर्मणि ज्ञेयम् ॥

संहारक्रमस्तु ॥

"एवं देव्यावरं लब्ध्वा सुरथः क्षत्रियर्षभः ॥
सूर्याज्जन्म समासाद्य सावर्णिर्भवितामनुः ॥"

इति श्लोकादारभ्य संहार क्रमेण "सवर्णिः सूर्यतनयः" मार्कण्डेय उवाच इत्यन्तं पठनीयः ॥ एवं संहारक्रमः स्त्री पुत्र क्षेत्रापहार कर्मणि बोध्यम् ॥

वाराही तन्त्रे ॥

आदि मारभ्य प्रजपेत्सृष्टि क्रम इहोच्यते ॥ पुरा शुम्भ निशुम्भा-भ्यामारभ्य प्रजपेत्सुधीः ॥ आद्याच्छक्रादिपर्यन्तं स्थिति क्रम उदाहृतः ।, शेषमारभ्य आद्यन्तं संहारोऽयं क्रमो भवेत् ॥, स्थिति पाठः सर्वकामे मुक्ति कामे च संहृतिः ॥, स्त्री कामे पुत्र कामे च सृष्टि क्रम उदाहृतः ॥, शतमादौ शतञ्चान्तेजपेन्मन्त्रं नवाक्षरम् ।, चण्डी सप्तशती मध्ये संपुटो-यमुदाहृतः ॥, सकामे संपुटोजाप्यः निष्कामे संपुटंविना ॥ १० ॥, अथात्र

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

होम द्रव्याणां प्रमाणमभिधीयते ॥, कर्ष मात्रं घृतं होमे शुक्तिमात्रं पयः स्मृतम् ॥, उक्तानि पञ्च गव्यानि तत्समानि मनीषिणः ॥, तत्समंमधु-दुग्धान्नमक्षमात्रमुदाहृतम् ।, दधि प्रसृतिमात्रं स्याल्लाजाः स्युर्मुष्टि संमिताः ॥ पृथुकास्तत्प्रमाणाः स्युः शक्तवोपितथोदिताः ॥ गुड़ं पलार्द्ध मानं स्याच्छर्करापि तथा मता ॥, ग्रासार्द्धं चरु मानं स्यादिक्षुः पर्वावधिर्मता ॥, एकैकं पत्र पुष्पाणि तथाऽपूपानि कल्पयेत् ॥ कदली फल नारंग फलान्येकैकशो विदुः ॥, मातुलिंगं चतुः खण्डं पनसं दशधा कृतम् ॥, अष्टधा-नारिकेलानि खण्डेतानि विदुर्बुधाः ॥, त्रिधाकृटं फलं विल्वं कपित्थं खण्डितं त्रिधा ॥, उर्वारुकफलं होमे चोदितंखण्डितं त्रिधा ॥, फलान्य-न्यानि खण्डानि समिधः स्युर्दशांगुलाः ॥, दूर्वात्रयंसमुद्दिष्टं गुडूची चतु-रंगुलाः ॥, व्रीहयोमुष्टि मात्रास्युर्मुद्ग माष यवा अपि ॥, तण्डुलास्युर्त-दर्द्धांशाः कोद्रवामुष्टि संमितः ॥, गोधूम रक्तकमला विहिता मुष्टि मानतः ॥ तिलाश्चुलुक मात्रा स्युः सर्षपास्तत्प्रमाणकाः ॥ शुक्तिप्रमाणं लवणं मरी-चान्यकविंशतिः ॥, पुरुर्बदर मानःस्याद्रामठं तत्समं स्मृतम् ॥, चन्दनागुरु कस्तूरी कर्पूर कुंकुमानि च ॥, तिन्तडीवीज मानानि समुद्दिष्टानिदेशिकः ॥ वैश्वानरं स्थितंध्यायेत्समिद्धोमेषु देशिकः ॥, शयानमाज्यहोमेषु निषण्णं-शेषवस्तुषु ॥

अग्नेरास्यादीनां लक्षणम् ॥

सधूमोग्निः शिरोज्ञेयं निर्धूमश्चक्षुरेवहि ॥, ज्वलत् कृष्णो भवे-त्कर्णः काष्ठमग्रे मनस्तथा ॥ प्रज्वलोग्निस्तथाजिह्वा एतदेवाग्नि लक्षणम् ॥, आस्यान्तर्जहुयादग्ने विपश्चित्सर्व कर्मसु ॥ कर्णे होमे भवेद्व्याधिर्नेत्रे-ऽन्धत्वमुदीरितम् ॥ नासिकायांमनः पीडा मस्तके धन संक्षयः ॥, स्वर्ण सिन्दूर बालार्क कुंकुमक्षौद्रसन्निभः ॥ सुवर्णरेतसोवर्णः शोभनः परि-कीर्तितः ॥ भेरीवादित्र हस्तीन्द्र ध्वनिर्वह्नेः शुभावहः ॥, नाग चम्पक पुन्नाग पाटला यूथिका निभः ॥ पद्मेन्दी वर कल्हार सर्पिर्गुग्गुल स-न्निभः ॥ पावकस्य शुभोगन्ध इत्युक्तं तन्त्रवेदिभिः ॥ प्रदक्षिणास्त्यक्त-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कम्पाश्छत्राभः शिखिनः शिखाः ॥ शुभदायजमानस्य राज्यस्यापि विशेषतः ॥ कुन्देन्दु धवलोधूमोवन्हेः प्रोक्तः शुभावहः ॥, कृष्णः कृष्णगतेर्वर्णोः यजमानं विनाशयेत् ॥ खरस्वर समोवन्हे र्ध्वनिः सर्वविनाश कृत ॥, पूतिगन्धो हुतभुजो होतुर्दुःखप्रदो भवेत् ॥ छिन्नावर्ता शिखा कुर्यान्मृत्युं धनपरिक्षयम् ॥ शुक पक्षनिभो धूमः पारावतसमप्रभः ॥ हानिं तुरग जातीनां गवां च कुरुते चिरात् ॥ एवं विधेषु दोषेषु प्रायश्चित्तायदेशिकः ॥ मूलेनाज्येन जुहुयात्पञ्चविंशतिमाहुतीः ॥ १६६ ॥ शारदायां ५ पटले होमोपयुक्त कुण्डादि नियम ज्ञानार्णवे ॥

अथ होमोप युक्तानि कुण्डानि तेषां पृथक्त्व न्यायेन क्रत्वर्थ—

पुरुषार्थो भय रूपतां च दर्शयति ।
यौनि कुण्डे भगा कारे वर्तले वाऽर्ध चन्द्रके ॥
नव त्रिकोण कुण्डेवा चतुर श्रेष्ठ पत्रके ॥ १ ॥
योनि कुण्डे भवेद्वाग्मी भगे चाकृष्टिरुत्तमा ॥
वर्तुलेतु भवेल्लक्ष्मी रर्द्ध चन्द्रे त्रयं भवेत् ॥ २ ॥
नवत्रिकोण कुण्डे तु खेचर त्वं प्रजायते ॥
चतुरस्त्रे भवेच्छान्तिर्लक्ष्मीः पुष्टिररोगता ॥ ३ ॥
पद्माभे सर्वसम्पत्ति रचिरादेव जायते ॥
अष्टकोणे तु सुभगे समीहित फलं भवेत् ॥

अथ संपुटितहोमे मंत्र संख्या निर्णयः ॥

मन्त्रपुटं बीजपुटं दुर्गास्तोत्रं पठेत्सदा ॥ मन्त्रबीज पुटादुर्गा कामना सिद्धिदासदा ॥१॥ होमकालेसदामंत्रंदुर्गामन्त्रं पृथक्हुनेत् ॥ कामनाबीज संयोगो दुर्गामंत्रेण सं हुनेत् ॥२॥ दुर्गास्तवन मंत्राणां संख्यासप्तशतं भवेत् ॥ कामना मंत्र संख्या च शतं चैव चतुर्दश ॥३॥ मध्येमंत्रान्सप्तशतहोमकालेतु योजयेत् ॥ पाठे मंत्रपुटं वाच्यं होमे मंत्राः पृथक् पृथक् ॥ ४॥ होम संख्या च मंत्राणां शतं वै चैकविंशतिः ॥ पाठे बीजपुटंवाच्यं

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

होमेबीजपुटं हुनेत् ॥५॥ मंत्रपुटं श्लोकार्धे लौकिक वैदिकादि मंत्रपुटं ॥ बीजपुटं ऐं ह्रीं क्लीं इत्यादि ना संपुटम्॥ बीजसंयोगः दुर्गामंत्रेण संहुनेत्॥ मंत्रसंयोगे पृथक् होमः तेषां संख्या चतुर्दश शतम् ॥ बीजमंत्र १ से ६ अक्षर पर्यन्त पुनः मंत्र संख्या ३२ अक्षर पर्यन्त इसके उपरान्त माला मंत्र होता है ॥

धनदा यक्षिणी गुप्त साधन तंत्रे ६ पटले ॥

कुवेरऋषिः पंक्तिश्छन्दः रतिप्रियादेवताभीष्ट सिद्धयेज०वि०॥ दीर्घमाया ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः षडंगं कृत्वा मानसोपचारैः पूजयेत् ध्यानम् ॥ देवीं कांचनकान्तिविमलांरक्तांशुकाच्छादितां ॥ हेमां भोजयुगाभयां कुशकरीं रत्नोल्लसत्कुण्डलीं ॥ सर्वाभीष्ट फलप्रदां त्रिनयनां नागेन्द्रहारोज्वलां ॥ वृन्दे सर्वभयापदां त्रिजगतां पापापहारीं परां ॥ स्वकीयात्मा स्वरूपां तांभावयेच्चित्स्वरूपिणीं ॥ एकंध्यात्वा महेशानि मानसैः पूजनं चरेत् ॥ पाद्यं अर्घ्यं आचमनं स्नानं गंधं पुष्पं धूपं दीपं नैवेद्यादिभिः पूजनं कुर्यात् ॥ ॐ रति प्रियायै नमः ॥ अनेन मंत्रेण पुनः मूलमंत्रेण आवाहनं चरेत् ॥

धं ह्रीं श्रीं रतिप्रियै स्वाहा॥ अंगदेवताः लक्ष्मीं, पद्म, श्रियं, हरिप्रियां, भवां, कमलां, अरजां, चंचलां, लोलां, प्रणवादिनमोन्तेन पूजयेत् ॥ जपं कृत्वादेवी वामहस्ते गुह्याति गुह्य० समर्पयेत् ॥ किंचिन्नैवेद्यंस्वीकृत्ययथासुखं विहरेत् ॥

धनदा स्तोत्रं ॥

अथातः सं प्रवक्ष्यामि धनदास्तोत्रमुत्तमं ॥ यथोक्तं सर्वतन्त्रेषु इदानीं तत्प्रकाशितं ॥ नमः सर्व स्वरूपेण नमः कल्याणदायिके ॥ महा सम्पत्प्रदेदेविधनदायैनमोस्तु ते ॥१॥ महाभोगप्रदेदेविमहाकामप्रपूरिते ॥ सुख मोक्षप्रदेदेविधनदायैनमोस्तु ते ॥२॥ ब्रह्मरूपेसदानन्देसदानन्दस्वरूपिणि ॥ द्रुतसिद्धिप्रदेदेवि धनदायै नमोस्तु ते ॥३॥ उद्यत्सूर्यप्रकाशामे उद्यदादित्य मण्डले ॥ शिवतत्वप्रदेदेविधनदायै नमोस्तु ते ॥४॥ विष्णु रूपे विश्वमते विश्वपालकारिणि ॥ महासत्वगुणाक्रान्ते धनदायै नमोस्तु ते ॥ शिवरूपे

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

शिवानन्दे कारणानन्दविग्रहे ॥ विश्वसंहाररूपे च धनदायै नमोस्तु ते ॥६
पञ्च तत्व स्वरूपे च पंचाचार सदारते ॥ साधकाभीष्टदे देवि धनदायै
नमोस्तु ते ॥ ७॥ इदं स्तोत्रं मया प्रोक्तं साधकाभीष्टदायकम् ॥ यः
पठेत्पाठयेद्वापि सलभेत्सकलं फलम् ॥८॥ त्रिसंध्यंयः पठेन्नित्यं स्तोत्रमे-
तत्समाहितः ॥ ससिद्धिंलभतेशीघ्रं नात्रकार्याविचारणा ॥९॥ इदं रहस्यं
परमं स्तोत्रं परम दुर्लभं ॥ गोपनीयं प्रयत्नेन स्वयोनिरिव पार्वति ॥१०॥
अप्रकाश्यमिदंदेवि गोपनीय परात्परं ॥ प्रपठेन्नात्रसंदेहो धनवान्भवति
चिरात् ॥ इति धनदास्तोत्रं ॥

धनदा कवचम् ॥

श्री देव्युवाच ॥ धनदाया महाविद्या कथितान प्रकाशिता ॥ इदानीं
श्रोतुमिच्छामि कवचं पूर्व सूचितं ॥१॥ श्री शिव उवाच ॥ शृणुदेवि
प्रवक्ष्यामि कवचं मंत्र विग्रहं ॥ सारात्सारतरं देवि कवचंमन्मुखोदितम् ॥
२॥ धनदा कवचस्यास्य कुबेर ऋषिरीरितः ॥ पङ्क्तिश्छन्दोदेवता च धनदा
सिद्धिदा सदा ॥३॥ धर्म्मार्थ काममोक्षेषु विनियोगः प्रकीर्तितः ॥ धं बीजं
मे शिरः पातु ह्रीं बीजं मे ललाटकं ॥४॥ श्रीं बीजं मे मुखंपातुरकारंहृदि-
मेदवतु । तिकारं पातु जठरं प्रिकारं पृष्ठतोऽवतु ॥५॥ ये कारंजंघयोर्य-
ग्मेस्त्वाकारं पादयोर्युगे ॥ शीर्षादि पाद पर्यन्तंहाकारं सर्वतोऽवतु ॥६॥
इत्येतत्कथितं कान्ते कवचं सर्व सिद्धिदं ॥ गुरु मभ्यर्च्य विधिवत्कवचं
प्रपठेद्यदि ॥७॥ शतवर्ष सहस्राणां पूजायाः फलमाप्नुयात् ॥ गुरु पूजां
विनादेवि नहि सिद्धिः प्रजापते ॥८॥ गुरुपूजापरोभूत्वा कवचं प्रपठेत्ततः ॥
सर्वसिद्धि युतोभूत्वाविचरेद्भैरवोयथा ॥९॥ प्रातःकाले पठेद्यस्तुमन्त्रजाप
पुरः सरं ॥ सोभीष्ट फलमाप्नोति सत्यं २ न संशयः ॥१०॥ पूजाकाले
पठेद्यस्तु देवींध्यात्वा हृदाम्बुजे ॥ षण्मासाभ्यन्तरेसिद्धिनात्रकार्याविचा-
रणा ॥११॥ सायंकाले पठेद्यस्तु सशिवोनात्र संशयः ॥ भूर्येविलिख्य
गुटिकां स्वर्णस्थां धारयेद्यदि ॥१२॥ पुरुषो दक्षिणे वाहौयोषिद्वामभुजे
तथा ॥ सर्वसिद्धियुतो भूत्वा धनवान्पुत्रवान्भवेत् ॥ १३ ॥ इदं कवच-
मज्ञात्वायोजपेद्धनदांशुभे ॥ सशस्त्रघातमाप्नोति सोचिरान्मृत्युमाप्नुयात् ॥
कवचेनावृतोनित्यं यत्र यत्रैव गच्छति ॥ अतएव महादेवि संपूज्योनात्र
संशयः ॥१५॥ समाप्तं कवचं देविकिमन्यरच्छ्रोतुमिच्छसि ॥

इति धनदा कवचम् ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

॥ अथ दुर्गा पूजने ॥

कलश स्थापन विधिः

जेतुं यस्त्रिपुरं हरेण हरिणा व्याजाद्बलिं बध्नता ।
स्रष्टुं वादि भवोद्भवेन भुवनं शेषेण धर्तुंधराम् ॥
पार्वत्या महिषासुर प्रमथने सिद्धाधिपैः सिद्धये ।
ध्यातः पञ्चशरेण विश्व जितये पायात्स नागाननः ॥

तत्र प्रतिपदि पूर्वाह्णे पुष्पतैलादिना कृतमङ्गल स्नानः* नित्यक्रियां कृत्वा नवेंवाससी परिधाय चन्दन मृगमद कुँकुमैः सर्वाङ्गमनुलिप्य त्रिपुण्ड्रं ऊर्ध्वपुण्ड्रं वा कृत्वा ‡पूर्वाभिमुखो देवीमुखो वा समुपविश्य सोपग्रहपाणिराचम्य ॥ ॐ मूलम् आत्मतत्त्वाय नमः स्वाहा ॥ १ ॥ ॐ मूलम् विद्यातत्त्वाय नमः स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ मूलम् शिवतत्त्वाय नमः स्वाहा ॥ ३ ॥ (मूलम् चात्र दुर्गे दुर्गे रक्षिणि स्वाहेति)

---

* रुद्रयामले ॥ स्नानं मांगलिकं कृत्वा ततो देवीं प्रपूजयेत् । शुभाभिर्मृत्तिकाभिश्च पूर्वे कृत्वा तु वेदिकाम् ॥ १ ॥

‡ देवतापूजने प्राची मध्ये पूजक पूज्ययोः ॥

पूजन की सामिग्री क्या किधर रखना गन्धर्व तन्त्र से देखिये ॥

आसन उपविशे देवि ! बद्ध्वा वीरासनादिकम् ॥ उपविश्यततो-मन्त्री द्रव्याणिस्थापयेत्पुरः ॥ गन्धपुष्पाक्षदींश्च दक्षेदीपांश्च सर्वतः ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

पेज ३ रे पर छपे हुए यन्त्र
पै प्रधान कलश स्थापन करना

ईशान | पूर्व | अग्नि

वरुण कलश

नवग्रहाः

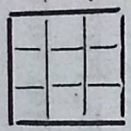

पंचोंकार

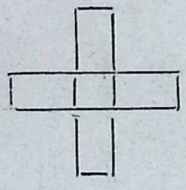

१२ गणेश

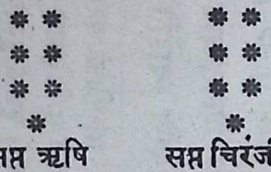

सप्त ऋषि | सप्त चिरंजीव

उत्तर | दक्षिण

षोडशमातृ का

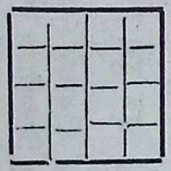

वास्तु

६४ योगिनी
५० क्षेत्रपाल

पूर्वाभिमुख

वायव्य | पश्चिम | नैऋत्य

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हाथों को धोकर प्राणायाम करे।

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा। यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः ॥ ॐ पृथ्वीति मन्त्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषिः सुतलंछन्दः कूर्मोदेवता आसनोपवेशने विनियोगः ॥ ॐ पृथ्वी त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुनाधृता। त्वं च धारय मान्देवि पवित्रंकुरुचासनम् ॥

नैवेद्यं दक्षिणे वामे पुरतो वा न पृष्ठतः ॥ घृत दीपं दक्षिणे तु तैलदीपन्तु वामतः ॥ वामतस्तु तथा धूपमग्रेवा नतु दक्षिणे ॥ निवेदयेत्पुरोभागे गन्ध पुष्पञ्च भूषणम् ॥ सर्वं स्वदक्षिणे स्थाप्यं वामेचार्घ्यं निवेशयेत् ॥ स्थापयेच्चर्घ्यचोष्यादिनैवेद्यादीनिसंनिधौ ॥ करयोः क्षालनार्थाय पृष्ठे पात्रं विनिर्दिशेत् ॥ स्वस्य शक्त्यनुरूपेण सर्वं संपाद्ययत्नतः ॥ पूजाद्रव्याणि संप्रोक्ष्य मूलमंत्रेण साधकः ॥ दर्शयेद्धेनु मुद्रां च द्रव्य शुद्धिरितीरिता ॥ नैवेद्यादिकं च यत्तु पुष्पगन्धादिकञ्च यत् ॥ सर्वमाच्छादितं कार्यं यावदावाहयेत्पराम् ॥ राक्षसाः प्रति गृह्णन्तिनिराच्छादनकंयतः ॥

(१) पूजागृहस्य ईशानदिशि पूजास्थानं कल्पयित्वा गोमयोपलिप्तायां धरायां बिन्दु-त्रिकोण-षट्कोणा-ष्टदल-षड्विंशतिदल-भूपुरयुतं यंत्रं विलिख्य वा बिन्दु त्रिकोणं वृत्तं चतुरस्रं लिखेत् ॥ तस्योपरि तीर्थमृत्तिकया शुभमृत्तिकाभिर्वेदीं रचयित्वा यवान् गोधूमान्वा वापयेत् ॥ तत्समीपे काष्ठपीठोपरि श्वेतवस्त्रं प्रसार्य गणेशादीन्स्थापयित्वा पूजयेत् ॥ पश्चात् कलशं संस्थाप्य दुर्गां पूजयित्वा स्तुवीत ॥ नवमीदिने स्थापितदेवानां उत्तर पूजनं कृत्वा विसर्जयेत् ॥

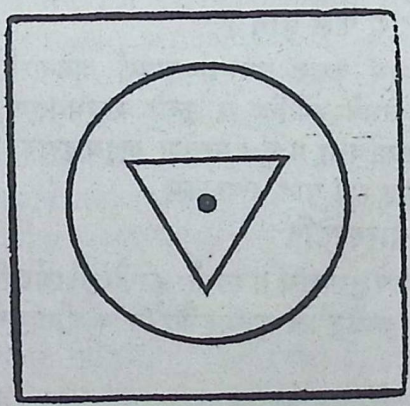

कुलाणंवे १ उल्लासे ॥ लोको मोह सुरांपीत्वा नवेत्ति हितमात्मनः ॥ संपदः—स्वप्न संकाशा यौवनं कुसुमोपमं ॥ तडिच्चंचलमायुश्च कस्य कस्मादतो धृतिः ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

यजमान के हाथ में फूल सुपारी और अक्षत लेकर स्वस्तिवाचन बोलना।

ॐ श्रीमन्महागणाधिपतये नमः॥ हरिः ॐ गणानान्त्वा गणपतिꣳ० हवामहे प्रियाणान्त्वा प्रियपतिꣳ० हवामहे निधीनान्त्वा निधिपतिꣳ० हवामहे वसोमम॥ आहमजानिगर्भधमात्वमजासि गर्भधम्॥ १॥ स्वस्तिनऽइन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्तिनः पूषाविश्ववेदाः॥ स्वस्तिनस्तार्क्ष्योऽअरिष्टनेमिःस्वस्तिनोबृहस्पतिर्दधातु॥ २॥ पयः पृथिव्यां पयऽओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयोधाः॥ पयस्वतीः प्रदिशः सन्तुमह्यम्॥ ३॥ विष्णोरराट-

---

जौ बोने से शुभाशुभ ज्ञान॥

सिद्धान्तशेखरोक्त यवांकुर परीक्षा॥

यजमानाभिवृद्ध्यर्थं अङ्कुराणिपरीक्षयेत्॥ सम्यगूर्द्ध्वं प्ररूढानि कोमलानि सितानि च॥ धूम्रवर्णान्यपूर्वाणि तथातिर्यग्गतानि च॥ श्यामलानि च कुब्जानि वर्जयेदशुभानि च॥

यवांकुर से फल ज्ञान।

अवृष्टिंकुरुते कृष्णं धूम्राभं कलहं तथा॥ अपूर्णं जननाशं च दुर्भिक्षं श्यामलांकुरं॥ तिर्यग्गतेभवेद्व्याधिः॥ कुब्जे शत्रुभयंतथा॥ अशुभेचांकुरे जाते शान्तिहोमंसमाचरेत्॥ मूल मन्त्रेण जुहुयाद्गुरुर्मूर्तिधरैः सह॥ अघोरास्त्रेण चास्त्रेण शतं वाथ सहस्रकम्॥

सारस्वतेपि

प्ररूढैरंकुरैः कर्तुर्निर्दिशेच्चशुभाशुभं॥ श्यामैः कृष्णैरंकुरैरर्थहानिस्तिर्यग्रूढैर्व्याधिरांदोलितैस्तैः॥ कुब्जैर्दुःखं दुःष्प्ररूढैर्मृतिं च रोगाभुग्नैः स्थानदेशेष्ट हानिः॥

यवांकुर रोपण नियमः

दीक्षादिवसात्प्राक् सप्तभिर्दिनैः॥ एतेन दीक्षादिनमष्टमं यथा भवति तथा कर्त्तव्यमित्युक्तं॥ विधिवदित्यनेननवभिःत्रिभिः सद्योवेत्त्युक्तं॥ तदुक्तं सिद्धान्तशेखरे॥ प्रतिष्ठायां च दीक्षायां स्थापनेचोत्सवे तथा॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मसिविष्णोः श्नपत्रेस्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोसि ॥ वैष्णव-मसि विष्णवेत्वा ॥ ४ ॥ अग्निर्देवता वातोदेवता सूर्योदेवता चन्द्रमादेवता वसवोदेवता रुद्रादेवता दित्यादेवता मरुतोदेवता विश्वेदेवा देवता बृहस्पतिर्देवतेन्द्रोदेवता वरुणोदेवता ॥ ५ ॥ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षꣳ शान्तिः पृथिवी शान्ति रापःशान्ति रोषधयः शान्तिः ॥ वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म-शान्तिः सर्वꣳ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सामाशान्तिरेधि

संप्रोक्षणे च शान्त्यर्थं विवाहेमौंजिबंधने ॥ सर्व मंगलकार्येषु कारयेदं-कुरार्पणम् ॥ प्रतिष्ठादिवसात्पूर्वं नवमे सप्तमेदिने ॥ पंचमेवातृतीयेवास-द्योवा चांकुरार्पणम् ॥ पुण्याहघोषणं कृत्वा ब्राह्मणैः सहदेशिकः ॥ मंगलांकुरस्य वपनं कुर्यात्तत्रैव चाहनि ॥ सप्तमान्नवमाद्वापि प्रागेव यज्ञ कर्म्मणि ॥ इति

तन्त्रान्तरेपि

उत्सवेषु विविधेष्वपि दीक्षास्थापनादिषु पवित्रविधौ च । मंगला-ङ्कुर विशेषणपूर्वंमंगलं भवति कर्मकृतं तत् ॥ शस्तयोगदिवसात्तु पुरस्तात्-सप्तमेहनि शुभे नवमे वा ॥ पंचमेथ सुदिवसे सुमुहूर्ते मंगलाङ्कुर विधिं विवधीतेति ॥ तत्र पूर्वेद्युरुपवासं कृत्वा स्वगृह्योक्तविधिना नान्दीश्राद्धं कृत्वा अंकुरार्पणमारभेत ॥ तदुक्तं गुरुर्विशुद्धः प्रागेव शुद्धाहात् प्रथमे-हनि ॥ संकल्प्योपोष्य कर्तव्यमंकुरारोपणंशुभम् ॥ कुर्यान्नांदी मुखं श्राद्धं पूर्वेद्युः स्वस्तिवाचनं ॥ स्वगृह्योक्तप्रकारेण तदेतद्विदधीतवै ॥ इति ॥ संहितायामपि ॥ सर्वत्राभ्युदयश्राद्धमंकुरोत्पादनंतथा ॥ आदावेव प्रकुर्वीत कर्मणोभ्युदयात्मनः ॥ इति

हवन क्रम सूत्र ॥

आदौ गणेश्वरः पूज्यः ॐकारं पंचधा ततः ॥ गणयागो गणेशस्य वास्तु योगिनि पूजनम् ॥ मातरो मातृपूजा च वृद्धिः श्राद्धमतः परम् ॥ ऋत्विजां वरणं रक्षाविधिवच्चकुशंडिका ॥ उत्पत्तिस्थापनंप्रोक्तंकलशस्त-दनन्तरम् ॥ प्रधानावाहनं पूजाग्रहादीनां च पूजनम् ॥ होमंचबलिदानं च पूजायास्तदनन्तरम् ॥ वेदपाठोग्रहां स्तुत्वाद्विजातीनां प्रतर्पणम् ॥ पूर्णा हुत्यभिषेकं च ततोयज्ञप्रदक्षिणा ॥ विसर्जनंक्रमःशान्तेर्घनश्यामेनकीर्तिता ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ ६ ॥ विश्वानिदेवसवितर्दुरितानि परासुव ॥ यद्भद्रन्तन्न-आसुव ॥ ७ ॥ एतन्तेदेवसवितर्यज्ञं प्राहुर्बृहस्पतये ब्रह्मणे ॥ तेन यज्ञमवतेन यज्ञपतिन्तेन मामव ॥ ८ ॥ मनोजूतिर्जुषता-माज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमन्तनो त्वरिष्टं यज्ञठं० समिमन्दधातु ॥ विश्वेदेवासऽइहमादयन्तामों ३ प्रतिष्ठ ॥ ९ ॥ एषवै प्रतिष्ठानाम यज्ञो यत्रैतेन यज्ञेन यजन्ते सर्वमेवप्रतिष्ठितम्भवति ॥ १० ॥ ॐ शान्तिः सुशान्तिः सर्वारिष्ट शान्तिर्भवतु ॥ ॐ सुमुखश्चैक-दन्तश्च कपिलोगजकर्णकः ॥ लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः ॥ ११ ॥ धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः॥ द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि ॥ १२ ॥ विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा ॥ संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते ॥ १३ ॥ शुक्लाम्बरधरन्देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम् ॥ प्रसन्नवदनंध्यायेत्सर्वविघ्नोपशान्तये ॥ १४ ॥ अभीप्सितार्थ-सिद्ध्यर्थं पूजितो यः सुरासुरैः ॥ सर्वविघ्नहरस्तस्मै गणाधि-पतये नमः ॥ १५ ॥ सर्वमंगलमंगल्ये शिवेसर्वार्थसाधिके ॥ शरण्येत्र्यंबके गौरि नारायणि नमोस्तु ते ॥ १६ ॥ सर्वदा सर्व-कार्येषु नास्ति तेषाममंगलम् । येषां हृदिस्थोभगवान्मंगलायतनो हरिः ॥ १७ ॥ लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजयः ॥ येषा-मिन्दीवरश्यामो हृदयस्थो जनार्दनः ॥ १८ ॥ विनायकं गुरुं भानुं ब्रह्माविष्णुमहेश्वरान् ॥ सरस्वतीं प्रणम्यादौ शान्तिकार्या-र्थसिद्धये ॥ १९ ॥ सर्वेष्वारंभकार्येषु त्रयस्त्रिभुवनेश्वराः ॥ देवादिशन्तु नः सिद्धिं ब्रह्मेशानजनार्दनाः ॥ २० ॥ वक्रतुण्ड महाकाय सूर्यकोटिसमप्रभ ॥ अविघ्नंकुरुमे देव सर्वकार्येषु सर्वदा ॥ २१ ॥ ॐ सिद्धि बुद्धि सहित श्रीमन्महागणाधिपतये नमः॥ ॐ वाणीहिरण्यगर्भाभ्यां नमः ॥ ॐ लक्ष्मीनारायणाभ्यान्नमः॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ॐ उमामहेश्वराभ्यान्नमः ॥ ॐ शचीपुरन्दराभ्यान्नमः ॥ ॐ मातापितृचरणकमलेभ्यो नमः ॥ ॐ कुलदेवताभ्यो नमः ॥ ॐ इष्टदेवताभ्यो नमः ॥ ॐ ग्रामदेवताभ्यो नमः ॥ ॐ स्थान-देवताभ्यो नमः ॥ ॐ वास्तुदेवताभ्यो नमः ॥ ॐ सर्वेभ्योदेवे-भ्यो नमः ॥ ॐ सर्वेभ्योब्राह्मणेभ्यो नमः ॥ ॐ सर्वेभ्यो तीर्थेभ्यो नमः ॥ ॐ एतत्कर्मप्रधान श्रीदुर्गादेव्यै नमः ॥ ॐ पुण्यंपुण्याहं दीर्घमायुरस्तु ॥ वामे गुं गुरुभ्यो नमः ॥ दक्षिणे भँ भद्रकाल्यै नमः ॥ उपरि गँ गणपतये नमः ॥ हृदि दुँ दुर्गायै नमः ॥ ॐ तीक्ष्णदंष्ट्र महाकाय कल्पान्तदहनोपम ॥ भैरवाय नमस्तुभ्य-मनुज्ञांदातुमर्हसि ॥

हाथ के अक्षत फूलों को गणेशजी पर चढ़ाना फिर हाथ में संकल्प के लिए फूल अक्षत दक्षिणा और सुपारी जल सहित लेकर संकल्प करना चाहिये।

ॐ स्वस्तिश्रीमन् मुकुन्दसच्चिदानन्दस्याज्ञयाप्रवर्तमानस्याद्य ब्रह्मणो द्वितीये प्रहरार्द्धे एकपंचाशत्तमेवर्षे प्रथममासे प्रथमपक्षे प्रथम दिवसे अह्नो द्वितीयेयामे तृतीयेमुहूर्ते रथन्तरादि द्वात्रिंश-त्कल्पानांमध्ये अष्टमे श्रीश्वेतवाराहकल्पे स्वायंभुवादि मन्वन्त-राणां मध्ये सप्तमे वैवस्वतमन्वन्तरे कृतत्रेताद्वापरकलिसंज्ञानां-चतुर्युगानांमध्ये वर्तमाने अष्टाविंशतितमे कलियुगे तत्प्रथमचरणे तथा पंचाशत्कोटियोजनविस्तीर्णभूमंडलान्तर्गतसप्तद्वीपमध्यव-र्तिनि जम्बूद्वीपे तत्रापि नवखंडानांमध्ये नवसहस्रयोजनविस्तीर्णे भरतखंडे तत्रापि परमपवित्रे भारतवर्षे आर्यावर्तान्तर्गत ब्रह्मावर्तै-कदेशे कुमारिकाक्षेत्रे मथुरामण्डले[१] रेणुका समीप क्षेत्रे[२] श्री गंगायमुनयोः पश्चिमेतटे श्रीनर्मदायाउत्तरेदेशेदेवब्राह्मणानांस-न्निधौश्रीमन्नृपति वीर विक्रमादित्यराज्यातीतअमुकसंख्यापरि-

(१) समीपवर्ती मंडल। (२) समीपवर्ती क्षेत्र।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मिते प्रवर्तमानसंवत्सरेप्रभवादिषष्ठिसंवत्सराणांमध्येअमुकनामसंवत्सरे अमुकायने अमुकगोले अमुकऋतौ अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकयोगे अमुककरणे अमुकराशिस्थे सूर्ये अमुकराशिस्थे चन्द्रे अमुकराशिस्थे देवगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथा यथा राशिस्थानस्थितेषु सत्सु एवंग्रहगणविशेषणविशिष्टायांशुभ पुण्यतिथौ अमुकगोत्रअमुकनामशर्म्मा, वर्म्मा, गुप्ता, दासअहं ममइहजन्मनिदुर्गाप्रीतिद्वारा सर्वपापक्षयपूर्वक दीर्घायुर्विपुलधन, पुत्रपौत्राद्यनवच्छिन्नसंततिवृद्धि, स्थिरलक्ष्मी, कीर्तिलाभ, शत्रुपराजय, सदभीष्टसिद्ध्यर्थं यथासम्पादितसामग्र्या शारद (वासन्तिक) नवरात्रिप्रतिपदिविहित कलशस्थापन दुर्गापूजा कुमारीपूजादि करिष्ये ॥ तदंगत्वेन निर्विघ्नतापरिसमाप्त्यर्थं गणपति, पंचोंकार, वास्तु, दिव्यादि ६४ योगिनी, अजरादि ५० क्षेत्रपाल, सप्तचिरंजीव, सप्तऋषि, गौर्यादिषोड़शमातृका, वरुणकलश, सूर्यादि नवग्रह, तदंगभूत अधिदेवता प्रत्यधिदेवतादि स्थापनपूजनानन्तर भित्तौदुर्गास्थापनावाहनं कलशस्थापनं तस्योपरि दुर्गापूजनं वा प्रतिपदारभ्य नवमीपर्यन्तं तथा च त्रिघट्युपरिअखंडदीपकं तिलतैलपूरितं तूलिकावर्तियुतं च करिष्ये वा ब्राह्मण द्वाराकारयिष्ये ॥

अग्निकोण में गणेश पूजन ॥

हाथ में अक्षतों को लेकर मन्त्र बोलना ॥

ॐ गणानांत्वागणपतिंहवामहे कविं कवीनामुपमश्रवस्तमम् ॥ ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पतआनः शृण्वन्नूतिभिः सीदसादनं ॥ ॐ हे हेरंब ! त्वमेह्येह्यंबिकात्र्यम्बकात्मज ॥ सिद्धिबुद्धिपतेत्र्यक्ष कोटिसूर्यसमप्रभ ॥ नागास्य नागहार त्वं गणराजचतुर्भुज ॥ भूषितः स्वायुधैर्दिव्यैः पाशांकुशपरश्वधैः ॥ आवाहयामि पूजार्थं

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

रक्षार्थं च मम क्रतोः ॥ इहागत्य गृहाण त्वं पूजां रक्ष च मे क्रतुम् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः गणेश इहागच्छ इहतिष्ठ गणपतये नमः गणपतिमावाहयामि स्थापयामि नमः ॥ पादयोः पाद्यं समर्पयामि नमः ॥ हस्तयोरर्घ्यं समर्पयामि नमः ॥ मुखे आचमनीयं समर्पयामि नमः ॥ सर्वांगे स्नानीयं समर्पयामि नमः ॥ वस्त्रोपवस्त्रार्थे अलंकारणार्थे कौसुम्भसूत्रं साक्षतञ्च समर्पयामि नमः ॥ यज्ञोपवीतं समर्पयामि नमः ॥ गंधंविलेपयामि नमः ॥ अक्षतान्समर्पयामि नमः ॥ पुष्पाणि समर्पयामि नमः ॥ दूर्वांकुराणि समर्पयामि नमः ॥ धूपमाघ्रपयामि नमः ॥ प्रत्यक्षदीपं(१) दर्शयामि नमः ॥ धूपदीपपात्रयोरक्षतान्निक्षिपेत् ॥ हस्तौप्रक्षाल्य ॥ नैवेद्यंनिवेदयामि नमः ॥ जलेनाभ्युक्षय ॥ गन्धपुष्पाभ्यामाच्छाद्य ॥ धेनुमुद्रया अमृतीकृत्य सत्यंत्वर्तेन परिषिंचामि (ऋतंत्वासत्येन परिषिंचामि इति सायं) ग्रासमुद्रां प्रदर्श्य ॐ प्राणाय स्वाहा–ॐ अपानाय स्वाहा–ॐ उदानाय स्वाहा ॐ व्यानाय स्वाहा–ॐ समानाय स्वाहा–मध्ये २ आचमनीयं समर्पयामि नमः ॥ उत्तरापोषणार्थे किंचिन्नैवेद्यं निवेदयामि नमः ॥ पुनराचमनीयं समर्पयामि नमः ॥ करोद्वर्तनार्थे गंधं समर्पयामि नमः ॥ हस्तप्रक्षालनार्थे मुखप्रक्षालनार्थे जलंसमर्पयामि नमः ॥ मुखशुद्ध्यर्थे ताम्बूलं पुङ्गीफलं एला लवंग कर्पूरयुतं समर्पयामि नमः ॥ यथाशक्ति दक्षिणाद्रव्यं समर्पयामि नमः ॥

॥ प्रार्थना ॥

ॐ भक्तार्त्तिनाशनपराय गणेश्वराय सर्वेश्वराय शुभदाय सुरेश्वराय ॥ विद्याधराय विकटाय च वामनाय, भक्तप्रसन्नवर-

(१) देवतायाः धूपपात्रं तैलदीपं वामे । घृतदीपं सितवर्तियुतं दक्षिणे, रक्तवर्तियुतं घृतदीपमपि वामे । सितवर्तियुतं तैल दीपमपिदक्षे ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

दाय नमो नमस्ते ॥१॥ विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय ॥ नागाननाय सितसर्पविभूषिताय गौरीसुताय गणनाथ ! नमो नमस्ते ॥२॥ अनया पूजया सिद्धिबुद्धिसहितमहागणपतिः सांगः सपरिवारः प्रीयताम् ॥

अथ पूर्व में पंचोंकार का पूजन ॥ अक्षत लेकर ॥

ॐ आब्रह्मन्ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामाराष्ट्रे राजन्यः शूरऽइषव्योतिव्याधी महारथो जायतान्दोग्ध्रीधेनुर्वोढानड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णुरथेष्ठाः सभेयोयुवास्य यजमानस्य वीरो जायतान्निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्योनऽओषधयः पच्यन्ताँयोगक्षेमो नः कल्पताम् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः पूर्वे ब्रह्मन् इहागच्छ इहतिष्ठ ब्रह्मणे नमः ब्रह्माणं आवाहयामि स्थापयामि नमः ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः दक्षिणे गायत्रि इहागच्छ इहतिष्ठ गायत्र्यै नमः ॥ गायत्रीमावाहयामि स्थापयामि नमः ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः पश्चिमे गोवर्द्धन इहागच्छ इहतिष्ठ गोवर्द्धनाय नमः गोवर्द्धनमावाहयामि स्थापयामि नमः ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः उत्तरे पृथिवि इहागच्छ इहतिष्ठ पृथिव्यै नमः ॥ पृथिवीमावाहयामि स्थापयामि नमः ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः मध्ये यज्ञपते इहागच्छ इहतिष्ठ यज्ञपतये नमः यज्ञपतिमावाहयामि स्थापयामि नमः ॥ इति प्रतिष्ठाप्य ॥

पूर्ववत् पाद्यादि से पूजन कराकर प्रार्थना ॥

ॐ ब्रह्मा देवी च गायत्री तथा गोवर्द्धनेश्वरः ॥ पृथ्वी यज्ञपतिश्चैतान् पंचोङ्कारान्नमाम्यहम् ॥ अनया पूजया सांगाः सपरिवाराः ब्रह्मादिपंचप्रणवाः प्रीणन्तु नमम ॥ तत्रैव गणेश समीपे—

अथ अग्निकोण में वक्रादिद्वादशगणेश का पूजन कराना चाहिये।

ॐ नमोगणेभ्योगणपतिभ्यश्चवोनमोनमोव्रातेभ्योव्रातपति-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

भ्यश्चवोनमोनमोगृत्सेभ्योगृत्सपतिभ्यश्चवोनमोनमोविरूपेभ्यो-विश्वरूपेभ्यश्चवोनमोनमः । ॐ भूर्भुवः स्वः वक्रादि-द्वादशमूर्ति गणपा इहागच्छत इहतिष्ठत ॥ वक्रादिद्वादशमूर्तिगणपेभ्यो नमः वक्रादि-द्वादश-मूर्ति-गणपान्आवाहयामि स्थापयामि नमः ॥

पाद्यादि से पूजन कराकर ॥ ॥ प्रार्थना ॥

ॐ नमो देवगणेशाय नमस्ते विघ्ननाशन ॥ नमो मूषक-मारूढ़ शुभकर्त्रे नमोनमः ॥ नमः कात्यायनीपुत्र नमः परशु-पाणये ॥ रवेरुदयतेरूप विद्याबुद्धि विचक्षण ॥ देहि मे रूप सौभाग्यं देहि मे पुत्रसम्पदः ॥ इच्छासिद्धिप्रदो देव यथोक्तभव मे सदा ॥ अनया पूजया सांगाः सपरिवाराः वक्रादि १२ गणपाः प्रीणन्तु नमम ॥

अथ नैर्ऋत्यकोण में वास्तु पूजन कराना ॥

ॐ वास्तोष्पतेप्रतिजानीह्यस्मान्स्वावेशोऽअनमीवोभवानः यत्वेमहेप्रतितन्नोयुषस्वशन्नोभवद्विपदे शंचतुष्पदे ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः वास्तुपुरुष इहागच्छ इहतिष्ठ वास्तु पुरुषाय नमः ॥ वास्तु-पुरुषमावाहयामि स्थापयामि नमः ॥

पाद्यादि से पूजन कराकर प्रार्थना ॥

नागपृष्ठसमारूढं शूलहस्तं महाबलम् ॥ पाताल नायकंदेवं वास्तुदेवं नमाम्यहम् ॥ अनयापूजया सांगः सपरिवारः वास्तुदेवः प्रीणातु नमम ॥

अथ वायव्यकोण में दिव्यादि ६४ योगिनी का पूजन कराना ॥

ॐ जातवेदसेसुनवाम सो ममरातीयतोनिदहातिवेदः सनः पर्षदति दुर्गाणिविश्वानावेवसिन्धुन्दुरितात्यग्निः ॥ ॐ भूर्भुवः स्वःदिव्यादि ६४ योगिन्य इहागच्छत इहतिष्ठत ॥ दिव्यादि ६४ योगिनीभ्यो नमः ॥ दिव्यादि ६४ योगिनीः आवाहयामि स्थापयामि नमः ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पाद्यादि से पूजन कराकर प्रार्थना ॥

ॐ जयादिसर्वायोगिन्यः दुर्गारूपाश्चताःस्मृता पूजयाबलिदानेनसन्तुष्टास्संतु मे सदा ॥ अनया पूजया सांगाःसपरिवाराः दिव्यादिचतुष्षष्ठियोगिन्यः प्रीणन्तु नमम ॥

अथ वायव्यकोण में योगिनी के समीप अजरादि ५० क्षेत्रपाल का पूजन कराना ॥

ॐ अजारेपि शंगिलास्वावित्कुरुपिशंगिलाशसआस्कन्दमारेशसत्याहिपन्थांविसर्पति ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः अजरादि पंचाशत्क्षेत्रपाइहागच्छत इहतिष्ठत अजरादिक्षेत्रपेभ्योनमः अजरादिक्षेत्रपान्आवाहयामिस्थापयामि नमः ॥

पाद्यादि से पूजन कराकर प्रार्थना ॥

ॐ क्षेत्रपालान्नमस्यामिसर्वारिष्टनिषूदनान् ॥ अस्ययागस्यसिध्यर्थं पूजयाराधितान् मया ॥ अनया पूजयासांगाःसपरिवाराः अजरादिपंचाशत्क्षेत्रपाः प्रीणन्तु नमम् ॥

उत्तर दिशा में अथ षोड़षमातृ का पूजन कराना ॥

ॐ गौरीर्मिमायसलिलानि तक्षत्येकपदी द्विपदी सा चतुष्पदी अष्टापदी नवपदी बभूवुशी सहस्राक्षरापरमेव्योमन् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः गौर्यादिषोडशमातर इहागच्छत इहतिष्ठत ॥ गौर्यादि १६ मातृभ्योनमः ॥ गौर्यादिमातृः आवाहयामिस्थापयामि नमः ॥

पाद्यादि से पूजन कराकर—प्रार्थना ॥

ॐ गौरी पद्मा शची मेधा सावित्री विजया जया ॥ देवसेना स्वधा स्वाहा मातरोलोकमातरः ॥ हृष्टिःपुष्टिस्तथा तुष्टिरात्मनः कुलदेवता ॥ गणेशेनाधिकाह्येता वृद्धौपूज्याश्चषोड़श ॥ अनयापूजया साँगाः सपरिवाराः गौर्यादि १६ मातरः प्रीणन्तु नमम ॥

वसोद्धारापू० ॥ वसोः पवित्रमसि० ॥ गंधादिभिः संपूज्य ॥ श्रीर्लक्ष्मीर्धृतिर्मेधा श्रद्धा प्रज्ञासरस्वती ॥ घृतेन पूजितास्सर्वा

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सप्तैता घृत मातरः ॥ वसोर्द्धारे महामाये चामुण्डे मुण्ड मालिनि ॥ शीघ्रं ममवरंदेहि परांगति नमोस्तुते ॥

सांकल्पिक नान्दी श्राद्धः दक्षिणोत्तर क्रमेण ॥

देशकालौ संकीर्त्य अद्यदुर्गाहवनाङ्गत्वेन सांकल्पिक विधिना ब्राह्मणयुग्म भोजन पर्याप्तान्ननिष्क्रयी भूत यथाशक्ति हिरण्ययेन नांदी श्राद्धं करिष्ये ॥ ॐ सत्य वसु संज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यंपादावनेजनं पादप्रक्षालनं वृद्धिः ॥ अमुक गोत्राः ततः अस्मन्मातृ पितामही प्रपितामह्यः नांदीमुख्यः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पादप्रक्षालनं वृद्धिः ॥ अमुक गोत्रास्मत्पितृ पितामह प्रपितामहाः नान्दी मुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पादप्रक्षालनं वृद्धिः ॥ द्वितीय गोत्रा अस्मन्मातामह प्रमातामह वृद्ध प्रमातामहाः सपत्नीकाः नांदीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यंपादावनेजनं पादप्रक्षालनं वृद्धिः ॥ अथ आसनदानम् ॥ ॐ सत्यवसु संज्ञकानां विश्वेषां देवानां नान्दीमुखानां ॐ भूर्भुवः स्वः इदमासनं सुखासनं स्वाहा नमः ॥ इति कुशत्रयं सर्वतो दक्षिण गतं पूर्वाग्रमुत्सृजेत् एवं सर्वत्र ॥ ॐ नांदी श्राद्धे क्षणौ क्रियेताम् ॥ ॐ तथाप्राप्नुतां भवन्तौ प्राप्नुवाव ॥ ॐ अमुक गोत्राणां अस्मन्मातृपितामही प्रपिता महीनां नान्दीमुखीनां ॐ भूर्भुवः स्वः इदमासनं सुखासनंस्वाहानमः ॥ ॐ नान्दी श्राद्धे क्षणौ क्रियेताम् ॥ तथा प्राप्नुतां भवन्तौ प्राप्नुवाव ॥ ॐ अमुक गोत्राणां अस्मत्पितृ पितामह प्रपितामहानां नान्दीमुखानां ॐ भूर्भुवः स्वः इदमासनं सुखासनं स्वाहा नमः ॥ ॐ नान्दी श्राद्धे क्षणौ क्रियेताम् ॥ ॐ तथा प्राप्नुतां भवन्तौ प्राप्नुवाव ॥ अमुक गोत्राणां अस्मन्मातामह प्रमातामह वृद्धप्रमातामहानां सपत्नीकानां नान्दी

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मुखानां ॐ भूर्भुवः स्वः इदमासनं सुखासनं स्वाहा नमः॥ नांदी श्राद्धे चणौ क्रियेताम् ॥ ॐ तथाप्राप्नुतां भवन्तौ प्राप्नुवाव ॥ ततो गंधादि दानम् ॥ ॐ सत्यवसु संज्ञकेभ्यो विश्वेभ्यो देवेभ्यो नांदीमुखेभ्यो ॐ भूर्भुवः स्वः इदं गंधाद्यर्चनं स्वाहा संपद्यताम् वृद्धिः ॥ अमुक गोत्राभ्योऽस्मन्मातृ पितामही प्रपितामहीभ्यो नान्दीमुखीभ्यो ॐ भूर्भुवः स्वः इदं गंधाद्यर्चनं स्वाहा संपद्यतां वृद्धिः ॥ अमुक गोत्रेभ्योऽस्मत्पितृ पितामह प्रपितामहेभ्योनांदी-मुखेभ्यो ॐ भूर्भुवः स्वः इदं गंधाद्यर्चनं स्वाहा संपद्यतां वृद्धिः ॥ द्वितीय गोत्रेभ्योऽस्मन्मातामह प्रमातामह वृद्ध प्रमातामहेभ्यः सपत्नीकेभ्यः नांदीमुखेभ्यः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं गंधाद्यर्चनं स्वाहा संपद्यताम्वृद्धिः ॥ ततो भोजन निष्क्रय द्रव्य दानम् ॥ ॐ अद्य तत्सन्मात्रादित्रयपित्रादित्रय मातामहादित्रय नांदीश्राद्ध संबंधिनः सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नांदी मुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं वः युग्मब्राह्मण भोजन पर्याप्तंदास्यमानमन्नं वा तन्निष्क्रयी भूतं किंचिद्धिरण्यं अमृतरूपेण दत्तं स्वाहा संपद्यतां वृद्धिः ॥ ॐ अद्यतत्सदमुक गोत्राः मातृ पितामही प्रपितामह्यो नांदी मुख्यः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं वो युग्म ब्राह्मण भोजन पर्याप्तं दास्यमानमन्नं वा तन्निष्क्रयी भूतं किंचिद्धिरण्यं अमृत रूपेण स्वाहा संपद्यतां वृद्धिः ॥ अमुक गोत्राः पितृ पितामह प्रपितामहाः नांदी मुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं वो युग्म ब्राह्मण भोजन पर्याप्तं दास्यमान मन्नं वा तन्निष्क्रयी भू किंचिद्धिरण्यं अमृत रूपेण स्वाहा संपद्यतां वृद्धिः॥ अमुक गोत्राः मातामह प्रमातामह वृद्ध प्रमाता-महाः सपत्नीकाः नांदी मुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं वो युग्म ब्राह्मण भोजनपर्याप्तं दास्यमान मन्नं वा तन्निष्क्रियीभूतं किंचि-द्धिरण्यं अमृत रूपेण स्वाहा संपद्यतां वृद्धिः ॥ सक्षीर मुदकदानम्॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ॐ सत्य वसु संज्ञका विश्वेदेवाः नांदीमुखाः प्रीयंताम् ॥ अमुक गोत्राःमातृ पितामही प्रपितामह्यो नांदीमुख्यः गोत्राः पितृ पितामह प्रपितामहाः नांदी मुखाः द्वितीय गोत्राः मातामह प्रमातामह वृद्धप्रमातामहाः नांदीमुखाः सपत्नीकाश्च प्रीयन्ताम् ॥ ततः ॐ स्वस्तिनऽइन्द्रोवृद्धश्रवाः० इति मन्त्रं पठेत् ॥ अथ दक्षिणादानम् ॥ ॐ सत्यवसु संज्ञकेभ्यो विश्वेभ्यो देवेभ्यो नान्दी मुखेभ्यः कृतस्य नांदीश्राद्धस्यफल प्रतिष्ठा सिद्धयर्थं द्राक्षामलक यवमूल निष्क्रयी भूतां दक्षिणां दातु महमुत्सृजे ॥ ॐ अमुक गोत्राभ्यो मातृ पितामही प्रपितामहीभ्यो नान्दी मुखीभ्यः कृतस्य० ॥ ॐ अमुक गोत्रेभ्यः पितृ पितामह प्रपितामहेभ्यो नान्दी मुखेभ्यः कृतस्य० ॥ ॐ अमुक गोत्रेभ्यो मातामह प्रमातामह वृद्धप्रमातामहेभ्यः सपत्नीके० ना० कृतस्य० ॥ आशिषोग्रहणम् ॥ गोत्रंनो वर्द्धताम् ॥ वर्द्धतांवोगोत्रम् ॥ दातारोनोऽभि वर्द्धताम् ॥ अभिवर्द्धताम्वोदातारः ॥ वेदाश्चनोऽभिवर्द्धताम् ॥ अभिवर्द्धताम्वोवेदाः ॥ संततिर्नोवर्द्धताम् ॥ वर्द्धताम्वः संतति ॥ श्रद्धा च नोमाव्यगमत् ॥ माव्यगमद्वः श्रद्धा ॥ वहुदेयंचनोऽस्तु ॥ अस्तुवो वहुदेयम् ॥ याचितारश्चनः सन्तु ॥ सन्तु वो याचितारः ॥ एता आशिषाः सत्यासन्तु ॥ सन्त्वेतास्सत्याशिषाः ॥ ॐ माता पितामही चैव तथैव प्रपितामही ॥ पिता पितामहश्चैव तथैव प्रपितामहः ॥ १ ॥ मातामहस्तत्पिता च प्रमातामहकादयः ॥ एतेभवन्तु सुप्रीताः प्रयच्छन्तु च मङ्गलम् ॥ २ ॥ अस्मिन्नांदीश्राद्धे न्यूनातिरिक्तोयोविधिः स उपविष्ट ब्राह्मणानां वचनात् नान्दी मुखप्रसादात् सर्वः परिपूर्णोस्तु अस्तु परिपूर्ण इति विप्राः ॥ इति सांकल्पिक नान्दी श्राद्ध प्रयोगः ॥

ॐ अद्येत्यादि पूर्ववत् अमुकगोत्र अमुक शर्माहं अस्मिन्दुर्गा

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हवन कर्मणि अमुक गोत्रं अमुक नाम शर्माणं ब्राह्मणं एभिर्वरण द्रव्यैः आचार्यत्वेन त्वामहं वृणे ॥ वृतोस्मीति आचार्यः ॥ बृहस्पते ऽअतीमंत्रेणइतिपूजनम् ॥ पादप्रक्षालनं ॥ ॐ यत्फलं कपिलादाने कार्तिक्यां ज्येष्ठ पुष्करे ॥ तत्फलंपांडव श्रेष्ठ विप्राणां पाद शौचने ॥ गंधं ॥ गंध द्वारांदुराधर्षां नित्य पुष्टां करीषिणीम् ॥ ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहो पह्वयेश्रियम् ॥ अक्षतान् ॥ पुष्प माल्याम् ॥ श्री श्चतेति ॥ कंकण बंधनम् ॥ व्रतेन दीक्षामाप्नोति ॥ प्रार्थना ॥ आचार्यस्तुयथास्वर्गे शक्रादीनां बृहस्पतिः ॥ तथात्वं ममयज्ञेस्मिन्नाचार्यस्तु भवप्रभो ॥ यथाविहितं कर्मकुरु ॥ यथा-ज्ञानतः करवाणीति ॥ एवं ब्रह्मा वरणम् ॥ प्रार्थना ॥ यथा चतुर्मुखो ब्रह्मासर्व वेदधर प्रभो ॥ तथात्वंममयज्ञेस्मिन्ब्रह्मा भव-द्विजोत्तम ॥ ब्रह्मयज्ञान मंत्रेण पूजनम् ॥ सर्वपूर्ववत् ॥

रक्षा विधानम् ॥

यवान्कुशान्तथा दूर्वा दक्षिणाक्षत सर्षपान् ॥ गोमयं दधि संयुक्तं कारयेत्ताम्रभाजने ॥ १ ॥ नमस्ते शारदादेवी काश्मीर प्रतिवासिनी ॥ अहं शरणामाप्नोमि विद्यादानं ददासि मे ॥ २ ॥ ॐ गणाधिपं नमस्कृत्य नमस्कृत्यपितामहं ॥ विष्णुंरुद्रंश्रियं देवीं वंदे भक्त्या सरस्वतीम् ॥ स्थानं क्षेत्रं नमस्कृत्य दिननाथं निशाकरं ॥ धरणी गर्भ संभूतंशशिपुत्रंबृहस्पतिं ॥ दैत्याचार्यं नमस्कृत्य सूर्यपुत्रंमहाग्रहं ॥ राहुंकेतुं नमस्कृत्य यज्ञारम्भे विशे-षतः ॥ शक्राद्याः देवताः सर्वे मुनीनां कथयाम्यहं ॥ गर्गंमुनिं-नमस्कृत्य नारदोपि महामुनिः ॥ वसिष्ठं मुनि शार्दूलं विश्वामित्रो महामुनिः ॥ व्यासं कविं नमस्कृत्य सर्वशास्त्र विशारदाः ॥ विद्याधिकास्तु मुनयः आचार्यास्तु तपोधनाः ॥ सर्वेतेप्रणिपत्येन यज्ञरक्षां करोतु मे ॥ रक्षो हणं वलगहनं वैष्णवीमिद महन्तंवलग-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मुत्किरामि यम्मेनिष्टयो यममात्यो निचखानेद महन्तं वलग मुत्किरामि यम्मे समानोयम समानोनि च खानेद महन्तं वलग मुत्किरामियम्मे सबंधुर्यमसबंधुर्नि च खानेद महन्तंवलगमुत्किरा-मियम्मे सजातो यम सजातो निचखानोत्कृत्याङ्किरामि ॥५॥२३॥ रक्षोहणो वोव्वलगहनः प्रोक्षामि वैष्णवान्नूक्षो हणो वोव्वल गहनोक्षनयामि वैष्णवान्नूक्षोहणो वोवल गहनो वस्तृणामि वैष्णवान्नूक्षाहणौवांवलगहनाऽउपदधामि वैष्णवी रक्षोहणौ वांव-लगहनौ पर्यूहामि वैष्णवी वैष्णवमसि वैष्णवास्थ ॥ ७ ॥ २५ ॥ रक्षसां भागोसि निरस्तर्ठ०रक्षऽइदमहर्ठ०रक्षोमितिष्ठामीदमहर्ठ० रक्षोवबाधऽइदमहर्ठ० रक्षोधमन्तमोनयामि ॥ घृतेनद्यावा पृथिवी प्रोर्णु वाथांवायोव्वेस्तोकानामग्नि राज्यस्य वेतु स्वाहा स्वाहा कृते-ऽऊर्ध्वं नभसम्मारुतंगच्छतम् ॥६॥१६॥ रक्षोहाविश्व चर्षणिरमि-योनि मयोहते॥ द्रोणेसधस्त्थमामदत्॥२६॥२६॥पूर्वेरक्षतुगोविन्द आग्नेयां गरुडध्वजः॥ याम्यां रक्षतु वाराहो नारसिंहस्तु नैर्ऋते॥ केशवो वारुणीं रक्षेद्वायव्यां मधुसूदनः॥ उत्तरे श्रीधरोरक्षेदीशा-न्ये च गदाधरः॥ ऊर्ध्वंगोवर्द्धनोरक्षेदधश्चैवजनार्दनः॥ एवंदश-दिशोरक्षेद्वासुदेवो जनार्दनः॥ यज्ञाग्रेरक्षते शंखः पृष्ठे पद्मं च उत्तमं॥ वामपार्श्वेगदारक्षे दक्षिणे च सुदर्शनः॥ उपेंद्रो रक्षतेब्रह्मा आचार्यपातुवामनः॥ अच्युतः पातु ऋग्वेदं यजुर्वेदमधोक्षजः॥ कृष्णो रक्षतु सामं च अथर्वाणं च माधवः॥ उपद्रष्टास्तु ये विप्रा-स्तेपिरुद्रेण रक्षिताः॥यजमानं सपत्नीकं पुंडरीकाक्ष रक्षतु॥ रक्षा-हीनं तु यत्स्थानं तत्सर्वं रक्षतो हरिः॥ वेद मंत्रैश्च कर्तव्या रक्षा शुभ्रैश्च सर्षपैः॥ तस्मात्सर्व प्रयत्नेन रक्षां कुर्यात्सदा बुधः॥

॥ अथ यजमान हस्ते रक्षाबन्धनम् ॥

ॐ त्वंयविष्ठदाशुषोनॄःपाहि शृणुधीगिरः॥ रक्षातोकमु-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तत्क्रमना ॥ ये न बद्धोवली राजादानवेन्द्रो महाबलः॥ तेनत्वां प्रतिबध्नामि रक्षेमाचलमाचल ॥ इति रक्षा विधानं ॥

॥ अथ पुण्याहवाचनं ॥

कलश स्थापनानन्तर वरुणं साङ्गं पूजयित्वा पुण्याहवाचनं कुर्यात् ॥ संपूज्यगंधमाल्याद्यैर्ब्राह्मणान्स्वस्तिवाचयेत् ॥ धर्म्मकर्मणिमांगल्येसंग्रामेऽद्भुतदर्शने ॥१॥ पुण्याहवाचनंदैवंब्राह्मणस्यविधीयते ॥ एतदेवनिरोंकारंकुर्यात्क्षत्रियवैश्ययोः ॥ २ ॥ अवनिकृतजानु ंडलः कमलमुकुलसदृशमंजलिं शिरस्याधाय दक्षिणेनपाणिना सुवर्णपूर्णकलशं धारयित्वा दीर्घानागानद्योगिरयस्त्रीणिविष्णुपदानिच ॥ तेनायुः प्रमाणेनपुण्याहंदीर्घमायुरस्तु ॥ अपां मध्येस्थितादेवाः सर्वमप्सुप्रतिष्ठितम् ॥ ब्राह्मणानां करेन्यस्ताः शिवाआपोभवंतुताः ॥१॥ शिवाआपः संतु ॥ अस्तु शिवा आपः ॥ लक्ष्मीर्वसतिपुष्पेषुलक्ष्मीर्वसतिपुष्करे ॥ सा मे वसतुवैनित्यंसौमनस्यंतथास्तुनः ॥१॥ सौमनस्यमस्तु ॥ अस्तु सौमनस्यम् ॥ अक्षतंचास्तुमेपुण्यं दीर्घमायुर्यशोवलम् ॥ यद्यच्छ्रेयस्करं लोकेतत्तदस्तुसदामम ॥१॥ अक्षतं चारिष्टंचास्तु ॥ अस्त्वक्षतमरिष्टम् ॥ ब्राह्मणानांहस्तेगंधादिदत्त्वा ॥ गंधः प्रदेयोदेवानामपत्यपुष्टिदश्चनः ॥ गंधद्वारांदुराधर्षामितिमंत्रेणभक्तितः ॥१॥ गंधाः पांतुसौमंगल्यंचास्तु ॥ अस्तु सौमङ्गल्यम् ॥ पुष्पाणिपान्तु सौश्रेयसमस्तु ॥ अस्तुसौश्रेयम् ॥ अक्षताःपांतुआयुष्यमस्तु ॥ अस्तु आयुष्यम् ॥ तांबूलानिपांतु ऐश्वर्यमस्तु ॥ अस्तु ऐश्वर्यम्॥ दक्षिणाः पांतुआरोग्यमस्तु ॥ अस्तु आरोग्यम् ॥ दीर्घमायुः श्रेयः शांतिः पुष्टिस्तुष्टिश्चास्तु, अस्तु ॥ श्रीर्यशोविद्याविनयोवित्तंबहुपुत्रंचारोग्यंचायुष्यंचास्तु, अस्तु ॥ यंकृत्वासर्ववेद यज्ञक्रियाकरणकर्म्मारंभाः शुभाः शोभनाः प्रवर्तते तमहमोंकारमा-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

दिंकृत्वाऋग्यजुः सामाथर्वाशीर्वचनं बह्वृषिसंमतं समनुज्ञातंभवद्भिरनुज्ञातः पुण्यं पुण्याहं वाचयिष्ये ॥ वाच्यताम् ॥ यजुः ॥ द्रविणोदाः पिपीषति जुहोतप्रचतिष्ठत ॥ नेष्ट्रादृतुभिरिष्यत ॥यजुः॥ सवितात्वासवानाᳬ सुवतामग्निगृहपतीनाᳬसोमोव्वनस्पतीनाम्॥ बृहस्पतिर्व्वाचऽइन्द्रोज्यैष्ठ्यायरुद्रः पशुभ्यो मित्रः सत्योव्वरुणो धर्मपतीनाम् ॥ १ ॥ यजुः ॥ ॐ नतद्रक्षाᳬसिनापिशाचास्तरंतिदेवानामोजः प्रथमजर्ठ० ह्येतत् ॥ योबिभर्तिदाक्षायणर्ठ० हिरण्यर्ठ० सदेवेषुकृणुतेदीर्घमायुः समनुष्येषुकृणुतेदीर्घमायुः ॥ १ ॥ यजुः ॥ उच्चातेजातमन्धसोदिविसद्भूम्याददे ॥ उग्रर्ठ० शर्म्ममहिश्रवः ॥५॥ इत्येताऋचः पुण्याहेब्रूयात् ॥ व्रतनियम तपः स्वाध्याय क्रतुदयादमदानविशिष्टानां सर्वेषां ब्राह्मणानांमनः समाधीयताम् ॥ समाहित मनसः स्मः ॥ प्रसीदन्तु भवन्तः प्रसन्नाः स्मः ॥ अथ पूर्वस्थापितकलशात्ताम्रपात्रे जलमादाय यजमानमूर्धनिदूर्वयासेचनं कुर्यात् ॥ शान्तिरस्तु पुष्टिरस्तु तुष्टिरस्तु वृद्धिरस्तु ऋद्धिरस्तु अविघ्नमस्तु आयुष्यमस्तु आरोग्यमस्तु शिवमस्तु शिवं कर्म्मास्तु कर्म्मसमृद्धिरस्तु धर्मसमृद्धिरस्तु वेदसमृद्धिरस्तु धनधान्यसमृद्धिरस्तु इष्टसंपदस्तु अनिष्टनिरसनमस्तु ॥ भूमौ ॥ यत्पापंरोगमशुभमकल्याणंतद्दूरेप्रतिहतमस्तु ॥ पात्रे ॥ यद्यच्छ्रेयस्तत्तदस्तु उत्तरेकर्मणिनिर्विघ्नमस्तु ॥ उत्तरोत्तरमहरहरभिवृद्धिरस्तु ॥ उत्तरोत्तराः क्रियाः शुभाः शोभनाः संपद्यंतां ॥ तिथिकरणमुहूर्त्तनक्षत्र ग्रहलग्नसंपदस्तु तिथिकरणमुहूर्त्तनक्षत्रग्रहलग्नाधिदेवताः प्रीयंताम् ॥ तिथिकरणेसमुहूर्त्ते सनक्षत्रे सग्रहेसलग्ने सदैवते प्रीयेतां ॥ दुर्गापांचाल्यौ प्रीयेताम् ॥ अग्निपुरोगाविश्वेदेवाः प्रीयन्ताम् ॥ इन्द्रपुरोगामरुद्गणाः प्रीयंताम् ॥ वशिष्ठपुरोगाऋषिगणाःप्रीयंताम् ॥ माहेश्वरीपुरोगाउमामातरः प्रीयंताम् ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अरुन्धतीपुरोगाएकपत्न्यः प्रीयताम् ॥ विष्णुपुरोगाः सर्वेदेवाः प्रीयंताम् ॥ ब्रह्मपुरोगाः सर्वेवेदाः प्रीयंताम् ॥ आदित्य पुरोगाः सर्वेग्रहाःप्रीयंतां॥ब्रह्मचब्राह्मणाश्चप्रीयंताम्॥अंबिकासरस्वत्यौप्रीयेताम् ॥श्रद्धामेधेप्रीयेताम् ॥भगवतीकात्यायनीप्रीयताम् ॥ भगवतीमाहेश्वरीप्रीयताम् ॥ भगवतीऋद्धिकरीप्रीयताम् ॥ भगवती वृद्धिकरीप्रीयताम् ॥ भगवतीसिद्धिकरीप्रीयताम् ॥ भगवती पुष्टिकरी प्रीयताम् ॥ भगवतीतुष्टिकरीप्रीयताम् ॥ भगवंतौ विघ्नविनायकौ प्रीयेताम् ॥सर्वाः कुलदेवताः प्रीयंताम् ॥सर्वाः ग्रामदेवताः प्रीयंतां॥ सर्वा इष्टदेवताः प्रीयंताम् ॥ भूमौ ॥ हताश्चब्रह्मद्विषः ॥ हताः परिपंथिनः॥ हताश्चविघ्नकर्तारः॥ शत्रवःपराभवंयान्तु॥ शाम्यंतुघोराणि॥शाम्यंतुपापानि॥ शाम्यंत्वीतयः॥पात्रे॥ शुभानिवर्धंतां॥शिवा आपःसंतु ॥ शिवाऋतवःसन्तु ॥ शिवाअग्नयःसंतु ॥ शिवाआहुतयःसंतु ॥ शिवाओषधयःसंतु ॥ शिवावनस्पतयःसंतु ॥ शिवा अतिथयःसंतु ॥ अहोरात्रेशिवेस्याताम् ॥ यजुःशाखिनांमंत्रः ॥ ॐ निकामेनिकामेनः पर्जन्योवर्षतु फलवत्योनऽओषधयः पच्यंतां योगक्षेमोनः कल्पताम् ॥ ६ ॥ पूर्णपात्रे जलं क्षिपेत् ॥ शुक्रांगारकबुधबृहस्पतिशनैश्चरराहुकेतु सोमसहिता आदित्यपुरोगाः सर्वेग्रहाः प्रीयंताम् ॥ भगवान्नारायणः प्रीयताम् ॥ भगवान्स्वामी महासेनःप्रीयताम्॥पुरोनुवाक्यायत्पुण्यंतदस्तु॥ याज्ययायत्पुण्यं तदस्तु ॥ वषट्कारेणयत्पुण्यंतदस्तु॥ प्रातःसूर्योदयेयत्पुण्यंतदस्तु॥ एतत्कल्याणयुक्तं पुण्यमस्तु ॥ पुण्याहकालान्वाचयिष्ये ॥ वाच्यताम् ॥ ब्राह्मंपुण्यमहर्यच्चसृष्टयुत्पादनकारकम् ॥ वेदवृक्षोद्भवं नित्यंतत्पुण्याहंब्रुवंतुनः ॥ १ ॥ भोब्राह्मणाः ममसकुटुम्बस्य सपरिवारस्यगृहेषुण्याहंभवंतोब्रुवन्तु ॥ ३ ॥ ॐ पुण्याहम् ३ ॥ यजुः ॥ ॐ पुनंतुमादेवजनाः पुनंतुमनसाधियः ॥ पुनंतुविश्वा-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

भूतानजातवेदः पुनीहिमा ॥७॥ पृथिव्यामुद्धृतायांतुयत्कल्याणं पुराकृतम् ॥ ऋषिभिः सिद्धगंधर्वैस्तत्कल्याणंब्रुवंतु नः ॥ १ ॥ भोब्राह्मणाः ममसकुटुम्बस्यसपरिवारस्यगृहेकल्याणंभवंतोब्रुवंतु ॥ ३ ॥ ॐ कल्याणम् ॥ ३ ॥ यजुः ॥ ॐ यथेमांवाचंकल्याणी मावदानिजनेभ्यः ॥ ब्रह्मराजन्याभ्याꣳशूद्रायचार्य्याय च स्वाय-चारणायच ॥ प्रियोदेवानांदक्षिणायैदातुरिहभूया समयम्मेकामः समृद्ध्यतामुपमादोनमतु ॥ ८ ॥ सागरस्यतुयाऋद्धिर्महालक्ष्म्या-दिभिःकृता ॥ संपूर्णासुप्रभावाचतांतामृद्धिंब्रुवंतुनः ॥ १ ॥ भो ब्राह्मणाः ममसकुटुम्बस्यसपरिवारस्यगृहेऋद्धिंभवंतोब्रुवंतु ॥ ३ ॥ ॐ ऋद्ध्यताम् ॥ ३ ॥ यजुः ॥ ॐ सत्रस्यऽऋद्धिरस्यगन्मज्यो-तिरमृताऽअभूम ॥ दिवंपृथिव्याऽअद्ध्याꣳहामाविदामदेवान्त्स्व-र्ज्योतिः ॥ ९ ॥ स्वस्तिस्तुयाऽविनाशाख्यापुण्यकल्याणवृद्धिदा ॥ विनायकप्रियानित्यंतांतांस्वस्तिब्रुवंतुनः ॥ १ ॥ भोब्राह्मणाः मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्यगृहेस्वस्तिभवंतोब्रुवंतु ॥ ३ ॥ ॐस्वस्ति ॥ ३ ॥ यजुः ॥ ॐस्वस्तिनऽइन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्तिनः पूषाविश्व-वेदाः ॥ स्वस्तिनस्तार्क्ष्योऽअरिष्टनेमिः स्वस्तिनोबृहस्पतिर्द-धातु ॥१०॥ मृकंडसूनोराहुर्यद्ध्रुवलोमशयोस्तथा ॥ आयुपातेन-संयुक्ताजीवेमशरदःशतम् ॥ १ ॥ जीवंतुभवंतः ॥३॥ यजुः॥ ॐ शतमिन्नुशरदोऽअंतिदेवायत्रानश्चक्राजर संतनूनाम् ॥ पुत्रासो यत्र पितरोभवंति मानोमध्यारारिषतायुर्गंतोः ॥११॥ शिवगौरी-विवाहेयायाश्रीरामेनृपात्मजे ॥ धनदस्यगृहेयाश्रीरस्माकंसास्तु-सद्मनि ॥ १ ॥ भोब्राह्मणाः मम सकुटुम्बस्यसपरिवारस्यगृहेश्री रस्तुइतिभवंतोब्रुवंतु ॥ ३ ॥ ॐ अस्तु श्रीः ॥ ३ ॥ यजुः ॥ ॐ मनसःकाममाकूतिंवाचः सत्यमशीमहि ॥ पशूनाꣳरूपमन्नस्य रसोयशः श्रीः श्रयताम्मयिस्वाहा ॥ २ ॥ प्रजापतिर्लोकपालो-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

धाताब्रह्मामदेवःट् ॥ भगवाञ्छाश्वतोनित्यंसनोरक्षतुसर्वतः ॥ १ ॥ भगवान्प्रजापतिः प्रीयताम् ॥ यजुः ॥ ॐ प्रजापतेनत्वदेतान्यन्योविश्वारूपाणिपरिताबभूव ॥ यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नोऽअस्त्वयमम्मुष्य पितासावस्यपितावयर्ठ०स्यामपतयो रयीणाᳬ स्वाहा ॥१३॥ आयुष्मतेस्वस्तिमतेयजमानायसंततम् ॥ कृताः सर्वाशिषःसंतुऋत्विग्भिर्वेदपारगैः ॥ १ ॥ देवेन्द्रस्ययथास्वस्तियथास्वस्तिगुरोर्गृहे ॥ एकलिंगेयथास्वस्तितथास्वस्तिसदामम ॥ २ ॥ ॐ आयुष्मतेस्वस्ति ॥३॥यजुः॥ ॐ प्रतिपन्थामपबहिस्वस्तिगामनेहसम् ॥ येनविश्वाःपरिद्विषोवृणक्ति विन्दतेवसु ॥१४॥ यजुः ॥ ॐ विश्वानिदेवसवितर्दुरितानिपरासुव ॥ यद्भद्रंतन्नऽआसुव॥मंत्रार्थाःसफलाःसन्तुपूर्णाः सन्तुमनोरथाः ॥ शत्रूणांबुद्धि नाशोऽस्तुमित्राणामुदयोऽस्तु नः॥१॥ ऋग्वेदोऽथयजुर्वेदःसामवेदोह्यथर्वणः॥ब्रह्मवक्त्रेस्थितानित्यंनिघ्नंतुतवशात्रवान् ॥ २ ॥ अक्षतान्विग्रहस्तांतुनित्यंगृह्णन्ति ये नराः ॥ चत्वारितेषांवर्धतेआयुः कीर्तिर्यशोबलम् ॥ ३ ॥ आयुष्कामो यशस्कामो पुत्र पौत्रस्तथैव च ॥ आरोग्यं धनकामश्च सर्वेकामाः भवन्तु मे (ते) ॥४॥श्रीर्वर्चस्व मायुष्य मारोग्य माविधात्पवमानम्महीयते ॥ धान्यं धनं पशुं बहुपुत्र लाभं शत सम्वत्सरं दीर्घमायुः ॥ १५ ॥ स्वस्त्यस्तु ते कुशलमस्तु चिरायुरस्तु गोवाजिवृद्धि धनधान्य समृद्धिरस्तु ॥ ऐश्वर्यमस्तु कुशलोस्तुरिपुक्षयोस्तु सन्तानवृद्धि सहिता हरिभक्तिरस्तु ॥ ६ ॥ आनन्द काले स्थिर राज्य लक्ष्मीः शिवप्रसादाद्बहुवाक्य सिद्धिः ॥ वाचाकृतं शत्रुविनाशनं च दकारशब्दन्तु दरिद्रनाशः ॥ ७ ॥ इति दानखण्डोक्त पुण्याह वाचनम् सम्पूर्णम् ॥

पंच भू संस्कार करके अग्नि स्थापन कराकर ईशानकोण में वरुण पूजन करना ॥

ॐ इमम्मेवरुणश्रुधीहवमद्या च मृडय । त्वामवस्युराचके ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुण इहागच्छ इहतिष्ठ वरुणाय नमः ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वरुणमावाहयामि स्थापयामि नमः ॥

पाद्यादि से पूजन कराकर—प्रार्थना ॥

ॐ नागपाशधरं देवं वरुणं नक्रवाहनम् ॥ शुद्धस्फटिक-संकाशं प्राणरूपं नमाम्यहम् ॥ पाशहस्तं च वरुणमर्णसाँ प्रतिमीश्वरम् ॥ आवाहयामियज्ञेस्मिन्पूजेयंप्रति गृह्यताम् ॥ अनयापूजया साँगः सपरिवारः वरुणदेवः प्रीणातु नमम ॥

अथ ईशानकोण में सूर्यादिनवग्रह पूजन कराना ॥

ॐ आकृष्णेनरजसावर्तमानो निवेशयन्नमृतंमर्त्यंच ॥ हिरण्ययेनसवितारथेन देवो यातिभुवनानिपश्यन् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः सूर्यादिनवग्रहाः इहागच्छत इहतिष्ठत सूर्यादिनवग्रहेभ्यो नमः ॥ सूर्यादिनवग्रहानावाहयामिस्थापयामि नमः ॥

पाद्यादि से पूजन कराकर—प्रार्थना ॥

ॐ ब्रह्मामुरारिस्त्रिपुरान्तकारी भानुः शशीभूमिसुतोबुधश्च ॥ गुरुश्चशुक्रश्शनिराहु—केतवःसर्वेग्रहाः शान्तिकराभवन्तु ॥ ॐ अधिदेवताभ्यो नमः ॥ ॐ शिवोगौरीतथास्कन्दो विष्णु ब्रह्मा-पुरन्दरः ॥ यमःकालश्चित्रगुप्तश्चाधिदेवा इमे स्मृताः ॥ ॐ प्रत्यधिदेवताभ्यो नमः ॥ ॐ अग्निरापोमहीविष्णुरिन्द्ररिन्द्राणिका तथा ॥ प्रजापतिर्भुजंगश्च ब्रह्माप्रत्यधिदेवताः ॥ ॐ गणेशादिपंच-लोकपालेभ्यो नमः ॥ ॐ विनायकस्तथा दुर्गा वायुराकाशमेव च ॥ अश्विनौचैवपंचैतांल्लोकपालान्नमाम्यहम् ॥ ॐ इन्द्रादि-दशदिग्पालेभ्यो नमः ॥ ॐ इन्द्रो वह्निः पितृपतिर्नैर्ऋतो वरुणो मरुत् ॥ कुवेर ईशो ब्रह्मा च अनन्तश्च दिगीश्वराः ॥ अनया-पूजया सांगाः सपरिवाराः सूर्यादयः प्रीणन्तु नमम ॥

अथ प्रधान कलशस्थापनम्

॥ अथ भूमिस्पर्शनम् ॥

ॐ भूरसिभूमिरस्यदितिरसिविश्वधायाविश्वस्यभुवनस्यधर्त्री ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पृथिवींयच्छपृथिवीन्दृढं० दृपृथिवींमाहिर्ठं० सीः ॥ अथवा ॥ महीद्यौः पृथिवि चनऽइमंयज्ञंमिमिक्षताम् ॥ पिपृतान्नोभरीमभिः ॥ इतिभूमिंस्पृष्ट्वा ॥

अथ मृत्तिका की वेदी में जौ या गेहूँ मिलावे ❀

ॐ धान्यमसिधिनुहिदेवान्प्राणायत्वोदानायत्वाव्यानायत्वा ॥ दीर्घामनुप्रसितिमायुषेधान्देवोवः—सविताहिरण्यपाणिः प्रतिगृभ्णात्वच्छिद्रेणपाणिनाचक्षुषेत्वामहीनां पयोसि ॥ अथवा ॥ ॐ ओषधयःसंवदन्तेसोमेनसहराज्ञायस्मैकृणोतिब्राह्मणस्तंराजन्पारयामसि ॥ इतियवान्गोधूमान्वा प्रक्षिपेत् ॥

॥ अथ कलश रखना ॥

ॐ आजिघ्रकलशंमह्यात्वाविशंत्विन्दवः पुनरूर्जानिवर्तस्वसानः ॥ सहस्रंधुक्ष्वोरुधारापयस्वतीपुनर्माविशताद्रयिः ॥वा॥ आकलशेषुधावतिपवित्रपरिषिच्यते ॥ उक्थैर्यज्ञेषुवर्द्धते ॥ इतिकलशंसंस्थाप्य ॥

अथ कलश मे जल गेरना ॥

ॐ वरुणस्योत्तंभनमसिवरुणस्यस्कंभसर्जनीस्थोवरुणस्यऽऋतसदन्यसिवरुणस्यऽऋतसदनमसिवरुणस्यऽऋतसदनमासीद॥ इति जलप्रक्षेपः ॥

अथ कलश में तीर्थजल, गंगाजल या जमना जल गेरना ॥

तन्त्रान्तरे, कामनाभेदेन कलशे विशेष वस्तु ॥ धर्म्मकामः क्षिपेद्भस्म धन कामस्तुमौक्तिकम् ॥ श्री कामः कमलं दद्यात्कामार्थी रोचनं तथा ॥ १ ॥ मोक्षकामो न्यसेद्वस्त्रंजयकामोपराजिताम् ॥ उच्चाटनार्थं व्याघ्रीं च वश्यार्थंशिखिमूलिकाम् ॥ २ ॥ मारणाय मरीचञ्च कैतवं मोहनायच ॥ आकर्षणाय पारन्तीं प्रक्षिपेत्कलशोदरे ॥ ३ ॥ इति कार्यानुसारेणैतानि कलशे क्षिपेत् ॥ अपराजिता बड़ी खिरैटी प्रसिद्धा ॥ व्याघ्री छोटी कटेरी ॥ शिखिमूलिका मोरपंखी ॥ कैतवं धत्तूरम् ॥

* यवान्वै वापयेत्तत्र गोधूमैश्चापि संयुतान् ॥ तत्र संस्थापयेत् कुम्भं विधिना मन्त्रपूर्वकम् ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ॐ इमम्मेगंगेयमुनेसरस्वतिशुतुद्रिस्तोमेसचतापरुष्ण्यामरुद्-वृधेवितस्तयार्जीकीयेशृणुह्यासुषोमया ॥ इति तीर्थजलेनापूर्य ॥

अथ गन्ध (चन्दन) गेरना ॥

ॐ गंधद्वारांदुराधर्षां नित्य—पुष्टांकरीषिणींईश्वरींसर्वभूतानांतामिहोपह्वयेश्रियम् ॥ इति कलशे गंध प्रक्षेपः ॥

अथ सर्वोषधी गेरना ❀

ॐ याऽओषधीः पूर्वायातादेवेभ्यस्त्रियुगंपुरा ॥ मनैनुवभ्रूणामहर्ठ० शतंधामानिसप्तच ॥ इति सर्वोषधी प्रक्षेपः ॥

अथ दूर्वा गेरना ॥

ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्तीपरुषःपरुषस्परि ॥ एवानो दूर्वेप्रतनुसहस्रेणशतेनच ॥ इति दूर्वाप्रक्षेपः ॥

अथ कुशा गेरना ॥

ॐ पवित्रेस्थोवैष्णव्यौसवितुर्वःप्रसवऽउत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः ॥ तस्यतेपवित्रपतेपवित्रपूतस्ययत्कामः पुनेतच्छकेयम् ॥ इति कुशप्रक्षेपः ॥

अथ[1] सप्तमृत्तिका गेरना ॥

ॐ स्योनापृथिविनोभवान्नृक्षरानिवेश ॥ नीयच्छानः शर्मसप्रथाः ॥ इतिसप्तमृदप्रक्षेपः ॥

अथ पुङ्गीफल गेरना ॥

ॐ याःफलिनीर्याऽअफलाऽअपुष्पायाश्चपुष्पिणीः ॥ बृहस्पतिप्रसूतास्तानोमुञ्चन्त्वर्ठ० हसः ॥ इति पुङ्गीफलप्रक्षेपः ॥

अथ[2] पंचरत्नानिप्रक्षेपणम् पंचरत्नी गेरना ॥

❀ कुष्टं मांसी हरिद्रे द्वे मुरा शैलेय-चन्दनम् ॥ वचा चंपक मुस्ते च सर्वोषध्यो दशस्मृताः ॥

१—गजाश्वरथ वल्मीक सङ्गमाद्ध्रद गोकुलात् ॥ मृदमानीय कुम्भेषु प्रक्षिपेच्चत्वरात्तथा ॥ गोकुलावधि सप्त चत्वरेणसहाष्टौभवेयुः ॥

२—कनकं कुलिशं नीलं पद्मरागं च मौक्तिकम् ॥ एतानि पंचरत्नानि रत्नशास्त्र विदो विदुः ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ॐ परिवाजपतिः कविरग्निर्हव्यान्यक्रमीत्॥ दधद्रत्नानि-दाशुषे ॥ वा ॥ सहिरत्नानिदाशुषेसुवातिसविताभगःतंभागंचित्रमी महे ॥ इति पंचरत्नानिप्रक्षेपः ॥

सोने के अभाव में दक्षिणा गेरना।

ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेकऽआसीत् ॥ सदाधार पृथिवीन्द्या मुतेमां कस्मैदेवाय हविषा व्विधेम ॥ इति दक्षिणा प्रक्षेपः ॥

[1]अथ पंच पल्लव गेरना

ॐ अश्वत्थेवो निषदनं पर्णेवोवसतिष्कृता ॥ गोभाजऽइ-त्किला सथयत्सनवथ पूरुषम् ॥ इति पंच पल्लवानि प्रक्षेपः ॥

अथ कलश के गले में मौली (सूत्र) बाँधना।

ॐ युवा सुवासाः परिवीतऽआगात्सऽउश्रेयान् भवति जाय-मानः ॥ तन्धीरासः कवयऽउन्नयन्ति साध्यो मनसा देवयन्तः॥ इतिकौसुम्बसूत्र बंधनम् ॥

पात्र में चावल भर कर कलश के ऊपर रखना।

ॐ पूर्णादर्विपरापत सुपूर्णा पुनरापत ॥ वस्ने वविक्रीणा वहाऽइष मूर्जर्ठ० शतक्रतो ॥ इति कलशोपरि तन्दुल पूर्णपात्र निधानम् ॥

अथ नारियल के ऊपर स्वस्तिक लगा सूत्र बाँधकर पूर्ण पात्र के ऊपर रखना।

ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्या वहो रात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम् ॥ इष्णन्निषाण मुम्म ऽइषाण सर्वलोकम्म-ऽइषाण ॥ इति श्रीफलनिधानम् ॥

कलश में वरुण का पूजन करना ॥

ॐ तत्वायामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदा शास्ते यजमानो

१—ब्राह्मे। अश्वत्थोदुम्बर प्लक्ष चूत न्यग्रोध पल्लवाः।
पंच भंगा इति ख्याता सर्वे कर्मसु शोभनाः ॥ १ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हविर्भिः अहेडमानो वरुणे हवोध्युरुशर्ठ० समानऽआयुः प्रमोषीः ॥ इत्यनेन पाद्यादिभिः वरुणं संपूज्य ।

॥ प्रार्थना ॥

ॐ कलशस्य मुखे विष्णुः कंठे रुद्रः समाश्रितः ॥ मूले तत्रस्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः ॥१॥ कुक्षौ तु सागस-स्सप्त सप्तद्वीपा वसुन्धरा ॥ ऋग्वेदोथ यजुर्वेदो सामवेदोह्यथर्वणः ॥२॥ अंगैश्चसहिताः सर्वे कलशन्तु समाश्रिताः ॥ अत्र गायत्री सावित्री शान्तिः पुष्टि करी सदा ॥३॥ आयान्तु "यजमानस्य" (मम गृहे च) दुरित क्षयकारकाः ॥ सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि जलदा नदाः ॥४॥ आयान्तु "२यजमानस्य" (मम गृहे च) दुरित क्षयकारकाः ॥ देव दानव संवादे मध्यमाने महोदधौ ॥५॥ उत्पन्नोसि तदा कुँभः विधृतो विष्णुना स्वयम् ॥ त्वत्तोये सर्व तीर्थानि देवाः सर्वे त्वयिस्थिताः ॥६॥ त्वयितिष्ठन्तिभूतानित्व-यिप्राणाः प्रतिष्ठिताः ॥ शिवःस्वयंत्वमेवासि विष्णुस्त्वंच प्रजा-पतिः ॥७॥ आदित्यावसवोरुद्राविश्वेदेवाः स पैतृकाः ॥ त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेऽपि यतः काम फल प्रदाः ॥८॥ त्वत्प्रसादादि यज्ञं कर्तुमीहे जलोद्भवः ॥ सान्निध्यं कुरुमे देव ! प्रसन्नोभव सर्वदा ॥९॥ ॐ पाशपाणे नमस्तुभ्यं पद्मिनी जीवनायक ! ॥ प्रधान पूजनं यावत्तावत्त्वं सन्निधौ भव ॥ इतिकलशपूजनम् ॥

अथ तान्त्रिक रक्षा ॥

ॐ सूर्यः सोमोयमः काल सन्ध्ये भूतान्यहक्षपाः ॥ पवनो दिग्पतिर्भूमिराकाशंखचरामरा ॥ ब्राह्म्यं शासन मास्थाय कल्प-ध्वमिह संनिधिम् ॥ इत्यनेन भूमिं स्पृष्ट्वा दिग्बंधनं कुर्यात् ॥

सामान्यार्घ कलश स्थापनम् ॥

१-२—देवपूजार्थं इत्यपिपाठः ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

❀ पंचगव्य से भूमि तथा सामग्री को छिड़क कर शुद्ध करना, पूजन के लिये अपने वाम भाग में साधारण कलश स्थापन करना।

ॐ रँ इति जलधारया अग्नि प्राकारं विचिन्त्य पूजा मारभेत् ॥ तत्र साधारण कलशं संस्थाप्य वरुणं सम्पूज्य पीठ पूजां

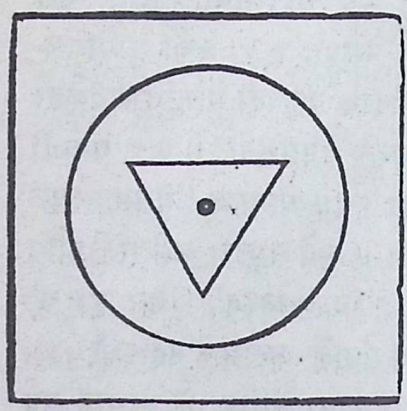

कुर्यात् ॥ स्ववामभागे बिन्दु त्रिकोण वृत्त चतुरस्र मण्डलं निर्माय ॥ ॐ ह्रीं आधार शक्तयेनमः ॥ इति सम्पूज्य तत्राधारं संस्थाप्य ॥ षडङ्ग पूजनं कुर्यात् ॥ ॐ क्रः अस्त्रायफट् इत्येनेन पात्रं प्रक्षाल्य ॥ ॐ क्रां हृदयायनम इति जलेनापूर्य ॥ मँ दशकलात्मने वह्नि मण्डलायनमः ॥

❀ पंचगव्य प्रामाण—वसिष्ठ संहितायाम् ॥ गोमूत्रं गोमयं क्षीरं दधि सर्पि कुशोदकं॥ पंचगव्यमिदं प्रोक्तम्महापातक नाशनम् ॥१॥गोशकृद्द्विगुणं मूत्रं दुग्धं दद्याच्चतुर्गुणम् ॥ घृतं चाष्ट गुणं चैव पंचगव्ये तथादधि॥

पंचगव्य संमेलन प्रकारः

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमहि धियो योनः प्रचोदयात् ॥ गोमूत्रं ॥ ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम् ॥ ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वयेश्रियम् ॥ गोबर ॥ ॐ आप्यायस्व समेतुतेव्विश्वतः सोमवृष्ण्यम् ॥ भवाव्वाजस्य संगथे ॥ दूध ॥ ॐ दधिक्राव्णोऽअकारिषञ्जिष्णो रश्वस्य व्वाजिनः ॥ सुरभिनोमुखाकरत्प्रणऽआयूꣳषितारिषत् ॥ दही ॥ ॐ तेजोसिशुक्रमस्यमृतमसिधामनामासि ॥ प्रियं देवानामना धृष्टंदेवयजनमसि ॥ घी॥ इन सब को कुशा से एक पात्र में मिलाना नीचे लिखे मन्त्र से ॥

ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेश्विनोर्बाहुभ्याम्पूष्णो हस्ताभ्याम् ॥

बाद में कुशा से अपने चारों ओर छिड़के तथा यजमान और आचार्य आदि को भी पीना चाहिये ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ॐ अँ द्वादश कलात्मने सूर्य मण्डलायनमः ॥ [1]मूलेन तीर्थोदकैः पूरयेत् ॥ पुनः गंधादिभिः सम्पूज्य ॥ ॐसं–षोडश कलात्मने सोममण्डलाय नमः ॥ ॐ गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति ॥ नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन्संनिधिं कुरु ॥ इत्यंकुश मुद्रया[2] तीर्थान्या वाह्य ॥ मूलमष्टवारं जप्त्वा धेनु[3] मत्स्य[4] कुम्भ[5] मुद्राः प्रदर्श्य तज्जलेन आत्मानं पूजा सामग्रीञ्च सम्प्रोक्ष्य ॥ इतिसामान्यार्घकलशस्थापनम् ॥

पहिले श्री सूक्त के १६ मन्त्रों से अपने शरीर में देह न्यास करे ॥

इसी प्रकार भगवती की मूर्ति से फूल लगाकर भगवती की मूर्ति में भी इन्हीं सब अंगों का ध्यान से न्यास करना चाहिये ॥

ॐ हिरण्य वर्णां हरिणीं सुवर्ण रजतस्रजाम् ॥ चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ॥१॥ शिरसि ॥ ॐ ताम्म आवह जातवेदो लक्ष्मी मनप गामिनीम् ॥ यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम् ॥२॥ नेत्रयोः ॥ ॐ अश्वपूर्वां (र्वां) रथमध्यां हस्तिनाद प्रवोधिनीम् ॥ श्रियंदेवी मुपह्वये श्रीर्मादेवीजुषताम् ॥३॥ कर्णयोः ॥ ॐ कांसोस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तांतर्पयन्तीम् ॥ पद्मे स्थितां पद्म वर्णां तामिहो पह्वये श्रियम् ॥४॥ घ्राणयोः ॥ ॐ चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्ती श्रियं लोके देवि जुष्टामुदारां ॥ तां पद्मनी (ने) मीं शरणमहं

१—ऐंह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे वा दुर्गे रक्षिणि स्वाहा ॥ अंकुशमुद्रा २—ऋज्वीं मध्यमिकां कृत्वा तर्जनीं मध्य पर्वणि । संयोज्याकुँचयेत्किंचिन्मुद्रैषांकुश संज्ञिताः ३—योनिमुद्रा वामांगुलीनां मध्येषु दक्षिणांगुलि संस्थिता ॥ नियोज्य तर्जनी दक्षा वाम मध्यमया तथा ॥ दक्ष मध्यमया वामा तर्जनींच नियोजयेत् ॥ दक्षयानामयावामां कनिष्ठांचनियोजयेत् ॥ पिहिताधोमुखी चैषां धेनु मुद्रा प्रकीर्तिता ॥ ४—वामोपरिष्टात्संस्थाप्य दक्ष हस्त प्रसारयेत ॥ अंगुष्ठौ युतयोः पार्श्वेमत्स्य मुद्रेयमीरिता ॥ ५—हस्तद्वयेन सावकाशिक मुष्टिकरणे कुम्भ मुद्रा ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

प्रपद्ये अऽलक्ष्मीर्मेनश्यतां त्वां वृणे ॥५॥ मुखे॥ ॐ आदित्य-वर्णे तपसोधि जातो वनस्पतिस्तववृक्षो थबिल्वः ॥ तस्यफलानि तपसानुदन्तु मायान्तरायाश्चवाह्या अलक्ष्मीः ॥६॥ ग्रीवायां ॥ ॐ उपैतु मां देव सखः कीर्तिश्चमणिना सह ॥ प्रादुर्भूतो (स्मि) सुराष्ट्रेस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे ॥७॥ करयोः ॥ ॐ क्षुत्पि-पासामलांज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम् ॥ अभूतिमसमृद्धिं च सर्वां निर्णुदमे गृहात् ॥८॥हृदि॥ ॐ गन्धद्वारांदुराधर्षां नित्य-पुष्टां करीषिणीम् ॥ ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वयेश्रियम् ॥९॥ नाभौ ॥ ॐ मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि ॥ पशूनां रूपमन्नस्यमयि श्रीः श्रयतांयशः ॥१०॥ लिङ्गे ॥ ॐ कर्दमेन-प्रजाभूता मयि संभव कर्दम ॥ श्रियंवासय मे कुलेमातरं पद्म-मालिनीम् ॥११॥ गुदे ॥ ॐ आपः स्रजन्तुस्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे ॥ निचदेवीं मातं श्रियंवासय मे कुले ॥ १२ ॥ ऊर्वोः ॥ ॐ आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिंगलांपद्ममालिनाम् ॥ चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ॥१३॥ जानुनोः ॥ ॐ अर्द्रांयः करिणीं यष्टीं सुवर्णां हेममालिनीम् ॥ सूर्यांहिर-ण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ॥१४॥ जंघयोः ॥ ॐ ताम्म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् ॥ यस्यां हिरण्यं प्रभूतिं गावोदास्योश्वान्विंदेयं पुरुषानहम् ॥१५॥ चरणयोः ॥ ॐ यः शुचिःप्रयतोभूत्वाजुहुयादाज्यमन्वहम् ॥ सूक्तं पंचदशर्चं च श्रीकामः सततंजपेत् ॥१६॥ सर्वाङ्गे ॥

ततः कलशोपरि स्वर्णमयीं श्री दुर्गा प्रतिमां अग्न्युत्तारण-पूर्वकं संनिधाय पट्टवस्त्रैराच्छाद्य पुरुष सूक्तेन श्रीसूक्तेनपुराणोक्त मार्गेण वा षोड़शोपचारैः यथोपचारैर्वा संपूजयेत् ॥ तद्यथा ॥

अथाग्न्युत्तारण विधिः ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तत्र तावत्साचार्यो यजमानः ॥ देशकालौसंकीर्त्य ॥ अस्याः स्वर्णमयी श्री दुर्गा प्रतिमायाः। घटनादि दोषपरिहारार्थं अग्न्युत्तारण पूर्वकं प्राणप्रतिष्ठां करिष्ये ॥ मूर्तिं घृतेनाभ्यज्य ॥ तदुपरि दुग्ध मिश्रित जलधारां कुर्यात् पातयेद्वा ॥

अग्न्युत्तारण मन्त्राः ॥

ॐ समुद्रस्यत्वा व्वकयाग्ने परिव्ययामसि ॥ पावकोऽअस्मभ्यर्ठ० शिवोभव ॥१॥ॐहिमस्य त्वा जरायुणाग्ने परिव्ययामसि ॥ पावकोऽअस्मभ्यर्ठ० शिवोभव ॥२॥ ॐ उपज्मन्नुपवेतसे वतरनदीष्वा ॥ अग्ने पित्तमपामसि मण्डूकिताभिरागहि ॥ सेमन्नोयज्ञं पावकवर्ण र्ठ० शिवंकृधि ॥ ३ ॥ ॐ अपामिदं न्ययनर्ठ० समुद्रस्य निवेशनम् ॥ अन्याँस्तेऽअस्मत्तपन्तु हेतयः ॥ पावको अस्मभ्यर्ठ० शिवोभव ॥ ४ ॥ ॐ अग्ने पावक रोचिषामन्द्रयादेवजिह्वया ॥ आदेवान्वक्षियक्षि च ॥ ५ ॥ ॐ सनः पावकदीदिवोग्ने देवाँ २ ऽइहावह ॥ उपयज्ञर्ठ० हविश्च नः ॥ ६ ॥ॐ पावक या यश्चितयन्त्वा कृपाचामनूरुरुच ऽ उषसोनु भानुना ॥ तूर्वन्नया मन्नेतशस्य नूरणऽआयोघृणेनततृषाणोऽ अजरः ॥७॥ ॐ नमस्ते हरसेशोचिषे नमस्तेऽअस्त्वर्चिषे ॥ अन्यांस्ते अस्मपन्तु हेतयः पावको अस्मभ्यर्ठ० शिवोभव ॥८॥ ॐ नृषदेव्वेडप्सुषदेव्वेड्वर्हिषदेव्वेड्वनसदेव्वेड् स्वर्विदेवेट् ॥ ९ ॥ ॐ ये देवादेवानांयज्ञियायज्ञिया ॐ संवत्सरीण मुपभागमासते ॥ अहुतादोहविषोयज्ञेऽअस्मिन्त्स्वयं पिवन्तुमधुनोघृतस्य ॥ १० ॥ ॐ येदेवा देवेष्वधि देवत्वमा यन्ये ब्रह्मणः पुरऽएतारोऽअस्य ॥ येभ्योनऽऋते पवतेधाम किञ्चननतेदिवोन पृथिव्याऽअधिस्नुषु ॥११॥ ॐ प्राणदाऽअपानदा व्यानदा व्वर्चोदा वरिवोदाः ॥ अन्यांस्तेऽअस्मत्तपन्तुहेतयः पावकोऽअस्मभ्यर्ठ० शिवोभव ॥१२॥ ततः

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

प्राणप्रतिष्ठां कुर्यात् ॥ ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षं हं सः सोहम् अस्याः श्रीदुर्गा प्रतिमायाः प्राणा इह प्राणाः ॥ ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षं हं सः सोहं अस्याः श्री दुर्गा प्रतिमायाः जीव इहस्थितः ॥ ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षं हं सः सोहं अस्याः श्री दुर्गा प्रतिमायाः सर्वेन्द्रियाणि वाङ् मनस्त्वक्चक्षुः श्रोत्र जिह्वाघ्राणपाणि पाद पायूपस्थानि इहैवागत्य सुखंचिरंतिष्ठन्तुस्वाहा ॥ ॐ मनोजूतिर्जुषतामाजस्य बृहस्पतिर्यज्ञ मिमन्तनोत्वरिष्टं यज्ञठं० समिमन्दधातु ॥ विश्वे देवासऽइहमादयन्तामों ३ प्रतिष्ठ ॥ ॐ एषवै प्रतिष्ठा नामयज्ञो यत्रैतेन यज्ञे न यजन्ते सर्वमेव प्रतिष्ठितम्भवति ॥ इति प्रतिष्ठाप्य ॥ अथ नेत्रोन्मीलनम् ॥ ॐ बृत्रस्यासि कनीन कश्चक्षुर्दाऽअसिचक्षुर्मेदेहि ॥ गंधादि पंचोपचारान्दत्वा संस्कारसिद्धये षोडषप्रणवावृत्तिं कुर्यात् ॥ अनेन अस्याः श्री दुर्गा प्रतिमायाः गर्भाधानादि षोडश संस्कारान्संपादयामि ॥ इति वदेत् ॥ ततः श्री दुर्गा प्रतिमां प्रधान कलशोपरिधृत्वा षोड़शोपचारैः पञ्चोपचारैः यथोपचारैर्वा पूजयेत् ॥

फूल हाथों में लेकर अपने हृदय में ध्यान करना ॥

ॐ जटाजूट समायुक्तामर्द्धेन्दु कृतलक्षणाम् ॥ लोचनत्रय संयुक्ताम्पद्मेन्दु सदृशाननाम् ॥ १ ॥ अतसीपुष्प वर्णाभां सुप्रतिष्ठां सुलोचनाम् ॥ नवयौवन संपन्नां सर्वाभरण भूषिताम् ॥२॥ सुचारुवदनां तद्वत्पीनोन्नतपयोधराम् ॥ त्रिभंगस्थान संस्थान महिषासुरमर्दिनीम् ॥ ३ ॥ त्रिशूलं दक्षिणेदद्यात्खड्गं चक्रं क्रमादधः ॥ तीक्ष्णबाणं तथाशक्तिं वामतोपि निबोधत ॥ ४ ॥ खेटकं पूर्ण चापं च पाशमंकुशमूर्द्ध्वजम् ॥ घंटां वा परशुं वापि वामतः सन्निवेदयेत् ॥५॥ अधस्तान्महिषं तद्वद्विशिरस्कं प्रदर्श-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

येत् ॥ शिरश्छेदोद्भवंतद्वद्दानवं खड्गपाणिनम् ॥६॥ हृदि शूलेन-निर्भिन्नं निर्दयन्त्र विभूषितम् ॥ रक्तरक्तीकृताङ्गश्च रक्तविस्फारिते क्षणम् ॥७॥ वेष्टितं नागपाशेन भ्रुकुटीभीषणाननम् ॥ सपाश वामहस्तेन धृतकेशं च दुर्गया ॥८॥ वमद्रुधिरवक्त्रश्च देव्याः सिंहं प्रदर्शयेत्॥ देव्यास्तु दक्षिणं पादंसमंसिंहोपरि स्थितम् ॥९॥ किंचिदूर्ध्वं तथा वाममंगुष्ठो महिषोपरि ॥ स्तूयमानश्च तद्रूपममरैः सन्निवेशयेत्॥१०॥उग्रचण्डाप्रचण्डा च चण्डोग्रा चण्ड नायिका॥ चण्डा चण्डवती चैव चंडरूपातिचण्डिका ॥११॥ आभिः शक्ति भिरष्टाभिः सततंपरिवेष्टितम् ॥ चिन्तयेत्सततं देवीं धर्म कर्मार्थ मोक्षदाम् ॥१२॥

माथे में जटाओं के जूड़े पर अर्द्ध चंद्रमा सुशोभित है। बड़े २ सुन्दर तीन नेत्र कमल के खिले हुए फूल के समान सुन्दर गोल मुख ॥ १ ॥ अलसी के पुष्प के सदृश शरीर का नीला रंग नवीन यौवन सम्पन्न उत्तम आभूषणों (गहनों) से शोभायमान ॥ २ ॥ उत्तम शरीर कठोर और उन्नत पयोधी तीन जगह से झुकी हुई महिषासुर को मर्दन करने वाली ॥ ३ ॥ दाहिने हाथों में त्रिशूल, खड्ग, चक्र, पैना बाण, भाला ॥ ४ ॥ वाम हाथों में ढाल, धनुष, पाश (नाग पाश), अंकुश, घंटा वा फरसा धारण करे हुए ॥ ५ ॥ नीचे पृथ्वी में महिषासुर के दो सिर कटे हुए तथा महिषासुर दानव हाथ में तलवार लेकर युद्ध करते हुए के ॥ ६ ॥ हृदय को त्रिशूल से चीर दिया उससे उसके सब अंग रक्त से भीग गये और दोनों नेत्र फटे रह गये ॥ ७ ॥ नागपाश से दानव के गले को बाँध दिया इससे उसकी भौंह और मुँह भयानक प्रतीत होने लगा तथा बाएँ हाथ से दुर्गा भगवती ने उस दानव के सिर के बाल एवं पाश को धारण कर लिया ॥ ८ ॥ उस समय दानव ने रुधिर की वमन करते हुए देवी के सिंह को और देवी के दाहिने पैर को बराबर सिंह के ऊपर रखा देखा ॥ ९ ॥ और उसी प्रकार वाम पैर के अंगूठे को थोड़ा उठा हुआ उस दानव ने अपने ऊपर विराजमान देखा इस रूप को देखकर इन्द्रादि सब देवगण स्तुति करने लगे ॥ १० ॥ उग्र चण्डा, प्रचण्डा, चण्डोग्रा, चण्ड नायिका, चण्डा, चण्डवती,

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

चण्डरूपा, अति चण्डिका ॥ ११ ॥ इन आठ शक्तियों से निरन्तर वेष्टित धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष देने वाली भगवती का हर समय ध्यान करता हूँ ॥ १२ ॥

इति ध्यात्वा करस्थित पुष्पाणि कलशे मूर्तौ वा क्षिपेत् ॥

हाथ में फिर फूल लेकर प्रार्थना करै

ॐ महिषघ्नीं महादेवीं कुमारीं सिंहवाहिनीम् ॥ दानवांस्तर्जयन्तीश्च सर्वकामदुघां शिवाम् ॥१॥ ध्यायामि मनसा दुर्गां नाभिमध्ये व्यवस्थिताम् ॥ आगच्छ वरदे ! देवि ! दैत्यदर्पनिपातिनि ! ॥२॥ पूजांगृहाण सुमुखि ! नमस्ते शङ्करप्रिये ! ॥ सर्वतीर्थमयं वारि सर्वदेवसमन्वितम् ॥३॥ इमं घटं समागच्छ तिष्ठ देवगणैः सह ॥ दुर्गे ! देवि ! समागच्छ सान्निध्यमिह कल्पय ॥ ४ ॥ बलिपूजां गृहाणत्वमष्टाभिः शक्तिभिः सह ॥ अस्मिन् घटे समागच्छ स्थितिं मत्कृपया कुरु ॥ रक्षां कुरु सदा भद्रे ! विश्वेश्वरि ! नमोस्तुते ॥ एह्येहि दुर्गे ! दुरितौघनाशिनि ! ॥ प्रचण्ड दैत्यौघ विनाशकारिणि ! ॥ उमे ! महेशार्द्ध शरीरधारिणि ! ॥ स्थिरा भव त्वं मम यज्ञकर्मणि ॥

इति देवीं ध्यात्वा मूलाधारात्कुण्डलिनीमुत्थाप्य ॥ तयासह शिवेन संयोज्य वायुबीजेन नासापुटेन देवीं कुसुमाञ्जलावानीय—

एहि दुर्गे ! महाभागे ! रक्षार्थं मम सर्वदा ॥
आवाहयाम्यहं देवि ! सर्व कामार्थ-सिद्धये ॥

इत्यनेन पुष्पाञ्जलिं कलशे यन्त्रे वा निधाय ॥ आत्मानं देवी रूपं विभाव्य पूजयेत् ॥ तत्रमंत्राः ॥

अथ वेदोक्त दुर्गापूजन विधिः

[1]अथ आवाहनम् ॥

ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजां ॥ चन्द्रां हिरण्मयीं

टि० १ तत्रैववाचस्पतौ ॥ कुर्यादावाहनंमूर्तौमृन्मय्यां सर्वदैवहि ॥ प्रतिमायां जले वह्नौ नावाहनविसर्जनम् ॥

आवाहनादि की मुद्रा यन्त्र पूजन में लगाई जायँगी ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

लक्ष्मीं जातवेदो ममावह ॥ ॐ सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात् ॥ सभूमिर्ठ० सर्वतस्पृत्वात्यतिष्ठद्दशांगुलम् ॥१॥ ॐ आगच्छेहमहादेवि ! सर्वसम्पत्प्रदायिनि ! ॥ यावद्व्रतं समाप्येत तावत्त्वं सन्निधौ भव ॥ इत्यावाहनम् ॥

अनन्तर आसन के लिये पुष्प हाथ में लेकर।।

ॐ तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् ॥ यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम् ॥ ॐ पुरुषएवेदर्ठ० सर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम् ॥ उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति ॥२॥ अनेकरत्नसंयुक्तं नानामणिगणान्वितम् ॥ कार्तस्वरमयं दिव्यमासनं प्रतिगृह्यताम् ॥ इत्यासनम् ॥

भगवती के पैर धुलाने के लिये जल में नीचे लिखे पदार्थ मिलाना
श्यामाक, विष्णुक्रान्ता, कमलपुष्प, दूर्वा, जल आदि
पाद्यम् ॥

ॐ अश्वपूर्वां (र्वां) रथमध्यां हस्तिनादप्रमोदिनीम् ॥ श्रियंदेवीमुपह्वये श्रीर्मादेवीर्जुषताम् ॥ ॐ एतावानस्य महिमातोज्यायांश्चपूरुषः ॥ पादोस्यविश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतन्दिवि ॥३॥ गङ्गादि सर्व तीर्थेभ्यो मया प्रार्थनयाहृतम् ॥ तोयमेतत्सुखस्पर्शं पाद्यार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥ इतिपाद्यम् ॥

अर्घ्यम् ॥

दूर्वा, तिल, दर्भा, सर्षप, यव, पुष्प, अक्षत, चन्दन जल में
मिलाकर अर्पण करना ॥

ॐ कांसोस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम् ॥ पद्मेस्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥ ॐ त्रिपादूर्ध्वउदैत्पुरुषः पादोस्येहाभवत्पुनः ॥ ततो विष्वंव्यक्रामत्साशनानशनेअभि ॥ निधीनां सर्व रत्नानां त्वमनर्घ्यगुणाढ्यसि ॥ सिंहोपरिस्थिते देवि ! गृहाणार्घ्यनमोस्तुते ॥४॥ इत्यर्घ्यम्

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

[1]अथ मधुपर्कम् ॥

दधि मधु घृत समान भाग न हों।

ॐ मधुव्वाताऋतायते मधुक्षरन्तिसिन्धवः ॥ माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः ॥ दधिमधुघृतसमायुक्तं पात्रयुग्मसमन्वितम् ॥ मधुपर्कं गृहाण त्वं शुभदा भव शोभने ! ॥ ५ ॥

अथाचमनम् ॥

ॐ चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियंलोकेदेवजुष्टामुदारां ॥ तां पद्मनेमिंशरणमहंप्रपद्ये अलक्ष्मीर्मेनश्यतां त्वां वृणे ॥ ॐ ततो विराडजायतविराजोऽअधिपूरुषः ॥ सजातोऽअत्यरिच्यतपश्चाद्भूमिमथोपुरः ॥ कर्पूरेणसुगंधेन सुरभिस्वादु शीतलम् ॥ तोयमाचमनीयार्थं देवि ! त्वं प्रतिगृह्यताम् ॥ ६ ॥ इत्याचमनम् ॥

अथ स्नानम् ॥ पहले मलापकर्षण स्नान कराना।

ॐ आदित्यवर्णे तपसोधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथविल्वः ॥ तस्यफलानितपसानुदन्तु मायान्तरायाश्च बाह्या अलक्ष्मीः ॥ ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः संभृतंपृषदाज्यम् ॥ पशूँस्ताँश्चक्रेवायव्यानारण्याग्राम्याश्चये ॥ मन्दाकिन्याःसमानीतैर्हेमांभोरुहवासितैः ॥ स्नानं कुरुष्वदेवेशि ! सलिलैश्च सुगन्धिभिः ॥ इतिस्नानम् ॥७॥

पुनराचमनीयम् ॥

उच्छिष्टोप्यशुचिर्वापि यस्यस्मरणमात्रतः ॥ शुद्धिमाप्नोतितस्मै ते पुनराचमनीयकम् ॥ स्नानवस्त्रोपवीतान्तेऽपितत्स्मृतम् ॥ ८ ॥

सुगन्धित तैल व इत्र मल कर स्नान कराना।

ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि ॥ एवानो दूर्वेप्रतनुसहस्रेणशतेन च ॥ ॐ स्नेहंगृहाण स्नेहेन लोकेश्वरि !

---

१ पाराशरः। सर्पिरेक गुणं प्रोक्तं शोधितं द्विगुणं मधु ॥
मधुपर्क विधौ प्रोक्तं सर्पिषा च समं दधि ॥
घी १ भाग छना हुआ, शहद २ भाग, दधि १ भाग ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

महानघे ! ॥ सर्वलोकेषु शुद्धात्मन् ! ददामि स्नेहमुत्तमम् ॥९॥

अब पंचामृत से स्नान कराना। पहिले दूध से स्नान कराना।

ॐ पयः पृथिव्यांपयओषधीषु पयोदिव्यन्तरिक्षेपयोधाः ॥ पयस्वतीः प्रदिशः सन्तुमह्यम् ॥ कामधेनुसमुद्भूतं सर्वेषांजीवनं परम् ॥ पावनं यज्ञहेतुश्च पयः स्नानार्थमर्पितम् ॥१०॥ शुद्ध जल से स्नान कराना।

दही से स्नान कराना।

ॐ दधिक्राव्णोअकारिषं जिष्णोरश्वस्यवाजिनः ॥ सुरभिनो मुखाकरत्प्रण आयू ꣳ षितारिषत् ॥ पयसस्तु समुद्भूतं मधुराम्लं शशिप्रभम् ॥ दध्यानीतं मया देवि ! स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥११॥ शुद्ध जल से स्नान कराना।

अब घृत से स्नान कराना।

ॐ घृतं घृत पावानः पिवत वसां वसापावानः पिवतान्तरिक्षस्य हविरसि स्वाहा ॥ दिशः प्रदिशऽ आदिशोविदिशऽउद्दिशोदिग्भ्यः स्वाहा ॥ नवनीतसमुत्पन्नं सर्वसंतोषकारकम् ॥ घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥१२॥

पुनः शुद्ध जल से स्नान कराना।

शहद से स्नान कराना।

ॐ मधुनक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिवꣳ रजः ॥ मधु द्यौरस्तुनः पिता ॥ तरुपुष्पसमुद्भूतं सुस्वादु मधुरं मधु ॥ तेजः पुष्टिकरं दिव्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥ १३ ॥

पुनः शुद्ध जल से स्नान कराना।

अब शर्करा (बूरा) से स्नान कराना।

ॐ अपा ꣳ रसमुद्वयसꣳ सूर्ये सन्तꣳ समाहितम् ॥ अपा ꣳ रसस्य योरसस्तं वो गृह्णाम्युत्तममुपयामगृहीतोसीन्द्रायत्वा जुष्टं गृह्णाम्येषते योनिरिन्द्रायत्वा जुष्टतमम् ॥ इक्षुसार समुद्भूता शर्करा पुष्टिकारिका ॥ मलापहारिका दिव्या

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥१४॥ फिर शुद्ध जल से स्नान कराना ॥

[1]पंचामृत मिलाकर स्नान कराना।

ॐ पंचनद्यः सरस्वतीमपियन्ति सस्रोतसः ॥ सरस्वती तु पंचधा सो देशे भवत्सरित् ॥ पयोदधि घृतं चैव मधु च शर्करान्वितम् ॥ पंचामृतं मयानीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥ १५ ॥

शुद्ध स्नान के बाद गन्ध (चन्दन) से स्नान कराना।

ॐ गन्ध द्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम् ॥ ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वयेश्रियम् ॥ मलयाचलसंभूतं चन्दनागरु संभवम् ॥ चन्दनं देवि! देवेशि ! स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥१६॥

फिर शुद्ध जल से स्नान कराना।

सुगन्धित (उबटना) लगाकर स्नान कराना।

ॐ अर्ठ० शुनातेऽअर्ठ० शुः पृच्यताम्परुषापरुः ॥ गन्धस्ते सोम मवतु मदाय रसोऽअच्युतः ॥

नानासुगन्धि द्रव्यं च चन्दनं रजनीयुतम् ॥
उद्वर्त्तनं मया दत्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥१७॥

अब शुद्ध जल से स्नान कराना।

ॐ शुद्धवालः सर्व शुद्ध वालो मणिवालस्तऽ आश्विनाः श्येतः श्येताक्षो ऽरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णायामाऽअवलिप्ता रौद्रा नभोरूपाः पार्जन्याः ॥

पुनराचमनीयं समर्पयामि नमः ॥ आगे श्री[1] सूक्त वा पुरुष सूक्त के १६ मन्त्रों से मूर्ति पर शंख से महाभिषेक करना चाहिये। तिसके बाद दो वस्त्र (धोती दुपट्टा) वा लेंगा ओढ़नी आँगी धारण कराकर सिंहासन व कलश पर दुर्गा-मूर्ति को स्थापित कर पूजन करना।

---

१ स्कांदे—क्षीराद्दशगुणं दध्ना घृतेनैवदशोत्तरम्।
मधुनातद्दशगुणंसितयातुततोधिकम् ॥

१—श्री सूक्त के मन्त्र ३४ सफे से छपे हैं।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

दो वस्त्र ॥

ॐ उपैतुमां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह ॥
प्रादुर्भूतो सुराष्ट्रेस्मिन् कीर्तिं वृद्धिं ददातु मे ॥
तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतश्चृचः सामानि जज्ञिरे ॥
छन्दाश्ंसि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत ॥
पट्टकूलयुगं देवि ! कंचुकेन समन्वितम् ॥
परिधेहि कृपां कृत्वा दुर्गे ! दुर्गतिनाशिनि ! ॥

इति युग्म वस्त्रम् ॥ पुनराचमनीयम् ॥

अथोपवीतम् ॥

ॐ क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहं ॥ अभूतिमसमृद्धिं च सर्वान्निर्णुद मे गृहात् ॥ ॐ तस्मादश्वाऽअजायन्त येकेचो भयादतः ॥ गावोहजज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाताअजावयः ॥

स्वर्ण-सूत्रमयं दिव्यं ब्रह्मणा निर्मितं पुरा ॥
उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेश्वरि ॥

इति यज्ञोपवीत के बाद आचमन कराना ।

अथ चन्दन चढ़ाना ॥

ॐ गन्ध द्वारां दुराधर्षांनित्यपुष्टां करीषिणीम् ॥
ईश्वरीं सर्व भूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥
ॐ तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन्पुरुषञ्जातमग्रतः ॥
तेन देवा अयजन्त साध्याऽऋषयश्च ये ॥
श्रीखण्डचन्दनंदिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम् ॥
विलेपनं च देवेशि ! चन्दनं प्रतिगृह्यताम् ॥

इति चन्दनम् ॥ सौभाग्य सूत्र दानम् ॥

ॐ सौभाग्यसूत्रं वरदे ! सुवर्ण-मणि-संयुतम् ॥
कंठे बध्नामि देवेशि ! सौभाग्यं देहि मे सदा ॥
कंठ सूत्रं समर्पयामि नमः ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अक्षत चढ़ाना।

ॐ अक्षन्नमीमदन्तह्यवप्रियाऽअधूषत ॥ अस्तोषतस्वभानवो विप्रानविष्ठयामतीयोजान्विन्द्रते हरी ॥

अक्षतान्निर्मलान् शुद्धान् मुक्तामणिसमन्वितान् ॥ गृहाणेमान्महादेवि ! देहि मे निर्मलां धियम् ॥ इत्यक्षतान् ॥

हरिद्राचूर्ण चढ़ाना।

हरिद्रारञ्जिते देवि ! सुखसौभाग्यदायिनि ॥
तस्माच्चांपूजयाम्यत्र सुखं-शान्तिं प्रयच्छ मे ॥

हरिद्राचूर्णं समर्पयामि नमः ॥

गुलाल चढ़ाना।

कुंकुमं कान्तिदं दिव्यं कामिनीकामसंभवम् ॥ कुंकुमेनार्चिते देवि ! प्रसीद परमेश्वरि ! ॥

इति कुङ्कुमं (गुलाल) समर्पयामि नमः ॥

सिंदूर।

सिन्दूरमरुणाभासं जपाकुसुमसन्निभम् ॥ अर्पितंते मया देवि ! प्रसीद परमेश्वरि ! ॥

सिंदूरं समर्पयामि नमः ॥

कज्जल चढ़ाना।

चक्षुर्भ्यां कज्जलंरम्यं सुभगे ! शान्तिकारकम् ॥ कर्पूरज्योतिरुत्पन्नं गृहाण परमेश्वरि ! ॥

इति नेत्रे कज्जलं समर्पयामि नमः ॥

दूर्वाङ्कुर चढ़ाना (क्षेपक है)

ॐ आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिंगलांपद्ममालिनीम् ॥ चन्द्रांहिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदोमावह ॥

ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्तीपरुषः परुषस्परि ॥ एवानोदूर्वे प्रतनु सहस्रेण शतेनच ॥ दूर्वादले श्यामलेत्वं महीरूपेहरिप्रिये ! ॥ अतोदूर्वाभिर्भवतीं पूजयामि सदा शिवे ! ॥

इति दुर्वाङ्कुरान् समर्पयामि नमः ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

विल्वपत्र अर्पण करना।

ॐ आर्द्रां यः करिणींयष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम् ॥ सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदोम आवह ॥ ॐ नमो विल्मिने च कवचिने च नमो वर्मिणे च व्वरूथिने च नमः ॥ श्रुताय च श्रुतसेनाय च नमो दुन्दुभ्याय चाहनन्याय च नमः ॥ अमृतोद्भवः श्री वृक्षोमहादेवप्रियः सदा ॥ विल्वपत्रं प्रयच्छामि पवित्रं ते सुरेश्वरि ! ॥

इति विल्वपत्राणि समर्पयामि नमः ॥

पल्लव अर्पण करना।

ॐ तांम आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् ॥ यस्यां हिरण्यं प्रभूतिं गावोदास्योश्वान् विन्देयंपुरुषानहम् ॥ ॐ अश्वत्थेवो निषदनं पर्णेवोव्वसतिष्कृता ॥ गोभाजइत्किलासथयत्सनवथ पूरुषम् ॥ गृह द्वारे चोग्रमपिदुष्टासुर निवर्हिणि ॥ पूजां करोमि चार्वंगि ! पल्लवैर्नंदनोद्भवैः ॥

इति पल्लवान्समर्पयामि नमः ॥

फलमाला अर्पण करना।

ॐ महादेवी च विद्महे विष्णु पत्नीं च धीमहि ॥ तन्नो देवीः प्रचोदयात् ॥ ॐ याः फलनीर्याऽअफलाऽअपुष्पायाश्चपुष्पिणीः ॥ वृहस्पति प्रसूतास्तानोमुञ्चन्त्वर्ठ० हसः ॥ शरत्काले समुद्भूतां निशुम्भासुर मर्दिनी ! ॥ फलमालां वरां देवि ! गृहाण सुरपूजिते ! ॥

इति फलमालां समर्पयामि नमः ॥

* रत्नमाला धारण कराना।

ॐ परिवाजपतिः कविरग्निर्हव्यान्यक्रमीत् ॥ दधद्रत्नानिदा-

---

* मुक्ता माणिक्य वैडूर्य। गोमेदान्वज्रविद्रुमौ ॥
पुष्परागं मरकतं गरुडोद्गार (नीलम्) मेवच ।
एभिस्तुग्रथिता 'स्वर्णेरत्नमालेति' कथ्यते ॥ —शारदायां ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

शुभे ॥ ॐ कर्दमेनप्रजाभूता मयि सम्भ्रम कर्दम ॥ श्रियं वासय मे गृहे मातरं पद्म मालिनीम् ॥ मुक्ताफलयुतां मालां रत्नवैडूर्य सुप्रभाम् ॥ माणिक्यस्वर्ण ग्रथितां गृह्यतां वरदे ! नमः ॥

इति रत्नमालां समर्पयामि नमः ॥

फूलों की माला धारण कराना ।

ॐ आपःस्रजन्तुस्निग्धानिचिक्लीत वसमेगृहे ॥ (नो) निचदेवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले ॥ ॐ श्रीश्चतेलक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वेनक्षत्राणिरूपमश्विनौव्यात्तम् ॥ इष्णन्निषाणामुम्मइषाण सर्वलोकम्मइषाण ॥ पद्म शंखज पुष्पादि शतपत्रैर्विचित्रताम् ॥ पुष्पमालां प्रयच्छामि गृहाण त्वं सुरेश्वरि ! ॥

इति पुष्पमालां समर्पयामि नमः ॥

पुष्प चढ़ाना ।

ॐ मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि ॥ पशूनां रूप मन्नस्य मयिः श्रीः श्रयतां यशः ॥

ॐ यत्पुरुषंव्यदधुः कतिधाव्य कल्पयन् ॥ मुखङ्किमस्यासीत्किम्बाहूकिमूरूपादाउच्येते ॥ पुष्पैर्नानाविधैर्दिव्यैः कुमुदैरथचम्पकैः ॥ पूजाते क्रियते देवि पुष्पाणि प्रतिगृह्यताम् ॥

मंदारपारिजातादि पाटली केतकानिच ॥
जाती चंपक पुष्पाणि गृहाणेमानि शोभने ! ॥

इति पुष्पाणि समर्पयामि नमः ॥

दुर्गा प्रदेय पुष्पाणि ।

कुन्दमन्दार पुन्नाग पाटली नाग केशरम् ॥ आरग्वधं कर्णिकारं जयन्ती नवमल्लिका ॥१॥ सौगन्धिकं सकंकोलं पुन्नागाशोकमल्लिका ॥ अन्यान्यपि सुगन्धीनि पुष्पपत्राणिदेशिकैः ॥२॥

इति शक्ति पल्लवे ॥

अलङ्कारम् ।

हार-कंकण-केयूर-मेखला-कुंडलादिभिः ॥ रत्नाढ्य कुंडलो-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पेतं भूषणं प्रतिगृह्यताम् ॥

अलङ्काराभावे अक्षतान् समर्पयामि नमः ॥

सुगन्धित इत्र चढ़ाना ।

ॐ अहिरिवभोगैः पर्येतिवाहुं ज्यायाहेतिंपरिवाधमानः ॥ हस्तघ्नोविश्वाव्वयुनानिविद्वान्पुमान्पुमाꣳ सम्परिपातुविश्वतः ॥ चन्दनागरु कर्पूर कुंकुमं रोचनं तथा ॥ कस्तूर्यादि सुगन्धांश्च सर्वांगेषु विलेपयेत् ॥

इति परिमल (इत्र) द्रव्यं समर्पयामि नमः ॥

मालान्त पूजन के बाद अङ्ग पूजा करना ।

ॐ दुर्गायै नमः पादौ पूजयामि नमः ॥ ॐ महाकाल्यै नमः गुल्फौ पूजयामि नमः ॥ ॐ मंगलायै नमः जानुद्वयं पूजयामि नमः ॥ ॐ कात्यायन्यै नमः हृदयं पूजयामि नमः ॥ ॐ भद्रकाल्यै नमः कटिं पूजयामि नमः ॥ ॐ कमलवासिन्यै नमः नाभिं पूजयामि नमः ॥ ॐ शिवायै नमः उदरं पूजयामि नमः ॥ ॐ क्षमायैनमः हृदयं पूजयामि नमः ॥ ॐ कौमार्यै नमः स्तनौ पूजयामि नमः ॥ ॐ उमायैनमः हस्तौ पूजयामि नमः ॥ ॐ महागौर्यै नमः दक्षिणबाहुं पूजयामि नमः ॥ ॐ रमायै नमः स्कन्धौपूजयामि नमः ॥ ॐ महिषमर्दिन्यै नमः नेत्रे पूजयामि नमः ॥ ॐ सिंहवाहिन्यै नमः मुखं पूजयामि नमः ॥ ॐ माहेश्वर्यै नमः शिरः पूजयामि नमः ॥ ॐ कात्यायन्यै नमः सर्वाङ्गं पूजयामि नमः ॥ इत्यङ्ग पूजनम् ॥

अथ धूप अर्पण करना व अक्षत छोड़कर घंटा बजाना ।

ॐ यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम् ॥ सूक्तं-पंच दशर्चञ्च श्रीकामः सततंजपेत् ॥ ॐ धूरसि धूर्व धूर्वतन्धूवतं योऽस्मान्धूर्वति तं धूर्वयं वयं धूर्वामः ॥ देवानामसिवन्हितमर्ठ० सस्नितमं पप्रितमञ्जुष्टतमन्देवहूतमम् ॥ दशाङ्गगुग्गुलं धूपं चन्द-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

नागरु संयुतम् ॥ समर्पितं मया भक्त्या महादेवि ! प्रगृह्यताम् ॥

धूप पात्रं देवता वामे, इति धूपमाघ्रापयामि नमः ॥

अथ दीपक जलाना व अक्षत छोड़कर घंटा बजाना ।

ॐ सरसिजनिलयेसरोजहस्ते धवलतरांशुकगन्धमाल्यशोभे ॥ भगवति ! हरिवल्लभे ! मनोज्ञे ! त्रिभुवनभूतिकरि ! प्रसीद मह्यम् ॥ ॐ अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा ॥ अग्निर्वर्चोज्योतिर्वर्चः स्वाहा सूर्यो वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा ॥ ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा ॥ घृतवर्तिसमायुक्तं महातेजोमहोज्वलम् ॥ दीपं दास्यामि देवेशि ! सुप्रीताभवसर्वदा ॥

इति दीपं दर्शयेत् घृतदीपं सितवर्ति युतं देवतादक्षभागे ।
तैल दीपं रक्तवर्ति युतं देवता वाम भागे ।

अथ नैवेद्यम् ॥

नैवेद्यं निवेदयामिनमः ॥ जलेनाभ्युक्ष्य ॥ गंधपुष्पाभ्यामाच्छाद्य ॥ धेनुमुद्रया अमृतीकृत्य ॥ योनिमुद्रां प्रदर्श्य ॥ सत्यन्त्वर्तेन परिषिञ्चामि इति प्रातः (ऋतंत्वासत्येन परिषिञ्चामि इति सायं) ॥ घंटांवादयेत् ॥

प्राणमुद्रां प्रदर्श्य ॥ ॐ प्राणाय स्वाहा, अंगुष्ठ अनामिका कनिष्ठाभिः ॥ ॐ अपानाय स्वाहा अंगुष्ठ तर्जनीमध्यमाभिः ॥ ॐ उदानाय स्वाहा अंगुष्ठ मध्यमाऽनामिकाभिः ॥ ॐ व्यानाय स्वाहा अंगुष्ठतर्जनीमध्यमाभिः ॥ ॐ समानाय स्वाहा सर्वांगुलीभिः ॥ ॐ आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम् ॥ सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ॥ ॐ नाभ्याआसीदन्तरिक्षꣳ० शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत ॥ पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकां३ अकल्पयन् ॥ अन्नं चतुर्विधं स्वादु रसैः षड्भिः समन्वितम् ॥ नैवेद्यं गृह्यतां देवि ! भक्तिं मेह्यचलां कुरु ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

नैवेद्यं निवेदयामि नमः ॥

मध्ये-मध्ये आचमनीयं समर्पयामिनमः ॥ उत्तरापोषणार्थेपुनः पुनर्नैवेद्यं निवेदयामि नमः ॥ पुनराचमनीयं समर्पयामि नमः ॥

आचमनम् ॥

ॐ आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं पिङ्गलां पद्म-मालिनीम् ॥
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ॥
ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञ मतन्वत ॥
वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्मइध्मःशरद्धविः ॥
आचम्यतां त्वया देवि ! भक्तिं मे ह्यचलां कुरु ॥
ईप्सितं मे वरं देहि परत्र च परां गतिम् ॥

आचमनं समर्पयामि नमः ॥

करोद्वर्तनम् ॥

करोद्वर्तनकं देवि ! सुगन्धैः परिवासितैः ॥
ईप्सितं मे वरं देहि परत्र च पराङ्गतिम् ॥
कराद्वर्तनार्थे गन्धं समर्पयामि नमः ॥

हस्त प्रक्षालनार्थे जलम् ॥

गन्धतोयं समानीतं सुवर्णकलशे स्थितम् ॥
हस्तप्रक्षालनार्थाय पानीयं ते निवेदये ॥

ऋतु फलम् ॥

ॐ याः फलिनीर्याअफलाअपुष्पा याश्चपुष्पिणीः ॥ बृह-स्पति प्रसूतास्ता नोमुञ्चन्त्वर्ठ० हसः ॥ द्राक्षा खर्जूर कदली पन-साम्रकपित्थकम् ॥ नारिकेलेचुजंबादि फलानि प्रतिगृह्यताम् ॥ ऋतुफलानि समर्पयामि नमः ॥

ताम्बूल पुङ्गीफलम् ॥

ॐ तांमआवह जात वेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् ॥ यस्यां हिरण्यं प्रभूतिं गावो दास्योश्वान्विन्देयं पुरुषानह ॥ ॐ सप्ता-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

स्या सन्परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः ॥ देवा यद्यज्ञं तन्वाना-अवघ्नं पुरुषं पशुम् ॥ एलालवङ्गकस्तूरीकर्पूरैः पुष्पवासितां ॥ वीटिकां मुखवासार्थमर्पयामि सुरेश्वरि ! ॥

दक्षिणाद्रव्यम् ॥

ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेकआसीत् ॥ सदाधार पृथिवींद्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥ पूजाफलसमृध्यर्थं तवाग्रे स्वर्णमीश्वरि !॥ स्थापिता तेन मे प्रीता पूर्णान्कुरु मनोरथान् ॥

ध्यानम् ॥

दुर्गे ! स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः स्वस्थैःस्मृता मतिमतीव शुभां ददासि ॥ दारिद्र्यदुःखभयहारिणि का त्वदन्या सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता ॥ इति नत्वा॥ ॐ देवा आयान्तु यातुधाना अपयान्तु ॥ दुर्गे ! देवि ! यजनं रक्षस्वेति भूमौ प्रादेशं कृत्वा प्रणमेत् ॥

नव दुर्गा पूजनम् ॥ प्रथमं शैलपुत्री पूजनम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः शैलपुत्रि ! इहागच्छ इहतिष्ठ ॥ शैलपुत्र्यै नमः शैलपुत्रीमावाहयामि स्थापयामि नमः ॥ पाद्यादिभिः पूजनं विधाय ॥ ॐ जगत्पूज्ये जगद्वन्द्ये सर्वशक्तिस्वरूपिणि ! ॥ पूजां गृहाण कौमारि ! जगन्मातर्नमोस्तुते ॥ १ ॥

ब्रह्मचारिणी पूजनम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मचारिणि ! इहागच्छ इहतिष्ठ ब्रह्मचारिण्यै नमः ॥ ब्रह्मचारिणीमावाहयामि स्थापयामि नमः ॥ पाद्यादिभिः पूजनं विधाय ॥ ॐ त्रिपुरां त्रिगुणाधारां मार्गज्ञानस्वरूपिणीम् ॥ त्रैलोक्यवंदितां देवीं त्रिमूर्तिं पूजयाम्यहम् ॥ २ ॥

चन्द्रघण्टा पूजनम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः चन्द्रघंटे इहागच्छ इहतिष्ठ चन्द्रघंटायै नमः ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

चन्द्रघंटामावाहयामि स्थापयामिनमः ॥पाद्यादिभिः पूजनंविधाय॥ ॐ कालिकां तु कलातीतां कन्याणहृदयां शिवाम् ॥ कन्याण-जननीं नित्यं कल्याणीं पूजयाम्यहम् ॥ ३ ॥

कूष्माण्डा पूजनम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः कूष्माण्डे इहागच्छ इहतिष्ठ कूष्माण्डायै नमः॥ कूष्माण्डामावाहयामि स्थापयामिनमः॥ पाद्यादिभिः पूजनं विधाय ॥ ॐ अणिमादिगुणोदारां मकराकारचक्षुषम् ॥ अनन्त शक्ति भेदां तां कामाक्षीं पूजयाम्यहम् ॥ ४ ॥

स्कन्दमाता पूजनम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः स्कन्दमातः ! इहागच्छ इहतिष्ठ स्कन्दमात्रे नमः॥ स्कन्द मातरमावाहयामि स्थापयामि नमः ॥ पाद्यादिभिः पूजनं विधाय ॥ चण्डवीरां चण्डमायां चण्डमुण्ड प्रभञ्जिनीम् ॥ तां नमामि च देवेशीं चण्डिकां पूजयाम्यहम् ॥ ५ ॥

कात्यायनी पूजनम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः कात्यायनि ! इहागच्छ इहतिष्ठ कात्यायन्यै नमः ॥ कात्यायनीमावाहयामि स्थापयामि नमः ॥ पाद्यादिभिः पूजनं विधाय ॥ ॐ सुखानन्द करीं शान्तां सर्व देवैर्नमस्कृताम् ॥ सर्वभूतात्मिकां देवीं शाम्भवीं पूजयाम्यहम् ॥ ६ ॥

कालरात्री पूजनम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः कालरात्रि ! इहागच्छ इहतिष्ठ कालरात्र्यै नमः॥ कालरात्रीमावाहयामि स्थापयामिनमः॥ पाद्यादिभिः पूजनं विधाय॥ चण्डवीरां चण्डमायां रक्तबीज प्रभञ्जिनीम् ॥ तां नमामि च देवेशीं गायत्रीं पूजयाम्यहम् ॥ ७ ॥

महागौरी पूजनम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः महागौरि ! इहागच्छ इहतिष्ठ ॥ महागौर्यै नमः ॥ महागौरीमावाहयामि स्थापयामि नमः ॥ पाद्यादिभिः

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पूजनं विधाय ॥ ॐ सुन्दरीं स्वर्णवर्णाङ्गीं सुख सौभाग्यदायिनीम् ॥ सन्तोष जननीं देवीं सुभद्रां पूजयाम्यहम् ॥ ८ ॥

सिद्धिदा पूजनम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सिद्धिदे ! इहागच्छ इहतिष्ठ सिद्धिदायै नमः ॥ सिद्धिदामावाहयामि स्थापयामिनमः ॥ पाद्यादिभिः पूजनं विधाय ॥ ॐ दुर्गमे दुस्तरेकार्ये भयदुर्ग विनाशिनि ! ॥ पूजयामि सदा भक्त्या दुर्गां दुर्गतिनाशिनीम् ॥ ९ ॥

इति नव दुर्गा पूजनम् ॥

ज्योतिः पूजनम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः आद्यासर्वसुरौजोद्भव तेजस्वरूप श्री दुर्गायै नमः ॥ ॐ जातवेदसे सुनवामसोममरातीयतो निदहाति वेदः ॥ सनः पर्षदति दुर्गाणि विश्वानावेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः ॥ पाद्यादिभिः पूजनं विधाय ॥

ध्यानम् ॥

प्रधान साधार विकल्प सत्ता स्वभाव भावाद्भुवन त्रयस्य ॥ सा विद्यया व्यक्तमपीह माया ज्योतिः परा पातु जगन्ति नित्यम् ॥ (योगिनी तंत्रे)

देश कालौ संकीर्त्य नव दुर्गा महोत्सवे ॥ श्री दुर्गा प्रसाद सिद्धि द्वारा सर्वापच्छान्ति पूर्वकं ममाभीष्ट सिद्धये निर्विघ्नतया परिसमाप्त्यर्थं वटुक गणेशादि सहितं कुमारी पूजनं करिष्ये ॥

गणेश—वटुक सहित नव कुमारी[1] (कन्या) पूजनम् ॥

वायव्यकोण से प्रारम्भ करके ईशान कोण पर्यन्त आसन बिछाना तिनके ऊपर प्रथम गणेश दूसरा वटुक और नवकुमारियों को बिठाकर पाद्यादि से पूजन करना ॥ यदि ९ कुमारी पूजन की शक्ति न होवे वा न-मिलें तो १ । ३ । ५ । ७ । ९ । गणेश वटुक सहित का पूजन करना ॥

---

१ अथ कुमारी पूजा तत्प्रकारश्च देवीपुराणे ॥ ब्रह्मोवाच ॥ न तथा तुष्यते शक्र ! होमदान जपेन तु ॥ कुमारी भोजनेनात्र यथा देवी

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

MAA KE DARSHAN

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

गणेश पूजनम् ॥

ॐ गं गणपतये नमः ॥ पाद्यादि पूजनं विधाय ॥

ध्यानम् ॥

ॐ उद्यद्दिनेश्वर रुचिं निज हस्त पद्मैः ॥
पाशांकुशाभय वरान्दधतं गजास्यम् ॥
रक्ताम्भ सकल दुःख हरं गणेशं ॥
ध्यायेत्प्रसन्नमखिलाभरणाभिरामम् ॥ १ ॥

प्रसीदति ॥ अत्र नवरात्रे—प्रक्षाल्य पादौ सर्वासां कुमारीणां च वासव । सुलिप्ते भूतले रम्ये तत्र ता आसने स्थिताः ॥ पूजयेद्गन्धपुष्पैश्च स्रग्भिश्चापि मनोरमैः ॥ पूजयित्वा विधानेन भोजनं तासु दापयेत् ॥ खण्डं लड्डु गुडं सर्पि दधिक्षीरं समाक्षिकम् ॥ तासां देयं कुमारीणां शनैस्संभोजयेत्तु ताः ॥ पानीयं याचितं देयमन्नं वा याचितं शुभम् ॥ तास्तृप्तास्तु यदा सर्वास्तदा त्वाचमनंददेत् ॥ आचम्य चाक्षतान्दत्वा त्वया क्षन्तव्य मित्युत ॥ दातुः शिरसि दातव्याः कन्यकाभिरथाक्षताः ॥ तेनापि प्रणिपातस्तु कर्तव्यो भक्ति पूर्वकः ॥ अनेन विधिना शक्र ! देवी क्षिप्रं प्रसीदति ॥ ददाति विविधान्कामान्मनोभीष्टान्सुराधिप ! ॥ राज्यं कृत्वा ततः पश्चाद्देवीलोकञ्च गच्छति ॥ स्कान्देऽपि ॥ एकैकां पूजयेत्कन्यामेकवृद्ध्या तथैव च ॥ द्विगुणं त्रिगुणं वापि प्रत्येकं नवकं वरम् ॥ नवभिर्लभते भूमिमैश्वर्यं द्विगुणेन तु ॥ एक वृद्ध्या लभेत्क्षेम-मेकैकेनश्रियंलभेत् ॥ एकवर्षा तु या कन्या पूजार्थं तां तु वर्जयेत् ॥ गन्ध पुष्प फलादीनां प्रीतिस्तस्या न विद्यते ॥ यथोक्ताऽलाभेतु विवाहि-तापि या पुष्पिणी तावत् पूज्या विवाहान्तरमपि कन्यात्वमुपजायते ॥ तावत्संपूज्यते कन्या यावत्पुष्पं न दृश्यते ॥ इति भगवन्त भास्कर कृत देवी पुराणवचनात् ॥ कामना परत्वेन आसां क्रमेण पूजायां विशेष उक्तः ॥ तत्रैव ॥ दुःख दारिद्र्य नाशाय शत्रूणां नाशनाय च ॥ आयुषे बल वृद्ध्यर्थं कुमारीः पूजयेन्नरः ॥ आयुष्कामस्त्रिमूर्तिं तु त्रिवगस्य फलाप्तये ॥ अपमृत्यु व्याधि पीड़ा दुःखानामपनुत्तये ॥ सौख्य धान्य-धनारोग्य पुत्र पौत्रादि वृद्धये ॥ कल्याणीं पूजयेद्धीमान्नित्यं कल्याण वृद्धये ॥ आरोग्य सुख कामी तु धन कामस्तथैव च ॥ यशस्कामी नरोनित्यं रोहिणीं परिपूजयेत् ॥ विद्यार्थी च जयार्थी च राज्यार्थी च विशेषतः ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ॐ खर्वं स्थूलतनुं गजेन्द्रवदनं लम्बोदरं सुन्दरं,
प्रस्यन्दन्मद गन्धलुब्ध मधुप व्यालोल गण्डस्थलम् ॥
दन्ताघात विदारितारिरुधिरैः सिन्दूर शोभाकरं,
वन्दे शैलसुता सुतं गणपतिं सिद्धिप्रदं कामदम् ॥ २ ॥

वटुक पूजनम् ॥

ॐ वं वटुकाय नमः ॥ पाद्यादि पूजनं विधाय ॥

ध्यानम् ॥

ॐ कर कलित कपालः कुण्डली दण्डपाणिस्तरुण तिमिर नील व्याल यज्ञोपवीती ॥ क्रतु समय सपर्या विघ्नविच्छेद हेतुर्जयति वटुकनाथः सिद्धिदः साधकानाम् ॥

तत्रविधिः ॥

यजमानः पूजयेच्च कन्यानां नवकं शुभम् ॥ द्वि वर्षाद्यादशाब्दान्ताः कुमारीः परि पूजयेत् ॥ १ ॥ अर्थादेक हायनाल्प-

---

शत्रूणां च विनाशार्थी कालिकां पूजयेन्नरः ॥ संग्रामे जय कामश्च चण्डिकां परिपूजयेत् ॥ दुःख दारिद्रय नाशाय नृप सम्मोहनाय च ॥ महापाप विनाशाय शाम्भवीं च प्रपूजयेत् ॥ सर्व लोकेषु शत्रूणामुग्र-साधन कर्मणि ॥ दुर्गां दुर्गार्ति नाशाय पूजयेद्यत्नतो बुधः ॥ सौभाग्य धन धान्यादि वांछितार्थ फलाप्तये ॥ सुभद्रां पूजयेन्मर्त्यो दासी दास विवृद्धये ॥ पूजा प्रकारश्च तत्रैव ॥ प्रातः काले विशेषेण कृताभ्यङ्गो विशेषतः ॥

॥ अथ वर्ज्य कन्या आह ॥

हीनाधिकाङ्गीं कुष्ठादि विकारां कुकुलां तथा ॥ ग्रन्थि स्फुटित सर्वाङ्गीं रक्त पूय व्रणाङ्कितां ॥ जात्यन्धां केकरां काणां कुरूपां तनु रोमशाम् ॥ संत्यजेद्रोगिणीं कन्यां दासी गर्भ समुद्भवाम् ॥

अथ ज्ञाति भेदेन कामना भेदेषु तत्पूज्यतामाह ॥ ब्राह्मणीं सर्व कार्येषु जयार्थे नृप वंशजाम् ॥ लाभार्थे वैश्य वंशोत्थां सुतार्थे शूद्र वंशजाम् ॥ दारुणे चान्त्य जातीयां पूजयेद्विधना नरः ॥

अथ वर्ण भेदेन पूजाभेदः ॥ गौरीं सर्वेष्ट संसिद्धयै पीताङ्गी जय कीर्तये ॥ लाभार्थेऽरुणवर्णाङ्गीमसितामारणादिष्विति क्वचित् ॥ एक वंश समुद्भूतां कन्यां सम्यक् प्रपूजयेदिति ॥ कौलावली तन्त्रे ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वयस्का वर्ज्याः ॥ ता आसने उपवेश्यावाहयेत् मन्त्रेण ॥ अथ-आवाहन मन्त्रः ॥ ॐ मन्त्राक्षर मयीं लक्ष्मीं मातृणां रूप धारिणीम् ॥ नवदुर्गात्मिकां साक्षात्कन्यामावाहयाम्यहम् ॥ अनेनैव मन्त्रेण नवापि आवाहयेत् ॥ अशक्ता यथाशक्ति एकामपि पूजयेत् ॥ पाद्यादि पूजनं विधाय ॥

द्विवर्षा कुमारी संज्ञा ॥

सर्वस्वरूपे ! सर्वेशे ! सर्वशक्ति स्वरूपिणि ! ॥ पूजां गृहाण कौमारि ! जगन्मातर्नमोस्तु ते ॥ १ ॥

त्रिहायना त्रिमूर्ति संज्ञा ॥

त्रिपुरां त्रिपुराधारां त्रिवर्ग ज्ञान रूपिणीम् ॥ त्रैलोक्य वन्दितां देवीं त्रिमूर्तिं पूजयाम्यहम् ॥ २ ॥

चतुरब्दा कल्याणी ॥

कलात्मिकां कलातीतां कारुण्य हृदयां शिवाम् ॥ कल्याण जननीं देवीं कन्याणीं पूजयाम्यहम् ॥ ३ ॥

पंचवर्षा रोहिणी ॥

अणिमादि गुणाधारामकाराद्यक्षरात्मिकाम् ॥ अनन्तां शक्तिकां लक्ष्मीं रोहिणीं पूजयाम्यहम् ॥ ४ ॥

षडब्दा कालिका ॥

कामचारां शुभां कान्तां कालचक्र स्वरूपिणीम् ॥ कामदां करुणोदारां कालिकां पूजयाम्यहम् ॥ ५ ॥

सप्तहायनी चण्डिका ॥

चण्डवीरां चण्डमायां चण्ड मुण्ड प्रभंजनीम् ॥ पूजयामि-सदा देवीं चण्डिकां चण्डविक्रमाम् ॥ ६ ॥

अष्टवर्षा शांभवी ॥

सदानन्दकरीं शान्तां सर्व देव नमस्कृताम् ॥ सर्व भूतात्मिकां लक्ष्मीं शाम्भवी पूजयाम्यहम् ॥ ७ ॥

नवहायनी दुर्गा ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

दुर्गमे दुस्तरे कार्ये भवदुःख विनाशिनीम् ॥ पूजयामि सदा भक्त्या दुर्गां दुर्गार्ति नाशिनीम् ॥ ८ ॥

दशवर्षा सुभद्रा ॥

सुन्दरीं स्वर्ण वर्णाभां सुख सौभाग्यदायिनीम् ॥ सुभद्र-जननीं देवीं सुभद्रां पूजयाम्यहम् ॥ ९ ॥

नित्य आरती यहाँ करना ॥

कुमारी पूजनान्ते तद्धस्तादक्षतादिकं स्वशिरसि विधाय भक्त्या अनुव्रजेत् सुवासिनीं—ब्राह्मणान् भोजयेत् पश्चात् इष्ट-मित्र बांधवादिना सह स्वयमपि भुंजीत शेष कालं गीत वाद्यादि-भिर्नयेत् ॥

इति कुमारी पूजनम् ॥

अष्ट रात्रे न दोषोऽयं नवरात्रे तिथिक्षये ॥ सूतके पूजनं प्रोक्तं जपदानं विशेषतः ॥ देवी मुद्दिश्य कर्त्तव्यं तत्र दोषो न विद्यते रजस्वलां तथाशौचे ब्राह्मणैश्च सुपूजयेत् ॥ सभर्तृकाणां स्त्रीणां नवरात्रे गंधादि सेवनं न दोषाय ॥ तदुक्तं हेमाद्रौ ॥ गंधालंकार ताम्बूल पुष्पमाल्यानुलेपनैः ॥

कुमारी पूजने विशेषः कौलावली तन्त्रे ॥

एवं प्रणवयोगेन चैतन्यं तत्तुमर्चयेत् ॥ वाणी माया तथा लक्ष्मीर्माया कूर्चद्वयं ततः ॥ एते च प्रणवाः ज्ञेया कुमार्याः परि पूजने ॥ चतुर्दश स्वरेणाढ्यो भृगुविन्द्विन्दु संयुतः ॥ चैतन्य बीजं कथितं साधकानां समृद्धिदम् ॥ एवं द्वाभ्यां त्रिभिश्चैव सप्तधानवधा पुनः ॥ नित्य क्रमेण नियतं पूजयेद्विधि पूर्वकम् ॥ वाग्भवेन जलंदेयं मायया पादशौचकम् ॥ लक्ष्म्याचार्घ्यं प्रदद्यात्तु कूर्चबीजेन चन्दनं ॥ शक्ति बीजेन पुष्पाणि धूपं षष्ठेन दापयेत् ॥ वाग्भवेन पुरक्षोभं मायया च गुणाष्टकम् ॥ श्री बीजेन श्रियोलाभः मायया शत्रु संक्षयः ॥ भैरवेण तु बीजेन षण्डत्वमनुगच्छति ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

न्यासादिकं प्रकुर्वीत् आदौस्वीय क्रमेण तु ॥ कुमार्याङ्के ततः परचाद्विशेषन्यासमुत्तमम् ॥

ततोऽखण्ड दीपदानम् ॥ दीपादि विचारो डामर तन्त्रे ॥

सौवर्णं राजतं ताम्रं कांस्यं लोहं च मार्तिकम् ॥ गोधूम माष मुद्गानां चूर्णेन घटितं तथा ॥ सौवर्णे कार्यसिद्धिः स्याद्रौप्ये वश्यंजगद्भवेत् ॥ ताम्रंतयोरभावेऽपि कांस्ये विद्वेषणंभवेत् ॥ मारणं लौहपात्रेस्यादुच्चाटो मृण्मये तथा ॥ गोधूम-चूर्ण घटिते विवादे विजयो भवेत् ॥ माषजे शत्रुसंस्तंभो मौद्गेस्याच्छान्तिसत्तमा ॥ सन्धिकार्ये नदीकूलद्वयमृत्स्ना समुद्भवम् ॥ अलाभेसर्व पात्राणां कुर्यात्ताम्रं च मार्तिकम् ॥

सुवर्णादिजे दीपे सुवर्णादिमानं तत्रैव ॥

सहस्र पल संख्यायां पात्रं शतपलैः स्मृतम् ॥ शतार्द्धपलमानेतु त्रिंशतापात्रमुत्तमम् ॥ पादोनशत संख्यायां षष्टिकं पात्र मुच्यते ॥ शतमानेतदर्द्धतदधिकं पल संयुतम् ॥ सहस्र संख्यके प्रोक्तं दिग्पले दिग्पलं स्मृतम् ॥ नित्य दीपे प्रमाणं हि पलैः सप्तभिरम्बिके ! ॥

अथ दीप स्वरूपम् ॥

बुध्नेषडंगुलं प्रोक्तमुच्छ्राये च षडंगुलम् ॥ षोड़शांगुल मायामं सुन्दरं पात्रमुत्तमम् ॥ नित्य दीपेतदर्द्धार्द्ध मानं सर्वेषु कर्मसु ॥ (बुध्नं-मूलम्) अथ घृत तैलयोर्विशेषस्तत्रैवोक्तः ॥ गोघृतेन प्रकर्तव्यो दीपः सर्वार्थ सिद्धये ॥ मारणेमाहिषं प्रोक्तमुष्ट्रं विद्वेषणे भवेत् ॥ आविकं शान्तिके प्रोक्तमाजं चोच्चाटने भवेत् ॥ तिलतैलेन वा दीपः कार्यः सर्वार्थ सिद्धये ॥ घृताभावे महेशानि ! मारणे सार्षपेण चेति ॥

अथ वर्तिः ॥

अयुग्मा वर्तिका ग्राह्या एकोत्तर शतावधि ॥ गुरुकार्येऽधिका प्रोक्ता अल्पे अल्पा मता प्रिये ! ॥ सूत्रं श्वेतं तथा पीतं मांजिष्ठं

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

च कुसुम्भकम् ॥ कृष्णं च कर्वुरं चेति ष् कर्मसु नियोजयेत् ॥ सर्वाभावे सितेनैव कुर्याद्वर्त्तीः पृथक् पृथक् ॥

अथ चालनार्थं शलाकापि तत्रैव ॥

षोड़शांगुल माना च सौवर्णीतु शलाकिका ॥ राजतौदुम्बरी वापि सुलक्षा बुध्नका तथा ॥ तीक्ष्णाग्रा सरला मध्ये त्रिशूलेनाङ्किता तथेति ॥

अथ दीपमुखं तत्रैव ॥

पूर्वाभिमुखे तु सर्वाप्तिः स्तम्भोच्चाटनयोस्तथा ॥ रक्षा विद्वेषयोः कार्यं पश्चिमास्यं प्रदीपकम् ॥ लक्ष्मी प्राप्तावुत्तरास्यं मारणे दक्षिणामुखमिति ॥

अथ दीप दाने प्रतिज्ञा ॥

तत्र पूर्वं कलशाग्रे *घटार्गल यन्त्रं षट्कोण यन्त्रं वा विलिख्य ॥ तिथि वाराद्युच्चार्य ॥ अद्येहैतद्दीप शिखा सम संख्य वर्ष सहस्रावच्छिन्न समयपरिच्छिन्न दुर्गानुचरत्व प्राप्ति पूर्वक भगवती प्रीति कामोऽद्यारभ्य नवम्यन्तमहर्निश वातादि दोष रहितमिमं दीपं श्री दुर्गा देवताकं श्री दुर्गायाः पुरतः प्रज्वालयिष्ये ॥ इति प्रतिज्ञाय ॥ उक्त कामेषु तत्तत्कामनामुच्चार्योक्त विधिना दीपं दत्वा तं गंधाक्षतादिभिः पूजयेत् ॥

दीप स्थापने शकुन विघ्नादयो डामर तन्त्रे ॥ तथाहि ॥

दीपस्य शकुनान्वच्मि शृणु देवि ! यथाक्रमम् ॥ येन विज्ञात मात्रेण जायते च फलाफलम् ॥ दीपारम्भे सुरेशानि ! नवदेदशुभं वचः ॥ तस्मिन्काले यदुक्तं हि तत्तथैव भवेद्ध्रुवम् ॥ वर्जयेदशुभां वाणीं तस्मिन्काले विशेषतः ॥ रक्ताम्बरो द्विजोऽव्यङ्गो रक्तमाल्यानुलेपनः ॥ दीपारम्भे समायाति तस्य सिद्धिर्न संशयः ॥ शूद्र वर्णः समायाति सिद्धः प्रोक्तातु मध्यमा ॥ म्लेच्छस्य दर्शने

*घटार्गल यन्त्र प्रकारः ॥ शारदायां ६ पटले ६५ श्लोके ॥ चित्र देखो ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

प्रोक्तं बंधनं दीपदस्य वै ॥ मार्जार मूषकादीनां मध्यमं दर्शनं स्मृतम् ॥ कृते दीप वरे देवि ! वीक्ष्यते च शुभाशुभम् ॥ दीप-ज्वाला समाश्लक्ष्णा जायते यदि सुन्दरि ! ॥ अष्टभिर्दिवसैस्तस्य कार्यसिद्धिर्भवेद्ध्रुवम् ॥ दीप ज्वाला तु देवेशि ! यदि वक्रा भवेत्तदा ॥ नाशस्तस्य च बन्धूनां प्रोक्तः सर्वार्थ नाशकः ॥ खरकङ्क प्रभाज्वाला यदि स्याच्चसुरेश्वरि ! ॥ दीपकर्तुः सविघ्नो वै मरणं जायते ध्रुवम् ॥ दीप ज्योत्स्नाम्बिके ! कृष्णा जायते च सुरार्चिते ! ॥ शत्रूणां जायते कार्यं दीपकर्तुर्निरर्थकम् ॥ कृते दीपे-यदानाशस्तत्क्षणाज्जायतेऽम्बिके! ॥ कार्यसिद्धिर्विलम्बेन भविष्यति न संशयः ॥ कृत दीपस्य नाशःस्यात्प्रहरत्रय मध्यतः ॥ मासे वर्षे तथा प्रोक्ता कार्य्य सिद्धिर्हि सुन्दरि ! ॥ दीपवर्यस्य नाशः स्याद्यदि रात्रौ कदाचन ॥ तस्य गेहे धनं वस्तु नष्टं भवति निश्चितम् ॥ दत्ते दीपे यदि पुनश्चट चटेति ध्रुवम्भवेत् ॥ तदा तस्य च कार्यं वै नष्टंयाति तथादिशेत् ॥ वमतेदीपवर्य्यश्चेच्चौ-रतोभयमाददेत् ॥ दीपपात्रं यदि पुनः वते देवि ! सुन्दरि ! ॥ गोनाशो जायते तस्य दीप कर्तुर्न संशयः ॥ दीपवर्यस्य पात्रं वै भग्नं वै दृश्यते यदि ॥ अष्टादश दिनादर्वाग्यजमानः सबांधवः ॥ श्राद्धदेवस्य सदनं गच्छति प्रिय कामिनि ! ॥ दीपेनष्टे पुनर्दीपं-ज्वालयेन्मूढ़ चेतनः ॥ दीप दाता दीप कर्ता मन्द चक्षुर्भवेत्सदा ॥ कृते दीपे पुनर्वार्ता कारयेद्यदि मानवः ॥ कार्य्य सिद्धि र्हि देवेशि! षण्मासात्स्यादनन्तरम् ॥ प्रज्वालितं दीपवर्य्यमशुचिर्मानवः स्पृशेत् ॥ दीपकर्तुः शरीरे तु व्याधिर्वै जायते नृणाम् ॥ दीप-काष्ठाम्बुमे! श्वानो मार्जारो मूषकादयः ॥ यदि स्पृशन्ति कल्याणि ! ताडनं राजतो दिशेत् ॥ एवं दीपवरे विघ्नाः वहवः संभवन्ति हि ॥ तस्माद्दीपं सुरेशानि ! विलोक्यं तु पदे पदे ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अथ दीपविघ्ने शान्तिः ॥

तत्र शर्करान्य तिलतंडुलैस्सघृतैः कमलैर्वा जयंती मंत्रेण दशांशतो होमं कुर्यादित्यन्ये ॥ नवार्ण मन्त्रेणेत्यपरे ॥ देवि ! प्रहन्नार्ति हरे प्रसीदेति, देवि ! प्रसीदेति, करो तु सानः शुभेति मन्त्राणामन्यतमेन पूर्वोक्त द्रव्येण होमः कार्य इति साम्प्रदायिकाः॥

कलश विसर्जन विधिः ॥

स यजमानो स्वस्ति वाचन पूर्वकं संकल्पं विधाय ॥ देश कालौ संकीर्त्य प्रतिपदि गणपत्यादि स्थापितानां देवानां नारिकेल बलिसहित उत्तर पूजन महं करिष्ये ॥ इति प्रतिज्ञां कृत्वा यथोपचार सहितं गणपत्यादि देवान् प्रपूज्य ॥ ततो शुद्ध नारिकेलं, कूष्मांडं वा गृहीत्वा तं संपूज्य तत्र जीव न्यासादिकं कृत्वा ॥ ॐ महामाये ! जगन्मातः सर्व काम प्रदायिनि ! ॥ ददामि नारिकेल (कूष्मांड) *बलिः प्रसीद वरदाभव ॥ अर्द्ध भागं देव्यग्रे संस्थाप्य पुनः ॐ प्राणाय स्वाहा ॥ ॐ अपानाय स्वाहा ॥ ॐ उदानाय स्वाहा ॥ ॐ व्यानाय स्वाहा ॥ ॐ समानाय स्वाहा ॥ एभिः स्वाहान्त मन्त्रैः पंचाहुतिं ज्योतिरग्नौ जुहुयात् ॥

तत्र यथा कुलाचारमष्टम्यां नवम्यां दशम्यां वा देवी पूजान्ते तां प्रणम्य पुष्पाण्यादाय कृतांजलिः ॥ कुछ महानुभाव यहाँ कलश के ऊपर स्थापित नारियल का बलि देते हैं यह शास्त्र विरुद्ध है ।

*अथ बलिदानम् ॥ १ ॥

अत्र पक्षत्रयं प्रत्यहञ्च बलिन्दद्यादित्येकः ॥ कन्या संस्थे रवौ शक्र ! शुक्लाष्टम्यां प्रपूज्य च ॥ द्रोण पुष्पैश्च विल्वाम्र जाती पुन्नाग चम्पकैः ॥ पञ्चाहं लक्षणोपेतं गन्ध पुष्प समन्वितम् ॥ विधिवत्कालि ! कालीतिजप्त्वा खड्गेन घातयेदिति ॥ देवी पुराण वचनादष्टमी नवम्योरिति द्वितीयः ॥

---

*टिप्पणी निरुत्तर तंत्रे । पूजया लभते पूजां जपात्सिद्धिर्न संशयः ॥ होमेन सर्वसिद्धि स्यात्तस्मात्त्रितयमर्चयेत् ॥

‡ बलिहीने तु दुर्भिक्षं गन्धहीने त्वभाग्यताम् ॥
धूपहीने तथोद्वेगं वस्त्रहीने धनक्षयम् ॥ —भविष्ये ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ॐ उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते देवयन्तस्त्वेमहे ॥ उपप्रयन्तु मरुतः सुदानवऽइन्द्र प्राशूर्भवासचा ॥ १ ॥ ॐ ब्रह्मणस्पते त्वमस्य-यन्तासूक्तस्य बोधितनयंच जिन्व ॥ विश्वन्तद्भद्रं यदवन्ति-देवाबृहद्वदेमविदथे सुवीराः ॥ यऽइमाविश्वा विश्व कर्म्मायोनः पितानपतेनो देहि ॥ २ ॥

सर्व रूपमयी देवी सर्वं देवीमयं जगत् ॥ अतोऽहं विश्वरूपां त्वां नमामि परमेश्वरीम् ॥

विधिहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं यदर्चितम् ॥ पूर्णं भवतु तत्सर्वं त्वत्प्रसादान्महेश्वरि ! ॥ मातः क्षमस्वेत्युक् त्वा ॐ

नवम्यां बलिदानञ्च कर्तव्यं वै यथाविधीति ॥ नवम्यां च विधानाच्छिष्ट समाचाराच्च नवम्यामेव कार्यमिति तृतीयः पक्षः ॥ अत्रदेशाचारात्कुला-चाराद्वा पक्षत्रयान्यतमः पक्ष आदरणीयः ॥ अत्रापि पक्षत्रयं पूर्व पक्षे पक्षत्रयं प्रतिपदमारभ्यनवम्यन्त प्रत्यहं* पूजाजप होम ‡बलिदानाद्यनु-ष्ठानमित्येकः ॥

प्रतिपक्षः सप्तम्यन्तं केवलं पूजा जप बलिदानाद्यनुष्ठानमष्टम्यान्तु सहोममिति द्वितीयः ॥ प्रतिपतोष्टम्यन्तं प्रत्यहं केवलं जप बलिदानाद्य-नुष्ठानं नवम्यां सहोममिति तृतीयः ॥ अत्र पूर्व पक्षमाश्रित्य बलिदानस्य प्राथम्यमङ्गी कृतमुर्वरित पक्षाश्रयणे तु यत्रोचितं तत्रैव कार्यम् शिष्टैरिति ॥

अथ बलिदान प्रकारः

तत्र स्वस्तिवाचनं कृत्वा पशुमानीयाञ्जलिम्बध्वा ॥ प्राणिनामुप-कारार्थं पशुश्रेष्ठ मयाधुना प्रोक्षितश्चण्डिका प्रीत्या मामात्मानञ्च तारये-दितिपठेत् । ततोमेघाकार स्तम्भमध्ये पशुबन्धेबध्वा ॥ उत्तराभिमुखो भूत्वा बलिं पूर्व मुखं तथेति ॥

कालिका पुराणे ॥

पूर्व मुखं पशुं शंखोदकेन स्नापयेत् ॥ वाराही यमुना गङ्गा करतोया सरस्वती ॥ कावेरी चन्द्र भागा च सिन्धु भैरव सागराः ॥ छाग स्नाने महेशानि ! सान्निध्यं कल्पयन्त्विहेतिमन्त्रेण ॥ ततः कुशोदकेन प्रोक्षयेत् ॥ सुरास्त्वां वसवो रुद्रा विमानोत्तम चारिणः ॥ ग्रहा लोकेश्वराः साध्या अश्विनेयौभिषग्वरौ ॥ एतेचान्ये च ऋषयः प्रोक्षन्तु त्वां कुशोदकैः ॥ एवं प्रोक्ष्य ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

दुर्गायैनमः ॥ इत्यैशान्यामेक पुष्पंनिक्षेपेण विसर्जयेत् ॥ ततो-स्थापित कलशोदकेन यजमानाभिषेकः ॥ ततोमृदादिमूर्ति सत्वे-स्रोतसि तत्प्रवाहणं कर्तुमुत्थापयेत् ॥

ॐ उत्तिष्ठ देवि ! चण्डेशि ! शुभां पूजां प्रगृह्य च ॥ कुरुष्व मम कल्याणमष्टाभिः शक्तिभिः सह ॥ ३ ॥ गच्छ गच्छ परं

पशोरङ्गेषु न्यासं कुर्याद्यथा ॥

वाचं ते शुन्धामि प्राणन्ते शुन्धामि चक्षुस्ते शुन्धामि श्रोत्रन्ते शुन्धामि नाभिन्ते शुन्धामि मेढ्रन्ते शुन्धामि पायुन्ते शुन्धामि चरित्रांस्ते शुन्धामि योनि ते क्रूराणि तानि तेसह महोभ्यः प्रोक्षन्तु स्वाहा ॥

शिरो ललाटं हृदये च कर्णौ नाभिश्चकण्ठं गुरुसेफसीच ॥ क्रोडंच पादांश्च तथान्यदङ्गं मुञ्चन्तु शीघ्रं पशु दैवतानि ॥ पशुयोनि प्रसूतोसि बलियोग्य विवृद्धये ॥ विमुच्य रोम कूटानि शीघ्रं गच्छन्तु देवताः ॥ इति ॥ तत्रस्थान्देवानुद्वास्य ॥ पंचोपचारैश्छाग पूजां कृत्वा शृङ्गयोः सिन्दूरमालिप्य माल्यानिवध्नीयात् ॥ ततोऽग्नि दैवतं पशुं दुर्गा प्रीति जनकं विभाव्य सर्वाङ्गे पिशताशिन्यैनमः ॥ इत्यङ्गानि विशोध्य ॥ पशुरुत्पादितो देवैर्यज्ञार्थेषु विधानतः ॥ धर्मार्थ काममोक्षार्थं पशो ! त्वां घातयाम्यहम् ॥ इति तं संप्रार्थ्य ॥ तत उत्तराभिमुखस्तत्कर्ता दक्षिण कर्णं धृत्वा पठेत् ॥ पशु ! त्वं बलिरूपेण मम भाग्यादुपस्थितः ॥ प्रण-मामि ततः सर्वरूपिणं बलिरूपिणम् ॥ चण्डिका प्रीति दानेन दातुराप-द्विनाशनम् ॥ चामुण्डा बलिरूपाय बले ! तुभ्यं नमोस्तुते ॥ यज्ञार्थं पशवः सृष्टा स्वयमेव स्वयम्भुवा ॥ अतस्त्वां घातयिष्यामि तस्माद्यज्ञे वधोवधः ॥ ऐं ह्रीं श्रीं इति मन्त्रेणमत्स्यरूपं विचिन्तयित्वातन्मूर्द्ध्नि पुष्पं न्यस्य तत्र भरवमभिषिंच्य दक्षिण करं धृत्वा ॥ छागल ! त्वं महावाहो अग्नेर्देवस्य वाहनः ॥ पशो ! त्वद्बलिदानेन तुष्टामेस्तु हरेःप्रिया ॥ इदं रूपं परित्यज्य गन्धर्वत्वमवाप्नुहि ॥ सर्व काम प्रदानाय छागलाय नमोनमः ॥ इति पठेत् ॥ ततो दक्षिण कर्णं गृहीत्वा ॥ ॐ अद्येहामुक गोत्रस्य अस्य यजमानस्य सर्ववाधा प्रशमनं धन धान्य समृद्धिमत्व वपुरारोग्याचल लक्ष्मी प्राप्ति हेतुक पशु रोममित वर्षानवरत देवी लोक सुख सन्तति प्राप्ति कामः कात्यायनीय गोत्रायै भगवत्यै महामूर्त्यै श्री दुर्गायै इमं छागं (कूष्माण्डं नारिकेलंवा) सुस्नापितमग्नि दैवतंघातयिष्ये ॥इति संकल्प्य॥ पशुगायत्रीं पठेत् ॥ ॐ पशुराजाय विद्महे महादेवाय धीमहि तन्नो दुर्गा

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

स्थानं स्वस्थानं देवि ! चण्डिके ! ॥ ब्रजस्रोतो जलंवृद्ध्यै स्थीयतां च जलेत्विह ॥४॥ ॐ दुर्गे ! देवि ! जगन्मातः स्वस्थानं गच्छ पूजिता ॥ सम्वत्सरे व्यतीते तु पुनरागमनाय वै ॥५॥ इमां

प्रचोदयात् ॥ छागेतु ॥ ॐ छागलाग्नि दैवताय विद्महे शिरश्छेदाय धीमहि तन्नश्छागः प्रचोदयात् ॥ इत्येनं पठित्वा ॥ इमं छागं (बलिं) गृहाणत्वं शक्ति हेतोर्दिवौकसाम् ॥ शत्रु दर्प विनाशाय सर्वाभीष्ट प्रसिद्धये ॥ इति देव्यै निवेद्य ॥

ततः 'शृङ्ग' गृहीत्वा ॥ छागशृङ्ग गृहीतोसि पशुत्वं विप्रहीयतामितिपठेत् ॥

ततः खड्ग पूजा ॥

तत्र प्रतिज्ञां पूर्ववत्कृत्वा ॥ नन्दकस्व परामूर्ते, ममशत्रुनिवर्हण ॥ नीलोत्पलदल श्यामकृत्स्न दुःस्वप्न नाशन ॥ असिर्विशसनः खड्गस्तीक्ष्णधारो दुरासदः ॥ श्री गर्भो विजयश्चैव धर्माधारस्तथैवच ॥ इत्यष्टौ तव नामानि स्वयमुक्तानि वेधसा ॥ नक्षत्रं कृतिका तन्तुगुरुर्देवो महेश्वरः ॥ रोहिण्यश्च शरीरं ते दैवतं च जनार्दनः ॥ पिता पिता महोदेवस्त्वां मां पालयतात्सदा ॥ इयं येन धृता क्षोणी हतश्च महिषासुरः ॥ तीक्ष्णधाराय शुद्धाय तस्मै खड्गाय ते नमः ॥ अग्र्यः प्रहरणानां त्वं खड्गो माद्रवतीसुतः ॥ ॐ ह्रां ह्रीं खड्ग इतिध्यात्वा ॥ ततोर्घ्यादि दत्वा ॥ ॐ कालि ! कालि ! यज्ञेश्वरि ! लोहदण्डायै नमः ॥ मुष्टि देशे सरस्वती ब्रह्मभ्यां नमः ॥ मध्ये लक्ष्मी नारायणभ्यां नमः ॥ अग्रे उमामहेशाभ्यां नमः ॥ इति पंचोपचारैः सम्पूज्य ॥ ॐ आं ह्रीं फट् इति मंत्रेण विमलं खड्गं गृहीत्वा ॥ एक हस्तेन द्वाभ्यां वा एक च्छेदेनघातयेत् ॥ ततः खर्परं गृहीत्वा ॥ देशकालादि स्मृत्वा दुर्गायै इमं छाग खर्परं मांस सहितं नानोपकरणान्वितं तुभ्यमहंसम्प्रददे ॥ पयोमध्वाज्य सत्खण्ड भक्ष्य द्रव्य फलैर्युतम् ॥ खर्प्परं गृह्ण चामुण्डे ! सदीपं मांस संयुक्तम् ॥ इति दत्वा ॥ तदुत्थं रुधिरं गृहीत्वा नैर्ऋतेभ्यः प्रदातव्यम् ॥ महा कौशिकमंत्रितमिति वचनात् ॥ ॐ ऐं ह्रीं कौशिक्यै नमो रुधिरेणाप्यायता मिति सनैर्ऋतायै तस्यै सदीपं दद्यात् ॥ अत्र ये ह्युपयुज्यन्ते प्राणिनो महिषादयः ॥ ते सर्वे स्वर्गतिं यान्ति हन्ता पापं न विन्दति ॥ यावन्न चालयेद्गात्रं पशुस्तावन्न हन्यते ॥ इति चण्डिका बलिदाने तु सर्वत्रैवं विधिस्मृतः ॥ इति छेदानिष्टे सुवर्णं देयम् ॥ इदञ्च बलिदानमग्निषोमीय पशु हिंसा न्यायेन धर्म्यमपि क्षत्रियादि विषय-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पूजां मयादेवि ! यथा शक्त्योपपादिताम् ॥ रक्षार्थं त्वं समादाय व्रजस्थानमनुत्तमम् ॥ ६ ॥

इति स्रोतसि प्रवाह्य तन्मना गृहमेत्य हस्तौ पादौ प्रक्षाल्याचम्य पूजा स्थाने यजमानः सपरिवार उपविश्य विप्रभोजनादि समाप्य बन्धुभिः सहभुंजीत ॥

मेवतदेतत्स्पष्टमुक्तं ॥ देवी पुराणे ॥ तदर्द्धयामिनीशेषे विजयार्थं नृपोत्तमः ॥ पञ्चाहं लक्षणोपेतं गन्ध धूप स्रगर्चितम् ॥ विधिवत्कालि ! कालीति जप्त्वा खड्गेन घातयेदिति ॥ ब्राह्मणस्यतु सात्विकी जप यज्ञाद्यनैवेद्यैश्च निरामिषैरित्युक्तेर्जपादि रूपा सात्विक्येव पूजा भवति तस्य सात्विक कर्मण्येवाधिकारस्य श्रुति स्मृत्यादिषुप्रतिपादित्वात् ॥ यत्तु–माष कल्माष मांसाद्यैर्देयो दिक्षुबलिर्निशि ॥ कूष्माण्ड मिक्षु दण्डश्च *मद्यमासव एव च ॥ एते बलि समाज्ञेयास्तृप्तौ छाग समा स्मृताः ॥ तथा माषान्नेन बलिर्देयो ब्राह्मणेन विजानता इति ॥

कालिका पुराणे ॥

रम्भेक्षु नारिकेलञ्च गुवाकं कण्टकी फलम् ॥ उर्वारुकं करञ्जञ्च छेदयेच्छुरिकादिनेति ॥ तथा—ओदनं मांस माष वदित्यन्नदाकल्प भगवन्त भास्कर धृत वचोभ्यां चाऽशक्त क्षत्रियादेर्ब्राह्मणस्य च बलिदातृत्व मायातं तत्रायं विचारः ॥ ब्राह्मणश्चेद्राजसीं पूजां कर्तुमिछेत्तदा पार्श्वतर कूष्माण्डादि छेदयेदेवं सात्विकोऽशक्तश्च क्षत्रियादि रपि ॥ सात्विक ब्राह्मणस्यतु बलिदानं न युक्तं ॥ सात्विकीजप यज्ञाद्यैर्नैवेद्यैश्च निरामिषै रिति प्रागुक्तेः ॥ ब्राह्मणेन सदा देयं कूष्मांडं बलि कर्मणि ॥ श्री फलं वा सुराधीश ! छेदं नैवतु कारयेदिति ॥ निर्णयसिन्धूक्तं तच्छेदन निषेधाद्ज्ञापकाच्च ॥ अतएव सुरया स्वगात्र रुधिरेण च पूजा ब्राह्मणस्य न भवति ॥ स्वगात्र रुधिरं दत्वा ब्रह्महत्यामवाप्नुयादिति ॥ तथा मद्यं दत्वा ब्राह्मणस्तु ब्राह्मण्या देव हीयते ॥

इति कालिका पुराणात् ॥

दुर्गारहस्य श्यामा रहस्य, निरुत्तरतन्त्र, आदि अनेक तन्त्र के मत से भी ब्राह्मण को मद्य मांसादि पूजन निषेध है ॥

---

* सुराभावे च गोक्षीरं द्विजो दद्याद्युगे युगे ।
द्रव्याभावे चानुकल्पैः पूजयेत्परदेवताम् ॥
निरुत्तर तन्त्रे ५ पटले ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

घृत की बत्ती बनाकर कपूर सहित आरती में रखकर गंध पुष्प से पूजन कर नीचे लिखे मन्त्रों से आरती खड़े होकर करना यथाशक्ति *बाजे बजते रहें ॥

आरती ॥

ॐ आरात्रि पार्थिव ठं० रजः पितुर प्रायि धामभिः ॥ दिवः सदा थ्ं सिबृहती वितिष्ठऽआत्वेषं वर्तते तमः ॥ चन्द्रादित्यौ च धरणी विद्युदग्निस्तथैवच ॥ त्वमेव सर्व ज्योतींषि आर्तिक्यं प्रतिगृह्यताम् ॥

श्री देवी नीराजनम् ॥

ॐ जय जय जगदम्बे !, मा जय जय जगदम्बे ! ॥ नीराजनमवलोचय २ मोचय भयमम्बे ! ॥ १ ॥ जय देवि २ ॥ कैलासोपरि सुन्दर मणिमय मंदिरगां ॥ मा मणिमय० ॥ त्वां ध्यायन्तिमहान्तः मा त्वां० परिशंकर सहिताम् ॥ दिव्यकुसुम शुभगंधै, मण्डित सुभगांगीं मा मंडित सु० ॥ दिव्याम्बर वर-भूषण भूषित, सर्वाङ्गीम् ॥ जय देवि० ॥२॥ विधि हरि हर शक्रादिक, सेवितमृदुचरणे मा सेवित० ॥ विविध वधू परमादर २ परि रचिताभरणे ॥ धनदादिक सुरवन्दित, निरजर वर शरणे ॥ मा निर० ॥ तेषां मुकुटमणीचय, नीराजित चरणे ॥ जय देवि २॥३॥ अप्सरसांसुरनिकरैः, कृत-पूजन समये मा कृत० ॥ ताण्डववेणु विवादन, कोमल-गानमये, को० ॥ धिङ् धिङ्तां धिङ् धिट्तां मूर्च्छध्वनिसहिते मामूर्च्छध्वनि० ॥ झणणण झननन, नूपुर रवमुदते ॥ जय देवि २ ॥४॥ विविधचतुश्चक्रागत, शक्त्यर्चनसुखदे मा शक्त्य० ॥ संशयपापविनाशिनि निन्दक-जनदुःखदे नि० ॥ प्रौढ़ोल्लास विलासिनि, सेवकमनसुखदे ॥ मा सेवक० ॥ तस्मिन्मुदितसमाजे, मधुमुदिताहससे ॥ मधु० ॥ जय० ॥५॥ सावर्णवटुकादिक, गणपति वलि सहितं ॥ मा

* शिवागारे झल्लकं च सूर्यागारे च शंखकम् ॥
दुर्गा गारे वंशिवाद्यं मधुरीं च न वादयेत् ॥
झल्लकं कांस्य निर्मित करतालं ॥ योगिनी तन्त्रे ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

गणप० ॥ स्वीकारं कुरुपूजनमव मां, जह्यहितम् २ ॥ नवनिधि-रचितविधानं, शृणुत्वं जगदम्बे ॥ मा शृणु० ॥ कुरुमातवचर-णानांशरणागतमम्बे ! ॥ माश० ॥ जयदेवि ! जयदेवि ! ॥६॥

भाषा की आर्तिः ॥

जय अम्बेगौरी मैया जय श्यामागौरी ॥ मैया जय मंगल-करणी मैया जय आनन्द करणी ॥ तुमको निशिदिन ध्यावत हरि ब्रह्मा शिवरी ॥ जय० ॥१॥ मांग सिन्दूर विराजत टीको मृगमद को ॥ मैया टीको० ॥ उज्ज्वल से दोऊ नैना, चन्द्र वदन नीको ॥ जय अम्बे० ॥२॥ कनक समान कलेवर, रक्ता-म्बर राजै ॥ मैया रक्ता० ॥ रक्त पुष्प गल माला, कण्ठन पर साजै ॥ जयअम्बे०॥३॥ केहरि वाहन राजत, खड्ग खप्पर धारी ॥ मैया० खड्गख० ॥ सुर नर मुनि जन सेवत, तिनके दुःख-हारी ॥ जय अम्बे० ॥४॥ कानन कुण्डल शोभित, नासाग्रे मोती ॥ मैया नासा० ॥ कोटिक चन्द्र दिवाकर, राजत सम ज्योती ॥ जय अ० ॥ ५ ॥ शुम्भ निशुम्भ विदारे, महिषासुर घाती ॥ मैया महिषा० ॥ धूम्र विलोचन नैना, निशिदिन मद-माती ॥ जय अम्बे० ॥ ६ ॥ चण्ड मुण्ड संहारे शोणित बीज हरे ॥ माई शोणित० ॥ मधु कैटभ दोऊ मारे सुर भयहीन करे ॥ जय अं० ॥७॥ ब्रह्माणी रुद्राणी तुम कमला रानी ॥ माई तुम क० ॥ आगम निगम बखानी तुम शिव पटरानी ॥ जय अं० ॥ ८ ॥ चौंसठ योगिनि गावत, नृत्य करत भैरों ॥ मैया नृ०॥ बाजत ताल मृदंगा, और बाजे डमरू ॥ जय अं० ॥ ९ ॥ तुम ही जग की माता तुम ही हो भरता ॥ माई तुम० ॥ भक्तन की दुःख हरता ॥ सुख संपति करता ॥ जय अं० ॥१०॥ भुजा चार अति शोभित, वर अभय धारी ॥ मैया वर० ॥ मन वांछित फल पावत, सेवत नरनारी ॥ जय० ॥११॥ कंचन थाल विरा-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

जत अगर कपुर बाती ॥ माई अग० ॥ श्रीमालकेतु में राजत कोटिरतन ज्योती ॥ जय अंबे० ॥ १२ ॥ अम्बेजी की आरति, जो कोई नर गावै ॥ मैयाजो० ॥ कहत शिवानन्द स्वामी, सुख सम्पति पावै ॥ जय अम्ब गौरी ॥ १३ ॥

देव्या आरार्तिक स्तोत्रं नीराजन समये पठनीयम् ॥

ॐ जयदेवि ! जयदेवि ! हे शङ्कर ललने !

ॐ मा हे शङ्कर ललने ! ॥ कुरु कुरु चेतः सदयंमयिमातर्मिलिने ॥ १ ॥ मध्ये स्थापित दीपै रालीशत यूथैऽर्मा आलीशतयूथैः ॥ निज करताल ध्वनिभिर्नादित दिग्पटलैः ॥ क्रीडन गायन हासर्नन्दिनि मृदु हृदयां भावयचेतः सततं भुवनेशीं सदयां ॥ जयदेवि० २ ॥ भवभयसागरपारंकर्तुं दृषदुदिता, विदिताद-न्यत्प्रापयितुं मुदिता ॥ सर्वाप्येवंलीलाजनता जनतायै नकथं द्रवसे ॥ हृदय जगतो ममतायै ॥ जयदेवि० २ ॥ ३ ॥ नाना मणिमयभूषामण्डित दोर्युगलेन्पुर मधुर ध्वनि भिर्नादित दिग्पटले ॥ उद्यद्दिनकर भानु प्रतिभट रुचिरास्येध्यातुः ॥ किं किं दुर्लभ महमिह नहि जाने ॥ जयदेवि० २ ॥ ४ ॥ जगतः सृष्टि स्थितयो हृतयः प्रतिकल्प, लोचन मीलन लीलोन्मेषणतः कुरुषे ॥ को वा प्रभवित तस्याः स्मृतये मनसा, येमहिमा वेदा यत्र स्मृतिभिः सहचकिता ॥ जयदेवि० २ ॥ ५ ॥ पाशाभय वरहस्ता रजनी पतिमाला ॥ रक्ताम्बरपरिधाना सृणि भूषित हस्ता ॥ रवि शशि लोचन युग्मा हुतवह नयनैनां ॥ मानस भावय जननीं सततं भुवनैनाम् ॥ जयदेवि० २ ॥ ६ ॥ सर्वं खल्विदमखिलं तदहं भुवनाधीशानी ॥ नान्यत्किंचिन्मधुसूदन सततम् ॥ इति या सम्यक् शिशवे हरये वट पत्रे ॥ प्रवदति भुवना तस्यै नम एतत्कुर्मः ॥ जयदेवि० २ ॥ ७ ॥ पद्यैरेतैरमलर्मनुजो भुवनेश्याः कर्पूरार्त्या यजते परयाकिलभक्त्या ॥ तस्य-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

क्षोणीपतयो वशगा धन धान्यं पुत्राः पौत्रागेहे विमलं पदमन्ते ॥ जयदेवि जयदेवि ॥ ८ ॥

श्रीमच्छङ्कराचार्य विरचितं देव्या आरार्तिक स्तोत्रम् ॥

आरती रखकर शंख में जल भरकर उतारे और थोड़ा थोड़ा दोनों ओर जल शंख से छोड़ता रहे ॥ बाद में थोड़ा जल हाथ में लेकर उपस्थित भक्तों के ऊपर छिड़क कर नीचे लिखे मंत्र हाथों में पुष्प लेकर बोले ॥ आरती की पूर्ण विधि तान्त्रिक पूजन में देखना ॥

मंत्र पुष्पाञ्जलिः ॥

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्म्माणि प्रथमान्यासन् ॥ तेहनाकम्महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्तिदेवाः ॥ ॐ राजाधिराजायप्रसह्य साहिने नमोवयं वैश्रवणाय कुर्महे ॥ समे कामान्कामकामायमह्यं ॥ कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु कुवेराय-वैश्रवणाय राजाधिराजाय महाराजायनमः ॥ ॐ स्वस्ति साम्राज्यं भौज्यं स्वाराज्यं वैराज्यं पारमेष्ठ्यं राज्यं महाराज्य माधिपत्यमयं समन्तपर्यायी स्यात् सार्वभौमः सार्वायुष आन्तादापरार्धात् ॥ पृथिव्यै समुद्रपर्यन्ताया एकराडिति ॥ तदप्येष श्लोकोभिगीतो-मरुतः परिवेष्टारो मरुत्तस्या वसन्गृहे ॥ आवीक्षितस्य कामप्रेर्वि-श्वेदेवाः सभासद इति ॥ ॐ विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतो मुखो वाहुरुत व्विश्व तस्पात् ॥ सम्बाहुभ्यान्धमति सम्पतत्रैर्द्यावाभूमी जनयन्देवएकः ॥ मन्त्र पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि नमः ॥ सेवन्तिका वकुल चम्पक पाटलाब्जैः ॥ पुन्नाग जाति करवीर रसाल पुष्पैः॥ विल्व प्रवाल तुलसीदल मंजरीभिः ॥ त्वां पूजयामि जगदीश्वरि ! मे प्रसीद ॥ पापोऽहं पाप कर्म्मा हं पापात्मा पाप संभवः ॥ त्राहि मां सर्वदा मातः सर्व पाप हरा भव ॥

दुर्गा गायत्री ॥

ॐ महादेव्यै विद्महे दुर्गायै धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात् ॥ एवं पुनः पुनः प्रणम्य स्तुवीत ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

*प्रदक्षिणा ॥

ॐ यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्य मन्वहम् ॥ सूक्तं पञ्चदशर्चञ्च श्री कामः सततं जपेत् ॥ ॐ येतीर्थानि प्रचरन्ति सृका हस्ता निषङ्गिणः ॥ तेषाꣳसहस्र योजने वधन्वानि तन्मसि ॥ नमस्ते देव देवेशि ! नमस्ते ईप्सित प्रदे ! ॥ नमस्ते जगतां धात्रि ! नमस्ते शंकर प्रिये ! ॥ नमः सर्व हितार्थायै जगदाधार हेतवे ॥ साष्टाङ्गोऽयं प्रणामस्ते प्रयत्नेन मया कृतः ॥

इति प्रदक्षिणा ॥

‡साष्टाङ्ग प्रणाम करना ॥

पुनः शान्ति स्तवम् पठेत् ॥

ॐ दुर्गां शिवां शान्ति करीं ब्रह्माणीं ब्रह्मणः प्रियाम् ॥ सर्व लोक प्रणेत्रीं च प्रणमामि सदाम्बिकाम् ॥ १ ॥ मंगलां शोभनां शुद्धां निष्कलां परमां कलाम् ॥ विश्वेश्वरीं विश्वधात्रीं चण्डिकां प्रणमाम्यहम् ॥ २ ॥ सर्व देवमयीं देवीं सर्व लोक भयापहाम् ॥ ब्रह्मेश विष्णु नमिताम् प्रणमामि सदा उमाम् ॥३॥ विन्ध्यस्थां विन्ध्यनिलयां दिव्यस्थान निवासिनीम् ॥ योगिनीं योगजननीं चण्डिकां प्रणमाम्यहम् ॥ ४ ॥ ईशानमातरं देवी-मीश्वरीमीश्वर प्रियाम् ॥ प्रणतोस्मि सदा दुर्गां संसारार्णव तारिणीम् ॥ ५ ॥ यइदं पठति स्तोत्रं शृणुयाद्वापि यो नरः ॥ समुक्तः सर्व पापेभ्यो मोदते दुर्गया सह ॥ ६ ॥

इतिमत्स्यसूक्तोक्त दुर्गास्तोत्रम् ॥

---

* एका चण्डयां रवौसप्त तिस्रो दद्याद्विनायके ॥
चतस्रः केशवे देया शिवस्यार्द्धे प्रदक्षिणा ॥

‡ उरसा शिरसा दृष्टया मनसा वचसा तथा ॥
पद्भ्यां कराभ्यां जानुभ्यां प्रणामोष्टाङ्ग ईरितः ॥
बाहुभ्यां च सजानुभ्यां शिरसा मनसाधिया ॥
पञ्चाङ्ग कः प्रणामः स्यात् सर्वत्र प्रवरार्विमौ ॥
इति तन्त्रान्तरे ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वर प्रार्थना ॥

रूपं देहि यशोदेहि भगं भगवति ! देहि मे ॥ पुत्रान्देहि धनन्देहि सर्वान्कामांश्च देहि मे ॥१॥ ॐ महिषघ्नि ! महामाये ! चामुण्डे ! मुण्डमालिनि ! ॥ आयुरारोग्य विजयंदेहि देवि ! नमोस्तु ते॥२॥ भूत प्रेत पिशाचेभ्यो रक्षोभ्यः परमेश्वरि ! ॥ भयेभ्यः मानुषेभ्यश्च देवेभ्यो रक्ष मां सदा ॥ ३ ॥ सर्व मंगल मंगल्ये शिवे ! सर्वार्थ साधिके ! ॥ उमे ! ब्रह्माणि ! कौमारि ! विश्वरूपे ! प्रसीद मे॥४॥ कुंकुमेन समा लब्धे चन्दनेन विलेपिते ॥ विल्व पत्र कृता पीड़े दुर्गे ! त्वां शरणं गतः ॥ ५ ॥ गतं पापं गतं दुःखं गतं दारिद्र्यमेवच ॥ आगता सुख सम्पत्तिः पुण्याच्चतव दर्शनात् ॥ ६ ॥ ॐ हर पापं हर क्लेशं हर शोकं हरासुखम् ॥ हर रोगं हर क्षोभं हर मारीं हरप्रिये ! ॥ ७ ॥ ॐ कायेन मनसा वाचा कर्मणायत्कृतं मया ॥ ज्ञानाज्ञान कृतं पापं दुर्गे ! त्वं हर दुर्गतिम् ॥ ८ ॥ पूजा ‡फलाग्नि कार्याद्यैः सुकृतं यन्मयार्चितम् ॥ तत्सर्व फलदं मेस्तु भुक्ति मुक्तिंच देहि मे ॥ ९ ॥ लक्ष्मि ! त्वत्प्रज्ञया-नित्यं कृतापूजा तवाज्ञया ॥ स्थिरा भव गृहेह्यस्मिन्मम सन्तान (ऐश्वर्य) कारिणि ॥ १० ॥

विपद्गण ध्वान्त सहस्र भानवः ॥ समीहितार्थान्प्रति काम-धेनवः ॥ अपार संसार समुद्र सेतवो मां पातु चंडी चरणाब्ज-रेणवः ॥ इत्युच्चार्य मूल मन्त्रेण पुष्पांजलित्रयं दद्यात् ॥

अथ देव्यपराध क्षमापन स्तोत्रम् ॥

श्री गणेशायनमः ॥ न मंत्रं नो यंत्रं तदपि च न जाने स्तुति महो न चाह्वानं ध्यानं तदपि च न जाने स्तुति कथाः ॥ न जाने मुद्रास्ते तदपि च न जाने विलपनं परं जाने मातस्त्वद-

‡ पूजाफल सुकार्याद्यैः ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

नुसरणं क्लेश हरणम् ॥ १ ॥ विधेरज्ञानेन द्रविण विरहेणालस-तया विधेयाशक्यत्वात्तवचरणयोर्याच्युतिरभूत् ॥ तदेतत्क्षन्तव्यं जननि ! सकलोद्धारिणि ! शिवे ! कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति ॥ २ ॥ पृथिव्यां पुत्रास्ते जननि ! बहवः सन्ति सरलाः परं तेषां मध्ये विरल तरलोऽहं तव सुतः ॥ मदीयोयंत्यागः समुचितमिदं नो तव शिवे ! कुपुत्रोजायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति ॥ ३ ॥ जगन्मातर्मातस्तव चरण सेवा न रचिता न वा दत्तं देवि ! द्रविणमपि भूयस्तव मया ॥ तथापि त्वं स्नेहं मयि निरुपमं यत्प्रकुरुषे कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति ॥ ४ ॥ परित्यक्त्वा देवान्विविध विधसेवाकुल तया मया पंचाशीतेरधिकमुपनीते तु वयसि ॥ इदानीं चेन्मातस्तव यदि कृपानापि भविता निरालम्बो लम्बोदर जननि ! कं यामि शरणम् ॥ ५ ॥ श्वपाको जल्पाको भवति मधुपाकोपम गिरा निरातंको रंको विहरति चिरं कोटि कनकैः ॥ तवापर्णे कर्णे विशति मनु वर्णे फलमिदं जनःकोजानीते जननि ! जपनीयं जपविधौ ॥ ६ ॥ चिताभस्मा लेपो गरलमशनं दिक्पटधरो जटाधारी कण्ठे भुजग पतिहारी पशुपतिः ॥ कपाली भूतेशो भजति जगदीशैकपदवीं भवानि ! त्वत्पाणि ग्रहण परिपाटी फलमिदम् ॥ ७ ॥ न मोक्षस्या कांक्षा न च विभव वांछापि च न मे नविज्ञानापेक्षा शशिमुखि सुखेच्छापि न पुनः ॥ अतस्त्वांसंयाचे जननि ! जननं यातु मम वै मृडानी रुद्राणी शिव ! शिव ! भवानीति जपतः ॥ ८ ॥ नाराधितासि विधिना विविधोपचारः किं रुक्ष चिन्तन परैर्नकृतं वचोभिः ॥ श्यामे त्वमेव यदि किंचन मय्यनाथे धत्से कृपामुचितमम्ब ! परं तवैव ॥९॥ आपत्सु मग्नः स्मरणं त्वदीयं करोमि दुर्गे ! करुणार्णवेशि ॥ नैतच्छठत्वं

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मम भावयेथाः क्षुधातृषार्ता जननीं स्मरन्ति ॥ १० ॥ जगदम्ब विचित्र मत्र किं परिपूर्णा करुणास्ति चेन्मयि ॥ अपराध परं परावृतं नहि माता समुपेक्षते सुतम् ॥ ११ ॥ मत्समः पातकी नास्ति पापघ्नी त्वत्समा न हि ॥ एवं ज्ञात्वा महादेवि यथायोग्यं तथा कुरु ॥१२॥ इति श्री मत्परमहंस परिव्राजकाचार्य श्रीमच्छंकराचार्य विरचितं देव्यपराधक्षमापन स्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

हे मैया तेरा मन्त्र (जपने का) यन्त्र (पूजा करने का) स्तुति (प्रार्थना करना) आवाहन (बुलाना) ध्यान (मूर्ति के स्वरूप को हृदय में धारण करना) स्तुति कथा (भक्तों का उद्धार करने वाला चरित्र) मुद्रा (हाथ की आकृतियों से बनती हैं) और विलाप यह सब कुछ नहीं जानता हूँ; किन्तु यह जानता हूँ कि तू सब प्रकार के क्लेशों को दूर करती है इसलिये तेरी शरण में रहना सुन्दर है ॥१॥ सब की सहायता करने वाली हे शिवे ! (कल्याण करने वाली) हे जननि ! तेरे पूजन की रीति न जानने से द्रव्य की कमी में, आलस्य से, तथा पूर्व में कही विधि को न जानने से तेरे चरणों की सेवा करने में जो भूल हुई हो तो क्षमा करना, कारण पुत्र तो कुपुत्र होता है परन्तु मा कुमाता नहीं हुआ करती है ॥२॥ हे माता ! पृथ्वी पर तेरे सीधे पुत्र बहुत से हैं लेकिन उन सब में मैं ही एक चंचल हूँ इस कारण हे शिवे ! (कल्याण करने वाली) मुझे छोड़ न देना इसलिये कि पुत्र तो कुपुत्र होता है परन्तु मा कुमाता नहीं हुआ करती है ॥३॥ हे संसार की माता ! हे मैया ! मैंने तेरे चरण कमलों की सेवा नहीं करी और तेरी सेवा में विशेष धन भी नहीं लगाया। परन्तु फिर भी मुझ पर तू इस प्रकार अनुपम स्नेह करता है सो ठीक ही है क्यों कि पुत्र तो कुपूत होता है परन्तु माता कुमाता नहीं हुआ करती है ॥४॥ हे लम्बोदर (गणेश) की मा ! अपनी ८५ वरष से भी विशेष अवस्था बीतने पर भी मैंने अनेक विधि के साथ पूजन करने को छोड़कर समस्त देवताओं को त्याग दिया आगे तेरी कृपा जो अब भी न हो तब मैं बिना किसी सहारे किधर किस की शरण में रहूँ ॥५॥ हे माता अपर्णे ! (दुर्गे) ! जो तेरे मन्त्र के अक्षर (दूसरे व्यक्ति द्वारा जपने से) कान में पहुँचते ही "श्वपाक" चांडाल भी सुन्दर एवं मधुर वाणी द्वारा अद्वितीय वाचाल होता है तथा रंक जो

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

महान् दरिद्री है वह भी कोट्यधीश होकर बहुत समय तक निडर होकर आनन्द करता है तब तेरे मन्त्र का विधि पूर्वक अनुष्ठान करने वाला जो फल प्राप्त करेगा उसको कौन जानेगा ॥६॥ जो शिवजी महान् अपवित्र चिता की भस्म लगाये रहते हैं विष को (भक्षण) करते हैं दिगंबर अर्थात् नग्न रहते हैं शिर की जटाओं का जूड़ा बांधे हुए गले में बड़े २ विषैले सर्पों की माला पहरे हाथ में खप्पर (कपाल) धारण करे पशुपति एवं भूतगण के स्वामी हैं वह (शिव) भी जो जगदीश्वर (संसार के स्वामी) की पदवी प्राप्त किये हुए हैं सो सब हे भवानि ! तेरे ही साथ विवाह होने का कारण है ॥७॥ हे चन्द्रमा के समान शीतल मुख वाली माता ! मैं मोक्ष नहीं चाहता संसार के सुख की भी इच्छा नहीं रखता विज्ञान और सुख (सुख देने वाला) नहीं इस कारण "मैं" तुझसे यही चाहता हूँ कि मेरी सम्पूर्ण अवस्था मृडानी रुद्राणी शिव शिव भवानी आदि स्मरण करते २ समाप्त हो ॥८॥ हे श्यामे ! (काली) पंचोपचार, दशोपचार, षोड़शोपचार, आदि विधियों से तेरी सेवा न करी किन्तु इसके प्रतिकूल दूसरों को निरर्थक हानि पहुँचाने की इच्छा से मैंने क्या नहीं किया ? अर्थात् बहुत ही बुराई की परन्तु फिर भी मुझ दीन पर तू कृपा करती है सो ठीक ही है इस लिये कि तू मेरी माता ही तो है ॥९॥ हे करुणा के समुद्र स्वरूप शिवे ! जब कभी मैं किसी विपत्ति में प्रवेश करता हूँ तब तेरा ही ध्यान करता हूँ इसको तू मेरी दुष्टता ही न जानना प्रत्युत भूखे प्यासे बच्चे अपनी मा को ही याद करते हैं ॥१०॥ हे जगत्माता ! मेरे पर तेरी पूर्ण दया है सो इसमें आश्चर्य ही क्या ? इसलिये कि बहुत से अपराध होने पर भी माता पुत्र को नहीं छोड़ती ॥११॥ हे जगदम्ब ! हे महा देवि ! मेरे बराबर कोई पापी नहीं और तेरे समान कोई पाप से छुटाने वाली नहीं ऐसा विचार कर जैसा तू उचित समझे वैसा कर ॥१२॥

अथ दुर्गा आपदुद्धाराष्टकम् ॥

नमस्ते शरण्ये शिवे सानुकम्पे, नमस्ते जगद्व्यापिके ! विश्वरूपे ॥ नमस्ते जगद्वन्द्य पादारविन्दे नमस्ते जगत्तारिणि ! त्राहि दुर्गे ! ॥ १ ॥ नमस्ते जगच्चिन्त्यमान स्वरूपे नमस्ते महायोगि विज्ञान रूपे ॥ नमस्ते नमस्ते सदानन्द रूपे

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे ॥ २॥ अनाथस्य दीनस्य तृष्णातुरस्य, भयार्त्तस्य भीतस्य बद्धस्य जन्तोः ॥ त्वमेकागतिर्देवि निस्तार कर्त्री, नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे ! ॥ ३ ॥ अरण्ये रणे दारुणे शत्रुमध्ये जले संकटे राजगेहे प्रवाते ॥ त्वमेकागतिर्देवि ! निस्तार हेतुर्नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे ! ॥ ४ ॥ अपारेमहादुस्तरेत्यन्तघोरे विपत्सागरेमज्जतां देहभाजां ॥ त्वमेकागतिर्देवि निस्तार नौका नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे ! ॥५॥ नमश्चण्डिके ! चण्डदोर्दण्डलीलासमुत्खंडिता खंडलाशेषशत्रोः॥ त्वमेकागतिर्विघ्न सन्दोह हर्त्री नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे ! ॥६॥ त्वमेकासदाराधिता सत्यवादिन्यनेकाखिला क्रोधना क्रोधनिष्ठा॥इड़ा-पिङ्गला त्वं सुषुम्णा च नाड़ी नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे ॥७॥ नमो देवि ! दुर्गे ! शिवे ! भीमनादे ! सदासर्व सिद्धि प्रदातृ स्वरूपे ! ॥ विभूतिः सतांकालरात्रिः स्वरूपे नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे ! ॥ ८ ॥ शरणमसिसुराणांसिद्धविद्याधराणां मुनिदनुजवराणांव्याधिभिः पीड़ितानाम् ॥ नृपति गृहगतानां दस्युभिस्त्रासितानां त्वमसिशरण मेकादेवि दुर्गे ! प्रसीद ॥ ९ ॥

इदंस्तोत्रं मयाख्यातमापदुद्धारमष्टकम्॥ त्रिसंध्यमेक सन्ध्यं वा पठनादेव संकटात् ॥१॥ मुच्यतेनात्रसंदेहो भुविस्वर्गे रसातले ॥ सिद्धेश्वरतन्त्रे हरगौरी सम्वादे आपदुद्धाराष्टकं स्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

हे शिवे ! भक्तों को शरण देने वाली तेरे लिये नमस्कार है। हे दया करने वाली सम्पूर्ण जगत् में व्यापक विश्व रूप तेरे लिये नमस्कार है। संसार से तेरे चरण कमल वन्दित हैं तेरे लिये नमस्कार है। संसार के आवागमन से छुटाने वाली दुर्गे देवि रक्षा कर तेरे लिये नमस्कार है ॥१॥ चिन्त्यमान स्वरूप जगत के चराचर में व्याप्त तुझे नमस्कार है, हे महायोग विज्ञान (ब्रह्मज्ञान) स्वरूप तेरे लिये नमस्कार है। हे सत्व

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

आनन्द स्वरूप तेरे लिये नमस्कार है। हे संसार के आवागमन को छुटाने वाली तेरे लिये नमस्कार है। दुर्गे रक्षा कर ॥ २ ॥ अनाथ, दीन, तृष्णा में भ्रमण करने वाला, भय से दुखी, डरा हुआ, बन्धन में पड़े हुए जीव को पार करने के लिये हे देवि तू एक ही है। जगत के आवागमन को छुटाने वाली दुर्गे रक्षा कर ॥ ३ ॥ निर्जन वन में दारुण युद्ध, शत्रुओं के मध्य, जल में, संकट में, राजद्वार में, अंधकार आदि स्थानों में, सहायता करने वाली कारण स्वरूप एक तू ही गति है तेरे लिये नमस्कार है, हे संसार के आवागमन को छुटाने वाली दुर्गे ! रक्षा कर ॥ ४ ॥ जो पार न हो सके बड़ा दुस्तर घोर विपत्तियों के समुद्र में डूबे हुए मनुष्यों को तू एक ही नौका रूप पार करने की गति है तेरे लिये नमस्कार, हे संसार के आवागमन को छुड़ाने वाली दुर्गे रक्षा कर ॥५॥ हे चंडिके ! तेरे लिये नमस्कार ! चंड आदि भयंकर जो राक्षस हैं और इन्द्र के अशेष शत्रुओं शत्रुओं को नाश करने वाली तू एक ही गति समस्त विघ्नों को हरने वाली तेरे लिये नमस्कार है। हे दुर्गे ! संसार के आवागमन को छुटाने वाली रक्षा कर ॥ ६ ॥ तू एक ही हमेशा सेवा कराने वाली सत्यंवादिनी और क्रोध करने वालों में एक ही क्रोध की निष्ठा है। इड़ा (सूर्य स्वर) पिंगला (चन्द्र स्वर) सुषुम्ना (दोनों मिले स्वर) नाड़ी रूप तू ही है तेरे लिये नमस्कार, हे संसार के आवागमन को छुटाने वाली दुर्गे ! रक्षा कर ॥ ७ ॥ हे देवि ! हे दुर्गे ! हे शिवे ! हे भीमनादे ! (भयंकर शब्द वाली) नित्य प्रति सब सिद्धि प्रदान करने वाली सज्जनों की विभूति कालरात्रि स्वरूप तेरे लिये नमस्कार है। हे संसार के आवागमन को छुटाने वाली दुर्गे ! रक्षा कर ॥ ८ ॥ देवता, सिद्ध, विद्याधर, मुनि, उत्तम राक्षस, बीमारी से सताये हुए, राजा के बन्दीगृह में गये हुए, चोरों से सताये हुए मनुष्यों की रक्षा करने वाली हे देवि ! हे दुर्गे ! तू एक ही है प्रसन्न हो ॥ ९ ॥ यह आपदुद्धाराष्टक स्तोत्र मैंने कहा जो कोई तीनों समय वा एकबार पाठ करेगा वह संकट से छूट जायगा स्वर्ग पाताल वा मृत्युलोक कहीं होय

अथ संकष्ट नाशन स्तोत्रम् ॥

ॐ परब्रह्म स्वरूपाञ्च वेदगर्भाञ्जगन्मयीम् ॥ शरण्ये त्वामहं वन्दे दुर्गां दुर्गति नाशिनीम् ॥ १ ॥ कामाख्यां कामदां श्यामां

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कामरूपां मनोरमाम् ॥ ईश्वरीं त्वामहं वन्दे दुर्गां दुर्गति नाशिनीम् ॥२॥ त्रिनेत्रां हास्य संयुक्तां सर्वालंकार भूषिताम् ॥ विजयां त्वामहं वन्दे दुर्गां दुर्गति नाशिनीम् ॥ ३ ॥ ब्रह्मादिभिः स्तूयमानां सिद्धगन्धर्व सेविताम् ॥ भवानींन्त्वामहं वन्दे दुर्गां दुर्गति नाशिनीम् ॥४॥ निशुम्भ शुम्भ मथिनीं महिषासुर घातिनीम् ॥ दिव्यरूपामहं वन्दे दुर्गां दुर्गति नाशिनीम् ॥५॥ विंशत्यर्द्ध भुजां देवीं शुद्ध कांचन संनिभाम् ॥ गौरीरूपामहं वन्दे दुर्गां दुर्गति नाशिनीम् ॥६॥ त्रिशूलं खड्ग चक्रं च वाणं शक्तिं परश्वधम् ॥ दधानां त्वामहं वन्दे दुर्गां दुर्गति नाशिनीम् ॥७॥ जगन्मयीं महा विद्यां सृष्टि संहार कारिणीम् ॥ सर्वदैव महं वन्दे दुर्गां दुर्गति नाशिनीम् ॥८॥ इदन्तु कवचं दिव्यं महा मन्त्रं महाफलम् ॥ यः पठेन्मानवो नित्यं अस्मद्भक्ति समन्वितः ॥ धनं धान्यं प्रयच्छामि सकृदावर्तनेन तु ॥ मत्स्य सूक्तोक्त दुर्गा संकष्ट नाशनस्तोत्रम् सम्पूर्णम् ॥ मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वरि ! ॥ तत्सर्वं क्षम्यतां देवि ! प्रसीद परमेश्वरि ! ॥ न्यूनं वाप्यधिकं वापि यन्मया मोहतः कृतम् ॥ सर्वं तदस्तु संपूर्णं त्वत्प्रसादान्महेश्वरि ! ॥ आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम् ॥ पूजां चैव न जानामि क्षमस्व परमेश्वरि ! ॥

परब्रह्म स्वरूप जिसके गर्भ में चारों वेद हैं सम्पूर्ण चर अचर में व्यापक सबको शरण में रखने वाली और दुर्गति को नाश करने वाली दुर्गा देवी को नमस्कार करता हूँ ॥ १ ॥ कामरू (बंगाल) देश में कामख्या नाम से निवास करने वाली कामनाओं को देने वाली श्यामा (काली) कामरूपा (अनेक रूप को धारण करने वाली) मनोरमा (सुन्दर स्वरूप) को ईश्वरी (ईश्वर जो शिव हैं उनकी शक्ति ईश्वरी) दुर्गति को नाश करने वाली दुर्गा को नमस्कार करता हूँ ॥ २ ॥ तीन नेत्र वाली मुसकराती हुई सब प्रकार के गहनों से शोभायमान सम्पूर्ण कार्यों में विजय करने वाली विजया स्वरूप दुर्गति

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

को नाश करने वाली दुर्गा को नमस्कार करता हूँ ॥ ३ ॥ ब्रह्मादि देवताओं से स्तुति की हुई सिद्ध, गन्धर्व आदि से सेवा की हुई दुर्गति को नाश करने वाली भवानी (भव जो महादेव की शक्ति) दुर्गा को नमस्कार करता हूँ ॥ ४ ॥ निशुम्भ शुम्भ को मथन करने वाली महिषासुर को मारने वाली शोभायमान रूप दुर्गति नाश करने वाली दुर्गा को नमस्कार करता हूँ ॥ ५ ॥ बीस की आधी अर्थात दश भुजा वाली, सुवर्ण के समान शरीर की शोभा वाली गौरी स्वरूप दुर्गति को नाश करने वाली दुर्गा को नमस्कार करता हूँ ॥ ६ ॥ त्रिशूल, खड्ग, चक्र, बाण, शक्ति (भाला) फरसा धारण करने वाली दुर्गति को नाश करने वाली दुर्गा को नमस्कार करता हूँ । ७ ॥ संसार में व्यापक महाविद्या रूप संसार को पैदा करने तथा संहार करने वाली दुर्गति को नाश करने वाली दुर्गा को नमस्कार करता हूँ ॥ ८ ॥ जो पुरुष इस महामंत्र स्वरूप दिव्य कवच को नित्य मेरी भक्ति करके युक्त एक वार भी पढ़ैगा तो धन धान्य की वृद्धि होगी ॥

मत्स्यसूक्त में कहा गया दुर्गा संकट नाशन स्तोत्र की भाषा टीका समाप्त ॥

कलश का जल किसी पात्र में लेकर सकुटुम्ब यजमान को अभिषेक करना ।

ॐ पुनस्त्वा रुद्रादित्यावसवः समिन्धताम्पुनर्ब्रह्माणोव्वसुनीथयज्ञैः ॥ घृतेनत्वं तन्वंवर्द्धयस्वसत्याः सन्तुयजमानस्यकामाः ॥ ॥ १ ॥ इषेत्वोर्जेत्वावायवस्थदेवोवः सविता प्रार्पयतुश्रेष्ठतमाय कर्मणऽआप्यायध्वमघ्न्याऽइन्द्रायभागं प्रजावतीरनमीवाऽअयक्ष्मा मा वस्तेनऽईशतमाघशर्ठ०सोध्रुवाऽअस्मिन्गोपतौस्यात वह्वीर्यजमानस्यपशून्पाहि ॥ करोतुस्वस्ति ते ब्रह्मा स्वस्तिवापि द्विजातयः ॥ सरीसृपाश्चयेश्रेष्ठा स्तेभ्यस्ते स्वस्ति सर्वदा ॥ ययातिनहुषश्चैव धुन्धमाराभगीरथः ॥ तुभ्यंराजर्षयः सर्वेस्वस्तिकुर्वन्तुनित्यशः ॥ स्वस्तितेस्तु द्विपादेभ्यश्चतुष्पादेभ्यएव च ॥ स्वाहास्वधाशची चैव स्वस्ति कुर्वन्तु ते सदा ॥ लक्ष्मीररुन्धती चैव कुरुतां स्वस्तितेऽनघ ॥ असितोदेवलश्चैवविश्वामित्रस्तथांगिराः ॥ स्वस्तितेद्य प्रयच्छन्तु कार्तिकेयश्चषण्मुखः ॥ विवस्वान्भगवा-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

न्स्वस्तिकरोतु तव सर्वशः ॥ दिग्गजाश्चैवचत्वारः क्षितिजाग-गनंग्रहाः ॥ अधस्ताद्धरणीं योसौनागोधारयतेसदा ॥ शेषश्च पन्नगाः श्रेष्ठो स्वस्ति तुभ्यंप्रयच्छति ॥ मंत्रार्थाः सफलाः सन्तु पूर्णाः सन्तु मनोरथाः ॥ शत्रूणां बुद्धि नाशोस्तु मित्राणामुदय-स्तथा ॥ अपुत्राः पुत्रिणः सन्तु पुत्रिणः सन्तु पौत्रिणः ॥ अधनाः सधनाः सन्तु सन्तु सर्वार्थ साधकाः ॥ आयुष्कामो यशस्कामो पुत्र पौत्रस्तथैवच ॥ आरोग्यं धन कामश्च सर्वे कामाः भवन्तु ते (मे) ॥

सर्वेभवन्तुसुखिनः सर्वेसन्तु निरामयाः ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु माकश्चिद् दुःखभाग्भवेत् ॥

— ० —

प्रसङ्गात्स्तोत्र पाठ विधिः ।

न च स्वयं कृतं स्तोत्रं तथान्येन च यत्कृतम् ॥
यतः कलौ प्रशंसंति ऋषिभिर्भाषितं तु यत् ॥

सरस्वती स्तोत्रम् ॥

श्री भैरव उवाच ॥ शृणुदेविप्रवक्ष्यामिस्तोत्रं परम् दुर्लभम् ॥ वागीश्या मन्त्र गर्भंतु भुक्तिमुक्ति फलप्रदम् ॥

ॐ अस्य श्री वाग्वादिनी शारदा स्तोत्र मन्त्रस्य मार्कण्डे-याश्वलायन ऋषिः गृधरानुष्टुप् छन्दः श्री सरस्वती देवता ह्रीं बीजं ॐ शक्ति ऐं कीलकम्आशु वाग्विवृद्धयेजपे विनियोगः ॥ ध्यानम् ॥ शुक्लां ब्रह्म विचार सार परमामाद्यां जगद्व्यापिनीम् ॥ वीणा पुस्तक धारिणीमभयदां जाड्यान्धकारापहाम् ॥ हस्ते स्फाटिक मालिकां विदधतीं पद्मासने स्थिताम् ॥ वन्दे तां पर-मेश्वरीं भगवतीं बुद्धि प्रदां शारदाम् ॥ १ ॥ ब्रह्मोवाच ॥ ह्रीं

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ह्रीं ह्यैकबीजे शशि रुचि कमला कल्प विष्पष्ट शोभे ॥ भव्ये भव्यानुकूले कुमति वनदहे विश्ववन्द्याङ्घ्रि पद्मे ॥ पद्मे पद्मोपविष्टे प्रणतजनमनो मोदसंपादयित्रि ॥ प्रोत्प्लुष्टाज्ञानकूटेहरिनिजदयितेदेविसंसार सारे ॥ २ ॥ ऐं ऐं ऐं इष्ट मंत्रे कमलभवमुखांभोजरूप स्वरूपे ॥ रूपारूप प्रकाशे सकल गुणमये निर्गुणे निर्विकारे ॥ न स्थूलेनैव सूक्ष्मेप्यविदित विषये नापिविज्ञाततत्वे ॥ विश्वे विश्वान्तराले सुरवर नमितेनिष्कले नित्य शुद्धे ॥ ३ ॥ ह्रीं ह्रीं ह्रीं जाप तुष्टे हिमरुचि मुकुटे वल्लकी व्यग्रहस्ते ॥ मातर्मातर्नमस्ते दह-दह जड़तां देहि बुद्धि प्रशस्तां ॥ विद्ये वेदान्त गीते श्रुति परि पठिते मोक्षदे मुक्ति मार्गे ॥ मार्गातीत प्रभावे भव मम वरदा शारदे शुभ्रहारे ॥ ४ ॥ धीं धीं धीं धारणाख्ये धृतिमतिनुतिभिर्नामभिः कीर्तनीये नित्येऽनित्ये निमित्ते मुनिगण नमिते नूतने वै पुराणे ॥ पुण्येपुण्यप्रभावे हरिहर नमिते नित्य शुद्धे सुवर्णे मन्त्रे मन्त्रार्थ तत्वे मति ! मति ! मतिदे माधव प्रीति नादे ॥ ५ ॥ ह्रीं क्लीं श्रीं ह्रीं स्वरूपे दह दह दुरितं पुस्तक व्यग्रहस्ते ॥ संतुष्टाकारचित्ते स्मितमुखि सुभगे जृंभिनी स्तंभविद्ये ॥ मोहे मुग्ध प्रभावे मम कुरु विमतिं ध्वांत विध्वंसनीये ॥ गीर्गीर्वाग् भारतीत्वं कविवृषरसना सिद्धिदा सिद्ध विद्या ॥ ६ ॥ स्तौमि त्वां त्वां च वन्दे भज मम रसनां मा कदाचित्यजेथाः ॥ मा मे बुद्धिर्विरुद्धा भवतु न च मनो देवि मे जातु पापम् ॥ मा मे दुःखं कदाचिद्विपदि च समयेऽप्यस्तु मे नाकुलत्वं ॥ शास्त्रेवादे कवित्वे प्रसरतु ममधीर्मास्तु कुंठा कदाचित् ॥ ८ ॥ इत्येतैः श्लोक मुख्यैः प्रति दिन मुषसि स्तौति यो भक्त नम्रो वाणीं वाचस्पते रप्यभि मत विभवो वाक् पटुर्मृष्टपंकः ॥ सस्यादिष्टार्थलाभः सुत मिव सततं पातितं सा च देवी ॥ सौभाग्यं तस्य लोके

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

प्रसरति कविता विघ्नमस्तं प्रयाति ॥ ९ ॥ ब्रह्मचारी व्रती मौनी त्रयोदश्यां निरामिषः ॥ सारस्वतो नरः पाठात्सस्यादिष्टार्थ लाभवान् ॥ १७ ॥ पक्षद्वयेऽपियोभक्त्यात्रयोदश्येकविंशतिम् ॥ अविच्छेदंपठेद्धीमान् ध्यात्वा देवीं सरस्वतीम् ॥ ११ ॥ शुक्लांवर धरांदेवी शुक्लाभरणभूषिताम् ॥ वाञ्छितं फलमाप्नोति सलोके-नात्रसंशयः ॥ १२ ॥ इति ब्रह्मास्वयं प्राहसरस्वत्याः स्तवं शुभम् प्रयत्नेन पठेन्नित्यंसोमृतत्वं च गच्छति ॥ १३ ॥ इतिश्रीरुद्रया-मलेतन्त्रे दशविद्यारहस्ये सरस्वती स्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

सूतके पूजन विधिः ॥

विश्वसारे ॥ महाविद्यां गृहीत्वा च जपेज्जीवावधि प्रिये ॥ महागुरुनिपातादौ न पूजायां विकल्पना ॥

मोहाद्वा यदिवादैवात्पूजयेन्न च साधकः ॥
तस्य सर्व विनाशः स्यान्मारयेत्तं सदा शिवः ॥
अशुचौवाशुचौवापिसर्वकालेपिसर्वदा ॥
पूजयेत्परयाभक्त्यानात्रकार्याविचारणा ॥

रुद्रयामले ॥ पूजयेन्मृतकेऽपि स्याज्जनने सरुजोपिवा ॥
सर्वत्रैव विधिः प्रोक्तः सर्व कामफल प्रदः ॥
अथ सूतकिनः पूजां वक्ष्याम्याग मचोदिताम् ॥
वाह्यपूजा क्रमेणैवध्यानयोगेनपूजयेत् ॥
देवी विषये वाह्य पूजा कर्तव्या विशेष विधानात् ॥

तथा चोक्तंवाराही तन्त्रे ॥

तारायाश्चैव काल्याश्च त्रिपुरायाश्चसुव्रते ! ॥
सूतकेमृतकेचैवनत्यजेयुर्जपार्चनम् ॥

यामले ॥

अशुचिर्वाशुचिर्वापिगच्छंस्तिष्ठन्स्वपन्नपि ॥
न दोषोमानसेजाप्येसर्वदेशेषुसर्वदा ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

विश्वसारे ॥

जाग्रच्छयानउत्तिष्ठन्भुंजानोगमनेपिवा ॥
सिद्धमन्त्रे न दोषःस्यादशौचनियमेपि च ॥
नकल्पनादिवारात्रौ न च सन्ध्यावसानके ॥

श्रुतौ ॥ तदनन्तरमशौच मपिनप्रतिवन्धकम् ॥
व्रतयज्ञविवाहेषुश्राद्धेहोमेऽर्चनेजपे ॥
आरब्धे सूतकंनस्यादनारब्धेतुसूतकम् ॥
आरम्भोवरणंयज्ञे कल्पोव्रतजापयोः ॥
नान्दीश्राद्धंविवाहादौश्राद्धे पाकपरिष्क्रिया ॥
निमंत्रणन्तु वा श्राद्धे आरम्भःस्यादितिश्रुतिः ॥

रुद्रयामले—

*जात सूतकमासै स्यादस्ते च मृतसूतकम् ॥ सूतक द्वय संयुक्तो न मन्त्रः,सिद्धिदायकः ॥

जपादौ जपान्ते च सूतकद्वयमित्यर्थः ॥ ब्रह्म बीजं मनोर्दत्वा चाद्यञ्च परमेश्वरि ! ॥ सप्त वारं जपेन्मन्त्रं सूतक द्वय मुच्यते ॥

इति राघव भट्ट कृत विष्णु वचनात् ॥ दीक्षा शब्दार्थ माह यामले ॥

दीक्षा शब्दार्थः ॥

दिव्य ज्ञानं यतो दद्यात्कुर्यात्पापक्षयं यतः ॥
तेन दीक्षेति लोकेस्मिन्कीर्तिता तन्त्रपारगैः ॥

कुलार्णवे १५ उल्लासे ॥ मन्त्रजपे पाठे च भेद. ॥

मनसा यः स्मरेत्स्तोत्रं वचसा वा मनुं जपेत् ॥
उभयं निष्फलं देवि ! भिन्न भाण्डोदकं यथा ॥

गुरुशब्दार्थः ॥

गुशब्दस्त्वन्धकारः स्याद्रुशब्दस्तन्निरोधकः ॥
अन्धकार निरोधित्वाद्गुरुरित्यभिधीयते ॥

---

*यह अनन्य उपासकों के लिये है दोनों सूतकों में गृहस्थों को मानसिक पूजन करने का विधान है ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

गकाराद् ज्ञान संपत्ती रेफः पापस्य दाहकः ॥
उकारा च्छिवतादात्म्यं दद्यादिति गुरुः स्मृतः ॥
कुल चूडामणौ ॥
उदासीनो ह्युदासीनां वनस्थाः वनवासिनः ॥
यतीनाञ्च यतीप्रोक्तो गृहस्थानां गुरुर्गृही ॥
वैष्णवे वैष्णवो ग्राह्यः शैवे शैवस्तथा पुनः ॥
शाक्त के त्रितयं विद्याद्दीक्षास्वामी न संशयः ॥
गुरुरपि गृहस्थ एव कुलार्णवे ॥
सर्व शास्त्रार्थ वेत्ता च गृहस्थो गुरु रुच्यते ॥
गुरु शब्दार्थः यामले ॥
गकारः सिद्धिदः प्रोक्तो रेफः पापस्य दाहकः ॥
उकारः शक्ति इत्युक्तस्त्रितयात्मा गुरुः स्मृतः ॥
मन्त्र शब्द व्युत्पत्ति माह ॥
मननं विश्व विज्ञानं त्राणं संसार बंधनात् ॥
यतः करोति सं सिद्धो मन्त्र इत्युच्यते ततः ॥
पिंगलामते ॥
मननात्त्राणनाच्चैव मद्रूपस्यावबोधनात् ॥
मन्त्र इत्युच्यते सम्यङ् मदधिष्टानतः प्रिये ॥
रूद्रयामले ॥
गुप्तोपदेश तो मन्त्री मनना त्राणनादपि ॥
तन्त्रान्तरे ॥
तोड़ल तन्त्रोक्त मन्त्र चैतन्य विधिः ॥

सर्व मंत्रस्य चैतन्यं शृणु पार्वति सादरं ॥ सहस्रारे महापद्मे विन्दुरूपं परं शिवं ॥ कुण्डलिनीं समुत्थाप्य हंसेन मनुना सुधीः ॥ नासाग्रे या स्थिरा दृष्टिर्जायते परमेश्वरि ॥ तदैव मन्त्र चैतन्यं कुण्डली चक्रगं भवेत् ॥ सहस्रारे महापद्मे कुण्डल्या सहितं गुरुं ॥ भावयेत्सर्व मंत्राणां चैतन्यं जायते प्रिये ॥ तदेव अजपेन्मन्त्रं सिद्धिदं नात्रसंशयः ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

देवी प्रतिमास्थापने विशेषः ॥

याम्यास्या शुभदा दुर्गा पूर्वास्या जय वर्द्धिनी ॥ पश्चिमाभि मुखी नित्यं न स्थाप्या सौम्यदिङ् मुखी ॥

देवी भक्ति तरङ्गियां, देवी पुराणे च

तोड़लतन्त्रे ॥

श्रीशिव उवाच ॥ मूलाधारेकाम रूपं हृदिजालंधरं प्रिये ! ॥ पूर्ण गिरिमधोभागे उड्डियानंतदूर्ध्वके ॥ वाराणसी भ्रुवोर्मध्ये ज्वलन्ती लोचनत्रये ॥ मायावती मुखवृत्ते कण्ठेचाष्ट पुरीतथा ॥ नाभिमूलेमहेशानि ! अयोध्यापुरी संस्थिता ॥ कांची पीठंकटीदेशे श्रीचक्रंपृष्ठदेशके ॥ मूलाधारात् शताश्चैव अतलंपरिकीर्तितम् ॥ सुतलं च वर्षशतं तलातलशतं प्रिये ॥ ऋषिबाणेन्दु वर्षान्तं संस्थितं च महातलम् ॥ शतद्वयान्तं पाताल द्विशतं वै रसातलम् ॥ मूलाधाराच्च देवेशि ! द्वेंगुली चान्तिकेस्थिते ॥ तयोर्मध्ये च पाताल स्तिष्ठन्ति परमेश्वरि ! ॥ इति ते कथितंकान्ते ! योंगसारंसमानतः ॥ नवक्तव्यंपशोरग्रे प्राणान्तेपि कदाच न ॥

तोड़लतन्त्रे १० उल्लासे ॥

तारादेवी नीलरूपा कमला कूर्म चंडिका ॥ धूमावती वराहः स्यात् छिन्नमस्ता नृसिंहिका ॥ भुवनेश्वरीवामनः स्यान्मातंगी राम मूर्तिका ॥ त्रिपुराजामदग्न्यः स्याद्बलभद्रस्तुभैरवी ॥ महालक्ष्मीर्भवेद्बुद्धोदुर्गास्याद् कल्किरूपिणी ॥ स्वयं भगवती काली कृष्ण मूर्तिः समुद्भवा ॥ इति ते कथितं देव्यवतारं दशमेवहि ॥ एतासां पूजनाद्देवि महादेव समोभवेत् ॥

गन्धर्व तन्त्रे ॥

न दद्याद्भास्करायार्घ्यं शंखतोयैर्महेश्वरि ॥
यावन्नदीयते चार्घो भास्कराय महेश्वरि ॥
तावन्न पूजयेद्विष्णुं शङ्करं वा सुरेश्वरीम् ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सूर्यः सोमो यमः कालो महाभूतानि पञ्चवै ॥
एते शुभाशुभस्येह कर्मणो नव साक्षिणः ॥
सर्वे देवा शरीरस्थाः मम मन्त्रस्य साक्षिणः ॥
पूर्व जन्मार्जितां विद्यां मम हस्ते प्रदापय ॥

जप फलं कुलार्णवे ॥

गृहे शतगुणं विद्याद् गोष्ठ लक्षगुणं भवेत् ॥
कोटिर्देवालये पुण्यमनन्तं शिवसन्निधौ ॥

उपचार शब्दार्थो ज्ञान मालायाम् ॥

भक्त्या चैतं कृता देवे साधकं देव सन्निधिम् ॥
चारयन्ति यतस्तस्मा दुच्यन्ते ह्युपचारकाः ॥
समीपे चारणाद्वापि फलानान्ते तथोदिताः ॥
अष्टत्रिंशत् षोड़शोऽर्क दश पञ्चोपचारकाः ॥
तान्विभज्य प्रवक्ष्यामि के के ते तैः कृतैश्चकिम् ॥
आसनं प्रथमं तेषामावाहनमुपस्थितिः ॥
स्नानं नीराजनं वस्त्र माचामंचोपवीतकम् ॥
पुनराचाम भूषे च दर्पणालोकनं ततः ॥
गन्ध पुष्पे धूप दीपौ नैवेद्यं च ततः क्रमात् ॥
पानीयं तोय माचामं हस्तवासस्ततः परम् ॥
ताम्बूलमनुलेपश्च पुष्प दानं पुनः पुनः ॥
गीतं वाद्यं तथा नृत्यं स्तुतिं चैव प्रदक्षिणम् ॥
पुष्पाञ्जलि नमस्कारावष्ट त्रिंशत्समीरिता ॥
पुष्पाञ्जलि नमस्कारौ विष्णु प्रीत्यैभवन्त्यमी ॥

तन्त्रोक्तोपचाराः ॥

उपचारं प्रवक्ष्यामि शृणु पार्वति ! सादरम् ॥
विनोपचारैर्या पूजा सा पूजा न प्रसीदति ॥
अष्टा दशोपचारास्तु सर्वेषामुत्तमाः प्रिये ! ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

षोडशीति प्रधाना च दशधातदनुस्मृता ॥
पञ्चधातदनुप्रोक्ता कर्तव्याभूति मिच्छता ॥
फेत्कारिणी तन्त्रे ॥ अष्टादशोपचाराः ॥
आसना वाहनञ्चार्घ्यं पाद्यमाचमनन्तथा ॥
स्नानं वासोपवीतञ्च भूषणानि च सर्वशः ॥
गन्धं पुष्पं तथा दीपं धूपोन्नंचापि तर्पणम् ॥
माल्यानुलेपनं चव नमस्कारो विसर्जनम् ॥
अष्टादशोपचारैस्तु मन्त्री पूजांसमाचरेत् ॥
षोड़शोपचाराः तन्त्रे ॥
आसनं स्वागतं पाद्यमर्घ्यमाचनीयकम् ॥
मधुपर्काचमनं स्नानं वसनं भरणानि च ॥
गन्धपुष्पे धूपदीपे नैवेद्यं वन्दनस्तथा ॥
प्रयोजयेदर्चनायामुपचारांश्च षोडशः ॥
दशोपचाराः ॥
पाद्यार्घ्याचमनीयञ्च मधुपर्काचमनस्तथा ॥
गन्धादयो नैवेद्यान्ता उपचाराः दशात्मकाः ॥
पञ्चोपचाराः ॥
गन्धं पुष्पं च धूपं च दीपं नैवेद्यमेव च ॥
प्रदद्यात्परमेशानि ! पूजा पंचोपचारिका ॥
पूजने वर्ज्य पदार्थाः ॥
सर्वं पर्युषितं वर्ज्यं पत्रं पुष्पं फलं जलम् ॥
अवर्ज्यं जान्हवी तोयमवर्ज्यं तुलसीदलम् ॥
अवर्ज्यं विल्वपत्रं स्यादवर्ज्यं जलजं तथा ॥
पुष्पैः पर्युषितै र्देवि नार्चयेत्स्वर्णजैरपि ॥
विल्वपत्रंचमार्घ्यं च तमालामलकीदलम् ॥
कल्हारं तुलसी पत्रं पद्मंच मणि पुष्पकम् ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

एतत्पर्युषितं न स्यात् यच्चान्यत्कलिकात्मकम् ॥
तिष्ठेद्दिनत्रयं शुद्धं पद्ममामलकन्तथा ॥
दिनैकं करवीराणि येऽन्यानि च तपोधन ॥
पद्मानि सित रक्तानि कुसुमान्युत्पलानि च ॥
एषांपर्युषिता शंका कार्या पंचदिनार्द्धतः ॥

गणेश स्तुतिः सद्धर्म चिन्तामणौ ॥

प्रातः स्मरामि गणनाथ मनाथ बन्धुं सिन्दूरपूर्ण परिशोभित गण्ड युग्मम् ॥ उद्दण्ड विघ्न परि खण्डन चण्ड दण्डमाखण्डलादि सुरनायक वृन्द वन्द्यम् ॥१॥ प्रातर्नमामि चतुराननं वन्द्यमानमिच्छानुकूलमखिलं च वरं दधानम् ॥ तन्तुन्दिलं द्विरसनाधिप यज्ञ सूत्रं पुत्रं विलास चतुरं शिवयोः शिवाय ॥२॥ प्रातर्भजाम्यभयदं खलु भक्त शोक दावानलं गण विभुं वर कुंजरास्यम् ॥ अज्ञानकानन विनाशन हव्यवाहमुत्साह वर्धनमहं सुतमीश्वरस्य ॥३॥

श्लोकत्रयमिदं पुण्यं सदा साम्राज्यदायकम् ॥
प्रातरुत्थाय सततं यः पठेत्प्रयतः पुमान् ॥

देवी स्तुतिः सद्धर्म चिन्तामणौ ।

प्रातः स्मरामि शरदिन्दु करो ज्वलाभां सद्रत्नवन्मकर कुण्डल हारभूषाम् ॥ दिव्यायुधोर्जित सुनील सहस्रहस्तां रक्तोत्पलाभ चरणां भवतीं परेशाम् ॥ १ ॥ प्रातर्नमामि महिषासुर चण्ड मुण्ड शुम्भासुर प्रमुख दैत्य विनाश दक्षाम् ॥ ब्रह्मेन्द्र रुद्र मुनि मोहन शीललोलां चण्डीं समस्त सुरमूर्तिमनेक रूपाम् ॥२॥ प्रातर्भजामि भजतामभिलाष दात्रीं धात्रीं समस्तजगतां दुरिताप हन्त्रीं ॥ संसार बंधन विमोचनहेतु भूतां मायां परां समधि गम्य परस्य विष्णोः ॥३॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

श्लोक त्रय मि ं देव्याश्चण्डिकायाः पठेन्नरः ॥
सर्वान्कामानवाप्नोति देवी लोके महीयते ॥

तथा च शारदायांभुवनेश्वरींप्रति शिववाक्यम् ॥ अद्याप्य शेष जगतां नवयौवनासि शैलाधिराज तनयाप्यति कोमलासि ॥ समयातन्त्रे ॥ कदाचित्कस्यभुक्तिः स्यात्कदाचिद्भुक्तिरेवच ॥ एतस्याः साधकस्याथ भुक्तिमुक्तिः करे स्थिता ॥ रुद्रयामले ॥ यत्रास्ति भोगो न च तत्र मोक्षो यत्रास्ति मोक्षः न च तत्र भागः ॥ शिवापदाम्भोज युगार्चकानां भोगश्च मोक्षश्च करस्थ एव ॥ योऽन्येभ्यो दर्शनेभ्यश्च भुक्तिं मुक्तिं च कांक्षति ॥ स्वप्न लब्ध धनेनैव धनवान्सभवेद्यदि ॥ शुक्तो रजत विभ्रान्तिर्यथा जायेत पार्वति ! ॥ तथान्य दर्शनेभ्यश्च भुक्तिं मुक्तिं च कांक्षति ॥ शाक्तानन्दतरंगिण्यां षष्ठोल्लासे ॥

अथान्तर्यजनंवक्ष्ये येन देवमयोभवेत् ॥ सुखासने समासीनः प्राङ्मुखो वा उदङ्मुखः ॥ स्वकीय हृदये ध्यायेत् सुधासागर मुत्तमम् ॥ रत्न द्वीपञ्चतन्मध्ये सुवर्ण वालुकामयम् ॥ मन्दारपारिजाताद्यैः कल्पवृक्षैः सु पुष्पितैः ॥ सर्वतोलंकृतैर्दिव्यैर्नित्य पुष्प फलद्रुमैः ॥ नाना सुगन्ध कुसुम गन्धामोदितदिङ्मुखं ॥ उत्फुल्लकुसुमामोदप्रहृष्टभृङ्ग संकुलम् ॥ कूजत्कोकिल संगेन वाचालित दिगन्तरम् ॥ सर्वतोलंकृतं दिव्यं लसत्कांचन पङ्कजम् ॥ मौक्तिकैः कुसुमैः स्रग्भिर्दुकूलैः स्वर्णतोमरैः ॥ तन्मध्ये संस्मरेद्देविकल्पवृक्षं मनोहरम् ॥ चतुःशाखाचतुर्वेदंगुणत्रय समन्वितम् ॥ पीतं कृष्णं तथा श्वेतं रक्तं पुष्पं च सुन्दरि ॥ हरितं च विचित्रं च नाना पुष्प विराजितम् ॥ कोकिलैर्भ्रमरैर्देवि शोभितं बहु पक्षिभिः ॥ एवं कल्पद्रुमं ध्यात्वातदधोरत्न वेदिकाम् ॥ तत्रोपरिमहद्व्याप्तं चिन्तयेद्रक्तमण्डलम् ॥ उद्यदादित्य संकाशं रत्न सोपान मण्डितम् ॥ ध्वजावली समाकीर्णं चतुर्द्वार समन्वितम् ॥ नाना रत्नादि शोभाढ्यं रत्न प्राकार मंडितम् ॥ स्व स्व स्थान स्थितावस्थर्लोकपालैरधिष्ठितम् ॥ सिद्ध चारण गंधर्वैर्विद्याधर महोरगैः ॥ किन्नरैरप्सरोभिश्च क्रीडद्भिः परिदिङ् मुखम् ॥ नृत्य वादित्र निरतैरमरस्त्रीगणैर्युतम् ॥ किंकिणी जालसन्नद्धपताकाभिरलंकृतम् ॥ महामाणिक्य वैदूर्यरत्नचामर भूषितम् ॥ स्थूल मुक्ता फलोद्दा-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मलम्बमानैरलंकृतम् ॥ चन्दनागुरु कस्तूरीतथामृगमदविलेपितम् ॥तन्मध्ये संस्मरेद्देविमहामाणिक्य वेदिकाम् ॥ उद्यदर्केन्दुकिरणैश्चतुष्कोणप्रशोभितम् ॥ ध्यायेत्सिंहासनंतत्र ब्रह्म विष्णु शिवात्मकम् ॥ सिंहासने महेशानि-प्रसूनतूलिकांन्यसेत् ॥ पीठ पूजां ततः कृत्वा संकल्पोक्त क्रमेणतु ॥ प्रेत-पद्मासने तत्र चिन्तयेत्परमेश्वरीं ॥ आत्मनो भीष्ट देवता ध्यानमिहोच्यते ॥ श्रीरत्नपादुकेदत्वानीत्वा तां स्नान मन्दिरे ॥ सिंहासनोपविष्टायामुद्वर्तनं समाचरेत् ॥ कर्पूरागुरु कस्तूर्यातथा मृगमदेन च ॥ रोचना कुंकुमैर्मिश्रै-र्नाना गंध समन्वितैः॥ देव्याउद्वर्तनंकृत्वा गन्ध तैलं विलेपयेत्॥ देव्या शत-सहस्रैस्तु स्वर्ण कुम्भ सहस्रकैः॥ आनीय वारिणा स्नातां चिन्तयेत्परं-देवताम् ॥ दुकूलैर्मार्जितं गात्रं दुकूले परिधे तथा ॥ कंकत्या केशान्संस्कु-याद्विधिवद्बन्धनं तथा ॥ पट्ट गुच्छं केशपाशेनानारत्नोप शोभितम् ॥ ललाटे तिलकं दद्यात्सिंदूरं केश मध्यगे । नागेन्द्र दत्त रचितं शंखं दद्यान्मनोहरम् ॥ हस्तेकेयूरकं चैव कंकणं कटकं तथा ॥ पादाङ्गुलीयकं दद्यान्नाना रत्नोपशोभितम् ॥ पादयोर्नूपुरं दद्यान्नासाग्रे गजमौक्तिकम् ॥ निवेदयेद्यथा शक्त्या पुष्प मालाञ्च भूषणम् ॥ सर्वाङ्ग लेपनं कुर्याद्गन्ध चन्दनसिह्लकैः ॥ काञ्चनाञ्चित कञ्चूली शोभितं हृदयोपरि ॥ समाधौ चिन्तयेद्देवीं भूत शुद्धादिकंदिशेत् ॥ न्यास जालं विधायाथ समाधौ पूज-येत्सदा ॥ षोडशैरुपचारैस्तु हृदिस्थां पूजयेच्छिवाम् ॥ रत्न सिंहासनं दद्यात्स्वागतं कुशलंवदेत् ॥ पाद्यं च पादयोर्देवि शिरस्यार्घ्यं निवेदयेत् ॥ परामृतमाचमनीयं प्रदद्यान्मुख पंकजे ॥ मधुपर्कं मुखेदद्यात्रिधा आचमनं मुखे ॥ हेमपत्र गतं दिव्यं परमान्नं परिस्तृतम् ॥ कपिला घृत संयुक्त-मन्नं व्यञ्जन संयुतम् ॥ सुधाम्बुधिं मांस शैलं मत्स्यराशिं फलानि च ॥ भक्ष्यं भोज्यं तथा लेह्यं चर्व्यं चोष्यं तथैव च ॥ सकर्पूरं च ताम्बूलं मानसं परि कल्पयेत् ॥ आवरणस्ततोदेव्याः पूजनंमनसैवहि ॥ इत्थमन्तः समा-राध्य मनसैवजपेन्मनुम् ॥ सहस्रादि जपं कृत्वा देव्यै सोदकमर्पयेत् ॥ ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च ईश्वरश्च सदाशिवः ॥ एतदेव महादेव्याः पर्यंक-समुदाहृतम् ॥ पयः फेन निभांशय्यां नाना पुष्पोपशोभितां ॥ पुष्प शय्यां च सं कुर्यात्तत्रदेवीं सुरेश्वरीम् ॥ चिन्तयेत्साधकोयोगीनानासुख विलासि-नीम् ॥ नृत्य गीतैः स वाद्यैश्च तोषयेत्परमेश्वरीम् ॥

दुर्गा १६ उपचाराः मानसिक पूजने ॥

उद्यच्चन्दन कुंकुमारुणपयो धाराभिराप्लावितम् ॥
नानानर्घ मणि प्रवाल घटितां दत्तां गृहाणाम्बिके ! ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

आमृष्टां सुर सुन्दरीभिरभितो हस्ताम्बुजैर्भक्तितः
मातः सुन्दरि ! भक्त कल्प लतिके ! श्रीपादुकामादरात् ॥१॥
देवेन्द्रादिभिरर्चितं सुरगणैरादाय सिंहासनम् ॥
चंचत्कांचन संचयाभिरचितं चारु प्रभाभास्वरम् ॥
एतच्चम्पक केतकी परिमलं तैलं महा निर्मलम् ॥
गन्धोद्वर्तनमादरेण तरुणी दत्तं गृहाणाम्बिके ! ॥२॥
पश्चाद्देवि ! गृहाण शम्भु गृहिणि ! श्री सुन्दरि ! प्रायशः ॥
गन्ध द्रव्य समूह निर्भर भवं धात्री फलं निर्मलम् ॥
तत्केशान्परिशोध्य कङ्कतिकया मन्दाकिनी स्रोतसि ॥
स्नात्वाप्रोज्वल गंधकं भवतु ते श्री सुन्दरि ! तन्मुखे ॥३॥
सुराधिपति कामिनी कर सरोज नाली धराम् ॥
स चन्दन सुकुंकुमागुरुतरेण विभ्राजिताम् ॥
महापरिमलोज्वलां सरस शुद्ध कस्तूरिकाम् ॥
गृहाण वरदायिनि ! त्रिपुर सुन्दरि ! श्रीपदे ॥४॥
गन्धर्वामर किन्नर प्रियतमा सन्तान हस्ताम्बुजे ॥
प्रस्तारैर्ध्रियमानमुत्तम तरं काश्मीरजापिंजरम् ॥
मातर्भास्वर भानु मण्डल लसत्कान्ती प्रदानोज्वलम् ॥
चैनं निर्मलमातनोतु वसनं श्री सुन्दरि ! त्वन्मुदे ॥५॥
स्वर्णाकल्पित कुण्डले श्रुतियुगे हस्ताम्बुजे मुद्रिका ॥
मध्येसारसना नितम्ब फलके मंजीरमंघ्रिद्वये ॥
हारो वक्षसि कङ्कणोक्वण रणत्कारौ कर द्वन्द्वके ॥
विन्यस्तं मुकुटं शिरस्यनुदिनं दत्तोन्मदं स्तूयताम् ॥६॥
ग्रीवायां धृत कान्ति कान्त पटलं ग्रैवेयकं सुन्दरम् ॥
सिन्दूरं विलसन्ललाटफलके सौंदर्य मुद्राधरम् ॥
राजत्कज्जल मुज्वलोत्पलदलश्री लोचने लोचने ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तद्दिव्यौषधिनिर्मितं रचयतु श्री शाम्भवि श्रीपदे ॥७॥
अमन्द तर मन्दरोन्मथित दुग्ध सिन्धूद्भवम् ॥
निशाकर करोपमं त्रिपुर सुन्दरि ! श्रीपदे ॥
गृहाण मुखमीक्षितुं मुकुर बिम्बमाविद्रुमै- ॥
र्विनिर्मित मधुच्छदेरति कराम्बुज स्थायिनम् ॥८॥
कस्तूरी द्रव चन्द्रना गुरु सुधा धाराभिराप्लावितम् ॥
चंचच्चम्पक पाटलादि सुरभि द्रव्यैः सुगन्धी कृतम् ॥
देव श्री गण मस्तक स्थित महा रत्नादि कुम्भ व्रजै-
रम्भः शाम्भवि संश्रमेण विमलं दत्तं गृहाणाम्बिके ! ॥९॥
कल्हारोत्पल नाग केशर सरोजाख्यावली मालती ॥
वल्ली कैरव केतकादि कुसुमैः रक्ताश्वमारादिभिः ॥
पुष्पैर्मान्य भरेण वै सुरभिना नाना रस स्रोतसा ॥
ताम्राम्भोजनिवासिनीं भगवतीं श्री चण्डिकां पूजये ॥१०॥
मांसी गुग्गुल चन्दनागुरु रजः कर्पूर शैलेयजैः ॥
माध्वी कैः सह कुंकुमैः सुरचितैः सर्पिर्भिरामिश्रितैः ॥
सौरभ्यस्थिति मन्दिरे मणिमये पात्रे भवेत्प्रीयते ॥
धूपोऽयं सुरकामिनी विरचितः श्रीचण्डिके ! त्वन्मुखे ॥११॥
घृत द्रव परिस्फुरद्रुचिर रत्न यष्ट्यान्वितो ॥
महा तिमिर नाशनः सुर नितम्बिनी निर्मितः ॥
सुवर्ण चषक स्थितः सघन सार वर्त्यान्वितः ॥
तव त्रिपुर सुन्दरि ! स्फुरति देवि ! दीपोमुदे ॥१२॥
जाती सौरभ निर्भरं रुचिकरं शाल्योदनं निर्मलम् ॥
युक्तं हिंगुमरीच जीर सुरभि द्रव्यान्वितै र्व्यञ्जनैः ॥
पक्वान्नेन सपायसेन मधुना दध्याज्य संमिश्रितः ॥
नैवेद्यं सुरकामिनी विरचितं श्री चण्डिके ! त्वन्मुखे ॥१३॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

लवङ्ग कलिकोज्वलं बहुलनाग वल्ली दलं ॥
सजातीफल कोमलं सघनसार पूगी फलम् ॥
सुधा मधुरि माकुलं रुचिर रत्न पात्र स्थितं ॥
गृहाण मुख पङ्कजे स्फुरित गन्ध ताम्बूलकम् ॥१४॥
शरत्युभव चन्द्रमः स्फुरित चन्द्रिका सुन्दरम् ॥
दलत्सुरतरङ्गिणी ललित मौक्तिकाडम्बरम् ॥
गृहाण नव कांचन प्रभव दण्ड खण्डोज्वलम् ॥
महा त्रिपुर सुन्दरि ! प्रकटमातपत्रं महत् ॥१५॥
मातस्त्वन्मुद मातनोतु सुभग स्त्रीभिः सदान्दोलितम् ॥
शुभ्रं चामरमिन्दु कुन्द सदृशं प्रस्वेद दुःखापहम् ॥
सद्योगस्त्य वशिष्ठ नारद शुक व्यासादि वाल्मीकिभिः
स्वे चित्ते क्रियमाण एव कुरुतां शर्माणि वेद ध्वनिः ॥१६॥
स्वर्गाङ्गणे वेणु मृदङ्ग शंख भेरी निनादैरुपगीयमानः ॥
कोलाहलैराकुलिता तथास्ते विद्याधरी नृत्यकलासुखाय ॥
देवि भक्ति रस भावित वृत्ते प्रीयतां यदि कुतोपि लभेत्तां ॥
तत्र नौन्यमपि सत्फल मेकं जन्म कोटिभि रपीहनलभ्यम् ॥१७
एतैः षोडशभिः पदैरुपचारोपकल्पितैः ॥
यः परां देवतां स्तौति सतेषां फल माप्नुयात् ॥

मङ्गलाचरणम् ॥

हे रम्भं विधुशेखरं निजगुरोर्हृद्यं च रम्यंपदम् ॥
ध्यात्वा विघ्नभवाब्धि पीत गहनं स्मृत्वामहेशंपरम् ॥
विद्वद्वृन्द मनो विनोद सरणिलब्धम्यग्रनारायणः ॥
व्याकुर्वेऽबुधबोधनाय ललितां दुर्गार्चनाय सृतिम् ॥१॥

गुरुभ्यो नमः ॥

मायां भवानीं जगदीश्वरीं त्वाम् ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

नत्वा सदा हेऽम्ब दयार्द्रचित्ते ॥
स्वतः प्रकाशार्चनदीपिकां वै ॥
दुर्गासृतिं लोक हिताय कुर्वे ॥२॥
प्रणम्य चंडिका पदारविन्द युग्म मादरात् ॥
करोति कोपि पूजन प्रयोग संग्रहं बुधः ॥३॥
अथ पूजा विधिं वक्षे सर्व सौभाग्यदायिनीम् ॥
ब्राह्मे मुहूर्ते चोत्थाय ध्यात्वा स्वे मस्तके गुरुम् ॥४॥

तत्र साधकः प्रातरुत्थाय शय्यायामेव बद्ध पद्मासनः। कुल* वृक्षं प्रणम्य स्व शिरसि श्वेत सहस्र दल कमल कर्णिका मध्य वर्त्ति चंद्र मंडलान्तर्गत स्वगुरुं ध्यायेत् ॥ श्वेतं श्वेत विलेप माल्य वसनं वामेन रक्तोत्पलं बिभ्रत्या प्रिययेतरेण तरसा श्लिष्टं प्रसन्नाननम् ॥ हस्ताभ्यामभयं वरं च दधतं शम्भुः स्वरूपं परम् ॥ हाला हेलति लोचनोत्पलयुगं ध्यायेच्छि-रस्थंगुरुम् ॥ इति ध्यात्वा ॥ मानसोपचारैः सम्पूज्य ॥ ॐ लं पृथिव्यात्मकं गुरवे गंधं विलेपयामि नमः ॥ अंगुष्ठकनिष्ठाभ्यां ॥ ॐ हं आकाशात्मकं गुरवे पुष्पाणि समर्पयामि नमः ॥ अंगुष्ठ अनामिकाभ्यां ॥ ॐ यं वायुवात्मने गुरवे धूपं आघ्रापयामि नमः ॥ अंगुष्ठ मध्यमाभ्यां ॥ ॐ रं वह्न्यात्मकं गुरवे दीपं दर्शयामि नमः ॥ अंगुष्ठ तर्जनीभ्यां ॥ ॐ वं अमृतात्मकं गुरवे नैवेद्यं निवेदयामि नमः ॥ अंगुष्ठ अनामिकाभ्यां ॥ ॐ सं सोमात्मकं गुरवे तांबूलं स०नमः सर्वाङ्गुलीभिः॥ अमुकानन्दनाथ श्रीपादुकायै परिपूजयामि नमः ॥ इति संपूज्य ॥ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हसखफ्रें ह्सौः हसक्षमल वरयूं सहसखफ्रें सहौसहक्ष मलवरयूं ह्सौः

*टि० कुलवृक्षाः ॥ अशोकः केशरो विल्वः कर्णिकारश्चुतः स्तथा। नमेरुश्च प्रियालश्च सिन्दुवार कदम्बकौ ॥ मरुवकश्चंपकश्चैव विल्वश्च द्वादशस्मृतः ॥ नमेरु रुद्राक्षः प्रियालोवृक्ष विशेषः।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अमुकानंदनाथ अमुकीदेव्यं वा श्रीपादुकां पूजयामिनमः ॥ इति गुरु पादुका मंत्रं दशधा सप्तधा वा प्रजप्य जपं गुरोर्दक्षिण करे ॥ ॐ गुह्याति गुह्य गोप्तात्वं गृहाणास्मत् कृतंजपं ॥ सिद्धिर्भवतु मे देव ! त्वत्प्रसादान्महागुरो ! ॥ १ ॥ इति समर्प्य ॥ ऐं अखण्ड मण्डलाकारं व्याप्तं येनचराचरम् ॥ तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः ॥ २ ॥ नमोस्तु गुरवे तस्मै इष्ट देव स्वरूपिणे ॥ यस्य वागमृतं हन्ति विषं संसार संज्ञकम् ॥३॥ इति प्रणम्य ॥ स्तुवीत ॥ नमस्ते नाथ ! भगवन् ! शिवाय गुरु रूपिणे ॥ विद्यावतार संसिद्ध्यै स्वीकृतानेकविग्रहः ॥४॥ नारायण स्वरूपाय परमार्थैक रूपिणे ॥ सर्वज्ञान तमोभेद भानवे चिद्घनायते ॥ स्वतन्त्राय दयाक्लृप्त विग्रहायशिवात्मने ॥ परतन्त्राय भक्तानां भव्यानां भव्य रूपिणे ॥ विवेकिनां विवेकाय विमर्शाय विमर्शिणाम् ॥ प्रकाशिनां प्रकाशाय ज्ञानिनां ज्ञान रूपिणे ॥ पुरस्तात्पार्श्वयोः पृष्ठ नमस्कुर्यामुपर्यधः ॥ सदामच्चित्तरूपेण विधेहि भवदासनम् ॥ त्वत्प्रसादहं देव ! कृत कृत्योस्मि सर्वतः ॥ मायामृत्यु महापाशाद्विमुक्तोस्मि शिवोस्मि च ॥ इति स्तुत्वा ॥ प्रातः प्रभृति सायांतं सायादि प्रातरं ततः ॥ यत्करोमि जगन्नाथ ! तदस्तु तव पूजनम् ॥ इति सर्वं गुरवे निवेद्य ॥ तदाज्ञां गृहीत्वा तत्पाद स्खलितामृतधारयाक्षालितनिर्मलमात्मानं विचिन्तयेत् ॥ अथ मूलाधारस्थ चतुर्दल कमल कर्णिकान्तर्गत ‡त्रिकोण मध्यस्थिताधोमुख स्वयम्भूलिंग वेष्टिनीं प्रसुप्त भुजगाकारां शंखावर्ताकारेण सार्द्ध त्रिवलयां तडित्कोटि प्रभां विस-

---

‡ टि० तंत्रान्तरे ॥ रहस्यं परमाश्चर्यं त्रिकोणानां च संस्तृणु ॥ वाम रेखा भवेद् ब्रह्मा विष्णुर्दक्षिण रेखिका ॥ अधो रेखा भवेद्रुद्रोमात्रा साक्षात्सरस्वती ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तन्तनीयसीं मूल विद्या प्रकृति भूतां कुंडलिनीं* इष्ट देवता स्वरूपां कूर्च बीजेन त्रिकोणाग्निना सचेतनां कृत्वा सुषुम्णा-वर्त्मना द्वादशांतं नीत्वा ब्रह्म रंध्रस्थ सहस्र दल कमलस्थेन परम सदा शिवेन संयोज्य तत्र चन्द्र मंडलाद्विगलितअमृत धारया संतर्प्य ॥ तत्रैव तत्प्रभायां कुलगुरुं ध्यायेत् ॥ कुलामृत रसोल्लोल हृदया घूर्ण लोचनान् ॥ कुलालिङ्गन संभिन्न चूर्णि-ताशेषतापसान् ॥ कुल शिष्यैः परिवृतान् पूर्णान्तः करणोद्यतान् ॥ वराभययुतान्सर्वान् दुर्गा तन्त्रार्थ वेदिनः ॥ इति ध्यात्वा ॥ ह्रीं श्रीं प्रह्लादानन्दनाथाय नमः ॥ ह्रीं श्रीं सकलानन्दनाथाय नमः ॥ ह्रीं श्रीं कुमारानन्द नाथाय नमः ॥ ह्रीं श्रीं वसिष्ठानन्दनाथायनमः ॥ ह्रीं श्रीं क्रोधानन्द नाथाय नमः ॥ ह्रीं श्रीं असुरानन्द नाथाय नमः ॥ ह्रीं श्रीं ध्यानानन्द नाथाय नमः ॥ ह्रीं श्रीं बोधानन्द नाथाय नमः ॥ ह्रीं श्रीं शुकानन्द नाथाय नमः ॥ इति ध्यात्वा ॥ ततः ऋष्यादि कर षडंग न्यास पूर्वकं हृदय कमले द्वादश दले कुण्डलिनी मानीय दुर्गा रूपेण वक्ष्यमाण प्रकारेण ध्यात्वामानसैरुपचारैः संपूज्य ॥ ॐ महादेव्यै विद्महे दुर्गायै धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात् ॥ इति गायत्रीमष्टोत्तर शता वृत्यष्टाविंशतिधा दशधा वा प्रजप्य ॥ मूल (नवार्ण) मन्त्रं शतवारं प्रजप्य ॥ गुह्याति गुह्यगोप्त्रीत्वं गृहाणास्मत्कृतं जपं ॥ सिद्धिर्भवतु मे देवि ! त्वत्प्रसादान्महेश्वरि ! ॥ इति देव्याः वामकरे जपंसमर्प्य ॥ स्तुत्वा नत्वा देव्याज्ञांप्रार्थयेत् ॥ त्रैलोक्य चैतन्यमयी त्रिशक्ते हे विश्वमातर्भवदाज्ञयैव ॥ प्रातः समुत्थाय-तव प्रियार्थं संसार यात्रा मनुवर्तयिष्ये ॥ इति प्रार्थ्य ॥ कुण्ड-

* अंकुशा कुण्डली यातु कोटि विद्युल्लता कृतिः ॥ कुण्डली अंकुशाकारा मध्यशून्यं सदा शिवः ॥ जवा पावक संकाशा वाम रेखा वरानने ॥ शरच्चन्द्र प्रतीकाशा दक्षरेखा च मूर्तिमान ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

लिनीं पुनस्तेनैव पथा मूलाधारमानीय ॥ अहंदेवि नचान्योस्मि ब्रह्मैवाहं न शोक भाक् ॥ सच्चिदानन्द रूपोहमात्मानमिति चिंतयेत् ॥ गुरु देवतात्मनामैक्यं* भावयन् ॥ ब्रह्मैवास्मीति मत्वा ॥ भूमिं प्रार्थयेत् ॥ ॐ समुद्र मेखले देवि ! पर्वत स्तन मंडले ॥ विष्णुपत्नि नमस्तुभ्यं पादस्पर्शं क्षमस्व मे ॥ इति श्वासानुसारेण भूमौ पादं दत्वा वहिर्गत्वावश्यकं कर्म कृत्वा शुचि देवी गृहं गत्वा निर्माल्यमपसार्य प्रणम्याज्ञां गृहीत्वा स्नानार्थं तीर्थं गच्छेत् ॥ अथ स्नानम् ॥ नद्यादौ गत्वा नवार्णेन मृत्तिकयांगं विलिप्य मूल मुच्चरन् मलापकर्षणं कृत्वाचम्य जलपूर्णं ताम्र पात्रन्तिल अक्षत जवापुष्पाणि निक्षिपेत् ॥ तेन संकल्पयेत् ॥ ॐ अद्येत्यादि एतन्मन्त्र प्रतिबन्धकाशेष दुरितक्षय पूर्वकं श्री चण्डिका प्रीतये मन्त्र स्नानमहं करिष्ये ॥ इति संकल्प्य ॥ जले समूलत्रिकोण चक्रं विलिख्य ॥ ॐ गंगेच यमुने चैव गोदावरि सरस्वति ॥ कावेरि नर्मदे सिन्धोजलेऽस्मिन्संनिधिं कुरु ॥ इति मंत्रेण सूर्य मण्डलादंकुश मुद्रया तीर्थान्यावाह्य ॥ अंगुलीभिः सप्त छिद्राणि संरुध्य ॥ मूलविद्ययात्रिर्निमज्य ॥ मूलान्त आत्म तत्वाय स्वाहा ॥ विद्या तत्वाय स्वाहा ॥ शिव तत्वाय स्वाहा ॥ इति त्रिराचम्य ॥ मूलेन कुम्भ मुद्रयात्रिर्मूर्द्ध्नि जलेनाभिषिंचेदिति स्नानम् ॥ अथ सन्ध्या विधिः ॥

---

* त्रैलोक्य चैतन्य मयादि देवि ! भवानि दुर्गे ! भवदाज्ञयैव ॥ प्रातः समुत्थाय तव प्रियार्थं संसार यात्रा मनुवर्तयिष्ये ॥ १ ॥ जानामि धर्म्मं न च मे प्रवृत्तिर्जानाम्यधर्मं न च मे निवृत्तिः ॥ केनापि देवेन हृदिस्थितेन यथा नियुक्तोस्मि तथा करोमि ॥ २ ॥

* अंकुश मुद्रा का लक्षण । ऋजुमध्या मध्यपर्वाक्रान्ता तर्जन्यधोमुखी ॥ विज्ञेयांङ्कुश मुद्रेयं कुञ्चितामध्य पर्वतः ॥

दक्ष मुष्टि गृहीतस्य वाम मुष्टेस्तु मध्यमाम् ॥ प्रसार्य तर्जन्या कुञ्चेत्सेयमंकुश मुद्रिका ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ततः श्वेत वाससी परिधाय ॥ ॐ मणि धरणि वज्रिणि महा प्रतिसरे रक्ष रक्ष हूं फट् स्वाहा ॥ इति शिखां बध्वा ॥ सिंदूरेण तिलकं कृत्वाचम्य ॥ मूलेन प्राणायामत्रयं विधाय ॥ ऋष्यादि षडंग न्यासं विधाय वाम हस्ते जल मादाय दक्ष हस्तेन पिधाय ॥ लं हं यं रं वं इति पंच भौतिक बीजैरभिमन्त्र्य शिरसि मन्त्रेणां-गुल्यान्तर्गत तदुदकबिंदुभिर्मूलमुच्चरन् सप्तधा तत्व मुद्रया-मूर्द्ध्नि प्रोक्षणं कृत्वा जल रेखां दक्षिणे कृत्वा नासा मुपनीय वाम नासयाकृष्य देहान्तर्वर्ति समस्त पापं तेनप्रक्षाल्य कृष्ण वर्णतज्जलं वामनासा पुटेनहस्त प्रविष्टं संचिन्त्य पुरः कल्पित वज्र पाषाणे त्रिः अस्त्राय फट् इति क्षिप्त्वा आचम्य मूलेन निः-श्वसन् सूर्यायांजलित्रयं दत्वा ॥ ॐ महा देव्यै विद्महे दुर्गायै धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात् ॥ इति गायत्री मष्टोत्तर शता-वृत्यष्टा विंशतिधा वाष्टधा वा प्रजपेदिति सन्ध्या विधिः ॥ अथ तर्पणम् ॥ जले यंत्रं विभाव्य तर्पणीय देवता इह याचित्वा-वाह्य ॥ ॐ ब्रह्मा भैरवस्तृप्यताम् ॥ ॐ विष्णुर्भैरवस्तृप्यताम् ॥ ॐ रुद्र भैरवस्तृप्यताम् ॥ ॐ हसक्ष मलवर यूं स्वधा देव्यै वौषट् आनन्द भैरवीतृप्यताम् ॥ एतदेव तर्पणम् ॥ अथ ऋषि तर्पणम् ॥ ॐ महादेवी काली तृप्यताम् ॥ ॐ महादेवी लक्ष्मी तृप्यताम् ॥ ॐ महादेवी सरस्वती तृप्यताम् ॥ ॐ महादेवानन्द नाथस्तृप्यताम् ॥ ॐ त्रिपुरांबा तृप्यताम् ॥ ॐ भैरवानन्द नाथस्तृप्यताम् ॥ ॐ ब्रह्मानन्द नाथस्तृप्यताम् ॥ ॐ पूर्णानन्द-नाथस्तृप्यताम् ॥ ॐ बन्दिनाथानन्द नाथस्तृप्यताम् ॥ ॐ चल-च्चित्तानन्द नाथस्तृप्यताम् ॥ ॐ चंचलानन्दनाथस्तृप्यताम् ॥ ॐ कुमारानन्दनाथस्तृप्यताम् ॥ ॐक्रोधानन्दनाथस्तृप्यताम् ॥ ॐ वरदानन्दनाथस्तृप्यताम् ॥ ॐस्मरदीपानन्दनाथस्तृप्यताम् ॥ ॐ

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मायाम्बातृप्यताम् ॥ मायावत्यम्बा तृप्यताम् ॥ ॐ विमलानन्द नाथस्तृप्यताम् ॥ ॐ कुशलानन्दनाथस्तृप्यताम् ॥ ॐ गोरक्षानंद नाथस्तृप्यताम् ॥ ॐ भोज देवानन्द नाथस्तृप्यताम् ॥ ॐप्रजापत्यानन्दनाथस्तृप्यताम् ॥ ॐ मूलदेवानन्दनाथस्तृप्यताम् ॥ ॐ विघ्नदेवानन्दनाथस्तृप्यताम् ॥ ॐ हुताशनानन्दनाथस्तृप्यताम् ॥ ॐसमयानन्दनाथस्तृप्यताम् ॥ ॐ संतोषानन्दनाथस्तृप्यताम् ॥ अथ पितृतर्पणम् ॥ ॐ गुरु परमगुरुपरापरगुरु परमेष्ठि गुरुनामनाथ शब्दान्त स्वनाम्ना तर्पयेत् ॥ गंधादिभिरभ्यर्च्य ॥ मूलान्ते सांगां सपरिवारां सायुधां सशक्तिकां ब्रह्मा विष्णु रुद्र सहितां श्रीचण्डिकां तर्पयामि नमः ॥ दशधा त्रिधा वा तर्पयेत् ॥ एवं सन्ध्या तर्पणाशक्तावपि त्रिकालदेवीं ध्यात्वा यथाशक्ति मूलं वा गायत्रीं जपेत् ॥ ततः ॐ ह्रीं हंसः मार्तण्ड भैरवाय प्रकाश शक्तिसहिताय इदमर्घ्यं स्वाहेति त्रिः सूर्यार्घ्यं दत्वा सूर्यमण्डले देवीं विभाव्य मूलमुच्चार्य उद्यदादित्य मण्डल वर्तिन्यै शिव चैतन्य मय्यै ब्रह्मा विष्णु रुद्र सहितायै चण्डिकायै इदमर्घ्यं स्वाहेति मंत्रेण रक्त चन्दन जवापुष्प कुशजलाक्षत पूरिपूर्णेन ताम्रपात्रेण सूर्यमण्डलस्थायै देव्यैअर्घ्यं दत्वा गायत्रीं यथा शक्ति प्रजप्य गुह्येति मंत्रेण समर्प्य सूर्यमण्डले देवीं विसर्जयेदिति संध्याविधिः ॥

अथ पूजा विधिः ॥

यथा कामनया वस्त्र युग्मं परिधाय तिलकं चंदनादिना कृत्वा पूजागृह समीपमागत्य ॥ सूर्यः सोमोयमः कालोमहा भूतानि पंच च ॥ एते शुभाशुभस्येह कर्मणो नव साक्षिणः ॥ देवि ! त्वं प्राकृतं चित्तं पापाक्रांत मभून्मम ॥ तन्निः सारयचित्तान्मे पापं फट् फट् ते नमः ॥ इति मन्त्रेण पापोत्सादनं कृत्वा ॥ वज्रोदके हूँफट् स्वाहा ॥ इति मंत्रेण जलमानीय आसनमभ्युक्ष्योपविष्य ॥ ॐ विशुद्धे सर्व पापानि शमयाशेष विकल्पानयनापहे

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

इति मंत्रेण हस्तौ पादौ प्रक्षाल्य ॥ ॐ ह्रीं स्वाहेत्याचम्य ॥ शिखाबंधनम् कृतं चैतेनैव मंत्रेण विधासामान्यार्घ्यं स्थापयेत् ॥ यथा स्ववामे त्रिकोण वृत्त चतुरस्र मंडलं कृत्वा ॥ ॐ ह्रीं आधार शक्तये नमः ॥ इति संपूज्याधारं संस्थाप्य ॥ ॐ क्रः अस्त्रायफट् ॥ इतिपात्रं प्रक्षाल्य आधारे निधाय ॥ ॐ क्रां हृदयाय नम इतिजलेन संपूर्य ॥ तीर्थान्यावाह्य ॥ ॐ गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति ॥ कावेरि नर्मदे सिंधो जलेस्मिन्संनिधिं कुरु ॥ इति मंत्रेणांकुशमुद्रया सूर्यमंडलात्तीर्थान्यावाह्य ॥ ॐ मिति गंधादि निक्षिप्य ॥ वमिति धेनु मुद्रां दर्शयेदिति सामान्यार्घ्यः ॥ ततस्तेन जलेन पूजा गृह द्वारं प्रोक्ष्य द्वार देवताः पूजयेत् ॥ द्वारोर्ध्वे गं गणपतये नमः ॥ वामे क्षं क्षेत्रपालाय नमः ॥ दक्षे वां वटुकाय नमः ॥ अधः यां योगिनीभ्यो नमः ॥ एवं क्रमेणऊर्द्ध्वे गं गंगायै नमः ॥ वामे यं यमुनायै नमः ॥ दक्षे श्री लक्ष्म्यै नमः ॥ अधः ऐं सरस्वत्यैनमः ॥ एवं पूर्वादि द्वाराणि पूजयेत् ॥ द्वारश्रि इदमर्घ्यं परिकल्पयामि ॥ ततो ॥ द्वारपाचाम्बलोकस्य द्वारं रक्षतु यत्नतः ॥ निवार्य विघ्न संघातमित्याज्ञा पारमेश्वरी ॥ इति देवताज्ञां श्रावयित्वा वामांगं संकोचयन्देहलीं लंघयन्दक्ष पाद पुरः सरमंतः प्रविश्य ॥ ॐ अपः क्रामन्तु भूतानि पिशाचाः प्रेत गुह्यकाः ॥ ये चानिवसंत्यन्ये देवता भुवि संस्थिताः ॥ अपःसर्पन्तु ते भूता ये भूता भुवि संस्थिताः ॥ ये भूता विघ्न कर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया ॥ ॐ सर्व विघ्नानुत्सारयोत्सारय हूं फट् स्वाहा ॥ एभिरभिमंत्रेण वामपार्ष्णिघातेनोद्ध्वोर्द्धताल त्रयेणनिमेषरहित दृष्ट्या च भौमांतरिक्ष दिव्यान्विघ्नानुत्सार्य ॥ अर्घ्यं जलेन तं गृहं प्रोक्ष्य ॥ नैर्ऋतकोणे वास्तुपुरुषाय नमः ॥ ईशानकोणे दीपनाथाय नमः ॥ इति संपूज्य ॥ ॐ तीक्ष्ण दंष्ट्र महाकाय कल्पान्त

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

दहनोपम ॥ भैरवाय नमस्तुभ्यं मनुज्ञां दातुमर्हसि ॥ इति भैरवाज्ञां गृहीत्वा ॥ ॐ रक्ष रक्ष हुंफट् स्वाहेति भूमिं परिषिंच्य ॥ ॐ पवित्र हूँ हूँफट् स्वाहेति भूमिमभिमंत्र्य ॥ ॐ आसुरेखे वज्ररेखे हुँफट् स्वाहेति भूमौ त्रिकोणमंडलं कृत्वा ॐ ‡ह्रीं आधारशक्ति कमलासनाय नमः ॥ इति संपूज्य ॥ तत्र कंबलाद्यासनं संस्थाप्य ॥ आग्नेयादि कोणेषु प्रादक्षिण्येन गणेशाय नमः ॥ सरस्वत्यैनमः ॥ दुर्गायैनमः ॥ क्षेत्रपालाय नमः ॥ इत्यासनं संपूज्य हस्तंधृत्वा ॥ आसनमंत्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषिः सुतलं छन्दः कूर्मो देवता आसनोपवेशने विनियोगः ॥ ॐ पृथ्वित्वया धृतालोका देवि त्वं विष्णुनाधृता ॥ त्वं च धारय मां देवि १पवित्रं कुरु चासनम् ॥ इति पठित्वाऽधोभागे विष्टरं दत्वा वीराद्यासनेनोदङ् मुखं उपविशेत् ॥ ततः पूजा द्रव्यं स्वीकृत्य ॥ दक्षे गुं गुरुभ्यो नमः ॥ वामे गं गणपतयेनमः ॥ मध्ये चंडिका देव्यै नमः ॥ इति नत्वा ॥ वामे अर्घ्यं संस्थाप्य ॥ किंचिज्जलंप्रोक्षणी पात्रे निधाय तेन जलेनात्मानं पूजोपकरणं प्रोक्ष्य ॥

---

‡ प्रथम त्रिकोण के ऊपर ॐ कूर्मासनायनमः ॥ ॐ ह्रीं आधार शक्ति कमलासनाय नमः ॥ ॐ पृथिव्यै नमः ॥ गंधाक्षत पुष्प से पूजन करके क्रम से तीन आसन बिछाना १ कुशासन २ कृष्णाजिन ३ कंबल फिर प्रत्येक के ऊपर विष्टर रख कर तीन नामों से पूजन करना ॥ ॐ अनन्तासनाय नमः ॥ ॐ विमलासनाय नमः ॥ ॐ पद्मासनाय नमः ॥

१ टि० स्थान शोधन माह गंधर्व तन्त्रे ॥ वीक्षणं धर्म बीजेन यज्ञ भूमेः समीरितं ॥ प्रोक्षणं चास्त्रि मंत्रेण यागभूमेः समाचरेत् ॥ अज्ञातं दूषितं स्थानं मार्जनादौ च यद्भवेत् ॥ एव मादीनि सर्वाणि नस्यात्तल्लोकनात्प्रिये ॥ मधुकैटभयोर्मेद- संघातै दृढ़तांगतः ॥ मेदिनी सर्वदा शुद्धासुर पूजासु सर्वतः ॥ तस्य दोषस्य मोक्षाय कामबीजंक्षितौ लिखेत् ॥

पृथ्वी ध्यानम् ॥ पंच वर्णं रजश्चित्रा नाना गंध समन्विता ॥ पुष्प प्रकर संकीर्णा घंटा चामर भूषिता ॥ बालार्क सदृशीरम्या मनः संतोष कारिणी ॥ एवं भूमिं समाश्रित्य पूजयेत्परमेश्वरीम् ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

स्व दक्ष भागे पुष्पादिकं ॥ स्व पृष्ठ भागे कर प्रक्षालनार्थपात्रं ॥ देवी पृष्ठ भागे पूजा द्रव्याणि संस्थाप्य ॥ ॐ पुष्प केतु राजार्हत शताय सम्यक् संवद्धाय ॥ ॐ पुष्पे पुष्पे महा पुष्पे सुपुष्पे पुष्प संभवे ॥ पुष्पं च यावकीर्ण हुँफट् स्वाहेति मंत्रेण पुष्प शुद्धि विधाय ॥ ॐ ह्रीं हूँफट् इति मंत्रेण *नाराच मुद्रया सम दृष्टयावलोकनेन च गंधादि सर्व संभार शुद्धि विधाय ॥ रमिति दीपशिखां स्पृष्ट्वा ॥ ॐ हुँ फट् स्वाहेति मंत्रेण काय वाक् चित्त शोधनं विधाय ॥ रक्ष रक्ष हुंफट् स्वाहेति हृदि हस्तं दत्वा आत्म रक्षां विधाय ॥ चंदनाक्तानि पुष्पाणि कराभ्यां मर्दयित्वा तानि वामहस्ते समादायाघ्राय ॥ ते सर्वे विलयं यान्तु ये मां हिंसति हिंसकाः ॥ मृत्यु रोग भय क्लेशाः पतन्तु रिपु मस्तके ॥ इति मंत्रेण ईशान्यांदिशि दूरतः क्षिप्त्वा ॥ नवार्णेन तालत्रयं दिग्बंधनं च कृत्वा ॥ काली कूर्च वधूर्माया फडन्ता परमेश्वरि ॥ पंचाक्षरी चण्डिकायाकुल्लुका[१] परिकीर्तिता ॥ इति विशुद्धेश्वर तन्त्रे ॥ इति कुल्लुकांमूर्द्ध्नि विचिन्त्य आचमनं कुर्यात् मूलं

* नाराच मुद्रा लक्षण ॥ अंगुष्ट तर्जन्यग्राभ्यां स्फोटो नाराच मुद्रिकेति ॥

१ रुद्रयामले ॥ अज्ञात्वा कुल्लुकां देवि महामन्त्रं जपेत्तुयः ॥ तस्य नश्यन्ति चत्वारि आयुर्विद्या यशोवलम् ॥ वाराही तन्त्रे ॥ जपं समारभेन्मन्त्रौ कुल्लुकाद्या यथा विधिः ॥

नीलतंत्रे ॥ कुल्लुकांच न जानाति महामंत्रं जपेन्नरः ॥ पंचत्वं जायते तस्य अथवा वातुलो भवेत् ॥ कुल्लुकां च शिरेधृत्वा सर्व यज्ञ फलं लभेत् ॥ कुल्लुकां धारयेच्छीर्षे लिखित्वाभूर्जपत्रके ॥ राज द्वारे सभायां च विजयी भवति ध्रुवं ॥ नान्यो विचारः सर्वत्र विरूपाक्षस्य सम्मतः ॥ कुल्लुका वर्जितेपुंसामज्ञानोपस्थिति भवेत् ॥ मम पूजा सदा व्यर्थ्य मम यज्ञस्तथैव च ॥ दुर्गा मंत्रस्य तत्वार्णं जानीयान्मंत्रमुत्तमम् ॥ न जानाति च योमूढः कुल्लुकां चंडिकां जपेत् ॥ यावज्जीवं तु जप्तव्यं न सिद्धयति कदाचन ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

आत्म तत्वाय स्वाहा ॥१॥ मूलं विद्या तत्वाय स्वाहा ॥२॥ मूलं शिव तत्वाय स्वाहा ॥ ३ ॥ इत्याचम्य ॥ मूलेन इतिद्विरोष्ठावुन्मृज्य ॥ मूलेन इति करं प्रक्षाल्य जलेन सप्त छिद्राण्युपस्पृशेत् ॥ ॐ महाकाल्यै नमः आस्ये ॥ ॐ महा लक्ष्म्यैनमः ॥ ॐ महासरस्वत्यै नमः नसोः ॥ ॐ नन्दजायै नमः ॥ ॐ रक्त दन्तिकायै नमः नेत्रयोः ॥ ॐ शाकंभर्य्यै नमः ॥ ॐ दुर्गायै-नमः श्रोत्रयोः ॥ ॐ भीमायै नमः नाभौ ॥ ॐ भ्रामर्यै नमः उरसि ॥ ॐ अष्टादश भुजायै नमः शिरसि ॥ ॐ अष्टभुजायै नमः ॥ ॐ दश भुजायै नमः भुजयोः ॥ एवं अङ्गानि स्पृष्ट्वा ॥ हुं हं हीं अस्त्राय फट् ॥ अनेन दिग्बन्धनं कृत्वा प्राणायामं कुर्यात् ॥ यथा मूला धारे मनः संयोज्य दक्षिणांगुष्ठेन दक्षिण नासा पुटं धृत्वा प्रणवं मूलाद्यबीजं वा षोडश वारं जपन् वाम नासया वायुमापूर्य कनिष्ठानामिकाभ्यां वाम नासापुटं धृत्वा चतुःषष्ठि (६४) वारं जपन् वायुं स्तंभयित्वा ॥ दक्षिण नासया द्वात्रिंशद्वारं ३२ जपन् रेचयेदित्येकः ॥ पुनस्तेनैव मानेन दक्षिण नासापुटं प्रपूर्य कुम्भयित्वा वामेन रेचयेदिति द्वितीयः ॥ पुनराद्यवत्तृतीयः मूलेन चेदेकेन पूरकं चतुर्भिः कुम्भकं द्वाभ्यां रेचकमित्येवं प्राणायामं विधाय ॥

* भूत शुद्धिं कुर्यात् ॥

यथा हूंकारेण मूलाधारात्कुण्डलिनीमुत्थाप्य जीवात्मना संयोज्य हंस इति मन्त्रेण परमात्मनिविलापयेत् ॥ ततः पादादि जानुपर्यन्तं स्थितां पृथ्वीं जान्वादि नाभि पर्यन्तं स्थितामप्सु

---

* भूत शुद्धौ ॥ सर्वासु बाह्यपूजासु अन्तः पूजा विधीयते ।
अन्तः पूजा महेशानि ! बाह्य कोटि फलं लभेत् ॥१॥
भूतशुद्धि लिपिन्यासौ विनायस्तु प्रपूजयेत् ॥
विपरीत फलं दद्यादभक्त्या पूजने यथा ॥ २ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

प्रविलाप्य ताः ॥ नाभ्यादि हृदयान्त स्थिते वन्हौ तं च हृदया-दिभ्रूमध्यांत प्रकृतौ तां च ब्रह्मणि विलापयेत् ॥ ततः पुरुष निर्भं पापमनादि भवसंचितं ॥ ब्रह्महत्याःशिरः स्कन्धं स्वर्णस्तेय भुजद्वयम् ॥ सुरापान हृदायुक्तं गुरुतल्प कटिद्वयम् ॥ तत्संयो-गिपद द्वंद्वमंगप्रत्यंग पातकम् ॥ उपपातक रोमाणां रक्तश्म-श्रुविलोचनम् ॥ खड्गचर्म धरं पापमंगुष्ठ परिमाणकम् ॥ अधो-मुखं कृष्णवर्ण वाम कुक्षौ विचिंतयेत् ॥ इति पाप पुरुषं विचिंत्य यमिति बीजेन षोडशवारमावृतेन वाम नासया वायुमापूर्यनाभौ संयोज्य तत्र यं संचिंत्य सपापं देहं विशोष्य रमिति चतुष्षष्ठि वारमावृतेनबीजेन कुम्भक प्रयोगेन मूलाधारे संयोज्य रं संचित्य सपापं देहं भस्मान्तं संदह्य पुनर्यमिति बीजेन द्वात्रिंशद्वार मावृतेन दक्षिण नासया पापपुरुष भस्म रेचयेत् ॥ ततो वमिति बीजजपात् ललाटे चन्द्रान्मातृका वर्णमयीममृत वृष्टिं निपात्य भस्मात्माव्य न्यासक्रमेणावयवान् निष्पाद्य ॥ लमिति जपाद् दृ-ढीकृत्य ॥ परमात्मनः प्रकृतिं तस्याः महत्तत्वं ततोहंकारं तस्मादा-काशं ततो वायुं तस्मात्तेजस्तस्माज्जलं तस्मात्पृथिवीं निर्गम्य स्व स्व स्थाने स्थापयित्वा ब्रह्मरंध्रस्थ परमात्मनः सकाशात् सोह-मिति मंत्रेण जीवात्मानं प्रदीप कलिकाकारं कुण्डलिनी द्वार हृदय कमल मानीय कुण्डलिनीं मूलाधारे स्थापयित्वा स्वशरीरं निरस्त समस्त किल्विषं देवताराधन योग्यं विभावयेदितिभूत-शुद्धिः ॥ एवंभूत शुद्धिं कृत्वा स्वशरीरे चण्डिकायाः प्राणान्प्र-तिष्ठापयेत् ॥

---

‡ अथ यामलोक्त भूतशुद्धिः प्रारभ्यते ॥

ॐ सूर्यः सोमो यमः कालः संध्या भूतानि पंच च ॥ एते शुभाशुभ-

---

‡ जो भूतशुद्धि न कर सके वह ॐ ह्रौं का १०८ वार जप कर लें।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ अथ स्व प्राण प्रतिष्ठा प्रकारः ॥

ॐ अस्य स्व प्राणप्रतिष्ठामंत्रस्य ब्रह्मविष्णुमहेश्वराऋषयः ऋग्यजुःसामानि छन्दांसि प्राणशक्तिर्देवता आँबीजं ह्रींशक्तिः क्रों कीलकं स्वशरीरे चंडिका देवता प्राणप्रतिष्ठापने विनियोगः ॥ अथ ऋष्यादिन्यासः ॥ ॐ ब्रह्मविष्णुमहेश्वरऋषिभ्यो नमः शिरसि ॥ ॐ ऋग्यजुस्सामानि छन्दोभ्यो नमः मुखे ॥ ॐ प्राणशक्त्यैनमो हृदि । ॐ आँ बीजाय नमो गुह्ये ॥ ॐ ह्रीं शक्तये नमः पादयोः ॥ ॐ क्रों कीलकाय नमः सर्वांगे ॥ इति ऋष्यादि न्यासः ॥ अथ करन्यासः ॥ ॐ ङं कं खं घं गं नाभौ

स्येह कर्मणो मम (नव) साक्षिणः ॥१॥ भो देव ! प्राकृतं चित्तं पापाक्रांतमभून्मम ॥ तन्निःसारय चित्तान्मे पापं तेस्तु नमो नमः ॥२॥ इति प्रार्थ्य स्वदक्षिणभागे ॐ गुं गुरुभ्यो नमः ॥ स्ववाम भागे ॐ गं गणपतये नमः ॥ इति नत्वा भूतशुद्धिं कुर्यात् ॥ तथा च कुम्भक प्राणायामे मूलाधारात् कुण्डलनीं परदेवतां विसतंतुनिभां समुत्थाप्य ब्रह्मरंध्रगतांस्मृत्वा हृदयस्थं जीवं प्रदीप कलिकाकारं गृहीत्वा सुषुम्णामार्गेण ब्रह्मरंध्रं गत्वा हंसः सोहँ इति मंत्रेण जीवं ब्रह्मणि संयोजयेत् ॥ ततः पादादि जानुपर्यन्तं चतुष्कोणं वज्रलांछितं स्वर्णवर्णं पृथ्वीमंडलं (ॐ लं) इति भूबीजाढ्यं स्मरेत् ॥ १ ॥ जान्वादि नाभिपर्यन्तं अर्द्धचन्द्राकारं पद्मद्वयाङ्कितं श्वेतवर्णं अपांस्थानं सोममंडलं "ॐ वं" इति वरुणबीजाढ्यं स्मरेत् ॥ २ ॥ नाभ्यादि हृदयपर्यन्तं त्रिकोणं स्वस्तिकांकितं रक्तवर्णमग्निमंडलम् ॥ "ॐ रँ" इति वन्हि बीजाढ्यं स्मरेत् ॥ ३ ॥ हृदयादि भ्रू मध्यपर्यन्तं वृत्तं षड्विन्दुलांछितं धूम्राभं वायुमंडलं "ॐ यँ" इति वायु बीजाढ्यं स्मरेत् ॥ ४ ॥ भ्रू मध्यादारभ्यब्रह्मरंध्रांन्तं वृत्तं स्वच्छमनोहरमाकाशमंडलं "ॐ हँ" इति आकाश बीजाढ्यं स्मरेत् ॥ ५ ॥ एवं भूतगणं स्मृत्वा ततः पूर्वोक्त मध्ये (मंडले) पादेन्द्रियं १ गगनं २ घ्राणं ३ गंधः ४ ब्रह्मा ५ निवृत्तिः ६ समानः ७ गंतव्यदेशः ८ च एवमष्टौपदाश्चिन्त्याः ॥ १ ॥ जलमध्ये (मंडले) हस्तेन्द्रिय १ ग्रहण २ ग्राह ३ रसना ४ रस ५ विष्णुः ६ प्रतिष्ठो ७ दानाः ८ ध्येयाः ॥ २ ॥ तेज (मंडले) मध्ये वायु १ विसर्ग २ विसर्जनीय ३ चक्षु ४ रूप ५ शिव ६ विद्या ७ व्यानाः

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वाय्वग्निवार्भूम्यात्मने अंगुष्ठाभ्यान्नमः ॥ (हृदयाय नमः) ॐ नं चं छं झं जं शब्द स्पर्श रूप रस गंधात्मने तर्जनीभ्यान्नमः ॥ (शिरसे स्वाहा) ॐ णं टं ठं ढं डं श्रोत्र त्वङ्नयन जिह्वा घ्राणात्मने मध्यमाभ्यां नमः (शिखायैवषट्) ॥ ॐ नंतंथंधंदं वाक्पाणिपायूपस्थात्मने अनामिकाभ्यान्नमः ॥ (कवचाय हुँ) ॐ मंपंफंभंबं वक्तव्यादान गमन विसर्गानन्दात्मने कनिष्ठकाभ्यां-नमः ॥ (नेत्र त्रयायवौषट्) ॐ शंयंरंवंलंहं षंचंसंलं बुद्धिमनो हंकारचित्तात्मने करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः (अस्त्रायफट्) इति षडंग न्यासः एवं हृदयादि कर षडंग न्यासान् कृत्वा ॥ नाभेरा-

---

८ ध्येयाः ॥ ३ ॥ वायुमंडले उपस्था १ नन्द २ स्त्री ३ स्पर्शन ४ स्पर्श ५ ईशान ६ शान्त्यु ७ पानाः ८ ध्येयाः ॥ ५ ॥ आकाशमंडले वाक् १ वक्तव्य २ वदन ३ श्रोत्र ४ शब्द ५ सदाशिव ६ शान्त्यतीताः ७ प्राणाः ८ इत्यष्टौ चिन्त्याः ॥ ५ ॥ एवं भूतानि संचिन्त्य पूर्व पूर्व कार्यस्योत्तरं कारणे विलापनं ब्रह्मपर्यन्तंकार्यम् ॥ तथा च—ॐ लँ हुँ फट् इत्यनेन पंचगुणां पृथ्वीमप्सु उपसंहरामि इति जले भुवं विलापयेत् ॥ १ ॥ ॐ वँ हुँ फट् ॥ इति चतुर्गुणा अपोऽग्नौ उपसंहरामि इति जलमग्नौ विलापयेत् ॥ ॐ रँ हुँ फट् इति त्रिगुणां तेजो वायावुपसंहरामि इति वन्हि वायौ विलापयेत् ॥ ३ ॥ ॐ यँ हुँ फट् इति द्विगुणं वायुमाकाश उपसंहरामि इति वायुमाकाशे विलापयेत ॥ ४ ॥ ॐ हँ हुँ फट् इत्येकगुणमाकाशमहंकार उपसंहरामि ॥ इत्याकाशमहंकारे विलापयेत् ॥ ५ ॥ ॐ ॐ अहंकारं महत्तत्त्व उपसंहरामि ॥ इत्यहंकारं महत्तत्त्वे विलापयेत् ॥ ६ ॥ ॐ महत्तत्वं प्रकृत्तावुपसंहरामि ॥ इतिमहत्तत्वं प्रकृतौ विलापयेत् ॥ ७ ॥ ॐ प्रकृतिमात्मन्युपसंहरामि ॥ इत्यनेन मायामात्मनि विलापयेत् ॥ ८ ॥ एवं शुद्धसच्चिमकोनिकान्मयो भूत्वा पापपुरुषं चिन्तयेत् ॥तथा च॥ वासनामयं वामकुक्षिस्थितं कृष्णमंगुष्ठपरिमाणकं ॥ ब्रह्महत्या शिरोयुक्तं कनकस्तेयबाहुकं ॥ मदिरापान हृदयं गुरुतल्प कटीयुतं ॥ तत्संसर्गि पदद्वंद्वमुपपातक मस्तकं खड्गचर्मधरं दुष्टमधोवक्त्रं सुदुःसहमेवं पापपुरुषं चिन्तयित्वा पूरकप्राणायामे "ॐ यँ" इति वायु बीजेन द्वात्रिंशद्वारं (३२) षोडश (१६) वारं वा आवर्त्तितेन पापपुरुषं शोषयेत् ॥ १ ॥ ततः स्वशरीरयुतं पापं कँभके "ॐ रँ" इति वन्हिबीजेन चतुष्षष्ठि (६४)

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

रभ्य पादान्तम् (आँ) इतिपाश बीजं स्मरेत् ॥ हृदयादारभ्य नाभ्यन्तम् (ह्रीं) इतिशक्ति बीजं न्यसेत् ॥२॥ मस्तकादारभ्य हृदयान्तम् (क्रों) इति सृणि बीजं स्मरेत् ॥ ३ ॥ ॐ यँ त्वगात्मने नमः ॥ ॐ रँ असृगात्मने नमः ॥ ॐ लँ मांसात्मने नमः ॥ ॐ वं मेदात्मने नमः ॥ ॐ शं अस्थ्यात्मने नमः ॥ ॐ षं मज्जात्मने नमः ॥ ॐ सं शुक्रात्मने नमः ॥ ॐ हौं ओजात्मने नमः ॥ ॐ हं प्राणात्मने नमः ॥ ॐ सं जीवात्मने नमः ॥ इति दृष्ट्वा हृदि विन्यसेत् ॥ ॐ यंरंलंवंशंषंसंलंहंक्षं इति मूर्द्धादि चरणावधि व्यापकं कुर्यात् ॥ ४ ॥ ततः ॐ मंडूकादि परतत्वांत पीठदेवताभ्यो नमः ॥ १ ॥ ॐ जयादि शक्तिभ्यो नमः ॥ २ ॥ इति नत्वा ॥ ॐ आँ ह्रीं क्रों पीठाय नमः ॥ इति पीठे प्राणशक्तिदेवीं ध्यायेत् ॥ ध्यानम् ॥ ॐ पाशंचापा सृकपाले शृणी-

---

द्वात्रिंशद् (३२) वारमावर्त्तितेन तदुत्थाग्निना दहेत् ॥ २ ॥ ततो रेचक प्राणायामे "ॐ यँ" इति वायुबीजेन षोड़श वारं अष्ट वारं वा जपित्वा दक्षिणनाड्या तद्भस्म स्वशरीराद्बहिः रेचयेत् ॥ ३ ॥ ततो देहोत्थं भस्म "ॐ वँ" इत्युच्चारितेन सुधाबीजेन तदुत्थामृतेन संप्लाव्य पश्चात् "ॐ लँ" इति भू बीजेन तद्भस्म घनीभूतं पिंडं कृत्वा कनकांडवत् भावयेत् ॥ ४ ॥ ततः "ॐ हँ" इति आकाश बीजं जपन् तत्पिंडं मुकुराकारं भावयित्वा तस्यमूर्द्धादि नखान्ता अवयवाः मनसा रचनीयाः ॥ ५ ॥ ततः पुनरपि सृष्टिमार्गेण ब्रह्मणः सकाशात् आकाशादीनि भूतान्युत्पादयेत् ॥ तथा च ब्रह्मणः प्रकृतिः १ प्रकृतेर्महत् २ महतोऽहंकारः ३ अहंकारादाकाशः ४ आकाशाद्वायुः ५ वायोरग्निः ६ अग्नेरापः ७ अद्भ्यः पृथ्वी ८ पृथिव्या ओषध्यः ९ ओषधीभ्योऽन्नम् १० अन्नाद्रेतः ११ रेतसः पुरुषः १२ इत्युत्पाद्यः ॥ ॐ हँसः सोहम् इति मंत्रेण ब्रह्मणैकं भूतं जीवं स्वहृदयांबुजे संस्थाप्य कुण्डलिनीं मूलाधारगतां स्मरेत् ॥ अथध्यानम् ॥ ॐ रक्ताम्भोधिस्थपोतो ल्लसदरुणसरोजाधिरूढाकराब्जैः पाशं कोदंडमिक्षूद्भवमथचाप्यंकुशं पंचबाणान् ॥ बिभ्राणा सृक्कपालं त्रिनयनलसितापीनवक्षोरुहाढ्या ॥ देवी बालार्कवर्णा भवतुसुखकरी प्राणशक्तिः परानः ॥ १ ॥ इति भूतशुद्धिः ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पूच्छूलं हस्तैर्बिभ्रतीं रक्तवर्णाम् ॥ रक्तोदन्वत्पोतरक्तांबुजस्थां देवीं ध्याये प्राणशक्तिं त्रिनेत्रां ॥ इतिध्यात्वा हृदि करं निधाय ॥ ॐ आं ह्रीं क्रों यंरंलंवंशंषंसं हौं हंसः ॥ ॐ ममशरीरे चण्डिका देवतायाः प्राणा इह स्थितः (प्राणाः) ॥ २ ॥ ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हौं हं सः ॥ ॐ मम शरीरे चण्डिका देवतायाः जीव इह स्थितः (जीवः) ॥ ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हौं हं सः ॥ ॐ मम शरीरे चण्डिका देवतायाः सर्वेन्द्रियाणि वाङ् मनश्चक्षुः श्रोत्र जिह्वा घ्राण पाद पायूपस्थानि इहैवागत्य सुखं चिरंतिष्ठन्तु स्वाहा ॥ ३ ॥ इति वार त्रयेण स्वशरीरे चण्डिका देवतायाः प्राणान् प्रतिष्ठाप्य ॥ ततः ॐ इति प्रणवेन १५ पञ्चदशावृत्तिं कृत्वा अनेन मम देहस्था चण्डिकायाः गर्भाधानादि पञ्चदश संस्कारान्संपादयामि ॥ एवं प्राणान्प्रतिष्ठाप्य ॥ देवी भूत्वा देवींजयेत् ॥ चण्डिकारूपमात्मानं भावयेदितिप्राणप्रतिष्ठा ॥

॥ अथ अन्तरमातृका* न्यासः ॥

अथान्तरमातृका न्यास मन्त्रस्य ब्रह्मऋषिः गायत्रीछन्दः मातृकासरस्वतीदेवता हलो बीजानि स्वराः शक्तयः क्षं कीलकं अखिलाप्तये न्यासे विनियोगः ॥ इति जलं भूमौ निक्षिप्य प्राणायामं कुर्यात् ॥ तथा च इड़या ॥ अ इ उ ऋ लृ ए ऐ ओ औ अं अः एभिःस्वरैः पूरयेत् ॥ पुनः कुचुटुतुपु इति पंचवर्गकेन कुंभयेत् ॥ पुनः यरलवशषसह एभिरष्टवर्णैः रेचयेत् ॥ इति प्राणायामं कृत्वा ऋष्यादि न्यासं कुर्यात् ॥ तथा च ॥ ॐ अं ब्रह्मणेऋषये नमः आंशिरसि ॥ ॐ इं गायत्रीछन्दसे नमः ईं

---

*—टि० भविष्ये ॥ ना देवी कीर्तयेद्देवीं नादेवी तां समर्चयेत् ॥ न्यासात्तदात्मकोभूत्वा देवीभूत्वा तु तां यजेत् ॥ १ ॥ आग्नेये ॥ शक्त्यादिः शक्तिः पूजनात् ॥ शक्ति पूजनात् शक्त्यादि पूजनात् ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मुखे ॥ ॐ उँ सरस्वती देवतायै नमः ऊं हृदये ॥ ॐ एं हलभ्यो बीजेभ्यो नमः ऐं गुह्ये ॥ ॐ ओं स्वरेभ्यो शक्तिभ्यो नमः औं पादयोः ॥ ॐ अं चं कीलकाय नमः अः सर्वाङ्गे ॥ इति ऋष्यादि न्यासः ॥ ॐ अं कंखंगंघंङं आँ अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ ॐ इं चंछंजंझंञं ईं तर्जनीभ्यां नमः ॥ ॐ उं टंठंडंढंणं ऊं मध्यमाभ्यां नमः ॥ ॐ एं तंथंदंधंनं ऐं अनामिकाभ्यां नमः ॥ ॐ ओं पंफंबंभंमं औं कनिष्ठकाभ्यां नमः ॥ ॐ अं यंरंलंवंशंषं संहंलंक्षं अः करतल करपृष्ठाभ्यां नमः ॥ इति करन्यासः ॥ एवं हृदयादि ॥ ॐ अं कं ५ आं हृदयाय नमः ॥ ॐ इं चं ५ ईं शिरसे स्वाहा ॥ ॐ उं टं ५ ऊं शिखायैवषट् ॥ ॐ एं तं ५ ऐं कवचायहुं ॥ ॐ ओं पं ५ औं नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ॐ अँ यँरँलँवँशँषँसँहँलँक्षँ अः अस्त्रायफट् ॥ इति हृदयादिन्यासः ॥ ततः कण्ठस्थ षोडष दल पद्मे (ॐ अं नमः एवं क्रमेण सर्वत्र) ॐ आंइँईंउँऊँऋँॠँऌँॡँएँऐंओंऔंअँअः इति षोडश-स्वरान्न्यसेत् ॥ पुनः हृदिस्थ द्वादशदले ॐ कँ नमः एवँ खंगं घंङं चंछंजंझंञं टंठं नमः ॥ इतिद्वादशवर्णान् विन्यसेत् ॥ ततः नाभौ दशदले—ॐ डं नमः इति एवं ढंणंतथंदंधंनं पंफं नमः इति दशवर्णान्न्यसेत् ॥ तदधोलिंगे षड्दले—ॐ वं नमः एवं ॐ भंमंयंरंलं इति षड्वर्णान् विन्यसेत् ॥ आधारे (गुदे) चतुर्दले —ॐ वं नमः एवं शंषंसं इति चतुर्वर्णान्न्यसेत् ॥ पुनः ललाटे द्विदले—ॐ हं नमः ॐ क्षं नमः द्वौवर्णौ न्यसेत् ॥ इति न्यासं कृत्वा ध्यायेत् । आधारे लिंगनाभौ प्रकटित हृदये तालुमूले-ललाटे द्वेपत्रे षोडशारे द्विदश दशदले द्वादशार्द्धचतुष्के ॥ वासान्तेवालमध्ये डफकरसहिते कंठदेशेस्वराणां हंसंतत्वाथ युक्तं सकल दलगतं वर्णरूपं नमामि ॥ इत्यंतरमातृकान्यासः ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अथ वहिर्मातृका न्यासः ॥

जयार्थं सर्वदेवानां विन्यासे च लिपेर्विना ॥ कृतेतद्विफलं विद्यात्तदादौतु लिपिंन्यसेत् ॥ ॐ अस्यश्री वहिर्मातृकान्यासमंत्रस्य ब्रह्माऋषिः गायत्रीछन्दः मातृका सरस्वती देवीदेवता हलो-बीजानि स्वराः शक्तयः क्षं कीलकं अखिलाशये न्यासे विनियोगः ॥ प्राणायामंकुर्याद् ॥ तथा च इड़या अ इ उ ऋ लृ ए ऐ ओ औ अं अः एभिः स्वरैः पूरयेत् ॥ पुनः कु चु टु तु पु एभिः पंचवर्गान् कुम्भयेत् ॥ पुन अष्टभिः ॥ य र ल व श ष स ह आदिना रेचयेत् ॥ इति प्राणायामं कृत्वा ऋष्यादिन्यासं कुर्यात् ॥ तथा च ॐ अंब्रह्मणे ऋषये नमः आं शिरसि ॥ ॐ इं गायत्रीछन्दसे नमः ईं मुखे ॥ ॐ उं सरस्वती देवतायै नमः ऊं हृदि ॥ ॐ एं हल्भ्यो बीजेभ्यो नमः ऐं गुह्ये ॥ ॐ ओं स्वरेभ्यो शक्तिभ्यो नमः औं पादयोः ॥ ॐ अं क्षं कीलकाय नमः अः सर्वांगे ॥ इति ऋष्यादिन्यासः ॥ ॐ अं कं ५ आं अंगुष्ठाभ्यां नमः, हृदयाय० ॥ ॐ इ चं ५ ईं तर्जनीभ्यां० शिरसे स्वाहा ॥ ॐ उं टं ५ ऊं मध्यमाभ्यां० शिखायैवषट् ॥ ॐ एं तं ५ ऐं अनामिका० कवचायहुं ॥ ॐ ओं पं ५ औं कनिष्ठकाभ्यां० नेत्र त्रयाय वौषट् ॥ ॐ अं यंरंलंवंशंषंसंहंलंक्षं अः करतल करपृष्ठाभ्यां, अस्त्रायफट् ॥ मृगवालं वरं विद्यामक्ष सूत्रं दधत् करैः ॥ माला विद्या लसद्धस्तां वहन् ध्येयः शिवो गिरः ॥ ततः वहिर्मातृकान्यासं कुर्यात् ॥ ॐ अं नमः शिरसि ॐ आं नमः मुखे ॥ ॐ इं नमः दक्षिण नेत्रे ॥ ॐ ईं नमः वामनेत्रे ॥ ॐ उं नमः दक्षिण कर्णे ॥ ॐ ऊं नमः वामकर्णे ॥ ॐ ऋं नमः दक्षिणनासापुटे ॥ ॐ ॠं नमः वामनासापुटे ॥ ॐ लृं नमः दक्षिणकपोले ॥ ॐ लॄं नमः वाम कपोले ॥ ॐ

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

एं नमः ऊर्ध्वोष्ठे ॥ ॐ ऐं नमः अधरोष्ठे ॥ ॐ ओं नमः ऊर्ध्वदन्तपंक्तौ ॥ ॐ औं नमः अधोदंतपंक्तौ ॥ ॐ अं नमः मूर्द्धनि ॥ ॐ अः नमः मुखवृत्ते ॥ ॐ कं नमः दक्षिण बाहुमूले ॥ ॐ खं नमः द० कूर्परे ॥ ॐ गं नमः द० मणिबंधे ॥ ॐ घं नमः द० हस्तांगुलिमूले ॥ ॐ ङं नमः द० हस्तांगुल्यग्रे ॥ ॐ चं नमः वाम बाहुमूले ॥ ॐ छं नमः वा० कूर्परे ॥ ॐ जं नमः वा० मणिबंधे ॥ ॐ झं नमः वा० हस्तांगुलिमूले ॥ ॐ ञं नमः वामहस्तांगुल्यग्रे ॥ ॐ टं नमः दक्षिण पादमूले ॥ ॐ ठं नमः द० जानुनि ॥ ॐ डं नमः द० गुल्फे ॥ ॐ ढं नमः द० पादांगुलिमूले ॥ ॐ णं नमः द० पादांगुल्यग्र ॥ ॐ तं नमः वामपादमूले ॥ ॐ थं नमः वामजानुनि ॥ ॐ दं नमः वामगुल्फे ॥ ॐ धं नमः वामपादांगुलिमूले ॥ ॐ नं नमः वा० पादांगुल्यग्रे ॥ ॐ पं नमः दक्षिण पार्श्वे ॥ ॐ फं नमः वाम पार्श्वे ॥ ॐ बं नमः पृष्ठे ॥ ॐ भं नमः नाभौ ॥ ॐ मं नमः उदरे ॥ ॐ यं त्वगात्मने नमः हृदि ॥ ॐ रं असृगात्मने नमः दक्षांसे ॥ ॐ लं मांसात्मनेनमः ककुदि ॥ ॐ वं मेदात्मनेनमः वामांसे ॥ ॐ शं अस्थ्यात्मने नमः हृदयादि दक्षहस्तांतम् ॥ ॐ षं मज्जात्मनेनमः हृदयादि वामहस्तांतम् ॥ ॐ सं शुक्रात्मने नमः हृदयादि दक्षपादान्तम् ॥ ॐ हं आत्मने नमः हृदयादि वाम पादान्तम् ॥ ॐ लं परमात्मने नमः जठरे ॥ ॐ क्षं प्राणात्मने नमः मुखे ॥ इति विन्यस्य ॥ अथ ध्यानम् ॥

ॐ पंचाशल्लिपिभिर्विभक्तमुखदोः यत्संधिवक्षस्थलां भास्वन्मौलिनिबद्धचन्द्रशकलामापीनतुंगस्तनीम् ॥ मुद्रामक्ष गुणंसुदार्ढ्य कलशंविद्यां च हस्तांबुजैर्बिभ्राणांविशद प्रभां त्रिनयनां बाग्देवतामाश्रये ॥ १ ॥ इति बहिर्मातृकान्यासः ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

*स्थित्यादौतुगृहस्थानां सृष्ट्यादौ ब्रह्मचारिणाम् ॥ संहारादौयतीनां च मातृकान्यासमाचरेत् ॥

अथ स्थिति न्यासः ॥ ऋदिश्छन्दस्तुपूर्ववत् ॥

ध्यानम् ॥ सिंदूरकान्ति मसिताभरणां त्रिनेत्रां विद्याक्षसूत्र मृगपोतवरंदधानां ॥ पार्श्वस्थितांभगवतीमपि कांचनांगीं ध्याये कराब्जधृत पुस्तक वर्णमालाम् ॥ ॐ टं ठं डं नमः ललाटे ॥ ॐ टं ठं डं नमः मुखवृत्ते ॥ ॐ टं ठं डं नमः दक्ष नेत्रे ॥ ॐ टं ठं डं नमः वाम नेत्रे ॥ ॐ टं ठं डं नमः दक्षिण कर्णे ॥ ॐ टं ठं डं नमः वाम कर्णे ॥ ॐ टं ठं डं नमः दक्ष नासायां ॥ ॐ टं ठं डं नमः वाम नासायां ॥ ॐ टं ठं डं नमः दक्षिण गंडे ॥ ॐ टं ठं डं नमः वाम गण्डे ॥ ॐ टं ठं डं नमः ऊर्ध्वोष्ठे ॥ ॐ टं ठं डं नमः अधरोष्ठे ॥ ॐ टं ठं डं नमः ऊर्ध्व दन्तपंक्तौ ॥ ॐ टं ठं डं नमः अधोदन्त पंक्तौ ॥ ॐ टं ठं डं नमः शिरसि ॥ ॐ टं ठं डं नमः मुखे ॥ ॐ टं ठं डं नमः जिह्वाग्रे ॥ ॐ टं ठं डं नमः कण्ठ देशे ॥ ॐ टं ठं डं नमः दक्ष बाहु मूले ॥ ॐ टं ठं डं नमः दक्ष कूर्परे ॥ ॐ टं ठं डं नमः दक्षिण मणि बंधे ॥ ॐ टं ठं डं नमः द० ह० गु० मूले ॥ ॐ टं ठं डं नमः द० ह० गुल्यग्रे ॥ ॐ टं ठं डं नमः वाम बाहू मूले ॥ ॐ टं ठं डं नमः वाम कूर्परे ॥ ॐ टं ठं डं नमः वाम मणि बन्धे ॥ ॐ टं ठं डं नमः वाम हस्तांगुल्यग्रे ॥ ॐ टं ठं डं नमः दक्ष पाद मूले ॥ ॐ टं ठं डं नमः दक्ष जानुनि ॥ ॐ टं ठं डं नमः दक्ष गुल्फे ॥ ॐ टं ठं डं नमः दक्ष पादांगुलि मूले ॥ ॐ टं ठं डं नमः दक्ष पादांगुल्यग्रे ॥

* गृहस्थ मनुष्य पहले स्थिति न्यास करे। फिर सृष्टि बाद में संहार न्यास करें। ब्रह्मचारी ॥ सृष्टि, स्थिति और संहार न्यास करे॥ यति संहार सृष्टि तथा स्थिति करे॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ॐ टं ठं डं नमः वाम पाद मूले ॥ ॐ टं ठं डं नमः वाम जानुनि ॥ ॐ टं ठं डं नमः वाम गुल्फे ॥ ॐ टं ठं डं नमः वाम पादांगुलि मूले ॥ ॐ टं ठं डं नमः वाम पा० गुल्यग्रे ॥ ॐ टं ठं डं नमः दक्ष पार्श्वे ॥ ॐ टं ठं डं नमः वाम पार्श्वे ॥ ॐ टं ठं डं नमः पृष्ठे ॥ ॐ टं ठं डं नमः उदरे ॥ ॐ टं ठं डं नमः हृदये ॥ ॐ टं ठं डं नमः दक्षांसे ॥ ॐ टं ठं डं नमः ककुदि ॥ ॐ टं ठं डं नमः वामांसे ॥ ॐ टं ठं डं नमः हृदयादि दक्ष हस्तान्तम् ॥ ॐ टं ठं डं नमः हृदयादि वाम हस्तान्तम् ॥ ॐ टं ठं डं नमः हृदयादि दक्ष पादान्तम् ॥ ॐ टं ठं डं नमः हृदयादि वाम पादान्तम् ॥ ॐ टं ठं डं नमः हृदयादि मस्तकान्तम् ॥ इति स्थिति क्रमः ॥

‡स्थिति न्यासः ॥

ऐं भं नमः नाभौ ॥ ऐं बं नमः पृष्ठे ॥ ऐं फं नमः वाम पार्श्वे ॥ ऐं पं नमः दक्षिण पार्श्वे ॥ ऐं नं नमः वाम पादाङ्गुल्यग्रे ॥ ऐं धं नमः वाम पादांगुलि मूले ॥ ऐं दं नमः वाम गुल्फे ॥ ऐं थं नमः वाम जानुनि ॥ ऐं तं नमः वाम पादमूले ॥ ऐं णं नमः दक्षिण पादांगुल्यग्रे ॥ ऐं ढं नमः दक्षिण पादांगुलि मूले ॥ ऐं डं नमः दक्षिण गुल्फे ॥ ऐं ठं नमः दक्षिण जानुनि ॥ ऐं टं नमः दक्षिण पाद मूले ॥ ऐं वं नमः वाम हस्तांगुल्यग्रे ॥ ऐं भं नमः वाम हस्तांगुलि मूले ॥ ऐं जं नमः वाम मणि बंधे ॥ ऐं छं नमः वाम कूर्परे ॥ ऐं चं नमः वाम बाहु मूले ॥ ऐं ङं नमः दक्षिण हस्तांगुल्यग्रे ॥ ऐं घं नमः दक्षिण हस्तांगुलि-मूले ॥ ऐं गं नमः दक्षिण मणिवंधे ॥ ऐं खं नमः दक्षिण कूर्परे ॥ ऐं कं नमः दक्षिण बाहु मूले ॥ ऐं अः नमः मुखे ॥ ऐं अं नमः मूर्द्धि ॥ ऐं औं नमः अधोदन्त पंक्तौ ॥ ऐं ओं नमः ऊर्ध्व दन्त पंक्तौ ॥ ऐं ऐं नमः अधरोष्ठे ॥ ऐं एं नमः ऊर्ध्वोष्ठे ॥ ऐं ऌं नमः वाम गंडे ॥ ऐं लं नमः दक्ष गंडे ॥ ऐं ॠं नमः वाम नासायां ॥ ऐं ऋं नमः दक्ष नासायां ॥ ऐं ऊं नमः वाम कर्णे ॥ ऐं उं नमः दक्ष कर्णे ॥ ऐं ईं नमः वाम नेत्रे ॥

‡टि० नाभावारभ्यतेयस्तु हृदये च समाप्यते ॥ स्थिति न्यासः स विज्ञेयः दृष्टादृष्ट फलप्रदः ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ऐं इं नमः दक्षिण नेत्रे ॥ ऐं आं नमः मुख वृत्ते ॥ ऐं अं नमः ललाटे ॥ ऐं लं परमात्मने नमः हृदयादि मस्तकान्तम् ॥ ऐं हं आत्मने नमः हृदयादि वाम पादान्तम् ॥ ऐं सं शुक्रात्मने नमः हृदयादि दक्ष पादान्तम् ॥ ऐं षं मज्जात्मने नमः हृदयादि वाम भुजान्तम् ॥ ऐं शं अस्थ्यात्मने नमः हृदयादि दक्ष भुजान्तं ॥ ऐं वं मेदात्मने नमः वामांसे ॥ ऐं लं मांसात्मने नमः ककुदि (गर्दन में) ऐं रं असृगात्मने नमः दक्षांसे ॥ ऐं यं त्वगात्मने नमः हृदि ॥ इति स्थिति न्यासः ॥ मंत्र तंत्र प्रकाशे ॥

॥ *अथ सृष्टिन्यास क्रमः ॥

तत्र तु विसर्गान्वितः प्रणवपुटितो वा माया लक्ष्मी बीज-पुटितो वा वाग्भवाद्योवान्यस्तव्यः ॥ ध्यानम् ॥ पञ्चाशदर्णैरचि-ताङ्गभागां धृतेन्दु खण्डा कुमुदावदाताम् ॥ वराभये पुस्तकमक्षसूत्रं भजेगिरं संदधतीं त्रिनेत्राम् ॥ १ ॥ तत्र वाग्भवाद्यो यथा१ ऐं अं नमः ललाटे ॥ ऐं आं नमः मुखवृत्ते ॥ ऐं इं नमः दक्ष नेत्रे ॥ ऐं ईं नमः वाम नेत्रे ॥ ऐं उं नमः दक्ष कर्णे ॥ ऐं ऊं नमः वाम कर्णे ॥ ऐं ऋं नमः दक्ष नासायां ॥ ऐं ॠं नमः वाम नासायां ॥ ऐं लृं नमः दक्ष गंडे ॥ ऐं लॄं नमः वाम गंडे ॥ ऐं एं नमः ऊर्ध्वोष्ठे ॥ ऐं ऐं नमः अधरोष्ठे ॥ ऐं ओं नमः ऊर्ध्वदन्तपंक्तौ ॥ ऐं औं नमः अधोदन्तपंक्तौ ॥ ऐं अं नमः मूर्द्धनि ॥ एं अः नमः मुखे ॥ ऐं कं नमः द० वा० मूले ॥

मंत्र तंत्र प्रकाशे—

* टि०—संहृतेर्दोष संहारः सृष्टेश्च सुत पुत्रदः ॥
स्थितिस्तु शांति विन्यासस्तस्मात्कार्यस्त्रिधा च सः ॥
स्थिति न्यासो गृहस्थाना मुद्दिष्टः सर्व सिद्धिदः ॥
प्रथमाश्रमिणां न्यासं उत्पत्तिः समुदाहृतः ॥
यतीनां च वनस्थानां संहारः समुदाहृतः ॥
विरक्तस्य गृहस्थस्य संहारोपिविधीयते ॥
सपत्नीक वनस्थानां स्थिति न्यासो विधीयते ॥
विद्यार्थिना मथै तेषां सृष्टयन्तोपि विशिष्यते ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ऐं खं नमः द० कूर्परे ॥ ऐं गं नमः द० मणिबंधे ॥ ऐं घं नमः द० हस्तांगुलि मूले ॥ ऐं ङं नमः द० हस्तांगुल्यग्रे ॥ ऐं चं नमः वाम बाहु मूले ॥ ऐं छं नमः वाम कूर्परे ॥ ऐं जं नमः वाम मणिबंधे ॥ ऐं झं नमः वाम हस्तांगुलि मूले ॥ ऐं ञं नमः वाम हस्तांगुल्यग्रे ॥ ऐं टं नमः दक्षिणपाद मूले ॥ ऐं ठं नमः दक्षिण जानुनि ॥ ऐं डं नमः दक्षिण गुल्फे ॥ ऐं ढं नमः द० पा० गुलि मूले ॥ ऐं णं नमः द० पा० गुल्यग्रे ॥ ऐं तं नमः वाम पाद मूले ॥ ऐं थं वाम जानुनि ॥ ऐं दं नमः वाम गुल्फे ॥ ऐं धं नमः वा० पा० गु० मूले ॥ ऐं नं वाम पादांगुल्ग्रे ॥ ऐं पं नमः दक्षिण पार्श्वे ॥ ऐं फं नमः वाम पार्श्वे ॥ ऐं बं नमः पृष्ठे ॥ ऐं भं नमः नाभौ ॥ ऐं मं नमः उदरे ॥ ऐं यं त्वगात्मने नमः ॥ हृदि ॥ ऐं असृगात्मने नमः दक्षां से ॥ ऐं लं मांसात्मने नमः ककुदि ॥ ऐं वं मेदात्मने नमः वामांसे ॥ ऐं शं अस्थ्यात्मने नमः हृदयादि दक्ष भुजान्तम् ॥ ऐं षं मज्जात्मने नमः हृदयादि वाम भुजान्तम् ॥ ऐं सं शुक्रात्मने नमः हृदयादि दक्ष पादान्तम् ॥ ऐं हं आत्मने नमः हृदयादि वाम पादान्तम् ॥ ऐं लं परमात्मने नमः हृदयादि मस्तकान्तम् ॥ इति सृष्टिक्रम न्यासः ॥

अथ संहार क्रम न्यासः ॥

ध्यानम् ॥ अक्षस्रजं हरिणपोतमुदग्रटंकं विद्यांकरै रविरतं-दधतींत्रिनेत्रां ॥ अर्द्धेन्दुमौलिभरणामरविन्दवासां वर्णेश्वरीं च प्रणुमः स्तनभारखिन्नाम् ॥ पूर्वोक्त स्थानेषु विलोम मातृकांन्य-सेत् ॥ ॐ क्षं नमः ललाटे ॥ ॐ हं नमः मुखवृत्ते ॥ सं नमः दक्ष नेत्रे ॥ ॐ षं नमः वाम नेत्रे ॥ ॐ शं नमः दक्ष कर्णे ॥

वीर चूड़ामणि तन्त्रानुसारतः ॥ विद्याकामे योनि बीजाद्यः श्री-कामेरमाद्यः ॥ वश्ये कामाद्यः ॥ स्तंभने स्थिर मायाद्यः इत्यादि ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ॐ वं नमः वाम कर्णे ॥ ॐ लं नमः दक्ष नासायां ॥ ॐ रं नमः वाम नासायां ॥ ॐ यं नमः दक्ष गंडे ॥ ॐ मं नमः वाम गंडे ॥ भं नमः ऊर्ध्वोष्ठे ॥ ॐ वं नमः अधरोष्ठे ॥ ॐ फं नमः ऊर्ध्व दन्तपंक्तौ ॥ ॐ पं नमः अधोदन्तपंक्तौ ॥ ॐ नं नमः मूर्द्धनि ॥ ॐ धं नमः मुखवृत्ते ॥ ॐ दं नमः दक्ष बाहु मूले ॥ ॐ थं नमः दक्ष कूर्परे ॥ ॐ तं नमः दक्ष मणि बन्धे ॥ ॐ णं नमः दक्ष हस्तांगुलि मूले ॥ ढं नमः दक्ष हस्तांगुल्यग्रे ॥ ॐ डं नमः वाम बाहु मूले ॥ ॐ ठं नमः वाम कूर्परे ॥ ॐ टं नमः वाम मणि बन्धे ॥ ॐ ञं नमः वाम हस्तांगुलि मूले ॥ ॐ झं नमः वाम हस्तांगुल्यग्रे ॥ ॐ जं नमः दक्ष पाद मूले ॥ ॐ छं नमः दक्ष जानुनि ॥ ॐ चं नमः दक्ष गुल्फे ॥ ॐ ङं नमः दक्ष पादांगुलि मूले ॥ ॐ घं नमः दक्ष पादांगुल्यग्रे ॥ ॐ गं नमः वाम पाद मूले ॥ ॐ खं नमः वाम जानुनि ॥ ॐ कं नमः वाम गुल्फे ॥ ॐ अः नमः वाम पादांगुलि मूले ॥ ॐ अं नमः वाम पादांगुल्यग्रे ॥ ॐ औं नमः दक्षिण पार्श्वे ॥ ॐ ओं नमः वाम पार्श्वे ॥ ॐ ऐं नमः पृष्ठे ॥ ॐ एं नमः नाभौ ॥ ॐ ऌं नमः उदरे ॥ ॐ लृं त्वगात्मने नमः हृदि ॥ ॐ ऋं असृगात्मने नमः दक्षांसे ॥ ॐ ऋं मासात्मने नमः ककुदि ॥ ॐ ऊं मेदात्मने नमः वामांसे ॥ ॐ उं अस्थ्यात्मने नमः हृदयादि दक्ष हस्तान्तम् ॥ ॐ ईं मज्जात्मने नमः हृदयादि वाम हस्तान्तम् ॥ ॐ इं शुक्रात्मने नमः हृदयादि दक्ष पादान्तम् ॥ ॐ आं आत्मने नमः हृदयादि वाम पादान्तम् ॥ ॐ अँ परमात्मने नमः हृदयादि मस्तकान्तम् ॥

इति संहार क्रम न्यासः ॥ अथ शक्तिकला न्यासः ॥

अस्य श्रीशक्तिकला मातृका न्यासस्य प्रजापति ऋषिः

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

गायत्री छन्दः श्री मातृका शारदा देवता हलोबीजानिस्वराः शक्तयः सप्तशती पाठाङ्गत्वेन मातृकान्यासे विनियोगः ॥ ॐ प्रजापति ऋषये नमः शिरसि ॥ ॐ गायत्री छन्दसे नमः मुखे ॥ ॐ श्री मातृका शारदा देवतायै नमः हृदि ॥ ॐ हल्भ्योबीजेभ्यो नमः गुह्ये ॥ ॐ स्वरेभ्योशक्तिभ्यो नमः पादयोः ॥ ॐ विनियोगाय नमः सर्वांगे ॥

॥ कर न्यासः ॥

ॐ अं ॐ आं अंगुष्ठाभ्यां नमः (हृदयाय नमः) ॐ इं ॐ ईं तर्जनीभ्यां नमः (शिरसे स्वाहा) ॐ उं ॐ ऊं मध्यमाभ्यां नमः (शिखायैवषट्) ॐ एं ॐ ऐं अनामिकाभ्यां नमः (कवचायहुं) ॐ ओं ॐ औं कनिष्ठकाभ्यां नमः (नेत्र त्रयाय वौषट्) ॐ अं ॐ अः करतल करपृष्ठाभ्यां नमः (अस्त्राय फट्)

॥ अथ ध्यानम् ॥

ॐ शंख चक्राब्जपरशुकपालेनाक्षमालिकाः ॥ पुस्तकासवकुम्भौच त्रिशूलंदधती करैः ॥ सितपीतासितश्वेत रक्त वर्णै स्त्रिलोचनैः ॥ पंचास्यैः संयुतां चन्द्र स कांतिंशारदां भजे ॥१॥ ॐ हीं अं निवृत्यै नमः ललाटे ॥ ॐ हीं आं प्रतिष्ठायै नमः मुखवृत्ते ॥ ॐ हीं इं विद्यायैनमः दक्षनेत्रे ॥ ॐ हीं ईं शान्त्यै नमः वामनेत्रे ॥ ॐ हीं उं इन्धिकायै नमः दक्ष कर्णे ॥ ॐ हीं ऊं दीपिकायै नमः वामकर्णे ॥ ॐ हीं ऋं रेचिकायै नमः दक्षनासापुटे ॥ ॐ हीं ॠं मोचिकायै नमः वामनासापुटे ॥ ॐ हीं लृं पराभिधायै नमः दक्षगण्डे ॥ ॐ हीं ॡं सूक्ष्मायै नमः वामगण्डे ॥ ॐ हीं एं सूक्ष्मामृतायै नमः ऊर्ध्वोष्ठे ॥ ॐ हीं ऐं ज्ञानामृतायै नमः अधरोष्ठे ॥ ॐ हीं ओं आप्यायन्यै नमः ऊर्ध्वदंतपक्तौ ॥ ॐ हीं औं व्यापिन्यै

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

नमः अधोदन्तपंक्तौ ॥ ॐ ह्रीं अं व्योमरूपायै नमः शिरसि ॥ ॐ ह्रीं अः अनन्तायै नमः मुखे ॥ ॐ ह्रीं कं सृष्ट्यै नमः जिह्वाग्रे ॥ ॐ ह्रीं खं ऋद्धिकायै नमः कण्ठदेशे ॥ ॐ ह्रीं गं स्मृत्यै नमः दक्षबाहुमूले ॥ ॐ ह्रीं घं मेधायै नमः दक्षकूर्परे ॥ ॐ ह्रीं ङं कान्त्यै नमः दक्षमणिबन्धे ॥ ॐ ह्रीं चं लक्ष्म्यै नमः दक्षहस्तांगुलिमूले ॥ ॐ ह्रीं छं द्युत्यै नमः दक्षहस्तांगुल्यग्रे ॥ ॐ ह्रीं जं स्थिरायै नमः वाम बाहुमूले ॥ ॐ ह्रीं झं स्थित्यै नमः वामकूर्परे ॥ ॐ ह्रीं ञं सिद्ध्यै नमः वाम हस्तांगुल्यग्रे ॥ ॐ ह्रीं टं जरायै नमः वामहस्तांगुलिमूले ॥ ॐ ह्रीं ठं पालिन्यै नमः वामहस्तांगुल्यग्रे ॥ ॐ ह्रीं डं शान्त्यै नमः दक्षपादमूले ॥ ॐ ह्रीं ढं ईश्वरिकायै नमः दक्षजानुनि ॥ ॐ ह्रीं णं रत्यै नमः दक्षपादगुल्फे ॥ ॐ ह्रीं तं कामिकायै नमः दक्षपादांगुलिमूले ॥ ॐ ह्रीं थं वरदायै नमः दक्षपादांगुल्यग्रे ॥ ॐ ह्रीं दं आल्हादिन्यै नमः वामपादमूले ॥ ॐ ह्रीं धं प्रीत्यै नमः वामजानुनि ॥ ॐ ह्रीं नं दीर्घायै नमः वामगुल्फे ॥ ॐ ह्रीं पं तीक्ष्णायै नमः वामपादांगुलिमूले ॥ ॐ ह्रीं फं रौद्र्यै नमः वामपादांगुल्यग्रे ॥ ॐ ह्रीं बं भयायै नमः दक्षपार्श्वे ॥ ॐ ह्रीं भं निद्रायै नमः वामपार्श्वे ॥ ॐ ह्रीं मं तन्द्रिकायै नमः पृष्ठे ॥ ॐ ह्रीं यं क्षुधायै नमः उदरे ॥ ॐ ह्रीं रं क्रोधिन्यै नमः हृदि ॥ ॐ ह्रीं लं क्रियायै नमः दक्षांसे ॥ ॐ ह्रीं वं उत्कायै नमः ककुदि ॥ ॐ ह्रीं शं समृत्युकायै नमः वामांसे ॥ ॐ ह्रीं षं पीतायै नमः हृदयादि दक्षहस्तान्तम् ॥ ॐ ह्रीं सं श्वेतायै नमः हृदयादि वामहस्तान्तम् ॥ ॐ ह्रीं हं अरुणायै नमः हृदयादि दक्ष पादान्तम् ॥ ॐ ह्रीं लं सितायै नमः हृदयादि वामपादान्तम् ॥ ॐ ह्रीं क्षं अनन्तायै नमः हृदयादिमस्तकान्तम् ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

*शिव कला मातृका न्यासः ॥

ॐ अस्य श्रीशिवकला मातृकान्यास मंत्रस्य दक्षिणा मूर्ति ऋषिर्गायत्री छन्दः अर्द्धनारीश्वरो देवता हलो बीजानि स्वराः शक्तयः स्वाभीष्ट सिद्धये जपे विनियोगः ॥ ॐ दक्षिणामूर्ति ऋषये नमः शिरसि ॥ ॐ गायत्री छन्दसे नमः मुखे ॥ ॐ अर्द्धनारीश्वरो देवतायै नमो हृदि ॥ ॐ हल्भ्यो बीजेभ्यो नमो गुह्ये ॥ ॐ स्वरेभ्यो शक्तिभ्यो नमः पादयोः ॥ ॐ विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ॥ इति ऋष्यादि न्यासः ॥

अथ हृदयादि न्यासः ॥

ॐ ह्सां अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ हृदयाय नमः ॥ ॐ ह्सीं तर्जनीभ्यां नमः, शिरसे स्वाहा ॥ ॐ ह्सूं मध्यमाभ्यां नमः, शिखायै वषट् ॥ ॐ ह्सैं अनामिकाभ्यां नमः, कवचायहुं ॥ ॐ ह्सौं कनिष्ठकाभ्यां नमः, नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ॐ ह्सः करतल कर पृष्ठाभ्यां नमः, अस्त्रायफट् ॥ अथ ध्यानम् ॥

पाशांकुशवराक्षस्रक्पाणि शीतांशु शेखरम् ॥ त्र्यक्षंरक्त सुवर्णाभमर्द्धनारीश्वरं भजे ॥ ॐ ह्सौं अं श्रीकण्ठेशपूर्णोदरीभ्यां नमो ललाटे ॥ ॐ ह्सौं आं अनन्ताय विरजयाभ्यां नमः मुख-वृत्ते ॥ ॐ ह्सौं इं सूक्ष्मेश शाल्मलीभ्यां नमः दक्ष नेत्रे ॥ ॐ ह्सौं ईं त्रिमूर्तीश लोलाक्षीभ्यां नमः वामनेत्रे ॥ ॐ ह्सौं उं

॥ न्यासे मुद्रा विधानम् ॥

ललाटे मध्यमानामिकाभ्यां ॥ मुख वृत्ते, प्रादक्षिण्येन ॥

॥ सर्वत्र दक्षिणादि क्रमः ॥

नेत्रयोः तर्जन्यनामिकाभ्यां ॥ कर्णयोरंगुष्ठेन ॥
मुद्रया यत्कृतं कर्म ॥ तदक्षय फलप्रदम् ॥

* टि०—कोई २ आचार्य देवीकला के स्थान पर शिवकला मातृका न्यास करते हैं। वह भी लिख दिया गया है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अमरेश वर्तुलाक्षीभ्यां नमः दक्षकर्णे ॥ ॐ ह्सौं ऊं अर्धीश घोषणाभ्यां नमः वामकर्णे ॥ ॐ ह्सौं ऋं भारभूतेश दीर्घमुखीभ्यां नमः दक्ष नासा पुटे ॥ ॐ ह्सौं ॠं तिथीश गोमुखीभ्यां नमः वाम नासा पुटे ॥ ॐ ह्सौं ऌं स्थाण्वीश दीर्घ जिह्वाभ्यां नमः दक्ष गंडे ॥ ॐ ह्सौं ॡं हरः श्रीकंठेश कुण्डोदरीभ्यां नमः वाम गंडे ॥ ॐ ह्सौं एं झिंटीश ऊर्ध्वकेशीभ्यां नमः ऊर्ध्वोष्ठे ॥ ॐ ह्सौं ऐं भौतिकेश विकृत मुखीभ्यां नमः अधरोष्ठे ॥ ॐ ह्सौं ओं सद्योजात ज्वालामुखीभ्यां नमः ऊर्ध्व दन्तपंक्तौ ॥ ॐ ह्सौं औं अनुग्रहेश उल्कामुखीभ्यां नमः अधो दन्त पंक्तौ ॥ ॐ ह्सौं अं अक्रूरेश श्रीमुखीभ्यां नमः शिरसि ॥ ॐ ह्सौं अः महासेनेश विद्यामुखीभ्यां नमः मुखे ॥ ॐ ह्सौं कं क्रोधीश महाकालीभ्यां नमः जिह्वाग्रे ॥ ॐ ह्सौं खं चण्डेश सरस्वतीभ्यां नमः कण्ठदेशे ॥ ॐ ह्सौं गं पञ्चान्तकेश सर्वसिद्धि गौरीभ्यां नमः दक्ष बाहु मूले ॥ ॐ ह्सौं घं शिवोत्तमेश त्रैलोक्येश विद्याभ्यां नमः दक्ष कूर्परे ॥ ॐ ह्सौं ङं एकरुद्रेश मन्त्र शक्तिभ्यां नमः दक्ष मणिबंधे ॥ ॐ ह्सौं चं कूर्मेश आत्म-

---

नसोः कनिष्ठां गुष्ठाभ्यां ॥ गंडयोः मध्यमया ॥ ओष्ठयोः मध्यमया ॥ दंत पंक्तयोः अनामया ॥ शिरसि मध्यमया ॥ मुखे अनामामध्यमाभ्यां ॥

मुद्राव्युत्पत्तिः ॥

'रादाने' मुदंराति ददातीति मुद्रेतिनिर्वचनम् ॥ इदमेव मोदन्तेसर्वदेवता ॥ इत्यनेनसूचितम् तदुक्तम् ॥ अर्चनेजपकाले तु ॥ ध्यानेकाम्ये च कर्मणि ॥ तत्तन्मुद्राः प्रयोक्तव्या देवता सन्निधापिका ॥ इतः सर्वत्रकनिष्ठा नामा-मध्यमाभिः ॥ हृदयादि दक्षकरांगुल्यग्रपर्यन्तं करतलेन, अग्रेपि करतलेन, अनादेशे सर्वत्र अनामांगुष्ठाभ्यां न्यसेत् ॥

शक्ति षडङ्ग मुद्रा आगमे ॥

अंगुष्ठ वर्ज मंगुल्यश्चतस्रो हृदिमूर्द्धनि । शिखायां मुष्टि रेवस्यादंगुष्ट कृत नासिका ॥ सर्वांगुल आनाभेः पाण्योः कवच बन्धनम् ॥ इति ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

शक्तिभ्यां नमः दक्ष हस्तांगुलिमूले ॥ ॐ ह्सौं छं एकनेत्रेश भूतमातृभ्यां नमः दक्ष हस्तांगुल्यग्रे ॥ ॐ ह्सौं जं चतुराननेश लम्बोदरीभ्यां नमः वाम बाहु मूले ॥ ॐ ह्सौं झं अजेश द्राविणीभ्यां नमः वाम कूर्परे ॥ ॐ ह्सौं ञं सर्वेश नागरीभ्यां नमः वाम मणि बंधे ॥ ॐ ह्सौं टं सोमेश खेचरीभ्यां नमः वाम हस्तांगुलि मूले ॥ ॐ ह्सौं ठं लाङ्गलीश मंजरीभ्यां नमः वाम हस्तांगुल्यग्रे ॥ ॐ ह्सौं डं दारकेश रूपिणीभ्यां नमः दक्ष जानुनि ॥ ॐ ह्सौं ढं अर्द्धनारीश वीरिणीभ्यां नमः दक्षपाद मूले ॥ ॐ ह्सौं णं उमाकान्तेश काकोदरीभ्यां नमः दक्षपाद गुल्फे ॥ ॐ ह्सौं तं आषाढीश पूतनाभ्यां नमः दक्ष पादांगुलि मूले ॥ ॐ ह्सौं थं चंडीश भद्रकालीभ्यां नमः दक्ष पादांगुल्यग्रे ॥ ॐ ह्सौं दं अन्त्रीश योगिनीभ्यां नमः वाम पाद मूले ॥ ॐ ह्सौं धं मीनेश शङ्खिनीभ्यां नमः वाम जानौ ॥ ॐ ह्सौं नं मेषेश तर्जनीभ्यां नमः वाम गुल्फे ॥ ॐ ह्सौं पं लोहितेश कालरात्रीभ्यां नमः वाम पादांगुलि मूले ॥ ॐ ह्सौं फं शिखीश कुब्जिनीभ्यां नमः वाम पादांगुल्यग्रे ॥ ॐ ह्सौं बं छागलंडेश कपर्दिनीभ्यां नमः दक्ष पार्श्वे ॥ ॐ ह्सौं भं द्विरंडेश वज्रीभ्यां नमः वाम पार्श्वे ॥ ॐ ह्सौं मं महाकालेश जयाभ्यां नमः पृष्ठे ॥ ॐ ह्सौं यं त्वगात्मभ्यां वालीश मुमुखेश्वरीभ्यां नमः उदरे ॥ ॐ ह्सौं रं असृगात्मभ्यां भुजगेश रेवतीभ्यां नमः हृदि ॥ ॐ ह्सौं लं मांसात्मभ्यां पिनाकीश माधवीभ्यां नमः दक्षांसे ॥ ॐ ह्सौं वं मेदआत्मभ्यां खड्गीश वारुणीभ्यां नमः ककुदि ॥ ॐ ह्सौं शं अस्थ्यात्मभ्यां वकेश वायवीभ्यां नमः वामांसे ॥ ॐ ह्सौं षं मज्जात्मभ्यां श्वेतेश रक्षो विदारिणीभ्यां नमः हृदयादि दक्ष हस्तान्तम् ॥ ॐ ह्सौं

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सं शुक्रात्मभ्यां भृग्वीश सहजयाभ्यां नमः हृदयादि वाम हस्तान्तम् ॥ ॐ ह्सौं हं प्राणात्मभ्यां नकुलीश लक्ष्मीभ्यां नमः हृदयादि दक्ष पादान्तम् ॥ ॐ ह्सौं लं शिवेश व्यापिनीभ्यां नमः हृदयादि वाम पादान्तम् ॥ ॐ ह्सौं क्षं क्रोधात्मभ्यां संवर्तकेश महामायाभ्यां नमः हृदयादि मस्तकान्तम् ॥

श्रीकण्ठादीञ्छम्भुभक्तः कुर्यान्न्यासादिकन्तथा मन्त्र महोदधौ २१ तरंगे ॥

अथ शक्ति षोढान्यास प्रकारः ॥

तत्र प्रथम शुद्ध मातृका न्यासः ॥

अं आँ इं ईं उं ऊं ऋं ॠं ऌं ॡं नमो हृदि ॥ एं ऐं ओं औं अं अः कं खं गं घं नमो दक्ष भुजे ॥ ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं नमो वाम भुजे ॥ णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं नमो दक्षपादे ॥ मं यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षं नमो वाम पादे ॥ इति शुद्धमातृका न्यासः प्रथमः ॥

अथ द्वितीय न्यासः ॥

श्रीं अं श्रीं अं श्रीं अं नमो ललाटे ॥ श्रीं आं श्रीं आं श्रीं आं नमो मुखवृत्ते ॥ श्रीं इं श्रीं इं श्रीं इं नमो दक्ष नेत्रे ॥ श्रीं ईं श्रीं ईं श्रीं ईं नमो वाम नेत्रे ॥ श्रीं उं श्रीं उं श्रीं उं नमो दक्ष कर्णे ॥ श्रीं ऊं श्रीं ऊं श्रीं ऊं नमो वाम कर्णे ॥ श्रीं ऋं श्रीं ऋं श्रीं ऋं नमो दक्षनासायाँ ॥ श्रीं ॠं श्रीं ॠं श्रीं ॠं नमो वामनासायां ॥ श्रीं ऌं श्रीं ऌं श्रीं ऌं नमो दक्ष कपोले ॥ श्रीं ॡं श्रीं ॡं श्रीं ॡं नमो वाम कपोले ॥ श्रीं एं श्रीं एं श्रीं एं नम ऊर्ध्वे ॥ श्रीं ऐं श्रीं ऐं श्रीं ऐं नम अधरोष्ठे ॥ श्रीं ओं श्रीं ओं श्रीं ओं नम ऊर्ध्व दन्त पंक्तौ ॥ श्रीं औं श्रीं औं श्रीं औं नम अधः दन्त पंक्तौ ॥ श्रीं अं श्रीं अं श्रीं अं नमो मूर्द्धनि ॥ श्रीं अः श्रीं अः श्रीं अः नमो

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मुखे ॥ श्रीं कं श्रीं कं श्रीं कं नमो दक्षिण बाहु मूले ॥ श्रीं खं श्रीं खं श्रीं खं नमो दक्षिण कूर्परे ॥ श्रीं गं श्रीं गं श्रीं गं नमो दक्षिण मणि बन्धे ॥ श्रीं घं श्रीं घं श्रीं घं नमो दक्षिण हस्तांगुलि मूले ॥ श्रीं ङं श्रीं ङं श्रीं ङं नमो दक्षिण हस्तांगुल्यग्रे ॥ श्रीं चं श्रीं चं श्रीं चं नमो वामबाहुमूले ॥ श्रीं छं श्रीं छं श्रीं छं नमो वाम कूर्परे ॥ श्रीं जं श्रीं जं श्रीं जं नमो वाम मणि बंधे ॥ श्रीं झं श्रीं झं श्रीं झं नमो वाम हस्तांगुलि मूले ॥ श्रीं ञं श्रीं ञं श्रीं ञं नमो वाम हस्तांगुल्यग्रे ॥ श्रीं टं श्रीं टं श्रीं टं नमा दक्षिण पाद मूले ॥ श्रीं ठं श्रीं ठं श्रीं ठं नमो दक्ष जानुनि ॥ श्रीं डं श्रीं डं श्रीं डं नमो दक्ष गुल्फे ॥ श्रीं ढं श्रीं ढं श्रीं ढं नमो दक्ष पादांगुलि मूले ॥ श्रीं णं श्रीं णं श्रीं णं नमो दक्ष पादांगुल्यग्रे ॥ श्रीं तं श्रीं तं श्रीं तं नमो वाम पाद मूले ॥ श्रीं थं श्रीं थं श्रीं थं नमो वाम जानुनि ॥ श्रीं दं श्रीं दं श्रीं दं नमो वाम गुल्फे ॥ श्रीं धं श्रीं धं श्रीं धं नमो वाम पादांगुलिमूले ॥ श्रीं नं श्रीं नं श्रीं नं नमो वाम पादांगुल्यग्रे ॥ श्रीं पं श्रीं पं श्रीं पं नमः दक्ष पार्श्वे ॥ श्रीं फं श्रीं फं श्रीं फं नमो वाम पार्श्वे ॥ श्रीं बं श्रीं बं श्रीं बं नमो पृष्ठे ॥ श्रीं भं श्रीं भं श्रीं भं नमो नाभौ ॥ श्रीं मं श्रीं मं श्रीं मं नमो उदरे ॥ श्रीं यं श्रीं यं श्रीं यं त्वगात्मने नमः हृदि ॥ श्रीं रं श्रीं रं श्रीं रं असृगात्मने नमः दक्षांसे ॥ श्रीं लं श्रीं लं श्रीं लं मांसात्मने नमः ककुदि ॥ श्रीं वं श्रीं वं श्रीं वं मेदात्मने नमः वामांसे ॥ श्रीं शं श्रीं शं श्रीं शं अस्थ्यात्मने नमः हृदयादि दक्ष हस्तान्तम् ॥ श्रीं षं श्रीं षं श्रीं षं मज्जात्मने नमः हृदयादि वाम हस्तान्तम् ॥ श्रीं सं श्रीं सं श्रीं सं शुक्रात्मने नमः हृदयादि दक्ष पादान्तम् ॥ श्रीं हं श्रीं हं श्रीं हं

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

आत्मने नमः हृदयादि वाम पादान्तम् ॥ श्रीं लं श्रीं लं श्रीं लं परमात्मने नमः जठरे ॥ श्रीं चं श्रीं चं श्रीं चं प्राणात्मने नमः हृदयादि मस्तकान्तम् ॥ इति द्वितीय न्यासः ॥

अथ तृतीय न्यासः ॥

क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं नमो ललाटे ॥ क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं नमो मुख वृत्ते ॥ क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं नमो दक्ष नेत्रे ॥ क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं नमो वामनेत्रे ॥ क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं नमो दक्ष कर्णे ॥ क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं नमो वाम कर्णे ॥ क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं नमो दक्ष नासायाम् ॥ क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं नमो वाम नासायां ॥ क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं नमो दक्षकपोले ॥ क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं नमो वाम कपोले ॥ क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं नम ऊर्ध्वोष्ठे ॥ क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं नम अधरोष्ठे ॥ क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं नमो ऊर्ध्व दंत पंक्तौ ॥ क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं नम अधो दन्त पंक्तौ ॥ क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं नमो मूर्द्ध्नि ॥ क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं नमो मुखे ॥ क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं नमो दक्षिण बाहुमूले ॥ क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं नमो दक्ष कूर्परे ॥ क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं नमो दक्ष मणि बंधे ॥ क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं नमो दक्ष हस्तांगुलि मूले ॥ क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं नमो दक्ष हस्तांगुल्यग्रे ॥ क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं नमो वाम बाहुमूले ॥ क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं नमो वाम कूर्परे ॥ क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं नमो वाम मणि-बन्धे ॥ क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं नमो वाम हस्तांगुलि मूले ॥ क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं नमो वाम हस्तांगुल्यग्रे ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं नमो दक्षिण पाद मूले ॥ क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं नमो दक्ष जानुनि ॥ क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं नमो दक्ष गुल्फे ॥ क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं नमो दक्ष पादांगुलि मूले ॥ क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं नमो दक्ष पादांगुल्यग्रे ॥ क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं नमो वाम पाद मूले ॥ क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं नमो वाम जानुनि ॥ क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं नमो वाम पादांगुलि मूले ॥ क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं नमो वाम पादांगुल्यग्रे ॥ क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं नमो दक्ष पार्श्वे ॥ क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं नमो वाम पार्श्वे ॥ क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं नमो पृष्ठे ॥ क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं नमो नाभौ ॥ क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं नमो उदरे ॥ क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं त्वगात्मने नमः हृदि ॥ क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं असृगात्मने नमः दक्षांसे ॥ क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं मांसात्मने नमः ककुदि ॥ क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं मेदात्मने नमः वामांसे ॥ क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं अस्थ्यात्मने नमः हृदयादि दक्षहस्तान्तम् ॥ क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं मज्जात्मने नमः हृदयादि वाम हस्तान्तम् ॥ क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं शुक्रात्मने नमः हृदयादि दक्ष पादान्तम् ॥ क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं आत्मने नमः हृदयादि वाम पादान्तम् ॥ क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं परमात्मने नमः जठरे ॥ क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं क्लीं श्रीं हृदयादि मस्तकान्तम् ॥ इति तृतीय न्यासः ॥ अथ चतुर्थ न्यासः ॥

ह्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं नमः ललाटे ॥

सृष्टिन्यास के अनुसार स्थानों पर पंचम न्यासतथा मुद्रा भी वही ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पंचमः ॥

ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे हां हां ऋं ऋं क्लूँ नमः ललाटे ॥ सृष्टि न्यास के अनुसार तथा मुद्रा भी वही ॥

षष्ठ अनुलोमः ॥

ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे नमः ललाटे ॥ उन्हीं स्थान तथा मुद्रा से

विलोम न्यासः ॥

ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे नमः हृदयादि मस्तकान्तम् ॥ ११६ पेज में छपे हुए द्वितीय न्यास के अन्त से चल कर ललाट में समाप्त होगा।

तत्त्वन्यासः ॥

ऐं ह्रीं क्लीं आत्म तत्त्वाय नमः पादादि नाभिपर्यन्तम् ॥ चामुण्डायै विद्यातत्त्वाय नमः नाभ्यादि हृदय पर्यन्तम् ॥ विच्चे शिव तत्त्वाय नमः हृदयादि शिरः पर्यन्तम् ॥

अक्षर न्यासः ॥

ऐं नमः ब्रह्मरंध्रे ॥ ह्रीं नमः भ्रुवोर्मध्ये ॥ क्लीं नमः ललाटे ॥ चां नमः हृदि ॥ मुं नमोकुक्षौ ॥ डां नमः नाभौ ॥ यैं नमो लिंगे ॥ विं नमो गुह्ये ॥ च्चें नमोवक्त्रे ॥ इति

ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ॥

ततो नवधा सप्तधा पञ्चधा वा मूल मुच्चरन् व्यत्य हस्ताभ्यां व्यापक न्यासं विधाय ॥ ततो यथोक्त विधिना विन्दु त्रिकोण षट्कोण अष्ट दल चतुर्विंशति दल भूपरयुतं यंत्रं निर्माय पीठे धृत्वा ॥ पीठ न्यासं कुर्यात् ॥ ॐ ह्रीं आधार शक्तये नमः ॥ ॐ प्रकृत्यै नमः ॥ ॐ कूर्माय नमः ॥ ॐ सुधांबुधये नमः ॥ ॐ मणिद्वीपाय नमः ॥ ॐ चिन्तामणि गृहाय नमः ॥ ॐ श्मशानाय नमः ॥ ॐ पारिजाताय नमः ॥ तन्मूले ॥ ॐ रत्नवेदिकायै नमः ॥ ॐ मणिपीठाय नमः ॥ एतावद्धृदि न्यसेत् ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

चतुर्दिक्षु ॥ ॐ नाना मुनिभ्यो नमः ॥ ॐ नाना देवेभ्यो नमः ॥ ॐ शवेभ्यो नमः ॥ ॐ शवमुण्डेभ्यो नमः ॥ ॐ बहुमांसास्थि मोदमान शवेभ्यो नमः ॥ ॐ धर्म्माय नमः दक्षांसे ॥ ॐ ज्ञानाय नमः वामांसे ॥ ॐ वैराग्याय नमः वामोरौ ॥ ॐ ऐश्वर्याय नमः दक्षोरौ ॥ ॐ अधर्म्माय नमोमुखे ॥ ॐ अज्ञानाय नमो वाम पार्श्वे ॥ ॐ अवैराज्ञाय नमः नाभौ ॥ ॐ अनैश्वर्याय नमः दक्षिणपार्श्वे ॥ ततो हृदि ॥ ॐ आनन्द कन्दाय नमः ॥ ॐ संविन्नालाय नमः ॥ ॐ सर्व तत्त्वात्मक पद्माय नमः ॥ ॐ प्रकृति मय पत्रेभ्यो नमः ॥ ॐ विकार मय केसरेभ्यो नमः ॥ ॐ पञ्चाशद्बीजाढ्य कर्णिकायै नमः ॥ ॐ अं द्वादश कलात्मने सूर्य मंडलाय नमः ॥ ॐ सं षोडश कलात्मने सोममण्डलाय नमः ॥ ॐ मं दशकलात्मने वन्हि मण्डलाय नमः ॥ ॐ सं सत्वायनमः ॥ ॐ रं रजसे नमः ॥ ॐ तं तमसे नमः ॥ ॐ आं आत्मने नमः ॥ ॐ अं अन्तरात्मने नमः ॥ ॐ पं परमात्मने नमः ॥ ॐ हीं ज्ञानात्मने नमः ॥ अष्टदिक्षु ॥ ॐ इं इच्छायै नमः ॥ ॐ ज्ञां ज्ञानायै नमः ॥ ॐ क्रिं क्रियायै नमः ॥ ॐ कां कामिन्यै नमः ॥ ॐ कां कामदायिन्यै नमः ॥ ॐ रं रत्यै नमः ॥ ॐ रं रति प्रियायै नमः ॥ ॐ आं आनन्दायै नमः ॥ मध्ये ॥ ॐ मं मनोन्मन्यै नमः ॥ ॐ पं परायै नमः ॥ ॐ पं परापरायै नमः ॥ ॐ ह्सौः ब्रह्मा विष्णु रुद्रमहानेत पद्मासनाय नमः ॥ इति पीठ न्यासं कृत्वा तत्र दुर्गां ध्यायेत् ॥ ॐ शंखं चक्रं गदां बाणान् चापं परिघ शूलके ॥ भुशुण्डीं च शिरः खड्गं दधतीं दश वक्त्रकाम् ॥ १ ॥ तामसींश्यामलां नौमि महाकालीं दशांघ्रिकाम् ॥ मालाञ्च परशुं बाणान् गदां कुलिशमेवच ॥ २ ॥ पद्मं धनुः कुण्डिकां च दंडं शक्तिमसिं

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तथा ॥ खेटकंजलजं घण्टां सुरापात्रं च शूलकम् ॥ ३ ॥ पाशं सुदर्शनं चैव दधतीं लोहित प्रभाम् ॥ पद्मेस्थितां महालक्ष्मीं भजे महिष मर्दिनीम् ॥४॥ घण्टां शूलं हलं शंखं मुसलारि धनुः शरान् ॥ दधतीमुज्वलां नौमि देवीं गौरी समुद्भवाम् ॥ ५ ॥ इति ध्यात्वा मानसैरुपचारैरभ्यर्च्य प्रणमेत् ॥

*विशेषार्घ्य स्थापन विधिः ॥

आत्म श्री चक्रयोर्मध्ये विन्दु त्रिकोण चतुरस्रं कृत्वा ॥ शंखमुद्रया[1] स्तंभयेत् ॥ मध्ये ॥ ॐ जयध्वनि मातः स्वाहेति घण्टां संपूज्य वादयेत् ॥ ॐ आगमार्थंतुदेवानां गमनार्थंतु रक्षसाम् ॥ घण्टारवं प्रकुर्वीत देवता प्रीति कारकम् ॥

मध्ये नवार्ण इतिमंत्रं विलिख्य सामान्यार्घ्योदकेनाभ्युक्ष्य-ततः चतुरस्रकोणेषु ॐ पूर्ण गिरि पीठाय नमः पूर्वे ॥ ॐ उड्डीयान पीठाय नमः दक्षिणे ॥ ॐ कामरूप पीठाय नमः पश्चिमे ॥ ॐ जालंधर पीठाय नमः उत्तरे ॥ त्रिकोणं मूल खंडत्रयेण संपूज्य ॥ ॐ ह्रीं आधार शक्तये नमः इति संपूज्य, षट्कोणेषु षडङ्गानि संपूज्य ॥ तत्राधारे अर्घ्यपात्रं संस्थाप्य नम इति सामान्यार्घ्योदकेनाभ्युक्ष्य ॥ मं दशकलात्मने वन्हिमण्डलाय नमः ॥ ॐ यं धूम्रार्चिषे नमः ॥ ॐ रं ऊष्मायै नमः ॥ ॐ लं ज्वलिन्यै नमः ॥ ॐ वं ज्वालिन्यै नमः ॥ ॐ शं विस्फुलिंगिन्यै नमः ॥ ॐ षं सुश्रियै नमः ॥ ॐ सं स्वरूपायै नमः ॥ ॐ हं कपिलायै नमः ॥ ॐ लं हव्यवाहायै नमः इति संपूज्य ॥ ॐ फडिति पात्रं प्रक्षाल्य ॥ श्री दुर्गा विशेषार्घ्यपात्रं संस्थापयामि नमः

टिप्पणी—* अर्घ्य पाद्याचमनीयमधुपर्काचमस्य च ।
पञ्चपात्राणिपुष्पादीन् स्थापयेत्स्वीय दक्षिणे ॥
मंत्र महोदधौ २१ त० ७५ श्लोक ॥

१—शंखमुद्रा का लक्षण १२४ सफ़े में है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

इति पात्रं संस्थाप्य ॥ ॐ अं अर्कमण्डलाय द्वादशकलात्मने अर्घ्यं पात्राय नमः ॥ ॐ कं भं तपिन्यै नमः ॥ ॐ खं बं तापिन्यै नमः ॥ ॐ गं फं धूम्रायै नमः ॥ ॐ घं पं मरीच्यै नमः ॥ ॐ ङं नं ज्वालिन्यै नमः ॥ ॐ चं धं रुच्यै नमः ॥ ॐ छं दं सुषुम्णायै नमः ॥ ॐ जं खं भोगदायै नमः ॥ ॐ झं तं विश्वायै नमः ॥ ॐ ञं णं बोधिन्यै नमः ॥ ॐ टं ठं धारिण्यै नमः ॥ ॐ ठं डं क्षमायै नमः ॥ इति सम्पूज्य ॥ मूलेन विलोम मातृकां पठन् अर्घ्यपात्रं पूरयामीति जलेन (तीर्थोदकेन) कलशं पूरयित्वा ॥ तत्र रक्तचंदन पुष्पादि निक्षिप्य ॥ ॐ सं षोडश कलात्मने सोममण्डलाय नमः ॥ ॐ अं अमृतायै नमः ॥ ॐ आं मानदायै नमः ॥ ॐ इं पूषायै नमः ॥ ॐ ईं तुष्टयै नमः ॥ ॐ उं पुष्टयै नमः ॥ ॐ ऊं रत्यै नमः ॥ ॐ ऋं धृत्यै नमः ॥ ॐ ॠं शशिन्यै नमः ॥ ॐ ऌं चंडिकायै नमः ॥ ॐ ॡं कान्त्यै नमः ॥ ॐ एं ज्योत्स्नायैनमः ॥ ॐ ऐं श्रियै नमः ॥ ॐ ओं प्रीत्यै नमः ॥ ॐ औं अंगदायै नमः ॥ ॐ अं पूर्णायै नमः ॥ ॐ अः पूर्णामृतायै नमः ॥ इति सम्पूज्य ॥ कुशेन त्रिकोण वृत्त षट्कोणं लिखित्वा तन्मध्ये

धर्म्मसारे ॥ कलशं शंख घण्टे च पाद्यार्घ्याचमनीयकम् ।
संपूज्यप्रोक्ष्यचात्मानं पूजासंभार मेवच ॥
पूजासागरे ॥ सुवासित जलैःपूर्णं सव्येकुम्भं प्रपूजयेत ।
कलशस्येतिमन्त्रेण तीर्थान्यावाहयेत्ततः ॥
वामेऽम्बुपात्रं छत्रमादर्शचामरे ।
कृताञ्जलिर्वामदक्षं गुरून्गणपतिं नमेत् ॥

१ शंखमुद्रा लक्षणम् ॥ वामाङ्गुष्ठन्तुसंगृह्य दक्षिणेन तु मुष्टिना ।
कृत्वोत्तानं तथा मुष्टिमङ्गुष्ठन्तु प्रसारयेत् ॥
वामाङ्गुल्यस्तथाश्लिष्टाः संयुक्ताः सुप्रसारिताः ।
दक्षिणांगुष्ठकेलग्ना मुद्राशङ्खस्यभूतिदा ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

त्रिकोण रेखायां अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं ऌं ॡं एं ऐं ओं औं अं अः कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं यं रं लं वं शं षं सं इति विलिख्य त्रिकोण रेखायां मध्ये हं लं क्षं इति विलिख्य मूलखण्डत्रयेण त्रिकोणं संपूज्य ॥ षट्कोणेषु षडंगं च पूजयित्वा ॥ ॐ गंगे च यमुनेचैव गोदावरि सरस्वति ॥ कावेरिनर्मदेसिन्धो जलेस्मिन्सं-निधिं कुरु ॥ ॐ ब्रह्माण्डोदरतीर्थानि करैः स्पृष्टेन ते रवे ॥ तेन सत्येन मे देव तीर्थं देहि दिवाकर ! ॥ इति मन्त्रेण १अंकुश मुद्रया सूर्यमंडलात्तीर्थान्यावाह्य वौषट् इति पुष्पं वषट् इति गालिनी२ मुद्रां प्रदर्श्य ॥ श्री त्रिगुणात्मक दुर्गा देव्यै नमः ॥ इति ध्यात्वा सम्पूज्य ॥ तत्तन्मंत्रेण पूर्वादिक्रमेण रत्नानि प्रपूजयेत् ॥ ॐ ग्लूं गगन रत्नेभ्यो नमः ॥ ॐ स्लूं स्वर्ग रत्नेभ्यो नमः ॥ ॐ म्लूं मर्त्य रत्नेभ्यो नमः ॥ ॐ न्लूं नागरत्नेभ्यो नमः ॥ ॐ प्लूं पाताल रत्नेभ्यो नमः ॥ इति संपूज्य ॥ ततः आनन्दभैरवानन्द भैरव्यौ ध्यायेत् ॥ सूर्य कोटि प्रतीकाशं चन्द्र कोटि शुशीतलम् ॥ अष्टादशभुजं देवं पञ्च वक्त्रं त्रिलोचनम् ॥ अमृतार्णव मध्यस्थं ब्रह्म पद्मोपरिस्थितम् ॥ वृषारूढं नीलकंठं सर्वाभरणभूषितम् ॥ कपालखट्वाङ्गधरं घंटा-डमरुवादिनम् ॥ पाशांकुशधरं देवं गदामुसलधारिणम् ॥ खड्ग खेटक पट्टीश मुद्गरं शूल दंडकम् ॥ विचित्र खेटकं मुंडं वरदा भयपाणिकम् ॥ लोहितं देव देवेश भावयेत्साधकोत्तमः ॥ वं इति३ धेनु मुद्रयामृतीकृत्य ॥ तज्जलेन स्वात्मानं पूजा सामग्रीं च प्रोक्षयेत् ॥ इति विशेषार्घ्यविधिः ॥

---

१ अङ्कुश मुद्रा का लक्षण ६१ पृष्ठ में देखिये ।

टिप्पणी २ गालिनी मुद्रा यथा—कनिष्ठांगुष्ठकौयुक्तौ करयोरितरेतरम् ।
तर्जनी मध्यमा नामासंहतोभुग्न वर्जिताः ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

भू शुद्धिः ६५ पृष्ठ की टिप्पणी में देखियेगा ॥

अथ क्षेत्र कीलनम् ॥ जप स्थाने गत्वा पृथ्वी ग्रहणं कुर्यात् ॥ तद्यथा गृहीतस्यास्य मंत्रस्य पुरश्चरण सिद्धये ॥ मयेयं गृह्यते भूमिमंत्रोऽयंसिद्धिमाप्नुयात् ॥ इति भूमिंसंगृह्य ॥ अश्वत्थोदुंबर प्लक्षाणामन्यतम वितस्तिमात्रान् दशकीलान् ॥ ॐ नमः सुदर्शनाय अस्त्राय फट् इति मंत्रेण अष्टोत्तरशत-कृत्वाभिमंत्रितान ॥ ॐ ये चात्र विघ्नकर्तारो भुविदिव्यंतरिक्षगाः ॥ विघ्नभूताश्च ये चान्ये मम मंत्रस्य सिद्धिषु ॥१॥ मयैतत्कीलितं क्षेत्रं परित्यज्यविदूरतः ॥ अपसर्पन्तु ते सर्वे निर्विघ्नासिद्धिरस्तु मे ॥ २ ॥ इति मंत्रद्वयेन १० दिक्षु १० कीलान्निखनेत् ॥ ततस्तेषु ॥ ॐ नमः सुदर्शनाय अस्त्रायफट् ॥ इति मन्त्रेण प्रत्येकं कीलं संपूज्य दिक्पालेभ्यः क्षेत्रपाल गणपतिभ्यश्च माष भक्त-बलिं दत्वा ॥ तद्बाह्ये भूत (*पंचमहाभूत) बलिंदद्यात् ॥ तत्र-मन्त्राः ॥ ये रौद्राःरौद्रकर्माणो रौद्रस्थाननिवासिनः ॥ मातरोप्यु-

---

१—वामाङ्गुलीर्दक्षिणानामाङ्गुलीनां च सन्धिषु ।
प्रवेश्य मध्यमाभ्यान्तु तर्जन्यौद्वौ प्रयोजयेत् ॥
कनिष्ठे द्वेनामिकाभ्यांयुज्यात् सा धेनु मुद्रिका ।

* आचम्य प्राणानायम्य ॥ अद्येहेत्यादि मम (यजमानस्य) संकल्पोक्त फलावाप्तये श्री दुर्गा देव्याःपुरश्चरण सिद्धये चतुर्दिक्षुवटु-कादि देवताभ्यो दधि माषान्नद्रव्यैः पंच महाभूत बलिदानं करिष्ये ॥

चक्रस्य पूर्वे भूमौ सिंदूरेण विन्दुत्रिकोणवृत्तचतुरस्रात्मक यन्त्रं विलिख्य ॥ वटुक बलिपात्राधार मंडलाय नमः, इति गंधपुष्पाभ्यां संपूज्य ॥ अन्नव्यंजनयुतमाधारं बलिं च निधाय ॥ ॐ वं वटुक बलि-द्रव्याय नमः इति गंधपुष्पाभ्यां संपूज्य ॥ पूर्वे वं वटुकाय नमः इति संपूज्य ॥ बलिमुपनीय ॥ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं एह्येहि देवीपुत्र वटुकनाथ कपिल-जटाभारभास्वर त्रिनेत्र ज्वालामुख सर्वविघ्नान्नाशय २ सर्वोपचारसहितं बलिं गृह्ण २ स्वाहा ॥ इति वामांगुष्ठानामिकाभ्यांबलि मुत्सृजेत् ॥ दक्षहस्तेन जलंत्यजेत् ॥ प्रार्थना ॥ ॐ करकलितकपालः कुण्डली दण्डपाणिस्तरुण

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ग्ररूपाश्च गणाधिपतयश्च ये ॥ १ ॥ भूचराः खेचराश्चैव तथा चैवांतरिक्षगाः ॥ ते सर्वेप्रीतिमनसाः प्रतिगृह्णन्त्विमंबलिम् ॥२॥ इति मन्त्रद्वयेनदशदिक्षुवाह्ये माषभक्तबलिं दद्यात् ॥ ततो वामकरांगुलिभिरर्घ्यजलेनोत्सृज्य पुष्पांजलिं गृहीत्वा ॥ ॐ भूतानि यानीह वसन्तिभूतले बलिं गृहीत्वा विधिवत्प्रयुक्तम् ॥ संतोषमासाद्य व्रजन्तु सर्वे क्षमन्तुतान्यत्रनमोस्तु तेभ्यः ॥ इति पुष्पांजलिंदत्वा प्रणम्य हस्तौपादौ प्रक्षाल्याचामेत् ॥ इति क्षेत्रकीलनम् ॥

तिमिरनीलव्यालयज्ञोपवीती । क्रतुसमयसपर्या विघ्नविच्छेद हेतुर्जयति वटुकनाथः सिद्धिदः साधकानाम् ॥ बलिदानेन संतुष्टोवटुकः सर्व सिद्धिदः ॥ शान्तिकरोतु मे नित्यं भूत वेताल सेवितः ॥ इति पुष्पाञ्जलिं दद्यात् ॥

चक्रस्य दक्षिणे पूर्ववत्यन्त्रं विलिख्य, योगिनी बलिपात्राधार मंडलाय नमः ॥ इति गंधपुष्पाभ्यां संपूज्य ॥ तदुपरि अन्नव्यंजनयुतमाधारं बलिं च निधाय ॥ ॐ यां योगिनी बलिद्रव्याय नमः इति गंधपुष्पाभ्यां संपूज्य ॥ दक्षिणे यां सर्व योगिनीभ्यो नमः इति संपूज्य बलिमुपनीय । ॐ सर्ववर्ण योगिनीभ्य इमं बलिं गृह्ण २ हुँ फट् स्वाहा इति वामांगुष्ठ मध्यमानामिकाभिः बलिमुत्सृजेत् ॥ दक्षहस्तेनजलं त्यजेत् ॥ प्रार्थना ॥ ॐ ऊर्ध्वं ब्रह्माण्डतो वा दिवि गगनतले भूतले निष्कले वा ॥ पाताले वा (स्थले) ऽनले वा सलिलपवनयोर्यत्र कुत्रस्थिता वा ॥ क्षेत्रे-पीठोपपीठा दिशि च कृतपदा धूपदीपादिकेभ्यः प्रीता देव्या सदा नः शुभविधिबलिनः पांतु वीरेन्द्रवन्द्याः ॥ या काचिद्योगिनी रौद्रा सौम्याघोर परात्पराः ॥ खेचरी भूचरी व्योमवती प्रीतास्तु मे सदा ॥ यां योगिनीभ्यः स्वाहा सर्वाभ्यो योगिनीभ्यो फट् ॥ पुष्पाञ्जलिं दद्यात् ॥

चक्रस्य पश्चिमे पूर्ववत् यंत्रंविलिख्य ॥ क्षेत्रपालबलि पात्राधार मण्डलाय नमः, इति गंधपुष्पाभ्यां संपूज्य ॥ अन्नव्यंजनयुतमाधारं बलिं च निधाय ॥ ॐ क्षं क्षेत्रपाल बलिद्रव्याय नमः इति गंधपुष्पाभ्यां संपूज्य ॥ पश्चिमे क्षं क्षेत्रपालाय नम इति संपूज्य ॥ बलिमुपनीय ॥ क्षां क्षीं क्षूं क्षैं क्षौं क्षः ॥ भो स्थान क्षेत्रपालाय इमं बलिं गृह्ण २ सर्वकामान् पूरय २ स्वाहा ॥ वामांगुष्ठ तर्जनीभ्यां बलिमुत्सृजेत् ॥ दक्षहस्तेन जलं

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अथ यन्त्र पूजन प्रकारः ॥

मध्ये (प्रधानयंत्रे) चक्रस्थ प्रेतासनोपरि मूलेन मूर्तिं* विचिन्त्य ॥ आत्मानं कामकलारूपं विभाव्य करकच्छपिकया

त्यजेत् ॥ प्रार्थना ॥ योस्मिन् क्षेत्रेनिवासी च क्षेत्रपालः सकिंकरः ॥ प्रीतोयं बलिदानेन सर्वरक्षां करोतु मे ॥ पुष्पांजलिं दद्यात् ॥

चक्रस्य उत्तरे पूर्ववत् यन्त्रं विलिख्य, गं गणेशबलि पात्राधार मंडलाय नमः, इति गंधपुष्पाभ्यां संपूज्य तदुपरि अन्नव्यंजनयुतमाधारं बलिं च निधाय ॥ ॐ गं गणेश बलि द्रव्याय नमः, इति गन्धपुष्पाभ्यां संपूज्य ॥ उत्तरे गं गणेशाय नमः इति संपूज्य बलिमुपनीय ॥

गां गीं गूं गैं गौं गः गणपतये वरवरद सर्वजनं मे वशमानय सर्वोपचारसहितं बलिं गृह्ण २ स्वाहा ॥ इति वामांगुष्ठ मध्यमाभ्यांबलि-मुत्सृजेत् ॥ दक्ष हस्तेन जलन्त्यजेत् ॥ प्रार्थना ॥ सर्वदा सर्वकार्याणि निर्विघ्नं साधयेन्मम ॥ शान्तिं करोतु सततं विघ्नराजः सशक्तिकः ॥ पुष्पांजलिंदद्यात् ॥

स्ववामे चतुष्कोणयन्त्रं विलिख्य ह्रीं सर्वभूतविघ्नकृत्बलिपात्राधार मंडलाय नम इति गंध पुष्पाभ्यां संपूज्य तदुपरि अन्न व्यञ्जनयुतमाधारं बलिंचनिधाय ॥ सर्वभूतविघ्नकृत्बलिद्रव्याय नमः ॥ इतिगंधपुष्पाभ्यां-संपूज्य। बलिमुपनीय ॐ ह्रीं सर्वविघ्नकृद्भ्यः सर्व भूतेभ्य इमं बलिं गृह्ण२ हुँ फट् स्वाहा ॥ इति सर्वाङ्गुलिभिः बलिमुत्सृजेत् ॥ दक्षेन जलं त्यजेत् ॥ प्रार्थना ॥ भूता ये विघ्न कर्तारः दिविभूम्यन्तरिक्षगाः ॥ पातालस्थल-संस्थाश्च शिवयोगेन भाविताः ॥ क्रूराद्याः शत संख्याकाः पाखंडाद्या व्यवस्थिताः ॥ ध्रुवाद्याः सत्यसंख्याश्च इन्द्राद्याशा व्यवस्थिताः ॥ तृप्यन्तु प्रीतिमनसो भूता गृह्णन्त्विमंबलिं ॥ नगरेवाथसंग्रामे अटव्यांवैसरित्तटे ॥

---

* शाक्तानन्द त० ६ उल्लासे ॥ आत्मस्थां देवतांत्यक्त्वा वहिर्देवं विचिन्तयेत् ॥ करस्थं कौस्तुभं त्यक्त्वा भ्रमते काचतृष्णया ॥ प्रत्यक्षी कृत्य हृदये वहिस्थां पूजयेच्छिवां ॥ यस्य यस्य च देवस्य यथा भूषण वाहनम् ॥ तदेव पूजने तस्य चिंतयेत्परमेश्वरि ॥

यन्त्र पूजनविधिः ॥

पद्मपत्रे ततश्चक्रे देव्या अग्रदलादितः ॥ वामावर्तेन देवेशि क्रमेण परिपूजयेत् ॥ स्वकल्पोक्त क्रमेणैव पूजयेदङ्गदेवताः ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पुष्पादिकं गृहीत्वा ॥ मूलाधारात्कुण्डलिनीं* ब्रह्मरन्ध्रपथा शिरस्थां विभाव्य तत्रत्यामृत लोलीभूतां हृदयस्थाष्टदलरक्त-पंकजेमानीय देवीं ध्यायेत् ॥ खड्गं चक्रगदेषु चापपरिघानिति१ ॥ अक्षस्रगिति२ ॥ घंटाशूलमित्यादि३ क्रमेणध्यात्वा ॥ यमिति (यं) बीजेन वामनासया कर पुष्पे समारोप्य ॥ मूलं ॥ देवेशि ! भक्तसुलभे ! परिवार समन्विते ॥ यावत्वांपूजयिष्यामि तावद्देवि ! इहावह ॥ इति मन्त्रं पठन्पुष्पं कृतमूर्तौ यन्त्रेवा निधाय ॥

वापी कूपेषु वृक्षेषु श्मशाने च चतुष्पथे ॥ नानारूपधरा ये च बहुरूप-धराश्च ये ॥ ते सर्वे चैव सन्तुष्टा बलिं गृह्णन्तु मे सदा ॥ इति पुष्पा-ञ्जलिं दद्यात् ॥

प्रधान बलिः ॥

देवताग्रे मध्ये भूमौ सिन्दूरेण विन्दु-त्रिकोण-वृत्त-चतुरस्रात्मक यन्त्रं विलिख्य । मूलं चण्डिका-बलिपात्राधार-मण्डलाय नमः ॥ इति गन्धपुष्पाभ्यां सम्पूज्य ॥ अन्नव्यञ्जनयुतमाधारं बलिं च निधाय ॥ ॐ मूलं दुर्गाबलिद्रव्याय नमः इति गन्ध पुष्पाभ्यां सम्पूज्य ॥ मूलं सांगायै सायुधायै सवाहनायै सपरिवारायै सशक्तिकाय ब्रह्मा-विष्णु-रुद्र-सहितायै त्रिगुणात्मिकाचण्डिकादेव्यै नमः इतिसम्पूज्य ॥ बलिमुपनीय ॥ मूलम् एह्येहि जगतां जननि ! इममामिषान्नबलिं गृह्ण २ सिद्धिं देहि २ शत्रुक्षयं कुरु २ ह्रीं ह्रीं हुँ फट् स्वाहा एष बलिः साङ्गायै सायुधायै सवा-

---

१—खड्गं चक्र गदेषु चाप परिघाञ्छूलं भुशुण्डीं शिरः । शंखं संदधतींकरैस्त्रिनयनां सर्वाङ्ग भूषावृताम् ॥ नीलाश्मद्युतिमास्यपाद दशकां सेवेमहाकालिकां, यामस्तौत्स्वपिते हरौ कमलजोहन्तु मधुं कैटभम् ॥१॥

२—अक्षस्रक् परशुं गदेषु कुलिशं पद्मं धनुः कुण्डिकां दंडंशक्ति-मसिं च चर्म जलजं घंटां सुराभाजनं ॥ शूलं पाश सुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रसन्नाननां सेवेसैरिभमर्दिनीमिह महालक्ष्मीं सरोजस्थिताम् ॥ २ ॥

३—घंटा शूल हलानि शङ्खमुसले चक्रं धनुः सायकं हस्ताब्जैर्द-धतींघनान्तविलसच्छीतांशुतुल्य प्रभाम् ॥ गौरीदेह समुद्भवान्त्रिनयनामा-धार भूतां महा पूर्वा मत्र सरस्वती मनुभजे शुम्भादि दैत्यार्दिनीम् ॥ ३ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

* आवाहनम् ॥

‡मूलं ॥ ॐ आत्मसंस्थामजांशुद्धां त्वामहं परमेश्वरि ! ॥ अरण्यामिव हव्यांशं मूर्तावावाहयाम्यहम् ॥ ॐ आवाहये महादेवि ! श्वेतपर्वतमस्तकात् ॥ सूर्य मंडल तोवापि हृदयाम्बुजगह्वरात् ॥ इस मन्त्र से भगवती की नवीन मृत्तिका की मूर्ति वा यन्त्र में आवाहन करना ॥

हनायै सपरिवारायै सशक्तिकायै ब्रह्मा-विष्णु-रुद्र सहितायै त्रिगुणात्मिका श्री दुर्गा देव्यै नमः ॥ इति वामाङ्गुष्ठानामिकाभ्यां बलिमुत्सृजेत् दक्ष हस्तेन जलन्त्यजेत् ॥ प्रार्थना ॥ ॐ शरणागतदीनार्तपरित्राण परायणे ! ॥ सर्वस्यार्ति-हरे देवि ! नारायणि ! नमोस्तु ते ॥ देवी के दक्षभाग में सिंह बलि और वाम भाग में महिष बलि करना ॥

सिंह बलिमंत्रोयम् शारदातंत्रे ॐ वज्र-नख-दंष्ट्रायुधायसिंहाय हुँफट् नमः ॥ दूसरा ॥ ॐ सौं वनस्पति-पुत्रायसिंहाय इमं बलिं गृह्ण २ स्वाहा ॥ महिषबलि मंत्रः ॥ ॐ भूं महिषशृंगेभ्यो महिषेभ्यः इमं बलि गृह्ण २ स्वाहा ॥ महिष बलि मंत्रः ॥

पुष्पाञ्जलि के वेदोक्त मन्त्र ६४ पृष्ठ में हैं ॥

ॐ सर्वेभ्यो बलिदेवताभ्यो नमः ॥ इति सर्वमभ्यर्च्य ॥ *नाराच मुद्रां बद्ध्वा ॥ बलिदानेन संतुष्टाः क्षमध्वं बलिदेवताः ॥ यथासुखंवितरन्तु यथेष्टमुदितावराः ॥ वटुकाद्याः सुराः सर्वे सर्वसिद्धिविधायिनः ॥ शान्ति पुष्टि प्रयच्छन्तु त्वत्प्रसादान्महेश्वरि ॥ स्तुत्वा मुद्रांविसृज्य प्रोक्षणी जलेनात्मानं प्रोक्षयेदिति ॥

---

* नाराच मुद्रा लक्षणम् ॥

अंगुष्ठमग्रं यदि मध्यमाग्रंस्पृशेत्स्युरन्याङ्गुलयस्त्वलग्नाः ॥
तदाभवेद्भूतनिषूदनस्य नाराचनाम्नोऽस्त्रवरस्य मुद्रा ॥

* तत्रैव वाचस्पतौ ॥ कुर्यादावाहनं मूर्तौमृण्मय्यां सर्वदैव हि ॥
प्रतिमायांजले वन्हौनावाहनविसर्जने ॥
‡नवार्णमंत्रेण 'ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे' ॥

*ध्यायेत्कुण्डलिनीं शक्तिं बिसतन्तु-स्वरूपिणीम् ॥ प्रसुप्तभुजगाकारां सार्द्धत्रिवलयान्विताम् ॥ मुखेमुखं तु संयोज्य स्वयम्भू-लिङ्ग वेष्टिनीम् ॥ वह्नीन्द्वर्कतडित्पुञ्जप्रभां चैतन्यरूपिणीम् ॥ इति तन्त्रान्तरे ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

आवाहन मुद्रा लक्षणम् ॥ १॥

सम्यक् संपूजितैः पुष्पैः कराभ्यां कल्पितांजलिः ॥
आवाहनी समाख्याता मुद्रादेशिक—सत्तमैः ॥
अनामामूल—संलग्नांगु ष्ठाग्राञ्जलिरीरिता ॥
देव्याह्वानकरी चैषा मुद्रावाहन—संज्ञका ॥

राम पूर्व तापनीये ॥

‡सोभयस्यास्य देवस्य विग्रहो यन्त्र-कल्पना ।
विना यन्त्रेण चेत्पूजा देवता न प्रसीदति ॥

संहितायां ॥

मन्त्रं मन्त्रमयं प्राहुर्देवता मन्त्ररूपिणी ।
यन्त्रेणापूजितो देवः सहसा न प्रसीदति ॥
सर्वेषामपि मन्त्राणां यन्त्रे पूजा प्रशस्यते ॥

स्थापनम् ॥

(मू०) ॐ तवेयं महिमामूर्तिस्तस्यां त्वं सर्वगः शुभे ॥
भक्तिस्नेहं समाकृष्य दीपवत्स्थापयाम्यहम् ॥ २ ॥

॥ इति संस्थाप्य ॥ स्थापन मुद्रा लक्षणम् ॥

अधोमुखीकृतासैव स्थापनीति निगद्यते ॥
अनया स्थापन्या मुद्रया संस्थाप्य ॥

आसनम् ॥

(मू०) ॐ सर्वान्तर्यामिनिदेवि ! सर्वबीजमयं शुभम् ॥
स्वात्मस्थाप्यपरं शुद्धमासनं कल्पयाम्यहम् ॥ ३ ॥

आसनं गृहाण नमः ॥

अस्मिन्वरासने देवि ! सुखासीनाऽक्षरात्मिके ! ॥
प्रतिष्ठिताभवशिवे ! त्वं प्रसीद परमेश्वरि ! ॥

उपविष्टाभव नमः ॥ सन्निधाय ॥

(मू०) ॐ अनन्यातव देवेशि ! मूर्तिशक्तिरियंवरे ! ॥
सान्निध्यं कुरु तस्यां त्वं भक्तानुग्रह—तत्परे ! ॥ ४ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ इति सन्निधाय ॥ सन्निधान मुद्रा लक्षणम् ॥

आश्लिष्ट—मुष्टियुगला प्रोन्नतांगुष्ठयुग्मका ॥
सन्निधाने समुद्दिष्टा मुद्रेयं तन्त्रवेदिभिः ॥

सन्निरोधनम् ॥

(मू०) ॐ आज्ञया तव देवेशि ! कृपाम्भोधे गुणाम्बुधे ॥
आत्मानन्दैकतृप्तां त्वां निरुणध्मि पितर्गुरो ॥ ५ ॥

इति संनिरुध्य ॥

सन्निरोधन मुद्रा लक्षणम् ॥

अंगुष्ठगर्भिणी सैव सन्निरोधे समीरिता ॥

सम्मुखीकरणम् ॥

(मू०) ॐ अज्ञानाद्दुर्मनस्ताद्वा वैकल्यात्साधनस्य च ॥
यदपूर्णं भवेत्कृत्यं तदप्यभिमुखी भव ॥ ६ ॥

इति सम्मुखी कृत्य ॥

सम्मुखी मुद्रा ॥

हृदि अञ्जली बंधनं प्रार्थनी मुद्रा ॥

सकलीकरणम् ॥

(मू०) दृशापीयूषवर्षिण्या पूरयन् यज्ञविष्टरम् ॥
मूर्तौ वा यज्ञसम्पूर्त्यै स्थिरा भव महेश्वरि ! ॥ ७ ॥

यहाँ १४१ पृष्ठ में से षडङ्गन्यास करना चाहिये इसी को सकलीकरण कहते हैं॥
तथा ३२ पृष्ठ में लिखी प्राण प्रतिष्ठा भी

सकलीकरण मुद्रा ॥

देवांगेषु षडङ्गानां न्यासः स्यात्सकली कृतिः ॥

अथवान्या सकलीकरण मुद्रा ॥

हृदयादिशरीरान्ते कनिष्ठाद्यङ्गुलीषु च ॥
हृदादि मन्त्र-विन्यासः सकली करणं मतम् ॥

अवगुण्ठनम् ॥

(मू०) ॐ अव्यक्त वाङ्मनश्चक्षुःश्रोत्रप्रज्वलितद्युते ! ॥
स्वतेजः पुञ्जकेनाशु वेष्टिताभव सर्वतः ॥ ८ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अवगुण्ठन मुद्रा ॥

सव्यहस्तकृतामुष्टिः दीर्घाधोमुखतर्जनी ॥
अवगुंठनमुद्रेयमभितो भ्रामिताभवेत् ॥

भगवति हुं इत्यवगुण्ठ्य ॥ छोटिकयादिग्बंधनं कुर्यात् (चुटकी बजाना)

अमृतीकरणम् ॥

अमृतीकरणं कुर्याच्चयादेशिक—सत्तमः ॥

धेनुमुद्रा अमृतीमुद्रा ॥

अन्योन्याभिमुखोश्लिष्टो कनिष्ठानामिका पुनः ॥
तथा तु तर्जनीमध्या धेनुमुद्रा प्रकीर्तिता ॥
ततो धनुमुद्रया अमृतीकृत्य ॥ परमीकरण—मुद्रया
परमीकृत्य ॥ महामुद्रांविरचयन् ॥

महा मुद्रा लक्षणम् ॥

अन्योन्यग्रथिताङ्गुष्ठो प्रसारित कराङ्गुलिः ॥
महामुद्रेयमुदिता परमीकरणां बुधैः ॥

स्वागतमाचरेत् ॥

(मू०) ॐ यस्याःदर्शनमिच्छन्ति देवाः स्वाभीष्टसिद्धये ।
तस्यै ते परमेशायै स्वागतं स्वागतं च ते ॥ ११ ॥
तयाकुर्यादिति प्रोक्तं मन्त्रशास्त्रविशारदैः ॥

स्वागतं कुशलम् ॥

(म०) ॐ कृतार्थोनुग्रहीतोस्मि सकलं जीवितं मम ॥
आगता देवि ! देवेशि ! सुस्वागतमिदं पुनः ॥ १२ ॥

सुस्वागतमासनमास्यताम् ॥ पाद्यम् ॥

श्यामाकविष्णुक्रान्ता कमलदूर्वायुतं पाद्यार्थं जलम् ॥

(मू०) ॐ यद्भक्तिलेशसंपर्कात्परमानन्दविग्रहम् ॥
तस्यै ते चरणाब्जायै पाद्यं शुद्धाय कल्पये ॥ १३ ॥

इति पाद्यम् ॥ आचमनम् ॥

लवंगजातिकंकोलं प्रक्षिप्याचमनीयके ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

(मू०) ॐ वेदानामपि वेद्यायै देवानां देवतात्मने ॥
आचामनं कल्पयामीशि ! शुद्धानां शुद्धिहेतवे ॥ १४ ॥
आचमनं स्वधा, अर्घेवस्तूनि ॥
अर्घ्यपात्रे क्षिपेद्दूर्वाः तिलदर्भाग्रसर्षपान् ॥
यवपुष्पाक्षतान् गन्धं तेनार्घ्यमूर्द्ध्नि चाचरेत् ॥
अर्घ्यम् ॥
(मू०) ॐ तापत्रयहरं दिव्यं परमानन्दलक्षणम् ॥
तापत्रयविनिर्मुक्तं तवार्घं कल्पयाम्यहम् स्वाहा ॥१५॥
इत्यर्घम् शिरसि ॥ मधुपर्कम् ॥
पात्रेतु मधुपर्कस्य दध्याज्यं मधु च क्षिपेत् ॥
(मू०) ॐ सर्वकालुष्यहीनायै परिपूर्णसुखदायिनि !
मधुपर्कमिदं देवि ! कल्पयामि प्रसीद मे ॥ १६ ॥
इति मुखेदत्वा ॥
इति मधुपर्कम् ॥ आचमनम् ॥
(मू०) ॐ उच्छिष्टोप्यशुचिर्वापि यस्य स्मरणमात्रतः ॥
शुद्धिमाप्नोति तस्यै ते पुनराचमनीयकम् ॥ १७ ॥
सुगन्धित (इत्र) तैलं ॥
(मू०) ॐ स्नेहं गृहाण स्नेहेन लोकेश्वरि ! दयानिधे ! ॥
सर्वलोकेषु शुद्धात्मन् ! ददामि स्नेहमुत्तमम् ॥ १८ ॥
उद्वर्तनम् ॥
(मू०) ॐ हरिद्राद्यैस्तमुद्वर्त्य स्नापयेदुभयं पठन् ॥
नाना सुगन्धि द्रव्यं च चन्दनं रजनीयुतम् ॥
उद्वर्त्तनं मयादत्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥ १९ ॥
भगवति चंडिके उद्वर्तनं समर्पयामि नमः
देव अंगुष्ठघर्षणे दोषः ॥ तन्त्रान्तरे
नांगुष्ठैर्मर्दयेद्देवंनाधः पुष्पैस्समर्चयेत् ॥
कुशाग्रैर्न क्षिपेत्तोयं वज्रपातसमं भवेत् ॥ २० ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

*पञ्चामृत स्नानम् ॥ पञ्चामृत प्रमाण यामले ॥

दुग्धस्नानम् ॥

(मू०) ॐ कामधेनुसमुद्भूतं सर्वेषां जीवनं परम् ॥
पावनं यज्ञहेतुश्च-पयः स्नानार्थमर्पितम् ॥ २१ ॥

पुनः शुद्धोदकेन संस्नाप्य ॥ दधि स्नानम् ॥

(मू०) ॐ पयसस्तु समुत्पन्नं मधुराम्लं शशिप्रभम् ॥
दध्यानीतं मयादेवि ! स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥ २२ ॥

पुनः शुद्धोदकेन संस्नाप्य ॥ घृत स्नानम् ॥

(मू०) ॐ नवनीत समुत्पन्नं सर्वसंतोषकारकम् ॥
घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥ २३ ॥

पुनः शुद्धोदकेन संस्नाप्य ॥ मधु स्नानम् ॥

(मू०) ॐ तरुपुष्पसमुद्भूतं सुस्वादु मधुरं मधु ॥
तेजः पुष्टिकरं दिव्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥ २४ ॥

पुनः शुद्धोदकेन संस्नाप्य ॥ शर्करास्नानम् ॥

(मू०) ॐ इक्षुसारसमुद्भूता शर्करा पुष्टिकारिका ॥
मलापहारिकादिव्या स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥ २५ ॥

पुनः शुद्धोदकेन संस्नाप्य ॥ एकीकृत्य पंचामृतेन स्नानम् ॥

(मू०) ॐ पयोदधिघृतं चैव मधु च शर्करायुतम् ॥
पंचामृतं मयानीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥ २६ ॥

पुनः शुद्धोदकेन संस्नाप्य ॥ चन्दन (गन्ध) स्नानम् ॥

(मू०) ॐ मलयाचल संभूतं चन्दनागरु सम्भवम् ॥
चन्दनं देवि ! देवेशि ! स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥२७॥

पुनः शुद्धोदकेन संस्नाप्य ॥ सांगस्नानम् ॥

(मू०) ॐ परमानन्दबोधाब्धे निमग्ननिजमूर्तये ॥
सांगोपांगमिदं स्नानं कल्पयाम्यहमीशि ! ते ॥ २८ ॥

घृतं क्षीरं तथा नीरं शर्करामधु संयुतम् ।
पञ्चामृतमिति ख्यातं प्रत्येकन्तु पलम्पलम् ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सर्वाङ्ग स्नानं समर्पयामि नमः ॥ अभिषेकम् ॥❀

(मू०) ॐ ततः सहस्रशंखेन शतेन शक्तितोपिवा ॥
गन्धयुक्तोदकैर्देवीमभिषिंचेन् मनुं स्मरन् ॥ २९ ॥

पुनराचमनीयम् ॥

स्नान वस्त्रोपवीतान्ते नैवेद्यान्तेपि तत्स्मृतम् ॥

वस्त्रम् ॥ ‡

(मू०) ॐ माया चित्रपटच्छन्ननिजगुह्योरुतेजसे ॥
निरावरणविज्ञान वाससस्ते कल्पयाम्यहम् ॥ ३० ॥

उत्तरीय वस्त्रम् ॥

(मू०) ॐ यमाश्रित्य महामाया जगत्संमोहिनी सदा ॥
तस्यै ते परमेशायै कल्पयाम्युत्तरीयकम् ॥ ३१ ॥

यज्ञोपवीतम् ॥

(मू०) ॐ यस्याः शक्ति त्रयेणेदं संप्रोतमखिलं जगत् ॥
यज्ञसूत्राय तस्यै ते यज्ञसूत्रं प्रकल्पये ॥ ३२ ॥

आचमनम् ॥ आभूषणम् ॥

(मू०) ॐ स्वभाव-सुन्दराङ्गायैनानादेवाश्रयेतव ॥
भूषणानिविचित्राणिकल्पयाम्यमरार्चिते ॥ ३३ ॥

३४ पृष्ठ के अनुसार विशेष पूजन करना

लोकमोहनम् ॥

मूलमंत्रेण पुटितमेकैकं मातृकाक्षरम् ॥
विन्यसेद्देवतांगेषु योगोयं लोकमोहनम् ॥

❀टि०—शिवसूर्यौविहाय महाभिषेकं सर्वत्र शंखेनैव प्रकल्पयेत् । लक्ष्मी सूक्तेन, शक्रादिस्तुत्या, लक्ष्मी सूक्त २० पृ० में है । देवी सूक्तेन वा

‡ पीतं विष्णौ सितं शम्भौ रक्तं विघ्नार्क शक्तिषु ॥
सच्छिद्रंमलिनं जीर्णं त्यजेत्तैलादि दूषितम् ॥
तैलादिदूषिताद्रोगः सच्छिद्राद्वाच्यता भवेत् ॥
जीर्णाद्दरिद्रता कर्तुः मलिनात्कान्तिहीनता ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

गन्धम् ॥

(मू०) ॐ परमानन्दसौभाग्यपरिपूर्णदिगन्तरे ॥
गृहाणपरमंगन्धंकृपयापरमेश्वरि ! ॥ ३४ ॥

गन्ध मुद्रा ॥

कनिष्ठांगुष्ठयोगेनगंधमुद्रांप्रदर्शयेत् ॥

नाना–परिमल–सौभाग्य–द्रव्याणि च समर्पयामि नमः ॥३६॥

अक्षतानः ॥

अक्षताश्च सुरश्रेष्ठे ! कुंकुमाक्ताः सुशोभिताः ॥
मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वरि ! ॥ ३७ ॥

पुष्पाणि ॥

तुरीय वन संभूतं नानागुणमनोहरम् ॥
अमन्दसौरभंपुष्पं गृह्यतामिदमुत्तमम् ॥ ३८ ॥
तर्जन्यंगुष्ठयोगेन पुष्पमुद्रां प्रदर्शयेत् ॥

ऋतुकालोद्भवानि पुष्पाणि ॥

सेवन्तिका वकुल चम्पक पाटलाब्जैः ॥
पुन्नाग जाति करवीर रसालपुष्पैः ॥ ३९ ॥
बिल्व प्रवाल तुलसीदल मालतीभिः ॥
त्वां पूजयामि जगदीश्वरि ! मे प्रसीद ॥ ४० ॥
अन्येषां कुसुमानांच यावद्गन्ध विपर्ययम् ॥
पुष्पश्च पञ्चगव्यश्च उपचारांस्तथापरान् ॥
घ्रात्वा निवेद्य देवेशि ! नरो नरकमाप्नुयात् ॥
अङ्गसंस्पृष्टमाघ्रातं त्याज्यं पर्युषितं बुधैः ॥
केशकीटोपविद्धानि शीर्णं पर्युषितानि च ॥
स्वयं पतित पुष्पाणि त्यजेदुपहतानि च ॥

देवी पूजने वर्ज्य पुष्पाणि ॥

शक्तौ दूर्वार्कमन्दारोमालूरंतगरं रवौ ॥
निर्गन्धं केश कीटादि दूषितं चोग्रगंधकम् ॥ ४१ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मलिनंतुच्छ संस्पृष्टमाघ्रातं स्वविकासितम् ॥
अशुद्धभाजनानीतं स्नात्वानीतं च याचितम् ॥ ४२ ॥
शुष्कं पर्युषितं कृष्णं भूमिगं नार्पयेत्सुमम् ॥
पत्रं पुष्पं फलं देवे न प्रदद्यादधोमुखम् ॥ ४३ ॥
पुष्पाञ्जलौ न तद्दोषस्तथा पर्युषितस्य च ॥
पुष्प पूजाविधायेत्थं कुर्यादावरणार्चनम् ॥
अङ्गादि दिक्प हेत्यन्तं ततो धूपादिकंचरेत् ॥ ४४ ॥

दुर्गा पूजन के विशेष पुष्प ३४ पृष्ठ में देखिये ॥

ततः पुष्पांजलिमादाय संविन्मयपरेदेवि ! परामृत रस प्रिये ! ॥ अनुज्ञां चंडिके ! देहि परिवारार्चनाय मे ॥ अनेन प्रार्थयित्वा पुष्पाञ्जलिं निवेद्याज्ञां गृहीत्वा देवी मे परिवार रूपेण पुरतां ध्यात्वा परिवार देवताः पूजयेत् ॥ अत्रसर्वत्रपूज्य-पूजकयोरंतरालेप्राची ॥ तदनुसारेण प्राच्यादिदिशश्च प्रकल्प्य ॥ आदौ वायव्यादीश पर्यन्तं गुरुपंक्तिं प्रपूजयेत् ॥ तत्र ॥ ते रक्त माल्याम्बर गंधभूषिताः सालंकृताः पंकजविष्टरस्थाः ॥ सर्वे च सालंवन योगनिष्ठाः प्राप्ताखिलैश्वर्य गुणाष्टकार्थाः ॥इतिध्यात्वा॥ ॐ महादेव्यंवा श्री पादुकां पूजयामिनमस्तर्पयामि नमः ॥ ॐ महादेवानन्दनाथ श्री पादुकां पूजयामिनमस्तर्पयामि नमः ॥ ॐ त्रिपुराम्बा श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ॥ ॐ भैरवानन्द नाथ श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ॥ एतेदिव्यौघाः ॥ ॐ ब्रह्मानन्दनाथ श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ॥ ॐ पूर्णदेवानन्दनाथ श्रीपादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ॥ ॐ चलचित्तानन्दनाथ श्रीपादुकांपूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ॥ ॐ स्मरदीपानन्द नाथ श्रीपादुकां पूज-यामि नमस्तर्पयामि नमः ॥ ॐ मायाम्बानन्दनाथ श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ॥ ॐ मायावत्यम्बानाथ श्री

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ॥ एते सिद्धौघाः ॥ ॐ विमलानन्दनाथ श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ॥ ॐ कुशलानन्दनाथ श्रीपादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामिनमः ॥ ॐ भीमसेनानन्दनाथ श्रीपादुकांपूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ॥ ॐ सुधाकरानन्दनाथ श्रीपादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ॥ ॐ मीनानन्दनाथ श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ॥ ॐ गोरक्षकानन्दनाथ श्रीपादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ॥ ॐ भोजदेवानन्दनाथ श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ॥ ॐ प्रजापत्यानन्दनाथ श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ॥ ॐ मूलदेवानन्दनाथ श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामिनमः ॥ ॐ रति देवानन्दनाथ श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामिनमः ॥ ॐ विघ्नदेवानन्दनाथ श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ॥ ॐ हुताशनानन्दनाथ श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ॥ ॐ समयानन्दनाथ श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ॥ ॐ संतोषानन्द नाथ श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ॥ एते मानवौघाः ॥ एतान्पुष्पादिभिः संतोष्य गुरुपात्रामृतेन तत्वमुद्रयात्रिः सकृद्वा संतर्प्य ॥ मानवौघसमीपे ॥ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हंसखफ्रें हसचमलवरयूं हसखफ्रें-श्री अमुकानन्दनाथ श्री अमुकी देव्यंबा श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ॥ इति संकेत नाम्ना ॥ स्वगुरुनाथ श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ॥ ॐ परम गुरुनाथ श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ॥ ॐ परापर गुरुनाथ श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ॥ ॐ परमेष्ठिगुरुनाथ श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ॥ इति गुरु चतुष्टय पूर्ववत्पूजयेत्तर्पयेच्च ॥ ततः ॥ पुष्पांजलिमादाय गुरुस्तुतिं कुर्यात् ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ गुरुस्तव ॥

शरच्चन्द्र समाभासं शरत्पंकज लोचनम् ॥ ईषद्धासां शारदीयं पूर्णेन्द सदृशाननम् ॥ दिवास्त्रगम्बरधरं दिव्य गंधानुलेपनम् ॥ सुरक्तशक्ति संयुक्तं वामभाग मनोहरम् ॥ वराभय कराम्भोजं सर्व लक्षण लक्षितम् ॥ सहस्त्रारे महापद्मे गुरु शिरसि चिन्तये ॥

गुप्तसाधन तन्त्रे १ पटले ॥

ॐ ब्रह्म स्थान सरोज मध्य विल सच्छीतांशु पीठे स्थितम् ॥ स्फूर्यत्सूर्य रुचिं वराभयकरंकर्पूर कुन्दो ज्वलम् ॥ श्वेतः सृग्वसनानुलेपन युतं विद्युद्रुचाकान्तया ॥ संश्लिष्टार्द्ध तनुंप्रसन्नवदनं वन्दे गुरुं सादरं ॥ १ ॥ मोहध्वान्त महावृतां ग्रहवतां चक्षूंषि चोन्मीलयन् ॥ यश्चक्रे रुचिराणि तानिदयया ज्ञानांजनाभ्यंजनैः ॥ व्याप्तं यन्महसा जगत्रयमिदं तत्व प्रबोधोदयं ॥ तं वन्दे शिवरूपिणं निज गुरुं सर्वार्थ सिद्धि प्रदम् ॥ २ ॥ मातंगी भुवनेश्वरी च वगला धूमावती भैरवी ॥ तारा छिन्नशिरोधरा भगवती श्यामा रमा सुन्दरी ॥ दातुं नः प्रभवन्ति वांछित फलं यस्य प्रसादं विना ॥ तं वन्दे शिवरूपिणं निज गुरुं सर्वार्थ सिद्धि प्रदम् ॥ ३ ॥ काशी द्वारवती प्रयाग मथुरायोध्या गयावंतिका ॥ माया (हरिद्वार) पुष्कर कांचिकोत्कलगिरी श्री शैलविंध्यादयः ॥ नैते तारयितुं भवन्ति कुशलाः यस्य प्रसादं विना ॥ तं वन्दे शिवरूपिणं निज गुरुं सर्वार्थसिद्धि प्रदम् ॥ ४ ॥ रेवा सिन्धु सरस्वती त्रिपथगा सूर्यात्मजा कौशिकी ॥ गंगासागर संगमाद्रितनया लोहित्य शोणादयः ॥ नालं प्रोक्तफल प्रदान समये यस्य प्रसादं विना ॥ तं वन्दे शिवरूपिणं निज गुरुं सर्वार्थ सिद्धि प्रदम् ॥ ५ ॥ सत्कीर्तिर्विमला यशः सुकविता पाण्डित्यमारोग्यता ॥ वादे वाक् पटुता

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कुले चतुरता गांभीर्यमक्षोभिता ॥ प्रागल्भं प्रभुता गुणे निपुणता यस्य प्रसादाद्भवेत् ॥ तं वन्देशिव रूपिणं निज गुरुं सर्वार्थ सिद्धि प्रदम् ॥ ६ ॥ लोकेशो हरिरंबिकास्मर हरो माता पिताभ्यागता ॥ आचार्यः कुल पूजितो पतिवरो वृद्धस्तथाभिक्षुकः ॥ नैते यस्यतुलां व्रजन्तिकलया कारुण्य वारां निधेः ॥ तं वन्दे शिवरूपिणं निज गुरुं सर्वार्थ सिद्धि प्रदम् ॥ ७ ॥ ध्यानंदैवत पूजनं गुरु तपोदानाग्निहोत्रादयः ॥ पाठोहोम निषेचनं पितृ मखाह्यभ्यागतार्चा बलिम् ॥ एते व्यर्थफला भवन्ति नियतं यस्य प्रसादं विना ॥ तं वन्दे शिवरूपिणं निज गुरुं सर्वार्थसिद्धि प्रदम् ॥ ८ ॥ पूर्वाशाभि मुखीकृताञ्जलि पुटः श्लोकाष्टकं यः पठेत् ॥ पौरश्चर्यविधिं विनापि लभते मंत्रस्यसिद्धिं पराम् ॥ नो विघ्नैः परिभूयते प्रतिदिनं प्राप्नोति पूजा फलम् ॥ देहान्ते परमंपदं हि विशते यद्योगिनां दुर्लभम् ॥ ९ ॥ वामकेश्वर तन्त्रे पार्वतीश्वर संवादे गुरूस्तवराज सम्पूर्णः ॥

भगवति ! दुर्गे ! देवि ! ॥ मूलं अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सले ! ॥ भक्त्या समर्पये तुभ्यं गुरु पंक्ति प्रपूजनम् ॥ अनेन पुष्पांजलिं क्षिपेत् ॥ ततो अग्रेपि ॥

शरत् चन्द्र के समान श्वेत कमल के से नेत्र थोड़ा मुसकराते हुए शरत के पूर्ण चन्द्रमा के सदृश मुख दिव्य पुष्प वस्त्र और चन्दन को धारण करे हुए सुन्दर रक्त वर्ण वाम भाग में मनोहर शक्ति को बैठाये हुए वर, अभय को धारण करे सर्व लक्षणों से युक्त ऐसे गुरु को अपने शिर के सहस्र दल कमल में ध्यान करे ॥ १ ॥ सहस्र दल कमल में स्थित चन्द्र पीठ में बैठे हुए जाज्वल्यमान-सूर्य के समान प्रकाशमान वर अभय को धारण करे हुए कपूर, कुन्द के अनुसार प्रभा श्वेत फूलों की माला श्वेत वस्त्र और चन्दन लगाये बिजली के समान क्रांति वाली अर्द्धाङ्गिनी के साथ गुरु की आदर पूर्वक बंदना करता हूँ ॥ २ ॥ मोह रूप अंधकार से ग्रसे हुए मनुष्यों के नेत्रों को खोलकर

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अपनी दया से ज्ञान के सुरमें से दया करके जिसने रुचिर बना दिया तथा जिसका तेज तीनों जगत में व्याप्त है तत्व का ज्ञान प्रकट करने वाले सब सिद्धि देने वाले शिव स्वरूप अपने गुरू की बन्दना करता हूँ ॥ ३ ॥ मातंगी, भुवनेश्वरी, बगला, धूमावती, भैरवी, तारा छिन्नमस्ता, भगवती, काली, लक्ष्मी, त्रिपुर सुन्दरी यह सब जिस गुरू के बिना प्रसन्न हुए वांछित सिद्धि नहीं दे सकतीं ऐसे शिव स्वरूप सब सिद्धि देने वाले अपने गुरू की बन्दना करता हूँ ॥ ४ ॥ काशी, द्वारकापुरी, प्रयाग, मथुरा, अयोध्या, गया, अवंतिका (उज्जैन) माया (हरिद्वार) पुष्कर (विष्णु कांची, शिव कांची) उत्कल (उड़ीसा) श्री शैल, विन्ध्याचल यह सब भी शिव समान गुरू की बिना कृपा के तारने को समर्थ नहीं ऐसे सर्व सिद्धि देने वाले निज गुरु की वन्दना करता हूँ ॥ ५ ॥ नर्मदा, सिन्धु, सरस्वती, गंगा, यमुना, कौशिकी, गंगासागर, अद्रितनयालोहित्य, शोणभद्रादि यह सब भी जिसके बिना सिद्धि दान करने के विषय समर्थ नहीं ऐसे शिव स्वरूप सब सिद्धि देने वाले निज गुरू की वन्दना करता हूँ ॥ ६ ॥ ध्यान, देव पूजन, तीव्र तप, अग्निहोत्र, पाठ, हवनादिक, श्राद्ध, अभ्यागतों का विविध पूजन यह सब भी जिसके बिना निष्फल होंय ऐसे शिव स्वरूप सब सिद्धि देने वाले निज गुरू की वन्दना करता हूँ ॥ ७ ॥ इन्द्रादिक, विष्णु, देवी, महादेव, माता, पिता, अभ्यागत, आचार्य, कुल गुरू, पति श्रेष्ठ, विद्यावृद्ध, तपोवृद्ध, भिक्षुक यह सब जिस करुणा के समुद्र की तुलना करने पर जिसकी एक कला के बराबर भी नहीं हो सकते ऐसे सब प्रकार की सिद्धि देने वाले निज गुरू की बन्दना करता हूँ ॥ ८ ॥ सुन्दर कीर्ति, विमल यश, अच्छी कविता, पंडिताई, आरोग्यता, शास्त्रार्थ में वाक् पटुता, कुल में चतुरता, गंभीरता, सहनशक्ति, प्रगल्भता, गुण में निपुणता यह सब गुण जिसके प्रसाद से प्राप्त होते हैं जो सब सिद्धि के देने वाले हैं ऐसे शिव स्वरूप निज गुरू की बन्दना करता हूँ ॥ ९ ॥ पूरब की ओर मुख करके हाथ जोड़ता हुआ इन आठ श्लोकों को जो पढ़ता है वह बिना पुरश्चरण किये हुए मंत्र की सिद्धि को प्राप्त होता है तथा कोई विघ्न न होते हुए पूजा के फल को प्राप्त करता है और अन्त में योगियों को भी दुर्लभ है जो परमपद उसको प्राप्त होता है ॥ १० ॥

वामकेश्वर तन्त्र में कहा गया पार्वती शिव के संवाद में गुरूस्तव घनश्याम गोस्वामी कृत भाषा टीका में संपूर्ण हुआ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

यन्त्र पूजनम् ॥

त्रिकोणाद्बहिः अग्नीशासुर वायव्य मध्यदिक्त्वंग पूजनम् ॥ ॐ ऐं हृदयाय नमो हृच्छक्ति श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः आग्नेये ॥ ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा शिरः शक्ति श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ईशान्ये ॥ ॐ क्लीं शिखायै वषट् शिखाशक्ति श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः नैर्ऋत्याम् ॥ ॐ चामुण्डायै कवचायहुँ कवचशक्ति श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः वायव्याम् ॥ ॐ विच्चे नेत्रत्रयाय वौषट् नेत्रशक्ति श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः पूर्वे ॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे अस्त्राय फट् अस्त्र शक्ति श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः सर्वदिक्षु ॥ इत्यादि क्रमेण अंगदेवताः पूजयेत्तर्पयेच्च ॥ ततो श्री पात्रामृतेन तत्वमुद्रया त्रिःसकृद्वा तर्पयेत् ॥ ततः पुष्पाञ्जलि मादाय भगवति ! चण्डिके ! देवि ! मू० अभीष्ट सिद्धिं मेदेहि शरणागत वत्सले ! ॥ भक्त्या समर्पयेतुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥ इति समर्प्य ॥ ततस्त्रिकोणयन्त्रे ॥ ॐ सरस्वती ब्रह्मभ्यां नमः सरस्वती ब्रह्म श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः पूर्वे ॥ ॐ लक्ष्मी हृषीकेशाभ्यान्नमो लक्ष्मी हृषीकेश श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः नैर्ऋते ॥ ॐ गौरी रुद्राभ्यान्नमः गौरीरुद्र श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः वायव्ये ॥ ॐ सिं सिंहाय नमः सिंह श्री पादुकां पूजयामिनमस्तर्पयामि नमः ॥देव्याः दक्षिणे॥ ॐ मं महिषाय नमः महिष श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः देव्या उत्तरे ॥ ॐ कां कालायनमः काल श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामिनमः दक्षिणे ॥ ॐ मृं मृत्यवेनमः मृत्यु श्री पादुकां पूजयामि नमस्तपयामि नम उत्तरे ॥ ततो श्री पात्रामृतेन तत्वमुद्रया त्रिसकृद्वा तर्पयेत् ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पुष्पाञ्जलिमादाय ॥ भगवति ! चण्डिके ! देवि मू० अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले ! ॥ भक्त्या समर्पये तुभ्यं द्वितीयावरणार्चनम् ॥ ततः षट्कोणेषु नन्दजादिशक्तीः पूजयेत् ॥ ॐ नं नन्दजायै नमः नन्दजा शक्ति श्री पादुकाँ पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः पूर्वे ॥ ॐ रं रक्तदन्तिकायै नमः रक्तदन्तिका शक्ति श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः आग्नेयाम् ॥ ॐ शां शाकम्भर्यै नमः शाकम्भरी शक्ति श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः नैर्ऋत्याम् ॥ ॐ दुं दुर्गायैनमः दुर्गाशक्ति श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः पश्चिमे ॥ ॐ भीं भीमायै नमः भीमा शक्ति श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः वायव्याम् ॥ ॐ भ्रां भ्रामर्यै नमः भ्रामरीशक्ति श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ईशान्ये ॥ करयोः पुष्पांजलिमादाय ॥ भगवति ! चण्डिके ! मू० अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सले ! ॥ भक्त्या समर्पयेतुभ्यं तृतीयावरणार्चनम् ॥ इति यन्त्रे क्षिपेत् ॥ ततोष्टपत्रेषु ॥ ब्राह्म्यादि शक्ति ध्यानम् ॥ ॐ ब्राह्मी हंस समारूढां स्वर्णवर्णां चतुर्भुजाम् ॥ चतुर्वक्त्रां त्रिनेत्राञ्च ब्रह्म कूर्चं च पङ्कजम् ॥ दण्डपद्माक्ष सूत्रञ्च दधतीं चारुहासिनीम् ॥ जटाजूट धरान्देवीं भावयेत्साधकोत्तमः ॥ १ ॥ ॐ आं ब्राह्मी श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः पूर्वे ॥ ॐ नारायणीं महादीप्तां श्यामां गरुड़वाहिनीम् ॥ नानालंकार संयुक्तां चारुकेशीं चतुर्भुजाम् ॥ घण्टां शंखं कपालं च चक्रं संदधतींपराम् ॥ मधुमत्तामदोल्लोल दृष्टि सर्वाङ्ग सुन्दरीम् ॥ २ ॥ ॐ ईं नारायणी श्रीपादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः

---

१ यन्त्र में महिषायनमः देवी के दक्षिण भाग में तथा सिंह वाम भाग में गलती से छपा है सो पूजन में ठीक कर लीजियेगा ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ईशान्यां ॥ ॐ माहेश्वरी वृषारूढां शुक्लांत्रिनयनान्विताम् ॥ कपालं डमरूं चैव वरदाभय शूलकम् ॥ टङ्कं च दधतीं देवी नाना भरणभूषिताम् ॥ ३ ॥ ॐ ऊँ माहेश्वरी श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः उत्तरे ॥ ॐ चामुण्डां चण्डाट्टहासां प्रकटित दशनां भीमवक्त्रां त्रिनेत्राम् ॥ नीलाम्भोज प्रभाभां प्रमुदित वपुषांनारमुण्डालिमालाम् ॥ खड्गं शूलं कपालं नरशिर घटितं खेटकं धारयन्तीम् ॥ प्रेतारूढां प्रमत्तांमधुमदमुदितां भाव-येच्चण्ड रूपाम् ॥ ४ ॥ ॐ ऋं चामुण्डा श्रीपादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः वायव्ये ॥ ॐ कौमारीं कुङ्कुमाभां च त्रिनेत्रां शिखिसंस्थिताम् ॥ चतुर्भुजां शक्तिपाशमंकुशाभय धारिणीम् ॥ नानालङ्कार संयुक्तां प्रमत्तां परिचिन्तये ॥ ५ ॥ ॐ लं कौमारी श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः पश्चिमे ॥ ॐ अपरा-जितां च पीताभामक्षसूत्र वरप्रदाम् ॥ कमलंमातुलुङ्गं च दधतीं परिचिन्तये ॥ ६ ॥ ॐ ऐं अपराजिता श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः नैर्ऋत्ये ॥ ॐ वाराहीं धूम्रवर्णाभां वराह वदनांशुभाम् ॥ खेटकं खड्ग मुसलं हलं वेदभुजैर्धृताम् ॥ ७ ॥ ॐ औं वाराही श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः दक्षिणे ॥ ॐ नारसिंही नृसिंहस्य बिभ्रतीं सदृशंवपुः ॥ ८ ॥ ॐ अः नारसिंही श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ॥ आग्नेये ॥ इति संपूज्य ॥ पूर्ववद्योगिनी पात्रामृतेन (विशेषार्घ्यजलेन) त्रिःसकृद्वातर्पयेत् ॥ ततः पुष्पांजलि मादाय भगवति चण्डिके !

जयाख्या विजया पश्चादजिता चापराजिता ॥
नित्या विलासिनी चापि दोग्ध्र्यघोरा च मंगला ॥ ५८ ॥
पीठ शक्तय एतास्युः चण्डिका योगपीठतः ॥
आत्मनेहृदयांतोयं मायादिः पीठ मन्त्रकः ॥ ५९ ॥
मन्त्र महोदधिः १ तरंगे ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

दुर्गार्चन सृतौ,

प्रणवं सर्वत्रादौ

सप्तशती पूजन यन्त्रम्

मन्त्री महोदधि १८ तरङ्गे

श्लोक १४८ तः १५७ प०

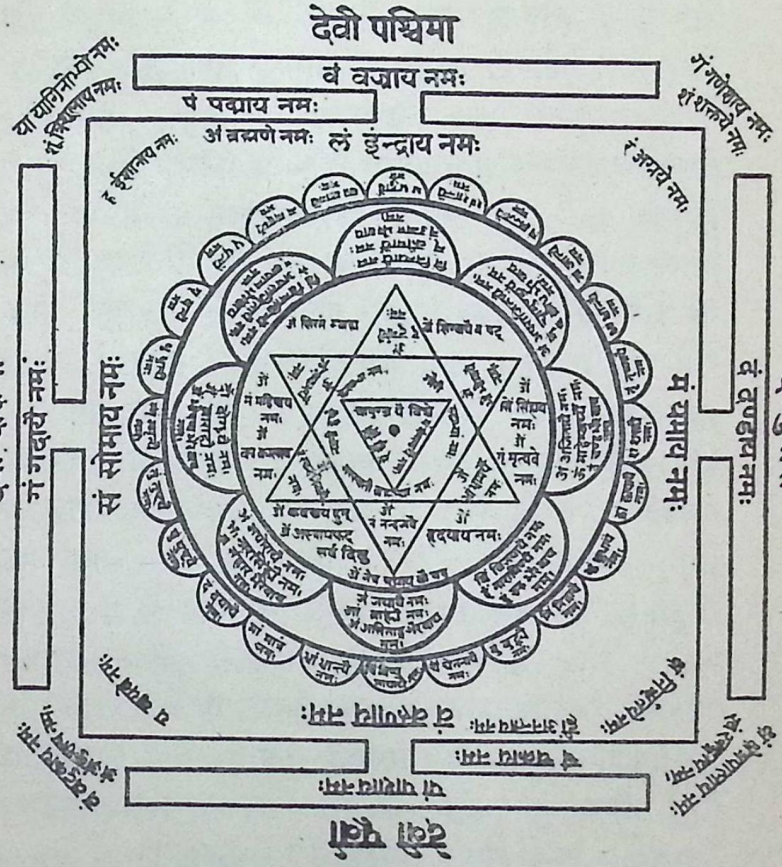

सप्तक आसन

नोट—शुद्धाशुद्धि-वाम भाग में ओं मं महिषाय नमः बनाना।

दक्ष भाग में ओं सिं सिंहाय नमः बनाना।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

देवि ! मू० अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले ! ॥ भक्त्या समर्पयेतुभ्यं चतुर्थावरणार्चनम् ॥ इति समर्प्य ॥ ततोऽष्ट भैरवान् ध्यायेत्॥ दधताञ्जन पुञ्ज नीलवर्णान् रुरु वेताल शूल दण्डान्॥ लघु दुन्दुभिः संयुतां त्रिनेत्रां करि हस्तो परि हस्त दण्ड खंडै गजाकृति निवर्तितो गरीयान् ॥ भृकुटी संघट्टितैर्ललाट पट्टैः ललितालि कुलाभ कुण्डलग्नान्मुदितान्तः करणान्सुयौवना-ढ्यान् ॥ इति ध्यात्वा ॥ ॐ ह्रीं असितांग भैरवाय नम असिताङ्ग भरव श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः पूर्वे ॥ ॐ ह्रीं रुरु भैरवाय नमः रुरु भैरव श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ईशान्ये ॥ ॐ ह्रीं चण्ड भैरवाय नमः चण्ड भैरव श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः उत्तरे ॥ ॐ ह्रीं क्रोध भैर-वाय नमः क्रोध भैरव श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः वायव्ये ॥ ॐ ह्रीं उन्मत्त भैरवाय नम उन्मत्त भैरव श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः पश्चिमे ॥ ॐ ह्रीं कपाल भैरवाय नमः कपाल भैरव श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः नैर्ऋत्ये ॥ ॐ ह्रीं भीषण भैरवाय नमः भीषण भैरव श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः दक्षिणे ॥ ॐ ह्रीं संहार भैरवाय नमः संहार भैरव श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामिनम आग्नेये॥ इति संपूज्य॥ पूर्व वद्योगिनी पात्रामृतेन त्रिः सकृद्वातर्पयेत् ॥ ततः पुष्पाञ्जलिमादाय॥भगवति चण्डिके ! देवि ! मू० अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले ! ॥ भक्त्या समर्पये तुभ्यं पञ्चमावर-णार्चनम् ॥ इति समर्प्य ॥ ततो चतुर्विंशति दले पूर्वादि आ-ग्नेयान्त दलेषु ॥ ॐ विं विष्णुमायायै नमः विष्णु माया श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ॥ ॐ चें चेतनायै नमः चेतना श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ॥ ॐ बुं

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

बुद्ध्यै नमः बुद्धि श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ॥ ॐ निं निद्रायै नमः निद्रा श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ॐ क्षुं क्षुधायै नमः क्षुधा श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ॥ ॐ छां छायायै नमः छाया श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ॥ ॐ शं शक्त्यै नमः शक्ति श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ॥ ॐ तृं तृष्णायै नमः तृष्णा श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ॥ ॐ क्षां क्षान्त्यै नमः क्षान्ति श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ॥ ॐ जां जात्यै नमः जाति श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ॥ ॐ लं लज्जायै नमः लज्जा श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ॥ ॐ शां शान्त्यै नमः शान्ति श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ॥ ॐ श्रं श्रद्धायै नमः श्रद्धा श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ॥ ॐ कां कान्त्यै नमः कान्ति श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ॥ ॐ लं लक्ष्म्यै नमः लक्ष्मी श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ॥ ॐ धृं धृत्यै नमः धृति श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ॥ ॐ वृं वृत्त्यै नमः वृत्ति श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ॥ ॐ श्रुं श्रुत्यै नमः श्रुति श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ॥ ॐ स्मृं स्मृत्यै नमः स्मृति श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ॥ ॐ तुं तुष्ट्यै नमः तुष्टि श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ॥ ॐ पुं पुष्ट्य नमः पुष्टि श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ॥ ॐ दं दयायै नमः दया श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ॥ ॐ मां मात्रेनमः ॥ मातृ श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः॥ ॐ भ्रां भ्रान्त्यै नमः भ्रान्ति श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ॥ इति सम्पूज्य ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पूर्ववद्योगिनी पात्रामृतेन त्रिः सकृद्वा तर्पयेत् ॥ ततः पुष्पांजलि मादाय ॥ भगवति चण्डिके ! देवि ! मू० अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले ! भक्त्या समर्पयेतुभ्यं षष्ठ आवरणार्चनम् ॥ इति समर्प्य ॥ ततः भूपुरमध्ये प्रसिद्ध पूर्वादिदिक्षुत आरभ्य ॐ‡ लं इन्द्राय नमः इन्द्र श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः पूर्वे ॥ ॐ रं अग्नये नमः अग्नि श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः आग्नेये ॥ ॐ मं यमाय नमः यम श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः दक्षिणे ॥ ॐ क्षं निर्ऋतये नमः निर्ऋति श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः निर्ऋतौ ॥ ॐ वं वरुणाय नमः वरुण श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः पश्चिमे ॥ ॐ यं वायवे नमः वायु श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः वायव्ये ॥ ॐ सं सोमाय नमः सोम श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः उत्तरे ॥ ॐ हं ईशानाय नमः ईशान श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ईशान्ये ॥ ॐ ह्रीं अनन्ताय नमः अनन्त श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः निर्ऋति वरुणयोर्मध्ये ॥ ॐ ब्रं ब्रह्मणे नमः ब्रह्म

---

‡ ॐ लं इन्द्राय सुराधिपतये सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय सशक्तिकाय देवीपार्षदाय नमः ॥ १ ॥ ॐ रं अग्नयेतेजोधिपतये० ॥ २ ॥ ॐ मं यमाय प्रेताधिपतये० ॥ ३ ॥ ॐ क्षं निर्ऋतये रक्षोधिपतये० ॥ ४ ॥ ॐ वं वरुणाय जलाधिपतये० ॥ ५ ॥ ॐ सं सोमाय नक्षत्राधिपतये० ॥ ६ ॥ ॐ यं वायवे प्राणाधिपतये० ॥ ७ ॥ ॐ हं ईशानाय भूताधिपतये० । ८ ॥ ॐ ह्रीं अनन्ताय नागाधिपतये० ॥ ९ ॥ ॐ ब्रं ब्रह्मणेलोकाधिपतये० ॥ १० ॥

‡ लोकपाल मुद्रा लोकपालपूजने ॥
पाणि मूले सु संलग्ने शाखाः सर्वाः प्रसारिताः ॥
लोकेशानामियं मुद्रा तेषामर्चासु दर्शयेत् ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः पूर्व ईशानयोर्मध्ये ॥ इति सम्पूज्य ॥ पूर्व वद्योगिनी पात्रामृतेन तर्पयेत् ॥ ततः पुष्पांजलि मादाय ॥ भगवति चण्डिके ! देवि ! मू० अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सले ! भक्त्या समर्पये तुभ्यं सप्तमावरणार्चनम् ॥ इति समर्प्य ॥ पीत शुक्ल सिताकाशविद्युद्रक्त सितासिताः ॥ कोकनद पाटलाभावज्राद्याः परिकीर्तिताः ॥ इति ध्यात्वा भूपुर वाह्ये ॥ ‡ ॐ वं वज्राय नमः वज्र श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः पूर्वे ॥ ॐ शं शक्तये नमः शक्ति श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः आग्नेये ॥ ॐ दं दण्डाय नमः दण्ड श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः दक्षिणे ॥ ॐ खं खड्गाय नमः खड्ग श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः नैर्ऋत्यां ॥ ॐ पां पाशाय नमः पाश श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः पश्चिमे ॥ ॐ अं अंकुशाय नम अंकुश (ध्वजा) श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः वायवे ॥ ॐ गं गदायै नमः गदा श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ईशान्ये ॥ ॐ चं चक्राय नमः चक्र श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः अधः (निर्ऋति वरुणयोर्मध्ये) ॥ ॐ पं पद्मायनमः पद्म श्रीपादुकां पूजयामि यमस्तर्पयामि नमः ऊर्ध्वे (पूर्वईशानयोर्मध्ये) ॥ इति सम्पूज्य ॥ पूर्व वद्योगिनी

---

‡ ॐ वं वज्राय वज्रलाञ्छित मौलये सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय सशक्तिकाय देवीपार्षदायनमः ॥ इसी प्रकार॥ ॐ शं शक्तये शक्तिलाञ्छित मौ० ॥ ॐ दं दण्डाय दण्डलाञ्छित० ॥ ॐ खं खड्गाय खड्गलाञ्छित मौ० ॥ पां पाशाय पाशलाञ्छित० ॥ ॐ अं अङ्कुशाय अंकुश ला० ॥ ॐ गं गदायै गदालां० ॥ ॐ शूं शूलाय शूललां० ॥ ॐ चं चक्राय चक्रलां० ॥ ॐ पं० पद्माय पद्मलां० ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पात्रामृतेनतर्पयेत् ॥ ततः पुष्पाञ्जलिमादाय भगवति चण्डिके ! देवि ! मू० अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले ! ॥ भक्त्या-समर्पयेतुभ्यं अष्टमावरणार्चनम् ॥ इति समर्प्य ॥ ततो देव्याः दक्षिण भागे ॥ ॐ ब्रं ब्रह्मणेनमः ब्रह्म श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ॥ ॐ विं विष्णवेनमः विष्णु श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ॥ ॐ रुं रुद्राय नमः रुद्र श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ॥ ततो महालक्ष्मी देव्यस्त्राणि पूजयेत् ॥ तद्यथा ॥ ॐ अं अक्षमालायै नम अक्षामाला श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ॥१॥ ॐ पं पद्माय नमः पद्म श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ॥२॥ ॐ सां सायकाय नमः सायक श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ॥३॥ ॐ खं खड्गाय नमः खड्ग श्री पादुकां पूजयामि नम-स्तर्पयामि नमः ॥४॥ ॐ वं वज्राय नमः वज्र श्री पादुकां पूज-यामि नमस्तर्पयामि नमः ॥५॥ ॐ गं गदायै नमः गदा श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः॥६॥ ॐ चं चक्राय नमःचक्र श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः॥७॥ ॐ सुं सुराभाजनाय नमः सुरा भाजन श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ॥८॥ ॐ शं शंखाय नमः शंख श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ॥९॥ ॐ शं शक्तये नमः शक्ति श्री पादुकां पूजयामि नम-स्तर्पयामि नमः ॥१०॥ ॐ पं परशवे नमः परशु श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ॥११॥ ॐ धं धनुषे नमः धनुः श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः॥१२॥ ॐ चं चर्माय नमः चर्म श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ॥१३॥ ॐ दं दण्डाय नमः दण्ड श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ॥१४॥ ॐ कुं कुण्डिकायै नमः कुण्डिका श्री पादुकां पूजयामि

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

नमस्तर्पयामि नमः ॥१५॥ ॐ घं घण्टाय नमः घण्टा श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः॥ १६॥ ॐ पां पाशाय नमः पाश श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ॥१७॥ ॐ शूं शूलाय नमः शूल श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ॥ ॥१८॥ चक्रस्य "वहिः कोणेषु" वायव्यां, ॐ वं वटुकाय नमः वटुक श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ॥ ईशान्ये, ॐ यां योगिनीभ्यो नमः योगिनी श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ॥ निर्ऋतौ, ॐ क्षं क्षेत्रपालाय नमः क्षेत्रपाल श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः॥ आग्नेये, ॐ गं गणेशाय नमः गणेश श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ॥ मध्ये, ॐ दुं दुर्गायैनम दुर्गा श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ॥ ईशान्यां, विं विष्णवे नमः विष्णु श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ॥ आग्नेयां, ॐ शिं शिवाय नमः शिव श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः॥ वायव्यां, ॐ सूं सूर्याय नमः सूर्य श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः॥ नैर्ऋत्यां, ॐ गं गणेशाय नमः गणेश श्री पादुकां पूजयामि नमस्तर्पयामि नमः ॥ इति सम्पूज्य पूर्व वद्योगिनी पात्रामृतेन तर्पयेत् ॥ ततः पुष्पांजलिमादाय भगवति चण्डिके ! देवि ! मू० अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले ! ॥ भक्त्या समर्पये तुभ्यं नवमावरणार्चनम् ॥ इति समर्प्य ॥

इन आयुधों का ध्यान करना वा मुद्रा दिखाना ॥

अनन्तर, अक्षमाला, परशु, गदा, इषु (बाण), कुलिश (वज्र), पद्म, धनुष्, कुण्डिका, दंड, शक्ति, असि, चर्म, घंटा, सुराभाजन, त्रिशूल, पाश, सुदर्शन, हल, शंख, मुसल, चक्र, परिघ, भुशुण्डी, शिरः ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मुद्रापद व्युत्पत्तिमाह तन्त्रे ॥
मोदनात्सर्व देवानां द्रावणात्पाप सन्ततेः ॥
तस्मान्मुद्रेति विख्याता मुनिभिस्तन्त्रवेदिभिः ॥
अथ मुद्राः प्रवक्ष्यामि सर्व तन्त्रेषु कल्पिताः ॥
याभिर्विरचिताभिश्च मोदन्ते मन्त्र देवताः ॥

अक्षमाला मुद्रा ॥ १ ॥

अङ्गुष्ठ तर्जन्यग्रेषु ग्रथयित्वाङ्गुलित्रयम् ॥
प्रसारयेदक्षमाला मुद्रेयं परिकीर्तिता ॥१॥

परशु मुद्रा ॥ २ ॥

करे करं तु करयोस्तिर्यक्संयोज्य चांगुलीः ॥
संहताः प्रसृताः कुर्यान्मुद्रेयं परशोर्मता ॥२॥

गदा मुद्रा ॥ ३ ॥

वाममुष्ठयन्तरेऽङ्गुष्ठे दक्षिणे सरलाङ्गुलीः ॥
वामाङ्गुष्ठः स्पृशेदग्रे योजितः सरलोदरः ॥
अन्योन्याभिमुखौ हस्तौ कृत्वातु ग्रथिताङ्गुलीः ॥
अङ्गुल्यौ मध्यमे भूयः सुलग्ने सुप्रसारिते ॥
गदामुद्रेय मुदिता देव्याः सन्तोष वर्द्धिनी ॥३॥
(भुक्ति मुक्ति प्रदायिनी)

इषु (बाण) मुद्रा ॥ ४ ॥ ज्ञानार्णवे

यथाहस्तगता बाणास्तथा हस्तंकुरुप्रिये ! ॥ बाणमुद्रेयमाख्यातारिपुवर्गनिकृन्तनी ॥ ४ ॥ वामकेश्वरे ॥ दक्षमुष्टिस्तु तर्जन्या दीर्घया बाणमुद्रिका ॥ ४ ॥

कुलिश (वज्र) मुद्रा ॥ ५ ॥

दक्षिण हस्तं मुष्टिं बध्वा चेपणाकारं कुर्यात् ॥
(प्रक्षिपेत्) ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पद्म मुद्रा ॥ ६ ॥

करौ तु संमुखीकृत्य संहतावुन्नताङ्गुलीः ॥ तलान्तमिलिताङ्गुष्ठौ कुर्यादेषाब्ज मुद्रिका ॥ ६ ॥

धनुर्मुद्रा ॥ ७ ॥

वामस्यमध्यमाग्रन्तु तर्जन्यग्रेणयोजयेत् ॥
अनामिकां कनिष्ठाञ्च तस्यांगुष्ठेन पीड़येत् ॥
दर्शयेद्वामके स्कन्धे धनुर्मुद्रेयमीरिता ॥७॥

अथवा

बाहुमूलंस्पृशेत्तेन बाह्वग्रेणैव साधकः ॥
धनुर्मुद्रा यशः कीर्ति बल वीर्य विवर्द्धिनी ॥७॥

कुण्डिका मुद्रा ॥ ८ ॥

करद्वयं यदा शुभ्रु कुण्डाकारंभवेत्तदा ॥
कुण्डिकेति महामुद्रा कथिता पूर्वसूरिभिः ॥८॥

दंड मुद्रा ॥ ९ ॥

मुष्टिं कुर्याद्दक्ष हस्तस्य दर्शयेद्दंड मुद्रिका ॥९॥

शक्ति मुद्रा ॥ १० ॥

मुष्टिंकृत्वा कराभ्यां च वामस्योपरिदक्षिणम् ॥ कृत्वाशिरसिसंयोज्या शक्ति (दुर्गा) मुद्रेयमीरिता ॥ १० ॥

मुद्रा विधान वामकेश्वर तन्त्रतः ॥

असि, खड्ग, मुद्रा ॥ ११ ॥

कनिष्ठा नामिके वद्ध्वा स्वांगुष्ठे नैव दक्षतः ॥
श्लिष्टांगुली तु प्रसृत्ये संदष्टे खड्गमुद्रिका ॥११॥

चर्म, (ढाल) मुद्रा ॥ १२ ॥

वामहस्तं यथा तिर्यक् कृत्वा चैव प्रसार्य च ।
आकुंचितांगुलीः कुर्याच्चर्म्म मुद्रेयमीरिता ॥१२॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

जलज, शंख मुद्रा ॥ १३ ॥

वामांगुल्यस्तथा श्लिष्टाः संयुक्तास्युः प्रसारिताः ॥
दक्षिणांगुष्ठ संस्पृष्टाज्ञेयैषा शंख मुद्रिका ॥१३॥

हल मुद्रा ॥१४॥

अधोमुखा वाम मुष्ठि कशा वै दक्षिणे करे ॥
हलमुद्रेति विख्याता कामदा सर्व कर्मसु ॥१४॥

घंटा मुद्रा ॥१५॥

वाममुष्टिं आमयेदिति घंटा मुद्रा ॥१५॥

सुराभाजन (कुम्भ मुद्रा) ॥१६॥

मुष्ठयो रूर्ध्वी कृताङ्गुष्ठे तर्जन्यग्रेषु विन्यसेत् ॥
सर्वरक्षाकरीह्येषा कुम्भमुद्राप्रकीर्तिता ॥ १६ ॥

शूल मुद्रा ।१७॥

अंगुष्ठेन कनिष्ठान्तु बद्ध्वा श्लिष्टां गुलित्रयम् ॥
प्रसारयेत्त्रिशूलाख्या मुद्रैषा परिकीर्तिता ॥ १७ ॥

पाश मुद्रा ।१८॥

वाम मुष्टिस्थ तर्जन्यादक्षमुष्टिस्थतर्जनीम् ॥ संयोज्याङ्गुष्ठ-काग्राभ्यां तर्जन्यग्रेस्वकेक्षिपेत् ॥ एषा वा पाशमुद्रेतिविद्विद्भिः परिकीर्तिता ॥ १८ ॥

चक्र मुद्रा ॥१८॥

हस्तौतु संमुखौ कृत्वा सुलग्नौ सुप्रसारितौ ॥
कनिष्ठाङ्गुष्ठकौ लग्नौ मुद्रैषा चक्र संज्ञिता ॥१८॥

मुसल मुद्रा ॥१९॥

मुष्टिंकृत्वातुहस्ताभ्यां वामस्योपरिदक्षिणम् ॥
कुर्यान्मुसलमुद्रेयं सर्व विघ्न विनाशिनी ॥ १९ ॥

शिरः मुद्रा ॥२०॥

अन्तराङ्गुष्ठ मुष्टिन्तु कृत्वा वाम करस्य च ॥
मध्यमाग्रे दक्षिणस्य तथा लम्ब्य प्रयत्नतः ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मध्यमेनाथ तर्जन्यामङ्गुष्ठाग्रेण योजयेत् ॥
दक्षिणं योजयेत्पाणिं वाममुष्टौ तु साधकः ॥
दर्शयेद्दक्षिणे भागे मुण्ड मुद्रेयमुच्यते ॥ २० ॥

भुशुण्डी मुद्रा (गोफन गिलोल इति लोके)

भुशुण्डी—अस्त्र—विशेषः—महाभारते अस्य प्रयोगो बभूव इदंहि चर्म निर्मित भवति मध्ये गोलाकारो भवति उभयतः चर्म निर्मित रज्जूर्भवति मध्ये प्रस्तरादिकं निधाय हस्तेन भ्रामयित्वा शत्रूपरि निक्षिप्यते ॥

परिघ मुद्रा ॥

परिघा = सं० पु० परिहन्यतेऽनेति परिहन्-अप् ततोघादेशश्च परौघ ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ४ ॥ लौहमय लगुड लोहांगी, गँड़ासा धनुर्वेद में लिखा है यह अस्त्र सुगोल और लंबाई में ३॥ हाथ का होता था ।

गन्धम् ॥

पुनःकलशस्थ जलं नैवेद्यादि देव्यै निवेद्य पुनः संपूज्य ॥ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ब्रह्मा विष्णु रुद्रान्त्रिः सम्पूज्य॥ मूलं परमानन्द सौरभ्य परिपूर्ण दिगन्तर ॥ गृहाण परमंगंधं कृपया परमेश्वरि ! साङ्गायै सायुधायै सवाहनायै सपरिवारायै सशक्तिकायै ब्रह्म विष्णु रुद्रसहितायै चण्डिकायै गन्धं विलेपयामि नमः ॥ कनिष्ठिकया गंधं दत्वा ॥ कनिष्ठांगुष्ठयोगेन गन्धमुद्रां प्रदर्शयेत् ॥ ततः पुष्पाण्यादाय ॥ मू० ॐ तुरीय वन संभूतं नाना गुण मनोहरम् ॥ अमन्द सौरभं पुष्पं गृहाण इदमुत्तमम् ॥ ॐ सांगायै० ब्रह्मा विष्णु रुद्र सहितायै चण्डिकायै पुष्पाणि नौषट् ॥ इति तर्जन्यंगुष्ठाभ्यां वारत्रयं पुष्पादि दत्वा॥ अधोमुख तर्जन्यंगुष्ठ योगेन पुष्पमुद्रां प्रदर्शयेत् ॥

धूपम् ॥

धूपपात्रं फडिति प्रोक्ष्य नमः इति पुष्पं दत्वा वाम तर्जन्या-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

स्पृशन् मूल मुच्चार्य अभिमन्त्र्य ॥ ॐ जयध्वनि मंत्र मातः स्वाहा इति मन्त्रेण घण्टां संपूज्य वामतर्जन्या संस्पृश्य ॥ मू० ॐ वनस्पति रसोपेतो गन्धाढ्यः सुमनोहरः ॥ आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोयं प्रतिगृह्यताम्॥मूलं सांगायै सायुधायै सवाहनायै सपरिवारायै सशक्तिकायै ब्रह्मा विष्णु रुद्र सहितायै भगवति चण्डिके! *धूपमाघ्रापयामि नमः ॥ वाम हस्तेन घंटांवादयन् दक्षतर्जन्यगुंष्ठ योगेन धूप मुद्रां प्रदर्शयन् देवतागुणान्कीर्तयन् नाभि देशतो धूपयेत् ॥ शंखोदकं त्यजेत् ॥

दीपम् ॥

पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ एवं दीपदानम् ॥ वाम मध्यमयास्पर्शो मूलश्लोकस्य कीर्तनम् ॥ मू० ॐ सुप्रकाशो महादीपः सर्वतस्तिमिरापहः ॥ सबाह्याभ्यन्तरं ज्योतिर्दीपोयं प्रति गृह्यताम् ॥ ॐ सांगायै० सायुधायै सवा० सश० सपरि० व्र० वि० रु० स० दुर्गायै दीपं दर्शयामि नमः ॥ मध्यमांगुष्ठयोगेन दीपमुद्रां प्रदर्श्यदीपं नेत्र देशतः दर्शयेत् ॥ भूयः पचेतु वर्तीनां विषमा वर्तिका मताः ॥ सितवर्तिं युतो दक्षे वामांगे रक्त वर्तिका ॥ सितवर्ति युतो तैल दीपोऽपि दक्षे रक्तवर्ति युतो घृत दीपोपिवामे अन्यत्सर्वं धूपवत् नैवेद्यं समर्पयेत् ॥

---

* देव्याः प्रीतिकरी धूपम् ॥

चन्दना गुरु कस्तूरी श्वेत सर्षप चन्द्रकैः ॥ मध्वाज्य गुग्गुलान्वग्र यष्टी मधुसितायुतैः ॥ सदेवदारु निर्यासैः धूपं देव्या सुतोषदम् ॥ चन्द्रकम्—कर्पूरम् ॥ मधु—क्षौद्रम् (शहत) आज्यं—गव्यं (गायका घी) अग्न्यग्रं—काश्मीरजं केशरम् (केशर) ॥ यष्टी—मधु (मुलैटी) सितामिश्री ॥ देवदारु निर्यासः—लोहवान ॥ सब समान भाग ॥ वा यथा रुचि न्यूनाधिक ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

नैवेद्यम् ॥ ♁

स्वर्णादि पात्रे नैवेद्यं धृत्वार्पणं कुर्यात् ॥
नैवेद्यं "फट्" मन्त्र जलेन संप्रोक्षयेत् ॥

ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे इति मंत्र जलेन सदर्भ शंख-(विशेषार्घ) स्थ जलेन सप्तधा प्रोक्ष्य ततश्चक्र* मुद्रयाभिरक्ष्य वायु (यं) बीजेन द्वादश वाराभि मंत्रित जलेन हविः प्रोक्ष्य ॥ तदुत्थ वायुना तद्दोषं संशोष्य ॥ दक्षिण करतलेऽग्नि (रं) बीजं विचिन्त्य तत्पृष्ठे वाम करतलं कृत्वा नैवेद्यं प्रदर्श्य तदुत्थाग्निना तद्दोषं दग्ध्वा वाम करतलेऽमृत (वं) बीजं विचिन्त्य तत्पृष्ट लग्नं दक्षिण करतलं कृत्वा नैवेद्यं प्रदर्श्य तदुत्थामृत धारया प्लावितं विभाव्य मूल मन्त्रित जलेन संप्रोक्ष्य तदखिलममृतात्मकंध्यात्वा तत्स्पष्ट्वा मूल मन्त्रमष्टधा जप्त्वा धेनु* मुद्रां-प्रदर्श्य जल गन्ध ♃ पुष्पैरभ्यर्च्य देवतायै पुष्पांजलिं समर्प्य तन्मुखात्तेजो गतमिति ध्यात्वा वामाङ्गुष्ठेन मुख्य नैवेद्य पात्रं स्पृष्ट्वा दक्षिण करेण जलं गृहीत्वा ॥ मूल मन्त्र स्वाहान्तम् द्वादशधा पठित्वा ॐ सत्पात्र सिद्धं सुहविर्विधानेकभक्षणम्

♁ आह्वानाद्युपचारेषु प्रत्येकं पुष्पपाथसी ॥
दत्वा प्रक्षाल्य च करमुपचारान्तरञ्चरेत् ॥
स्नाने धूपे च नैवेद्ये दीपे वस्त्रे च भूषणे ॥
घण्टानादं प्रकुर्वीत तथा नीराजनेपि च ॥ १ ॥
विधानपारिजात धृतवाक्यम् ॥

* चक्र मुद्रा—हस्तौ तु सम्मुखौ कृत्वा संलग्नौ सुप्रसारितौ ॥ कनिष्ठांगुष्ठकौ लग्नौ मुद्रैषा चक्र संज्ञिता ॥

* २६ पेज में धेनुमुद्रा। ♃ सत्यन्त्वर्तेन परिषिञ्चामीति प्रातः ऋतंत्वा सत्येन परिषिञ्चामीति सायम् ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

निवेदयामि देवेशि ! सानुगायै गृहाणतत् ॥ जवनि कां कृत्वा पद्यद्वयं पठेत् ॥ ॐ ब्रह्मेशाद्यैः परित उरुभिः सूपविष्टैः समेतै-र्लक्ष्यासिंजद्वलय करया सादरं वीज्यमानः ॥ नर्मक्षेली प्रहसन् मुखैर्व्याप्नु वन्पंक्ति मध्यम्, मुक्ता पात्रे कनक घटिते षड्रसं चण्डिके च ॥ १ ॥ शाली भक्तं सुभक्तं शिशिर करशितं पाय-सापूप सूपं, लेह्यं पेयं च चोष्यंसितममृतफलंद्वारिकाद्यं सुखाद्यम् ॥ आज्यं प्राज्यं सभोज्यं नयनरुचिकरंराजिकैला मरीचं, स्वादी यः शाकराजी परिकरममृताहार जोषं जुषस्व ॥ २ ॥ मू० सां० सा० सवा० सप० सश० त्र० वि० रु० सहितायै दुर्गायै नैवेद्यं समर्पयामि नमः इति सपुष्पाभ्यां ॥ हस्ताभ्यामंगुष्ठानामिकाभ्यां नैवेद्य पात्रं त्रिःप्रोद्धरन् ॥ निवेदयामि भवतीदं जुषाणेदं हविः शिवे ॥ ॐ अमृतोपस्तरण मसि स्वाहेति देविकरे जलं समपयेत् ॥ वामकरेण विकचोत्पल सदृशीं ग्रासमुद्रां प्रदर्श्य दक्षिण करेण समन्त्राः प्राणायस्वाहा अंगुष्ठानामिका कनिष्ठाभिः॥ ॐ अपानायस्वाहा अंगुष्ठ तर्जनी मध्यमाभिः ॥ ॐ उदानाय-स्वाहा अंगुष्ठ मध्यमानामिकाभिः ॥ ॐ व्यानायस्वाहा अंगुष्ठ-तर्जनी मध्यमानामिकाभिः ॥ ॐ समानायस्वाहा अंगुष्ठादि-सर्वांगुलिभिः ॥ ततो आपोशानं दद्यात् ॥

अमृतोपिधान मसिस्वाहा ॥

मूलं—ॐ समस्त देव देवेशि ! सर्व तृप्तिकरं परम् ॥
अखंडानन्द सम्पूर्ण गृहाणजल मुत्तमम् ॥

इत्यापोशानं (आचमनम्) दत्वा गतसारं नैवेद्यं नैर्ऋत्यां दिशि संस्थाप्य तदुच्छिष्टभागं उच्छिष्टचाण्डालिन्यै समर्प्य ॥ कर्पूरादि नाना सुगंधमिश्रित ताम्बूलमानीय ॥ फट् मन्त्रेण संप्रोक्ष्य ॥ ॐ वनिस्पति देवताय ताम्बूलाय नम इति संपूज्य॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मूलं—ॐ नारिकेरंसकर्पूरं पूगभागैरलं कृतम् ॥
नागवल्ली दलोपेतं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम् ॥
सांगायै सायुधायै सवाहनायै सपरिवारायै सशक्तिकायै ब्रह्मा वि० रु० सहितायै दुर्गायै एतत्तेताम्बूलं समर्पयामि नमः ॥ मूलेन दर्पणं, छत्रं, चामरं, नृत्यं, गीतादिकं समर्प्य सुप्रसन्नां चण्डिकादेवीं विभाव्य ॥ यथा ॥

बुद्धिः सवासनाक्लृप्तदर्पणंमंगलानिच ॥
मनोवृत्ति र्विचित्राते नृत्य रूपेण कल्पिता ॥ १ ॥
ध्वनयोगीतरूपेणशब्दवाद्यप्रभेदतः ॥
छत्राणि नवपद्मानि कल्पितानि मया शिवे ! ॥ २ ॥
सुषुम्णा ध्वजरूपेण प्राणाद्याचामरा मता ॥
अहङ्कारो गजत्वेन वेगः क्लृप्तोरथात्मना ॥ ३ ॥
इन्द्रियाण्यश्वरूपाणि शब्दादी रथवर्त्मना ॥
मनः प्रग्रहरूपेण बुद्धिः सारथि रूपतः ॥४॥
सर्वमन्यच्चया क्लृप्तं तवोपकरणात्मना ॥
मूलेन पुष्पाञ्जलिंदत्वा त्रिःसन्तर्प्य संपूज्य नीराजनम् कुर्यात् ॥

नीराजनम् ॥

रं इति प्रज्वाल्य श्रीं ह्रीं ग्लूं स्लूं म्लूं प्लूं न्लूं ह्रीं श्रीं इति गंध पुष्पाभ्यामारार्त्रिकं सम्पूज्य चक्रमुद्रां प्रदर्श्यास्त्रेण प्रोक्ष्य घंटा वादन पूर्वकं मूलेन आरार्त्रिक मंत्रेण वा नीराजयेत्॥ नीराजन स्तोत्रं ६१,६२,६३ पृष्ठे लिखितम् ॥ प्रदक्षिणा संख्या ६५ पृष्ठे उक्तम् ॥ नीराजन विधिः ॥ देवी पुराण उक्तो यथा ॥

तिथितत्वेपि

यवपिष्ट प्रदीपाद्यैश्चूताश्वत्थादि पल्लवैः ॥ औषधीभिश्च मेध्याभिः सर्व बीजैर्यवादिभिः ॥१॥ नवम्यां पर्व कालेतु यात्रा

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कालेविशेषतः॥ यः कुर्याच्छ्रद्धया वीर ! देव्या नीराजनं नरः॥ ॥२॥ शंखभेर्यादि निनदैर्जयशब्दश्चपुष्कलैः ॥ यावतोदिवसान्-वीर ! देव्या नीराजनंकृतम् ॥३॥ तावत्कल्पसहस्राणि दुर्गालोके महीयते यस्तु कुर्यात्प्रदीपेन सूर्यलोके महीयते ॥४॥

कालोत्तर तन्त्रे पञ्चनीराजनानि यथा ॥

यश्च नीराजनंकुर्यात्प्रथमंदीपमालया॥ द्वितीयं सोदकाब्जेन तृती धौतवाससा ॥५॥ चूताश्वत्थादि पत्रैश्च चतुर्थं परिकीर्तितम् ॥ पञ्चमं प्रणिपातेन साष्टाङ्गेन यथा विधिः ॥६॥

पद्मोत्तर खंडे ॥

तस्य वर्तिकादि प्रमाणं यथा ॥ कुंकुमागुरु कर्पूर घृत चन्दन निर्मिताः ॥ १ ॥ वर्तिकाः सप्त वा पञ्च कृत्वावन्दापनीयकम् ॥ यः कुर्यात्सप्तदीपेन शंख घंटादिवाद्यकैः ॥ २ ॥ देव्याः पञ्चप्रदीपेन बहुशोभक्ति तत्परः ॥

हरिभक्ति विलासे ॥

ततश्च मूलमन्त्रेण दत्वा पुष्पाञ्जलित्रयम् ॥
महानीराजनं कुर्यान्महावाद्य जयस्वनैः ॥ १ ॥
प्रज्वालयेत्तदर्थं च कर्पूरेण घृतेन वा ॥
आरार्त्रिकं शुभे पात्रे विषमानेक वर्तिकाम् ॥ २ ॥

नीराजने नियमाः ॥

आदौ चतुष्पादतले च देव्याः ॥ द्वौ नाभिदेशेमुखमंडलैकम् ॥ सर्वेषु चांगेषु च सप्तवारानारार्त्रिकं भक्त जनस्तु कुर्यात् ॥ १ ॥ ४ बार पैरों में नाभिदेश में २ बार मुखमंडल पर १ बार॥ सब अंगों में ७ बार इस प्रकार आरती करना चाहिये ॥

बहुवर्ति समायुक्तं ज्वलन्तं चण्डिकोपरि ॥
कुर्यादारार्त्रिकं यस्तु कल्पकोटि वसेद्दिवि ॥ १ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मन्त्रहीनं क्रियाहीनं यत्कृतं चण्डिकास्तवम् ॥
सर्वे सम्पूर्णतामेति कृते नीराजने शिवे ! ॥ २ ॥

विष्णु धर्म्मोत्तरे ॥

धूपं चारात्रिकं पश्येत्कराभ्यां च प्रवन्दते ॥
कुलकोटि समुद्धृत्य यातिदेव्याः परम्पदम् ॥ ३ ॥

अथ काम्यप्रयोगेषु शुभाशुभ ज्ञानार्थं शिवाबलि विधानमाह ॥

ततः सायंसमये देवतां संपूज्य आमिषान्न यथोपपन्न द्रव्य जल सहित पक्वान्नं पूजा सामग्रीञ्च श्मशानादि निर्जने नीत्वा उदङ्मुखोभूत्वा प्राणानायम्य षडङ्ग न्यासं कृत्वार्घं संस्थाप्य अर्घोदकं गृहीत्वा ॥ अद्येहेत्यादि अमुक गोत्रोमुकराशि अमुक-शर्माहं श्रीमच्चण्डिकाप्रीतये शिवायाः पूजनं बलिदानं च करिष्ये ॥ इति संकल्पः ॥ मुक्त चिकुर उत्थाय कालि कालि शिवाआहूय इष्ट देवतात्वेन भावयेत् ॥ ॐ शिवायै नम इति गंधाक्षतैः सम्पूज्य ॥ विन्दु त्रिकोण वृत्त चतुरस्र मण्डले बलि पात्रं निधाय अंगुष्ठानामिकाभ्यां धृत्वा ॥. ॐ गृह्ण देवि ! महा भागे शिवे ! कालाग्निरूपिणि ! ॥ शुभाशुभ फलं व्यक्तं ब्रूहि गृह्ण बलिं त्विदम् ॥ इत्युत्सृजेत् ॥ तद्देशात्किंचिदुपसृत्य तासु भोक्त्रीषु तिष्ठन्तीषु पुष्प चन्दनसहित पुष्पाञ्जलिमादायोत्थाय स्वेष्टदेवताधिया प्रणम्य स्तोत्रं पठेत् ॥ ॐ शिवारूप धरे देवि ! कालि ! कालि ! नमोऽस्तुते ॥ उल्कामुखि ! ज्वलज्जिह्वे घोर दंष्ट्रे करालिनि! ॥ श्मशानवासिनि प्रेतेशवमांसप्रियेऽनघे !॥ श्मशान चारिणि शिवे फेरोजंबुक रूपणि ॥२॥ नमोस्तुते महा-माये ! जगत्तारिणि ! कालिके ! मातंगी कुक्कुटे रौद्रि कालि ! कालि ! नमोस्तुते ॥३॥ सर्वसिद्धिप्रदे भीमे भयंकरि ! भया-पहे ! ॥ प्रसन्ना भवदेवेशि ! मम भक्तस्यकालिके ! ॥४॥ संसार-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तारिणि ! जये ! जय सर्वशुभंकरि ॥ विस्रस्तचिकुरे चंडे चामुंडे ! मुण्डमालिनि ! ॥ ५ ॥ संसारकारिणि ! शिवे सव सिद्धि प्रयच्छमे ॥ दुर्गे ! किराति शवरि प्रेतासनगतेऽनघे ॥६॥ अनुग्रहं कुरुसदा कृपया मां विलोकय ॥ राज्यं प्रयच्छविकटे वित्तमायुः स्त्रियंशिवम् ॥७॥ शिवाबलि विधानेन प्रसन्नाभव फेरवे ॥ नमस्तेस्तु नमस्तेस्तु नमस्तेस्तु नमोनमः ॥८॥ इति ॥ ततस्तुत्वा तदुच्छिष्टं यथा काक खराश्च प्रभृतयो दुष्ट जनाभुं-जीरन् तथारात्रावेवभूमौ निखन्य गृहमागत्य पुनर्देवतायै चंदन पुष्पादीनि निवेद्य विहितान्नजलं च द्वात्रिंशद्वारमभिमंत्र्य देवतायै निवेद्य भोजनपानादिकंसुखेनकुर्यादिति शिवाबलि समाप्तं ॥

जप योगिनी मालामाह यामले ॥

विधि यज्ञाज्जपो यज्ञो विशिष्टोदशभिर्गुणैः ॥ उपांशुः स्याच्छत गुणः सहस्रो मानसः स्मृतः ॥ मुक्ताफलामलमणि-स्फीतवैदूर्य सम्भवाम् ॥ पुत्रजीवक पद्माच रुद्राच स्फटिकोद्भ-वाम् ॥ प्रवाल पद्मरागादि रक्तचन्दन निर्मिताम् ॥ कुंकुमागुरु कर्पूर मृगनाभि विभाविताम् ॥ अक्षमालां समाहृत्य चण्डिका-कृत विग्रहः ॥ अथमुक्ताफलमयी साम्राज्य फलदायिनी ॥ यथा मुक्ताफलमयी तथा स्फटिक निर्मिता ॥ रुद्राच मालिका मोक्षे भवेत्सर्व समृद्धिदा ॥ प्रवाल मालिकावश्ये सर्वकार्यार्थ साधिका । माणिक्यमाला विमला साम्राज्य फलदायिनी ॥ पुत्रजीवक मालातु लक्ष्मी विद्या प्रदायिनी ॥ पद्माच मालया लक्ष्मी-र्जायते च महद्यशः ॥ रक्तचन्दन माला तु भोगदा वश्यदा भवेत् ॥ अक्षमालापदेनाकारादिक्षकारान्त मातृकामालोच्यते ॥ अक्षमालां समाश्रित्य मातृका वर्णरूपिणीमिति ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

इदानीं नवलक्ष जपात्मकं पुरश्चरण माह ज्ञानार्णवे ॥

लक्षमेकं जपेद्देवि महापापैः प्रमुच्यते ॥ लक्षद्वयेन पापानि सप्त जन्म कृतान्यपि ॥१॥ नाशयेच्चण्डिकादेवी साधकस्य न संशयः ॥ जप्त्वा लक्षत्रयं मन्त्री यन्त्रितो मन्त्र विग्रहः ॥२॥ पातकं नाशयेदाशु यदि जन्म सहस्रकम् ॥ जप्त्वा विद्यां चतुर्लक्षं महावागीश्वरो भवेत् ॥३॥ पञ्च लक्षाद्दरिद्रोऽपि साक्षाद्वैश्रवणो भवेत् ॥ जप्त्वा षड् लक्षमेतस्या महाविद्या धनेश्वरः ॥४॥ जप्त्वैव सप्त लक्षाणि खेचरी मेलको भवेत् ॥ अष्ट लक्ष प्रमाणञ्च जप्त्वा विद्यां महेश्वरि ॥५॥ अणिमाद्यष्ट सिद्धीशो जायते देव पूजितः ॥ नव लक्ष प्रमाणं तु जप्त्वा वै नव चण्डिकाम् ॥६॥ विधिवज्जायते मन्त्री रुद्रमूर्तिरिवापरः ॥ कर्ता, हर्ता, स्वयं गौरि लोकेऽप्रतिहत प्रभः ॥७॥ प्रसन्नो मुदितो धीरः स्वच्छन्दगतिरीरितः ॥

दुर्गा शब्दार्थः ॥

दुर्गेत्वं भववारिणि प्रणमतां सर्वार्ति संहारिणि ॥
दुर्गेहं भववारिणि प्रपतितः सीदामि सर्वात्मना ॥
मातस्त्वं भववारिणि प्रतिरुधो नेत्राणि कालोस्तिके ॥
मातर्मे भववारिणि प्रकुरुते शार्दूल विक्रीडितम् ॥

दुर्गा दैत्ये महाविघ्ने भवबन्धे कुकर्मणि ॥ शोके दुःखे च नरके यमदण्डे च जन्मनि ॥१॥ महाभये च रोगे च शब्दोऽयं हन्तृवाचकः ॥२॥ एतान्हन्त्येव या देवी सादुर्गा परिकीर्तिता ॥ अपिच ॥ दैत्य नाशार्थ वचनो दकारः परिकीर्तितः ॥ उकारो विघ्ननाशस्य वाचको वेदसम्मतः ॥२॥ रेफो रोगघ्न वचनो गश्च पापघ्नवाचकः ॥ भयशत्रुघ्नवचनश्चाकारः परिकीर्तितः ॥३॥ स्मृत्युक्तिश्च श्रवणाद्यस्या अंतेनश्यन्ति निश्चित ॥म् ततो दुर्गा हरेः शक्तिर्हरिणा परिकीर्तिता ॥४॥ दुर्गेति दैत्यशमनो प्याकारो नाश वाचकः ॥ दुर्गं नाशयति या नित्यं

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सा दुर्गा प्रकीर्तिता ॥५॥ विपत्ति वाचको दुर्गश्चाकारो नाश-
वाचकः ॥ तंननाश पुरा तेन बुधैर्दुर्गा प्रकीर्तिता ॥६॥ अस्याः
स्वरूपं नन्दं प्रति श्रीकृष्ण वाक्यम् ॥ आद्यानारायणी शक्तिः
सृष्टिस्थित्यन्त कारिणी ॥ करोमि च यया सृष्टिंयया ब्रह्मादि
देवताः ॥७॥ यया जयति विश्वं च यया सृष्टिः प्रजायते ॥ यया
विना जगन्नास्ति मयादत्ताशिवाय सा ॥८॥ दया निद्रा च
क्षुत्तृप्तिस्तृष्णा श्रद्धा क्षमा धृतिः ॥ तुष्टिः पुष्टिस्तथाशान्ति-
र्लज्जाधि देवता हि सा ॥९॥ वैकुण्ठे सा महासाध्वी गोलोके
राधिका सती ॥ मर्त्येलक्ष्मीश्च क्षीरोदे दक्षकन्या सती च या
॥१०॥ सा दुर्गामेनका कन्या दैन्यदुर्गति नाशिनी ॥ स्वर्गे लक्ष्मी-
श्च दुर्गा सा शक्रादीनां गृहे गहे ॥११॥ सा वाणी सा चसावित्री
विप्राधिष्ठातृ देवता ॥ वह्नौ सा दाहिका शक्तिः प्रभाशक्तिश्च
भास्करे ॥१२॥ शोभा शक्तिः पूर्णचन्द्रे जले शक्तिश्चशीतला ॥
शस्यप्रभृति शक्तिश्च धारणा च धरासु सा ॥१३॥ ब्राह्मण्य
शक्तिर्विप्रेषु देव शक्तिः सुरेषु सा ॥ तपस्विनां तपस्या सा गृहिणां
गृह वेदिता ॥१४॥ मुक्ति शक्तिश्च मुक्तानां माया सांसारिकस्य
सा ॥ मद्भक्तानां भक्ति शक्तिर्मयि भक्ति प्रदा सदा ॥१५॥ नृपाणां
राजलक्ष्मीश्च वणिजां लक्ष्यरूपिणी ॥ पारे संसार सिन्धूनां त्रयी
दुस्तरतारिणी ॥१६॥ सत्सुसद्बुद्धिरूपाच मेधाशक्तिः
स्वरूपिणी ॥ व्याख्या शक्तिः श्रुतौ शास्त्रेदातृ-
शक्तिश्चदातृषु ॥१७॥ क्षत्रादीनां विप्रभक्तिः पतिभक्तिः सतीषु
च ॥ एवं रूपा च याशक्तिर्मया दत्ता शिवाय सा ॥१८॥
अपिच, शङ्करं प्रति पार्वती वाक्यम् ॥ वैकुण्ठेहं महालक्ष्मी-
र्गोलोकेराधिका स्वयम् ॥ शिवाहं शिव लोकेऽपि ब्रह्मलोके सर-
स्वती ॥१९॥ अहंनिहत्यदैत्यांश्च दक्ष कन्या सती पुरा ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

त्वन्निन्दया तनुं त्यक्त्वा सा चाहं शैलकन्यका ॥२०॥ रक्त-बीजस्ययुद्धे च काली च मूर्तिभेदतः ॥ सावित्री देवमाता हं सीता जनक कन्यका ॥२१॥ रुक्मिणी द्वारवत्यां च भारते भीष्मकन्यका ॥ सुदाम्नोशापतो दैवात् वृषभानु सुताधुना ॥२२॥ धर्मपत्नी च कृष्णस्य पुण्ये वृन्दावने वने ॥ कृष्णं प्रति पार्वती वाक्यम् ॥ परिपूर्णतमाहं च तव वक्षस्थले स्थिता ॥ तवाज्ञया महालक्ष्मीरहं वैकुण्ठ वासिनी ॥२३॥ सरस्वती च तत्रैव वाम-पार्श्वे हरेरपि ॥ तवाहं मनसाजाता सिन्धुकन्या तवाज्ञया ॥२४॥ सावित्री वेदमाताहं कलया विधि सन्निधौ ॥ तेजःसु सर्व देवानां पुरासत्ये तवाज्ञया ॥२५॥ अधिष्ठानं कृतं तत्र धृतं दिव्यं शरीर-कम् ॥ शुम्भादयश्च दैत्याश्च निहताश्चावलीया ॥२६॥ दुर्ग निहत्य दुर्गाहं त्रिपुरा त्रिपुरे वधे ॥ निहत्य रक्तबीजं च रक्त बीज विनाशिनी ॥२७॥ तवाज्ञया दक्ष कन्या सती सत्व-स्वरूपिणी ॥ योगेनत्यक्तवादे च शैलजाहं तवाज्ञया ॥२८॥ त्वयादत्ताशंकराय गोलोके रासमण्डले ॥ विष्णुभक्ति रहं तेन विष्णुमाया च वैष्णवी ॥२९॥ नारायणस्य मायाहं तेन नारा-यणी स्मृता ॥ तवाज्ञया पंचधाहं पञ्च प्रकृतिरूपिणी ॥३०॥ कला कलांशयाहं च देवपत्न्योर्गृहेगृहे ॥ प्रथमं पूजिता मा च कृष्णेन परमात्माना ॥ मधुकैटभ भीतेन ब्रह्मणा सा द्वितीयतः ॥३१॥ त्रिपुर प्रेषितेनैव तृतीये त्रिपुरारिणा भ्रष्ट श्रिया महेन्द्रेण शापाद् दुर्वाससः पुरा ॥३८॥ चतुर्थे पूजिता देवी भक्त्या भगवती सती ॥ ततो मुनीन्द्रैः सिद्धेन्द्रैर्देवैश्च मनु मानवैः ॥३९॥ पूजिता सर्व विश्वेषु बभूव सर्वतः सदा ॥ तेजःसु सर्व देवानामाविर्भूता पुरा मुने ॥४०॥ सव देवाददुस्तस्यै शस्त्राणि भूषणानि च दुर्गादयश्च दैत्याश्च निहता दुर्गया मया ॥४१॥ दत्तं स्वराज्यं

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

देवेभ्यो वरञ्च यदभीप्सितम् कालान्तरे पूजिता सा सुरथेन महात्मना ॥४२॥ राज्ञमेधस शिष्येण मृण्मय्यां च सरित्तटे मेषादिभिश्च महिषैः कृष्ण सारैश्च गण्डकैः ॥४३॥ छागैर्मीनैश्चः कूष्माण्डैर्भक्तिभिः पूजिता मुने वेदोक्तानि च दत्वैवमुपचाराणि षोडश ॥४४॥ धृत्वा च कवचं ध्यात्वासंपूज्यैवं विधानतः राजाकृत्वापरीहारं वं प्राप यथेप्सितम् ॥४५॥ मुक्तिं संप्राप्य वैश्यश्च संपूज्य च सरित्तटे पुष्करे दुस्तं तप्त्वातपो दुर्गाप्रसादतः ॥ वैश्योजगाम गोलोकं श्रीकृष्णेनानुमोदितः ॥४७॥ राजापिस्वराज्यं गत्वा विविधान्भोगान् षष्ठिवर्ष सहस्रकं निष्कण्टकं बुभुजे ततः परं भार्या पुत्रे सचयस्य पुष्करे तपस्तप्त्वा सावर्णिर्नाम मनुर्बभूव ॥ इति ब्रह्मवैवर्ते ॥ शरत्काले वार्षिकी दुर्गापूजा क्रियते सात्रिधा ॥ सात्विकी राजसी तामसी चेतिविश्रुतिः ॥ सात्विकी निरामिषैर्नैवेद्यैर्जपयज्ञाद्यैश्च ॥ माहात्म्यं भगवत्यास्तु पुराणादिषुकीर्तितम् ॥ पाठस्तस्यजपः प्रोक्तः पठेद्देवीमनास्तथा ॥ देवी सूक्त जपश्चैव यज्ञोवन्हिषु तर्पणम् ॥ राजसी बलिदानैश्च नैवेद्यैः सामिषैस्तथा ॥ सुरामांसाद्युपाहारैर्जपयज्ञैर्विना तु या ॥ विना मंत्रैस्तामसी स्यात्किरातानां तु सम्मता ॥

पाठक्रमो यथा अर्गलं कीलकं चादौ पठित्वा कवचं पठेत् ॥ जपेत्सप्तशतींपश्चात्क्रम एषः शिवोदितः ॥१॥ अर्गलंदुरितं हन्ति कीलकं फलदं तथा ॥ कवचं रक्षयेन्नित्यं चण्डिका त्रितयं तथा ॥२॥ आदौ च प्रणवं जप्त्वा स्तोत्रं वा संहितां पठेत् ॥ अन्ते च प्रणवं दद्यादित्युवाचादिपूरुषः ॥३॥ अकृतिना ब्राह्मणातिरिक्त जनेन स्वहस्त लिखितमल्पफलदायकमतो न पठेत् ॥ कर्मासक्तमना न पठेत् प्रयत्नः पठेत् आधारेधृत्वा पठेत्-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

करतल ग्रहणेन पठेत् फलाभावात् ॥

भविष्ये ॥

अग्नि होत्रादि कर्म्माणि वेदयज्ञाः सदक्षिणाः ॥ चण्डिकार्चनस्यैते लक्षांशेनापि नो समाः ॥१॥ स दाता स मुनिर्यष्टा स तपस्वी स तीर्थगः ॥ यः सदा पूजयेद्दुर्गां नाना पुष्पोपलेपनैः ॥२॥ यः सदा पूजयेद्देवीं प्रणमेद्वापि भक्तितः ॥ सयोगी सर्द्धिमांश्चैव तस्य मुक्तिः करे स्थिता ॥३॥ अग्निहोत्रपरे विप्रे वेद वेदाङ्ग पारगे ॥ सुवर्णानां सुवर्णस्य शते दत्ते तु यत्फलम् ॥४॥ तत्फलम् लभते राजन् पूजयित्वातु चण्डिकाम् ॥ मालया बिल्व पत्राणां नवम्यां गुग्गुलेन च ॥५॥ मालाद्वयेन सम्पूज्य दुर्गां देवीं नराधिप ! ॥ बिल्ववृक्षस्य पत्राणां राजसूय फलं लभेत् ॥६॥

योगरत्नावल्यां पाठक्रमः ॥

कवचं बीजमादिष्टमर्गला शक्तिरुच्यते ॥
कीलकं कीलकं प्राहुः सप्तशत्या महामनोः ॥१॥
यामल वचनाद्यथा ॥

सर्व मन्त्रेषु बीजशक्ति कीलकानां प्रथममन्त्रमुच्चारणम् ॥ तथा सप्तशती पाठेऽपि कवचार्गलाकीलकानां प्रथमं पाठःकर्त्तव्यस्ततो रात्रिसूक्तपाठः ॥ तदुक्तं मरीचकल्पे ॥ रात्रिसूक्तं पठेदादौमध्ये सप्तशतीस्तवम् ॥ प्रान्तेतु पठ्नीयम्वै देवी सूक्त मितिक्रमः ॥ इतिरात्रिसूक्त पाठोत्तरमृष्यादि न्यास पूर्वकमष्टोत्तरशतं सहस्रंवा नवार्ण मंत्रजपः कर्तव्यस्तदुक्तम् ॥ नवार्ण मंत्रपुटितं ततश्चण्डीस्तवं पठेदिति नवार्णमंत्रजपोत्तरं रात्रिसूक्त पाठमाह कश्चित्तदसत् पुटितं मूलमंत्रेणेतिवचनात्पुटितमध्येन्यमंत्र प्रवेशस्य विरुद्धत्वात् शतमादौ शतंचान्ते जपेन्मत्रं

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

नवार्णकम् ॥ चण्डीसप्तशतीं मध्येसंपुटोयमुदाहृतः ॥ इति डामरतंत्रविरोधाच्च ततः सप्तशती पाठः पुनर्नवार्ण मंत्र जपः ततो देवी सूक्तपाठस्ततो रहस्यत्रयपाठ इति क्रमेणपाठः कर्तव्यः ॥

सप्तशती पाठारम्भे शापोद्धारादिकं कर्तव्यं तत्प्रकार उक्तः केरलैस्तथा च ॥ अन्त्या १३ द्या १, र्क १२, द्वि २, रुद्र ११ त्रि ३, दिग १० ब्ध्यं ४, के ९ ष्वि ५, म ८ र्तवः ६, अश्वो ७ श्व ७ इति सर्गाणां शापोद्धारे मनोः क्रम इत्युक्ते स्त्रयोदश प्रथमौ, द्वादश द्वितीयौ, एकादश तृतीयौ, दशमचतुर्थौ, नवम पञ्चमौ, अष्टम षष्ठावध्यायौ पठित्वा सप्तममध्यायं द्विः पठेदिति शापोद्धार प्रकारः ॥ अङ्गहीनो यथा देही सर्व कर्मसु न क्षमः ॥ अङ्गषट्क विहीनातु तथा सप्तशतीस्तुतिः ॥ तस्मादेतत्पठित्वैव जपेत्सप्तशतीं पराम् ॥ अन्यथा शापमाप्नोति हानिश्चैव पदे-पदे ॥ इतिकात्यायनीतन्त्रोक्तेः ॥ कवचादि षडङ्ग रहित केवल सप्तशती पाठ करणमेव शापः ॥ कवचादि साहित्येन तत्करणं मोक्षदमित्याहुः ॥ रहस्य तन्त्रस्थ गुरु कीलकपटले तु सप्तशत्याख्यमन्त्रस्य यावज्जीव महं जपं कुर्वस्ततो न प्रमादं प्राप्नुयामिति निश्चयम् ॥ कृत्वा प्रारभ्य कुर्वीत ह्यकुर्वाणो विनश्यतीत्युक्तेर्यावज्जीवमहं सप्तशती पाठं प्रमादेन सदसदपि न त्यक्षे ॥ इति दृढ़ संकल्पेन तदारम्भ उद्धारस्तदभावेन तदारम्भः शाप इति स्थितम् ॥

उत्कीलनम् ।

उत्कीलने चरित्राणां मध्याद्यन्तमिति क्रमः इति दुर्गाप्रदीपस्थ केरलोक्तेः ॥ आदौ मध्यम चरित्रं पठित्वा ततः प्रथम चरित्रं ततस्तृतीयचरित्रं पठेदितिगुरुकीलकपटलेतु ॥

शिव उवाच ।

पुरा सनत्कुमाराय दत्तमेतन्मयानघ ! ॥ संवर्ताय ददौ

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तच्च सचान्यस्मै ददौ च तत् ॥ सर्वत्र चण्डीपाठस्य प्राचुर्येण महीतले ब्रह्मकाण्डः कर्मकाण्डस्तंत्रकाण्डच सर्वथा ॥ अभूत्प्रतिहतोनेन शीघ्रसिद्धि प्रदायिनी ॥ तदा तेषां च सार्थक्यं कर्तुकामेन भूतले ॥ दानप्रतिग्रहत्वेन मंत्रोयं कीलितोमया ॥ दानप्रति ग्रहाख्यं यत्कीलकं समुदाहृतम् ॥ तदारभ्य च मंत्रीयंकीलकेनाभिकीलितः ॥ नसर्वेषांभवेत्सिद्ध्यै ये कीलकपराङ्मुखाः ॥ ये नराः कीलनेनेदं जपन्ति परया मुदा ॥ तेषांदेवी प्रसन्नास्यात्ततः सर्वाः समृद्धयः ॥ त्वत्प्रसूतस्त्वदाज्ञप्तस्त्वद्दासस्त्वत्परायणः ॥ त्वन्नामचिन्तनपरस्त्वदर्थेऽहं नियोजितः ॥ ममार्जितमिदं सर्वं तच्च स्वं परमेश्वरि ! ॥ राष्ट्रं बलं कोषगृहं सैन्यमन्यच्च साधनम् ॥ त्वदधीनं करिष्यामि यत्रार्थे त्वं नियोक्ष्यसि ॥ तत्रदेवि ! सदा वर्ते त्वदाज्ञामेव पालयन् ॥ इति संचिन्त्य मनसा स्वार्जितानि धनानिच ॥ कृष्णायां वा चतुर्दश्यामष्टम्यां वा समाहितः ॥ समर्पयेन्महादेव्यै स्वार्जितं सकलं धनम् ॥ राष्ट्रं गृहं कोषबलं नवं च यदुपार्जितम् ॥ अस्मिन्मासि मयादेवि ! तुभ्यमेतत्समर्पितम् ॥ इति ध्यात्वा ततो देव्याः प्रसादात्प्रतिगृह्य च ॥ विभज्य पञ्चधा सर्वं त्र्यंशान् स्वार्थं प्रकल्पयेत् ॥ देवपित्रतिथीनां च क्रियार्थं त्वेकमादिशेत् ॥ एकांशं गुरुवेदद्याच्चेन देवी प्रसीदति ॥ तस्य राज्यं स्वकं सैन्यं कोषः साधु विवर्द्धत ॥ इति दानप्रतिग्रह नामक महोत्कीलनं विहितम् ॥ केचित्तु कीलने एव शापोद्धारा नित्याहुः ॥

डामर तन्त्रोक्त नवार्ण मन्त्रार्थः ॥

एतन्मन्त्रमहिमातिशयोर्थश्च ॥ डामर तन्त्रोक्तो निरूप्यते ॥ निर्धूतनिखिलध्वान्ते नित्यमुक्तेपरात्परे ॥ अखण्डब्रह्मविद्यायै

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

चित्सदानन्दरूपिणीं ॥ अनुसंदध्महे नित्यं वयं त्वां हृदयाम्बुजे ॥ इत्थं विशदयत्येषा पाकल्याणी नवाक्षरी ॥ अस्या महिमलेशोपि गदितुं केन शक्यते ॥ बहूनां जन्मनामन्ते प्राप्यते भाग्यगौरवात् ॥ इत्यादि ॥ अत्र प्रथम श्लोके सम्बुद्ध्यन्तत्रयन्तश्चतुर्थ्यंतं ततः पुनः संबुद्ध्यन्तत्रयमिति सप्तभिः पदैः क्रमेण मंत्रे सप्तधा पदच्छेदः ॥ पदानांतत्तद्विभक्त्यन्ततातत्तदार्थाश्चोति कथितम् ॥ तदुत्तर मर्द्धेनाकांक्षित पदानामध्याहर उक्तः ॥ इतरत्स्पष्टम् ॥ सच्चिदानन्दात्मक ब्रह्मरूपित्वादेवशक्तेरपि त्रिरूपत्वं तत्रचिद्रूपा महासरस्वती वाग्भवबीजेनसंबोध्यते ॥ ज्ञानेनैवाज्ञाननाशान्निर्धूत निखिलध्वान्त पदेन तद्विवरणं युक्तमेव नित्यत्वं त्रिकालावाध्यत्वम् ॥ अतएव मुक्तत्वं कल्पित वियदादि प्रपञ्चनिरासाधिष्ठानत्वम् ॥ एतेन सद्रूपात्मकमहालक्ष्मीरूपस्य भुवनेश्वरी मंत्रेण संबोधनमिति व्याख्यानम् पर उत्कृष्टः ॥ सर्वानुभव संवेद्य आनन्द एव तस्यैव पुरुषार्थत्वात् ॥ आत्मनः कामाय सर्वं प्रियं भवतीति श्रुत्या तदितरेषामपि तदर्थत्वेनानन्दस्यैव सर्वशेषतया परत्वात् ॥ स च मानुषानन्दमारभ्योत्तरोत्तरं शतगुणाधिक्येन श्रुतौ बहुविधोवर्णितः ॥ तेषु परमातिशायी स एको ब्रह्मण आनन्द इति परमावधित्वेनाम्नात एव परात्परः तेनानन्द प्रधान महा काली स्वरूपस्य काम बीजेन सम्बोधनंयुक्तम् ॥ चामुण्डाशब्दो हि मोक्षकारिणीभूत निर्विकल्पवृत्ति विशेषपरः ॥ तादर्थ्येचतुर्थी चमूं सेनां वियदादिसमूहरूपां डाति लडयोरक्याल्लाति आदत्ते आत्मसात्करणोनापूरयतीति व्युत्पत्तेः॥ वर्णादरादित्वात्सर्वं सुस्थमित्याहुर्बहवः परन्तु अखण्ड ब्रह्मविद्येत्येव चामुण्डा पदस्यार्थमाहुः ॥ विच्चेहितितुवित् च इ इति पद त्रयात्मकं बीजत्रये-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

शोक्तानां चित्सदानन्दादीनां वाचकं संबुद्ध्यन्तंबीजत्रयस्य क्रमेण विशेषणम् ॥ अस्य स्त्री ईतस्य ह्रस्वे कृते सति हे आनन्द ब्रह्म महिषि इत्यर्थः ॥ वित्पदं ज्ञान परम्प्रसिद्धमेवचकारोपि नपुंसकः—सन्सत्पर इति योज्यम् ॥ अनुसन्दामहे इतिशेषः ॥ तथाच महासरस्वत्यादिरूपे चिदादिरूपे चंडिके त्वां ब्रह्म विद्या प्राप्त्यर्थं वयं सर्वदा ध्यायामः ॥ इति मंत्रार्थः फलितः तस्यायं संग्रहः महासरस्वति चिते महालक्ष्मि सदात्मिके महाकाल्यानन्दरूपं त्वं तत्वज्ञान सिद्धये अनुसंदध्महे देवि ! वयं त्वां हृदयाम्बुजे इति अयंचार्थः प्राचीनैर्वर्णित एवात्र सम्यक् परिष्कृत्योक्तः ॥ इति नवार्णमंत्रस्यार्थः ॥

मेरु तन्त्रोक्त अथास्य विधानमुच्यते ॥

अथातः संप्रवक्ष्यामि चामुण्डायाः महामनुम् ॥ नव वर्णात्मकं यस्य सेवनाद्भुक्तिमुक्तयः ॥१॥ सुरथो यत्प्रसादेन राज्यं प्राप्याभवन्मनुः ॥ संसार बन्धनिर्नाशि ज्ञातमाप्तं समाधिना ॥२॥ मार्कण्डेयपुराणोक्तं चरित्रत्रितयं तव ॥ जपाद्यस्य फलं दद्याच्चं मनुं वक्ष्मिसांप्रतम् ॥३॥ वाक्लज्जाकामबीजान्ते चामुण्डायै पदं वदेत् ॥ विच्चे नवार्ण मंत्रोयं शक्तिमन्त्रोत्तमोत्तमः ॥४॥ अस्मिन्नवाक्षरे मन्त्रे महालक्ष्मीर्व्यवस्थिता ॥ तस्मात्सुसिद्धः सर्वेषां सर्वदिक्षु प्रदीपकः इति एतावतात्र सिद्धादि विचाराभावोज्ञापितः ॥

अथ पल्लवादि नियमः ॥

मन्त्राणां पल्लवो वासो मन्त्राणां प्रणवः शिरः ॥ शिरः पल्लवः संयुक्तो मन्त्रः काम दुघो भवेदित्युक्तेरस्य पल्लवादि विधिरुच्यते ॥ तत्र प्रणवः प्रसिद्धः ॥ पल्लवश्च ॥ नमोन्तः शान्तिके पुष्टौ प्रणिपातेच कीर्तितः वश्याकर्षणमोहेषु स्वाहान्तः

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सिद्धिदायकः ॥ वौषट् पल्लव संयुक्तो मन्त्रः पुष्ट्यादिसाधकः ॥ हुंकारपल्लवोपेतोमारणे ब्राह्मणं विना ॥ यन्त्र भञ्जन कार्येषु सुर्वोरमयनाशने ॥ वषडन्तः प्रकल्प्यस्तु ग्रहवाधा विनाशकः ॥ उच्चाटने तु संप्रोक्तो मन्त्रः फट्पल्लवान्वितः ॥ ऐतेपल्लवास्तत्तत्कर्मणि चण्डीपाठेपि श्लोकान्तादौ स्तोत्रान्तादौ वा योज्याः ॥ नन्वत्र केवल मंत्रेणैवेष्टसिद्धिरस्तु किमृष्यादिपल्लवान्त संयोग विशेषजृम्भितविस्तरेणेतिचेन्मैवम् ॥ देवर्षि छन्दोहीनो यः सतु सुप्तो भुजङ्गमः ॥ अशक्तः शक्तिरहितो निष्फलो बीजवर्जितः ॥ अतत्वस्तत्व वियुतो विनियोगोऽप्रभुर्मनुः ॥ न्यासहीनो भवेन्मृको-मृतःस्याच्छिरसा विना ॥ अपल्लवस्तु नग्नः स्यात्सुप्तः स्यादा-सनं विना ॥ गुरुम्बिना वृथा मन्त्रः श्रव्यजापेतु शून्यकः ॥ निर्वीर्यो दुष्टदत्तः स्यात्सान्यवीजस्तु कीर्तितः ॥ (दुष्टाय दत्तो दुष्टदत्त इत्यर्थः) इति वचनैरस्य देवर्ष्यादि पल्लवान्ताद्यङ्ग-वैधुर्योद्घाटितानिष्टफलानुवन्धि भुजङ्गमादि दोषदूषितत्वाववो-धाद् ॥ परेतु ॥ आर्षं छन्दश्च दैवत्यं विनियोगस्तथैव च ॥ वेदितव्यः प्रयत्नेन ब्राह्मणेन विपश्चितेति ॥ याज्ञवल्क्योक्तेर्वै-दिकेमंत्रे यथा ऋष्यादिविनियोगान्त चतुष्केतरपल्लवादि विचा-रोनास्ति तथास्मिन्नवार्णेऽपीत्याहुः ॥ इति पल्लवादि विचारः ॥

गन्धर्व तन्त्रे ॥

स्वस्थान माश्रिता देवाः सर्वाभीष्ट फलप्रदाः ॥
स्वस्थान वर्जिता देवाः शोकदुःख फल (भय) प्रदाः ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

दुर्गार्चनसृतौ तन्त्रोक्तयन्त्र पूजनादि विधिः सम्पूर्णः ॥

ॐ नमश्चण्डिकायै ॥ तपस्यन्तं महात्मानं मार्कण्डेयं महामुनिम् ॥ व्यास शिष्यो महातेजा जैमिनिः परिपृच्छत ॥ जैमिनिरुवाच ॥ महर्षे ! कथयोत्पत्तिं चण्डिकायाः सुविस्तरम् ॥ ययासर्व मिदं व्याप्तं त्रैलोक्यं स चराचरम् ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अथ दुर्गा पाठारम्भः ॥

आदावाचामेत् ॥ ॐ ऐं आत्मतत्वं शोधयामि नमः स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं विद्यातत्वं शोधयामि नमः स्वाहा ॥ ॐ क्लीं शिवतत्वं शोधयामि नमः स्वाहा ॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सर्वतत्वं शोधयामि नमः स्वाहा ॥ ततः मूल मंत्रेण प्राणायामं कुर्यात् ॥ ततः श्रीगणेश गुर्वादीन्नत्वा ‡संकल्पं कुर्यात् ॥ देशकाल संकीर्त-

---

‡ॐ तत्सदद्य ब्रह्मणो द्वितीय प्रहरार्द्धे श्री श्वेतवाराहकल्पे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे आर्यावर्तैक देशान्तरगते कलियुगे कलिप्रथमचरणे पुण्यक्षेत्रेऽमुक सम्वत्सरे अमुक ऋतौ अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकनक्षत्रे अमुकयोगे अमुक करणे अमुकामुकराशिस्थ रव्यादिग्रहस्थित वेलायाममुक गोत्रोत्पन्नामुकशर्म्मा (यजमानस्य) जन्मलग्नात् वर्षलग्नाद्गोचरादमुकामुक४।८।१२स्थान स्थितसूर्यादिक्रूरग्रह तज्जनितारिष्ट निवृत्ति पूर्वकं-दशान्तरदशा चोपदशा दिनदशाजनितारिष्ट ज्वर पीड़ा, दाहपीड़ा, नेत्रकर्णोदरादिपीड़ा, निवृत्तिपूर्वकं अल्पायुनिवृत्ति पूर्वकश्चाधिदैविकाधिभौतिकाध्यात्मिकजनित क्लेश कायिक वाचिक मानसिक त्रिविधाघौघ निवृत्ति पूर्वकं शरीरारोग्यार्थंपरमैश्वर्यादिप्राप्त्यर्थंच ॥ मार्कण्डेय उवाज ॥ ॐसावर्णिः सूर्यतनयो योमनुःकथ्यतेष्टमः ॥ निशामय तदुत्पत्तिं विस्तराद्गदतोममेत्यारभ्य सावर्णिर्भवितामनुरित्यन्तपरकस्य मार्कण्डेय पुराणान्तर्गतस्य देवी माहात्म्य प्रकाशकस्य महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती देवताकस्य दशांगयुक्तस्यापमृत्युवारणायाष्टोत्तरशतावृत्यन्ते त्र्यम्बकमन्त्र युक्तस्य शापोत्कीलनमन्त्र युक्तस्य चादौ रात्रिसूक्तस्यान्ते देवी सूक्तस्यामुक मन्त्रेण प्रतिमन्त्र सम्पुटितस्य यथा संख्यकावृत्ति पाठमहंकरिष्ये ॥ यजमानपक्षे 'ब्राह्मण द्वारा कारयिष्ये ।'

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

नान्ते ॥ अस्माकंसर्वेषांसकुटुंबानां क्षेमस्थैर्यायुरा-
रोग्यैश्वर्याभिवृद्ध्यर्थंसमस्तमंगलावाप्त्यर्थं अमुक
गोत्रस्य अमुकनाम्नोमम (यजमानस्य) श्रीजगदम्बा
प्रसादसिद्धिद्वारा सर्वापन्निवृत्तिपूर्वक सर्वाभीष्ट फला-
वाप्ति धर्म्मार्थ काम मोक्ष चतुर्विध पुरुषार्थ सिद्ध्यर्थं
राजद्वारतः व्यापारतश्च लाभार्थं विजयार्थं श्री महा-
काली महालक्ष्मी महासरस्वती देवता प्रीत्यर्थं कव-
चार्गला कीलक पठन एकादशन्यास पूर्वक नवार्ण
मन्त्राष्टोत्तरशत जप रात्रिसूक्त पठन पूर्वकं
देवीसूक्त पठन नवार्ण मन्त्राष्टोत्तर शत जप रहस्य
त्रय पठनान्तं मध्ये मार्कण्डेय उवाच इत्यारम्य
सावर्णिर्भवितामनुरित्यन्तं (अमुक मंत्र संपुटितं)
श्री चण्डी सप्तशत्याः शत पाठं (नवपाठं) करिष्ये ॥
(ब्राह्मण द्वारा कारयिष्ये) ॥ नित्य संकल्पः ॥ पूर्व
संकल्पित कामना सिद्धये शत चण्डी (नवचण्डी)
संख्या पूर्तये पूर्व संकल्पित रीताद्य पाठाख्यं कर्म
करिष्ये ॥ यजमानपक्षे ॥ करिष्यामि ॥ इति ॥

पुस्तक पूजनम् ॥

ॐ नमः पिशाचि नि करंकिनि त्रिशूल खड्ग
हस्ते सिंहारूढे एह्येहि आगच्छ आगच्छ इमां पूजां
गृह्ण २ स्वाहा श्री सप्तसती स्वरूपिण्यै ह्रीं चंडिकायै

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

नमः ॥ यथोपचारैः पुस्तकपूजनं विधाय ॥ अथ शापोद्धारः ॥ ७ बार आदि अन्त में ॥

ॐ ह्रीं क्लीं क्रां क्रीं चण्डिकादेव्यै शापनाशानुग्रहं कुरु २ स्वाहा ॥ उत्कीलनम् ॥ आदि अन्त में २१ बार जपना ॥ ॐ श्रीं क्लीं ह्रीं सप्तशती चण्डिका उत्कीलनं कुरु २ स्वाहा ॥ मृतसंजीवनी विद्या ॥ ७ बार आदि में जपना ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं वं वं ऐं ऐं मृत संजीवनी विद्या मृतमुत्थापयोत्थापय क्रौं ह्रीं ह्रीं वं स्वाहा ॥

अथवा, मरीच कल्पोक्त—शप्तशतो शापविमोचनम् । प्रणवं पूर्वमुद्धृत्य रमा बीजं ततः परम् ॥ रमा कामं ततः क्रोधं तारं वाग्भव संयुतम् ॥१॥ क्षोभं मोहं ततः पश्चात्कीलयेति त्रिधा द्विठम् ॥ शापमोचनं कृत्वा चण्डी पाठेनियोजयेत् ॥२॥ ॐ श्रीं श्रीं क्लीं हूँ ॐ ऐं क्षोभय मोहय उत्कीलय ३ ठं ठं ॥ पूर्वेमष्टोत्तरशतं जप्त्वा पश्चान्न्यास पूर्वकं सप्तशती पाठाद्यथायोग्यकामनासिद्धिर्भविष्यतीतिनान्यथा ॥ अन्य प्रकारः ॥

अथ चण्डिका शाप विमोचनम् ॥

ॐ अस्य श्रीचण्डिकायाः ब्रह्मवशिष्ठ विश्वामित्र शाप विमोचन मंत्रस्य वशिष्ठ नारद संवाद साम

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वेदाधिपति ब्रह्मा ऋषयः सर्व्वैश्वर्य कारिणी श्रीदुर्गा देवताचरितत्रयँ बीजं ह्रीं शक्तिः त्रिगुणात्म स्वरूपिणी चण्डिकाशापविमुक्तौ मम संकल्पित कार्य्य सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ॥ ॐ (ह्रीं) रीं रेतः स्वरूपिण्यै मधुकैटभमर्दिन्यै ब्रह्मवशिष्ठ विश्वामित्र शापाद् विमुक्ता भव ॥१॥ ॐ श्रींबुद्धि स्वरूपिण्यै महिषासुर सैन्यनाशिन्यै ब्रह्मवशिष्ठ विश्वामित्र शापाद् विमुक्ता भव॥२॥ॐ रँ रक्त स्वरूपिण्यै महिषासुर मर्दिन्यै ब्रह्मवशिष्ठ विश्वामित्र शापाद् विमुक्ता भव ॥३॥ ॐ क्षुं क्षुधा स्वरूपिण्यै देव वन्दितायै ब्रह्म वशिष्ठ विश्वामित्र शापाद्विमुक्ता भव ॥४॥ ॐ छां छाया स्वरूपिण्यै दूत संवादिन्यै ब्रह्मवशिष्ठविश्वामित्र

अथ सर्व मन्त्रोत्कीलनविधिः तन्त्रान्तरे ॥ मूलं नवार्णं वा ॥ ॐ ह्रीं ह्रौं क्ष्रीं क्ष्मलवर पौडं मलवर फ्रीं ॐ क्षां क्षीं क्षूं क्षैं क्षौं क्षः उत्कीलय२ स्वाहा ॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे मूलमृ७वार जयन्ती मंगला कालीभद्रकाली कपालिनी ॥ दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोस्तु ते ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं ह्रौं ह्रीं ह्रोः ऐं क्ष्मलवर फ्रीं उमलवर फ्रीं ॐ ह्रौं उत्कीलय २ स्वाहा मूलम१स्वाहा ॥ इत्युत्कीलनम ॥ ॐ विशुद्ध ज्ञान देहाय त्रिवेदी दिव्यचक्षुषे ॥ श्रेयः प्राप्तिनिमित्ताय नमः सोमार्धे धारिणे त्रैलोक्यं वशी कुरु२क्ष्ममलवर फ्रीं ॐ मूलम१इति प्रथम श्लोकं समापयेत् ॥ इत्यर्गलामोक्षः ॥ अथ मूलेन षडंग कवच पाठः ११ न्यासः इत्युत्कीलम् । अथ शापमोचन मन्त्रः ॥ ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं क्रां क्रीं चण्डिकादेव्यै शापनाशानुग्रहं कुरु२ स्वाहा ॥ आदावन्ते७वारं पठेत् ॥ ॐ श्रीं क्लीं ह्रीं सप्तशती चण्डिका उत्कीलनं कुरुकुरु स्वाहा ॥ आदावन्ते २१वारं पठेत् ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

शा० ॥५॥ ॐ शं शक्ति स्वरूपिण्यै धूम्रलोचन घातिन्यै ब्रह्मवशिष्ठ विश्वामित्र शा० ॥६॥ ॐ तृं तृषा स्वरूपिण्यै चंडमुंड वध कारिण्यै ब्रह्मवशिष्ठ वि० शा० ॥७॥ ॐ क्षां क्षांति स्वरूपिण्यै रक्तबीज वध कारिण्यै ब्रह्मवशिष्ठ विश्वामित्र शा० ॥८॥ ॐ जां जातिस्वरूपिण्यैनिशुंभवधकारिण्यैब्रह्मवशिष्ठविश्वामित्रशा०॥९॥ॐलंलज्जास्वरूपिण्यैशुंभवधकारिण्यै ब्रह्मवशिष्ठविश्वामित्र शा० ॥१०॥ ॐ शां शान्तिस्वरूपिण्यै देवस्तुतन्यै ब्रह्मवशिष्ठविश्वामित्र शा० ॥११॥ ॐ श्रं श्रद्धा स्वरूपिण्यै सकल फलदात्र्यै ब्रह्मवशिष्ठविश्वामित्र शा० ॥१२॥ ॐ कां कान्ति स्वरूपिण्यै राज वरप्रदानायै ब्रह्मवशिष्ठ विश्वामित्र शा० ॥१३॥ ॐ मां मातृ स्वरूपिण्यै अनर्गमहिम्न सहितायै ब्रह्मवशिष्ठ विश्वामि० ॥१४॥ ॐ ह्रीं श्रीं ह्रूं दुं दुर्गायै सं सर्वैश्वर्य्य कारिण्यै ब्रह्मवशिष्ठ विश्वामित्र शापा० ॥ १५ ॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः शिवायै अभेद्य कवच स्वरूपिण्यै ब्रह्मवशिष्ठ० ॥१६॥ ॐ क्रीं काल्यै कालि ह्रीं फट् स्वाहा यै ऋग्वेद स्वरूपिण्यै ब्रह्मवशिष्ठ० ॥१७॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती स्वरूपिणी त्रिगुणात्मिकायै दुर्गा देव्यै नमः ॥१८॥ इत्येवंहि महामंत्रा

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

न्पठित्वा परमेश्वरि ॥ चण्डी पाठं दिवारात्रौ कुर्य्या देव न सँशयः ॥१९॥ एवं मंत्रं न जानाति चण्डी पाठं करोति यः ॥ आत्मानं चैव दातारं क्षयं कुर्य्यान्न संशयः ॥२०॥

इतिश्री रुद्रयामले महातंत्रे दुर्गा कल्पे चण्डिकाशाप विमोचनम् सम्पूर्णम् ॥

पुरश्चरणे दश प्रकाराः शारदायां ११ पटले ॥

जपो होमस्तर्पणञ्च स्वाभिषेकोऽघर्मणम् ॥ सूर्याघ्यं जल (पानं) दानंस्यात्प्रणामं देवपूजनम् ॥ ब्राह्मणानां भोजनञ्च पूर्वं पूर्वं दशांशतः ॥ इदं सर्वं मन्त्रपुरश्चरणे ज्ञेयम् ॥

बाल्मीकीय रामायणे बालकाण्डे ॥ १२ सर्गे

विधि हीनस्य यज्ञस्य सद्यः कर्त्ता विनश्यति ॥

तद्यथा विधि पूर्वन्तु क्रतुरेषः समापयेत् ॥ १८।१९

कुलार्णव पंचदशोल्लासे ॥

संसार दुःख भूमेश्च यदीच्छेद् सिद्धिमात्मनः ॥ पंचोक्तोपासनेनैव मन्त्र जापी व्रजेत्सुखम् ॥ पूजा त्रैकालिकी नित्यंजपस्तर्पणमेव च ॥ होमो ब्राह्मण भुक्तिश्च पुरश्चरण मुच्यते ॥ यद् यदङ्ग विहीयेत तत्संख्या द्विगुणोजपः ॥ ज्ञानाज्ञान कृतं सर्वं प्रणश्यति जपात् प्रिये ! ॥

पराश्न भक्षणात्सिद्धि हानिः तत्रव ॥

यस्यान्न पानमश्नाति कुरुते धर्म्मं संचयम् ॥ अन्नदातुः फलंचार्द्धं कर्तुश्चार्द्धं न संशयः ॥ तस्मात्सर्वं प्रयत्नेन पराश्नं वर्जयेत्सुधीः ॥ पुरश्चरण काले च काम्य कर्मस्वपीश्वरि ! ॥ जिह्वादग्धा पराश्नेन करौ दग्धौ प्रतिग्रहात् ॥ मनोदग्धं परस्त्रीभिः कार्यं सिद्धिः कथंभवेत् ॥

नीलतंत्रे ॥ भक्षणे दूषिता जिह्वा मिथ्याया भाषणेनवै ॥ कलहैर्दूषिता जिह्वानानादोषेणदूषिता ॥ तत्कथंपामरोलोकाजिह्वया प्रजपेन्मनुं ॥ संशोधनमनाचम्यनजपेत्पामरः क्वचित् ॥ आदौमायां ततः कूर्चंपुनर्मायां च सुन्दरि । मुखं संशोधयेद्देवियदीच्छेत्सिद्धि मुत्तमाम् ॥

न्यासो ध्यानावाहनेच नाम [illegible] चाप्यनु ॥

[illegible] हृदयं चैव कव[illegible] — कीलकम् ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

श्री गणेशाय नमः ॥

॥ अथ कवच प्रारम्भः ॥

ॐ अस्य श्री चण्डी कवचस्य ब्रह्मा *ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः चामुण्डा देवता अङ्ग न्यासोक्त मातरोबीजं दिग्बन्ध देवतास्तत्वं श्री जगदम्बा प्रीत्यर्थे सप्तशतो पाठाङ्गत्वे जपे विनियोगः ॥

ॐ नमश्चण्डिकायै ॥ मार्कण्डेय उवाच ॥

ॐ यद्गुह्यं परमं लोके सर्वरक्षाकरं नृणाम् । यन्नकस्यचिदाख्यातं तन्मे ब्रूहि पितामह ! ॥१॥ ब्रह्मोवाच॥ अस्ति गुह्यतमं विप्र ! सर्वभूतोपकारकम् ॥ देव्यास्तु कवचं पुण्यं तच्छृणुष्व महामुने ! ॥२॥ प्रथमं शैलपुत्री च द्वितीयं ब्रह्मचारिणी ॥ तृतीयं

श्री देवीजी के लिये नमस्कार ॥ मार्कण्डेय ऋषि बोले ॥ हे ब्रह्माजी संसार में जो अत्यन्त छिपा हुआ रहस्य है जिससे मनुष्यों की सब प्रकार रक्षा होती है। जिसको किसी से भी आपने न कहा हो उसको मुझ से कहिये ॥ १ ॥ ब्रह्माजी ने कहा हे विप्र ! अत्यन्त छिपा हुआ सर्व प्राणीमात्र का उपकार करने वाला पुण्य को देने वाला देवी का कवच है, हे महामुनि ! तुम मुझसे सुनो ॥२॥ अब क्रम से कवच की अधिष्ठात्री नव

दशाङ्गमेतद्विज्ञेयमिति गुह्यं सनातनम् ॥
दशांगानि च जप्त्वा तु पश्चात्सप्तशतां पठेत् ॥

हरगौरीतन्त्रे

*ऋषि की व्युत्पत्तिः ॥

ऋषन्ति जानन्ति सर्वमिति ऋषयः मन्त्रद्रष्टारः ॥ सत्य वचना वा ॥ ऋषिगतौ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

चन्द्रघण्टेति कूष्माण्डेति चतुर्थकम् ॥३॥ पञ्चमं स्कन्दमातेति षष्ठं कात्यायनीति च ॥ सप्तमं कालरात्रीति महागौरीति चाष्टमम् ॥४॥ नवमं सिद्धिदात्री च नवदुर्गाः प्रकीर्तिताः ॥ उक्तान्येतानि नामानि ब्रह्मणैव महात्मना ॥५॥ अग्निना दह्यमानस्तु शत्रुमध्ये गतो रणे ॥ विषमे दुर्गमे चैव

मूर्तियों के नाम ध्यान के लिये लिखते हैं। पहिली शैलपुत्री, (हिमालय की बेटी शैलराज हिमालय ने तप करके प्रार्थना की तब भगवती ने पुत्री रूप हो शैलराज के यहां जन्म लेकर दोनों को प्रसन्न किया इसी से शैलपुत्री नाम हुआ) दूसरी ब्रह्मचारिणी, (सच्चिदानन्द प्राप्त करने के लिये) तीसरी चन्द्रघण्टा वा (चन्द्रमा के समान निर्मल) चौथी कूष्माण्डा (कुत्सित संताप रूपी दुःखों से युक्त अण्डे के समान, आधिभौतिक, आधिदैविक आध्यात्मिक त्रिविध दुःखों से युक्त मांस पेशी वाले अंडे कूष्मांड "पेठा" रूपी संसार को खाने वाली) ॥३॥ पांचवी, स्कन्दमाता (स्वामिकार्तिक को जो पालन करने के लिये नियुक्त हुई) छठवीं कात्यायनी (कात्यायन ऋषि की कन्या) सातवीं कालरात्री (सब प्राणी मात्र को मारनेवाला काल उसको भी मारने माली) आठवीं महागौरी (शिवजी ने क्रीड़ा में काली नाम से पुकारा तब भगवती का रंग श्याम होगया बाद में तप करने से फिर गौर वर्ण हुआ) वही महागौरी हुई ॥४॥ नवमी सिद्धिदात्री हैं सब कार्य मात्र की सिद्धि करनेवाली यह नव दुर्गा अर्थात् नव देवियों के नाम सर्वज्ञ ब्रह्माजी ने कहे हैं ॥५॥ अब आगे श्लोकों से पाठ का फल कहते हैं ॥ जो मनुष्य जलती हुई

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

भयार्त्ताः शरणं गताः ॥६॥ न तेषां जायते किञ्चिदशुभं रणसंकटे ॥ नापदं तस्य पश्यामि शोकदुःखभयं न हि ॥७॥ यैस्तुभक्त्या स्मृता नूनं तेषां वृद्धिः प्रजायते ॥ ये त्वां स्मरन्ति देवेशि ! रक्षसे तान्न संशयः ॥८॥ प्रेतसंस्था तु चामुण्डा वाराही महिषासना ॥ ऐन्द्री गजसमारूढा वैष्णवी गरुडासना ॥९॥ माहेश्वरी वृषारूढा कौमारी शिखि-वाहना ॥ लक्ष्मीःपद्मासना देवी पद्महस्ता हरिप्रिया

अग्नि के बीच में लड़ाई में (दुश्मनों से घिर गया हो), किसी बड़ी विपत्ति में, भय (र) से दुःखी हो भगवती की शरण में जाने से ॥ ६ ॥ उनका लड़ाई के संकट में बाल भी बांका ('कुछ बुराई') नहीं होता ॥ सर्वदा मंगल ही होता है सब दुःखों को दूर करने वाली देवी उसकी आपत्ति को दूर करती है ॥७॥ जो मनुष्य निश्चय भक्ति से सदा स्मरण करते हैं उनको धर्म-अर्थ (धन) काम (कामना) मोक्ष (बार बार जन्म से रहित होते हैं) मिलते हैं। अर्थात् उन नामों में से एक भी याद करके स्मरण करने से सब दुःख दूर होते हैं। और वृद्धि ही होती है अब आगे देवियों का वर्णन ब्रह्मा जी इस प्रकार करते हैं। कि जो भक्त तुम्हारा स्मरण करते हैं उनकी तुम हमेशा रक्षा करती हो इसमें सन्देह नहीं ॥८॥ चामुण्डा प्रेत पर बैठी है वाराही भैंसे पर ऐन्द्री हाथी पर वैष्णवी गरुड़ पर ॥९॥ माहेश्वरी बैल पर कौमारी मोर पर लक्ष्मी कमल पर और कमल का फूल हाथ में

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥१०॥ श्वेतरूपधरादेवीईश्वरी वृषवाहना ॥ ब्राह्मी हंससमारूढा सर्वाभरण भूषिता ॥११॥ इत्येता मातरः सर्वाः सर्वयोगसमन्विताः ॥ नानाभरणशोभाढ्या नानारत्नोपशोभिताः ॥१२॥ दृश्यन्ते रथमारुढा देव्यः क्रोधसमाकुलाः ॥ शङ्खं चक्रं गदां शक्तिं हलं च मुसलायुधम् ॥१३॥ खेटकं तोमरं चैव परशुं पाशमेव च ॥ कुन्तायुधं त्रिशूलं च शार्ङ्गमायुधमुत्तमम् ॥१४॥ दैत्यानांदेहनाशाय भक्तानामभयाय च ॥ धारयन्त्यायुधानीत्थं देवानां

लिये हुए विष्णु की प्रिया (स्त्री) हैं ॥१०॥ ईश्वरी देवी सफ़ेद रूप धारण किये बैल पर सवार हैं तथा ब्राह्मी हंस पर और सब प्रकार के गहने पहने शोभायमान हैं ॥ ११ ॥ इस तरह ये सब देवियाँ सब योगों से युक्त अनेक प्रकार गहनों की शोभा से शोभित तथा नाना प्रकार के रत्नों से शोभायमान हैं ॥ १२ ॥ सब (नव) देवियाँ (भक्त की रक्षा के लिये) क्रोध से युक्त रथ में बैठी हुई दीखती हैं। अब इनके हथियारों को ब्रह्मा जी बताते हैं। शंख चक्र, गदा, शक्ती हल, मूसल, ॥१३॥ खेटक, तोमर, परशु, पास, कुन्त, त्रिशूल, शार्ङ्ग दूसरे के शस्त्रों को आकाश में नष्ट करने वाले हथियार को खेटक कहते हैं। जिसके चलाने से शत्रु मरता है उस शस्त्र को तोमर कहते हैं, और शत्रुओं को जो काटता है उसको परशु कहते हैं, परशु, फरसा, पाश, (फंदा, फांसी,) कुन्त, (भाला) त्रिशूल सींग का बना हुआ शस्त्र शार्ङ्ग धनुष है ॥१४॥ ये देवियाँ राक्षसों के शरीर नष्ट

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

च हिताय वै ॥१५॥ नमस्तेऽस्तु महारौद्रे महाघोर-
पराक्रमे ॥ महाबले महोत्साहे महाभय विनाशिनि ॥
१६॥ त्राहि मां देवि दुष्प्रेक्ष्ये शत्रूणां भयवर्द्धिनि ।
प्राच्यां रक्षतु मामैन्द्री आग्नेय्यामग्निदेवता ॥१७॥
दक्षिणेऽवतु वाराही नैर्ऋत्यां खड्गधारिणी ॥ प्रती-
च्यां वारुणी रक्षेद्वायव्यां मृगवाहिनी ॥१८॥
उदीच्यां पातु कौमारी ईशान्यां शूलधारिणी । ऊर्ध्वं
ब्रह्माणि मे रक्षेदधस्ताद्वैष्णवी तथा ॥१९॥ एवं

करने और भक्तों के निर्भय के लिये और देवताओं के हितके लिए इस प्रकार शस्त्र धारण करतीं हैं ॥१५॥ कवच पढ़ने से पूर्व देवीजी का ध्यान करना चाहिये अतः ध्यान लिखे जाते हैं। हे महारौद्रे हे महाघोरपराक्रमे ! तुमको नमस्कार है हे महाबले ! (मायाशक्ति रूप जिसका बल हो) हे महोत्साहे ! (संसार की रक्षा करने में जिसका उत्साह हो) हे महाभयविनाशिनि ! (मृत्यु के समान जो बड़ा डर (भय) जिसके ज्ञान देने से नाश हो) ॥१६॥ हे देवि ! हे दुःख से दर्शन देने वाली हे शत्रुओं के भय को बढ़ाने वाली मेरी रक्षा करो मेरा पालन करो ॥

दिग्रक्षा

पूर्व में ऐन्द्री मेरी रक्षा करे अग्नि कोण में अग्नि देवता रक्षा करे ॥१७॥ दक्षिण में वाराही रक्षा करे नैर्ऋति में खड्ग-धारिणी पश्चिम में वारुणी वायव्य में मृगवाहिनी ॥ १८ ॥ उत्तर में कौमारी ईशान्य में शूलधारिणी ऊपर आकाश में ब्रह्माणी और नीचे वैष्णवी ॥१९॥ इस प्रकार दशदिशाओं में

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

दशदिशो रक्षेच्चामुण्डा शववाहना॥ जया मे चाग्रतः पातु विजया पातु पृष्ठतः ॥२०॥ अजितावामपार्श्वे तु दक्षिणे चापराजिता ॥ शिखामुद्योतिनी रक्षेदुमामूर्द्ध्नि व्यवस्थिता ॥२१॥ मालाधरी ललाटे च भ्रुवौ रक्षेद्यशस्विनी। त्रिनेत्रा च भ्रुवोर्मध्ये यमघण्टा च नासिके ॥२२॥ शङ्खिनी चक्षुषोर्मध्ये श्रोत्रयोर्द्वारवासिनी ॥ कपोलौ कालिका रक्षेत्कर्णमूले तु शाङ्करी ॥२३॥ नासिकायां सुगन्धा च उत्तरोष्ठे च चर्चिका ॥ अधरेचामृतकला जिह्वायां च सरस्वती ॥ २४ ॥ दन्तान्रक्षतु कौमारी कण्ठदेशे तु

(प्रेत) मुर्दे के ऊपर बैठी हुई चामुण्डा रक्षा करे ॥

शरीर की रक्षा

जयादेवी मेरे आगे विजया पीछे ॥ अजिता बाईं तरफ और दाईं तरफ अपराजिता बैठे ॥२०॥ चोटी की उद्योतिनी रक्षा करे उमा सिर की रक्षा करे ॥२१॥ मालाधरी माथे की रक्षा करे दौनों भ्रू (भौंह) की यशस्विनी रक्षा करे ॥ भौंह के बीच में त्रिनेत्रा रक्षा करे नासिका की यमघण्टा रक्षा करे ॥२२॥ आँखों के बीच में शंखिनी रक्षा करे कानों के बीच में द्वारवासिनी रक्षा करे ॥

गालों की कालिका रक्षा करे, कान, की जड़ में शांकरी, रक्षा करे ॥२३॥ नासिका की सुगन्धा रक्षा करे ऊपर के ओष्ठ की चर्चिका रक्षा करे ॥ और अधर की अमृत कला रक्षा करे और जिह्वा की सरस्वती रक्षा करे ॥२४॥ दाँतों की कौमरी

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

चण्डिका ॥ घण्टिकां चित्रघण्टा च महामाया च तालुके ॥२५॥ कामाक्षी चिबुकं रक्षेद्वाचं मे सर्वमंगला ॥ ग्रीवायां भद्रकाली च पृष्ठवंशे धनुर्धरी ॥ २६॥ नीलग्रीवा बहिःकण्ठे नलिकां नलकूबरी । स्कन्धयोः खड्गिनी रक्षेद्बाहू मे वज्रधारिणी ॥२७॥ हस्तयोर्दण्डिनी रक्षेदम्बिका चाङ्गुलीषु च । नखाञ्छूलेश्वरी रक्षेत्कुक्षौ रक्षेत्कुलेश्वरी ॥२८॥ स्तनौ रक्षेन्महादेवी मनःशोक विनाशिनी ॥ हृदये ललिता देवी उदरे शूलधारिणी ॥२९॥ नाभौ च कामिनी रक्षेद्गुह्यं गुह्येश्वरी तथा । पूतना कामिका मेढ्रं

रक्षा करे गले के बीच में चण्डिका रक्षा करे चित्र घण्टा गले की रक्षा करे महामाया तालू की रक्षा करे ॥ २५ ॥ कामाक्षी ठोड़ी की रक्षा करे वाणी की सर्व मङ्गला रक्षा करे ॥ गर्दन की भद्रकाली रक्षा करे पीठ (मेरुदंड) की धनुर्धरी ॥ २६ ॥ नीलग्रीवा कण्ठ से बाहर की रक्षा करे। कण्ठ की नली की नलकूबरी रक्षा करे । खड्ग धारिणी दोनों कन्धों की रक्षा करे दोनों बाहुओं की वज्र धारिणी रक्षा करे ॥२७॥ दण्डिनी हाथों की रक्षा करे अम्बिका अङ्गुलियों की रक्षा करे ॥ नखों की शूलेश्वरी रक्षा करे (कुख) कुक्षि की कुलेश्वरी रक्षा करे ॥२८॥ स्तनकी महादेवी रक्षा करे मन की शोकविनाशिनी रक्षा करे ॥ हृदय की ललिता देवी रक्षा करे उदर की शूलधारिणी रक्षा करे ॥२९॥ नाभि की कामिनी रक्षा करे गुह्येश्वरी गुह्य (गुप्त) स्थान की रक्षा करे ॥ पूतना कामिका लिंग की रक्षा करे गुदा

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

गुदे महिषवाहिनी ॥३०॥ कट्यां भगवती रक्षेज्जानुनी विन्ध्यवासिनी । जङ्घे महाबला रक्षेत्सर्वकामप्रदायिनी ॥ ३१ ॥ गुल्फयोर्नारसिंही चपादपृष्ठे तु तैजसी । पादाङ्गुलीषु श्रीरक्षेत्पादाधः स्तलवासिनी ॥ ३२ ॥ नखान्दंष्ट्रा कराली च केशांश्चैवोर्ध्वकेशिनी ॥ रोमकूपेषु कौबेरी त्वचं वागीश्वरी तथा ॥३३॥ रक्तमज्जावसामांसान्यस्थिमेदांसि पार्वती ॥ अन्त्राणि कालिरात्रिश्च पित्तं च मुकटेश्वरी॥ ३४॥ पद्मावती पद्मकोशेकफे चूडामणिस्तथा ॥ ज्वालामुखी नखाजालमभेद्या सर्वसन्धिषु ॥ ३५ ॥ शुक्रं ब्रह्माणि मे रक्षेच्छायां छत्रेश्वरी

की महिष वाहिनी रक्षा करे ॥३०॥ कमर का भगवती रक्षा करे जांघ की विंध्यवासिनी रक्षा करे ॥ जंघा की महाबला सब काम देने वाली रक्षा करे ॥३१॥ गुल्फ (पिंडली) की नारसिंही रक्षा करे पैर के ऊपर की तैजसी रक्षा करे ॥ पैर की अंगुलियों की श्रीधरी रक्षा करे पैर के नीचे की तलवासिनी रक्षा करे ॥३२॥ नखों की द्रंष्ट्राकराली रक्षा करे बालों की ऊर्ध्व केशिनी रक्षा करे ॥ रोम छिद्रों की कौबेरी रक्षा करे चमड़े की वागीश्वरी रक्षा करे ॥३३॥ रक्त, मज्जा, वसा, (चर्बी) माँस, अस्थि, मेद की पार्वती रक्षा करे ॥ आँतों की कालरात्री रक्षा करे पित्त की मुकुटेश्वरी रक्षा करे ॥३४॥ पद्मकोश की पद्मावती रक्षा करे कफ की चूड़ामणि रक्षा करे ॥ नस जाल की ज्वालामुखी करे सब संधियों की अभेद्या रक्षा करे ॥३५॥ ब्रह्माणी मेरे वीर्य (शुक्र) की रक्षा करे

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तथा ॥ अहङ्कारं मनो बुद्धिं रक्षेन्मे धर्मधारिणी ॥ ३६ ॥ प्राणापानौ तथा व्यानमुदानञ्च समानकम् ॥ वज्रहस्ता च मे रक्षेत्प्राणं कल्याणशोभना ॥ ३७ ॥ रसेरूपे च गन्धे च शब्देस्पर्शे च योगिनी ॥ सत्त्वं रजस्तमश्चैव रक्षेन्नारायणी सदा ॥ ३८ ॥ आयू रक्षतु वाराही धर्मं रक्षतु वैष्णवी ॥ यशः कीर्तिं च लक्ष्मीं च धनं विद्यां च चक्रिणी ॥३९॥ गोत्रमिन्द्राणि मे रक्षेत्पशून्मे रक्ष चण्डिके ॥ पुत्रान्रक्षेन्महालक्ष्मीर्भार्यां रक्षतु भैरवी ॥४०॥ पन्थानं सुपथा रक्षेन्मार्गं क्षेमकरी तथा !

छाया की छत्रेश्वरी रक्षा करे ॥ हे धर्म धारिणी मेरे अहंकार, मन, बुद्धि की रक्षा करो ॥३६॥ तथा प्राण, अपान, व्यान, उदान, समान इनकी वज्रहस्ता रक्षा करे और प्राण कल्याण की शोभना रक्षा करे ॥३७॥ रस, रूप, गंध शब्द और स्पर्श की योगिनी रक्षा करे ॥ सतोगुण, रजोगुण, तमोगुण की नारायणी रक्षा करे ॥ ॥३८॥ आयु की वाराही तथा धर्म की वैष्णवी रक्षा करे ॥ यश, लक्ष्मी, कीर्ति, धन और विद्या की सदा चक्रिणी रक्षा करे ॥३९॥ इन्द्राणि मेरे गोत्र की रक्षा कर हे चण्डिके मेरे पशुओं की रक्षा कर ॥ महालक्ष्मी पुत्रों की रक्षा करे भार्या की भैरवी रक्षा करे ॥ ४० ॥ रास्ते की सुपथा रक्षा करे दुर्गम मार्ग में क्षेमकरी रक्षा करे राजद्वार (कचैरी) में महालक्ष्मी रक्षा करे सब तरफ से भयों में बैठी हुई विजया रक्षा करे ॥४१॥ यदि कवच में कोई स्थान रह गया हो तौ उसकी पाप-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

राजद्वारे महालक्ष्मीर्विजया सर्वतःस्थिता ॥ ४१ ॥ रक्षाहीनं तु यत्स्थानं वर्जितं कवचेन तु ॥ तत्सर्वं रक्ष मे देवि जयंती पापनाशिनी ॥४२॥ पदमेकं नगच्छेत्तु यदीच्छेच्छुभमात्मनः ॥ कवचेनावृतो नित्यं यत्र यत्रैव गच्छति ॥४३॥ तत्र तत्रार्थलाभश्च विजयः सर्वकामिकः । यं यं चिन्तयते कामं तं तं प्राप्नोति निश्चितम् ॥ परमैश्वर्यमतुलं प्राप्स्यतेभूतले पुमान् ॥४४॥ निर्भयो जायते मर्त्यः संग्रामेष्वपराजितः ॥ त्रैलोक्येतु भवेत्पूज्यः कवचेनावृतःपुमान् ॥४५॥ इदं तु देव्याः कवचं देवानामपि दुर्लभम् ॥ यः पठेत्प्रयतो नित्यंत्रिसन्ध्यं श्रद्धयान्वितः॥४६॥ दैवीकला भवेत्तस्य त्रैलोक्येष्वपराजितः॥ जीवेद्वर्ष-

---

नाशिनी जयन्ती रक्षा करे ॥४२॥ यदि आत्मा का कल्याण चाहता होतो कवच के बिना एक कदम भी न चले ॥ कवच पढ़ने से यह फल मिलता है । कवच से रक्षा करके नित्य जहां जहां भी जाता है ॥४३॥ वहां २ ही अर्थ, लाभ, विजय और सर्व कामनाओं में सिद्धि मिलती है । जिस २ काम की चिन्ता करता है उस २ को निश्चित पाता है । पृथ्वी पर परम अतुल ऐश्वर्य को पाता है ॥४४॥ पुरुष भय-रहित होता है संग्राम में अपराजित होता है ॥ कवच से रक्षा किया पुरुष त्रैलोक्य में पूज्य होता है ॥४५॥ देवताओं को भी दुर्लभ इस देवी के कवच को जो कोई नित्य श्रद्धा सहित तीन वार पढ़ता है ॥४६॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

शतंसाग्रमपमृत्युविवर्जितः॥४७॥नश्यन्तिव्याधयः सर्वे लूताविस्फोटकादयः ॥ स्थावरंजगमंचैव कृत्रिमं चापियद्विषम् ॥४८॥ अभिचाराणि सर्वाणि मन्त्रयन्त्राणिभूतले ॥ भूचराः खेचराश्चैव कुलजाश्चोपदेशिकाः ॥ ४९ ॥ सहजाः कुलजामाला डाकिनी शाकिनी तथा ॥ अन्तरिक्ष चराघोरा डाकिन्यश्चमहाबलाः॥ ५० ॥ ग्रहभूतपिशाचाश्च यक्षगन्धर्वराक्षसाः ॥ ब्रह्मराक्षसवेतालाः कूष्माण्डा भैरवादयः ॥५१॥ नश्यन्ति दर्शनात्तस्य कवचे हृदि

उसकी दैवकला (देवसंपत्ती) होती है। तीनों लोकों में अपराजित होता है। कवच से रक्षा किया हुआ पुरुष अपमृत्यु से रहित १०० वर्ष तक जीता है॥४७॥ लूता (मकड़ी) जिन कीडों के द्वारा शरीर की खाल कटती है। विस्फोटक, (शीतला) के फफोले, कोढ़ आदि सब रोग नष्ट होते हैं॥ कवच से पेड़ (कनेर, भांग, कुचला आदि) तथा अफीम का विष सर्प आदि का विष और अतिरिक्त सब तरह के साधारण विष प्रयोग मन्त्र यन्त्र नष्ट होते हैं॥४८॥ पृथ्वी पर के आकाश के जल के देवता और उपदेश से सिद्ध होने वाले देवता ॥४९॥ साथ में उत्पन्न होने वाले देवता कुल में पैदा हुए गंडमाला (कंठमाला) तथा डाकिनी शाकिनी ये नीच देवता कवच धारण करने से नष्ट होते हैं। आकाश में चलने वाले, डराने वाले, बल वाली डाकिनियां ॥५०॥ और ग्रह भूत, पिशाच, यक्ष, गन्धर्व, राक्षस, ब्रह्म राक्षस, वेताल, कूष्मांड भैरवादि कवच को हृदय में रखने से नष्ट हो जाते हैं ॥५१॥ तथा राजा के पास से मान की उन्नति

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

संस्थिते ॥ मानोन्नतिर्भवेद्राज्यन्तेजोवृद्धिकरं परम् ॥५२॥ यशसा वर्द्धते सोऽपिकीर्तिमण्डित भूतले ॥ जपेत्सप्तशतीं चण्डीं कृत्वा तु कवचंपुरा ॥ ५३ ॥ यावद्भूमण्डलं धत्ते सशैलवनकाननम् ॥ तावत्तिष्ठति मेदिन्यां सन्ततिः पुत्र पौत्रकी ॥५४॥ देहान्ते परमं स्थानं यत्सुररपि दुर्लभम् ॥ प्राप्नोति पुरुषो नित्यं महामायाप्रसादतः ॥५५॥ लभते परमं रूपं शिवेन सह मोदते ॐ॥ ५६ ॥ इति श्री वाराहपुराणे हरिहरब्रह्मविरचितं देव्याः कवचं समाप्तम् ॥ १ ॥

होती है (यह कवच) तेज की वृद्धि करने वाला है ॥५२॥ उत्कृष्ट तेज बढ़ाने वाला है जो कवच को पढ़ता है वह कीर्त्ति मण्डित भूतल पर यश से बढ़ता है। पहले कवच कर के सप्तशतीचण्डी को जपने से ॥५३॥ जब तक पृथ्वी पर पहाड़ सहित वन हैं ॥ तब तक (मनुष्य) पुत्र पौत्र सहित पृथ्वी पर सुखसे बसता है ॥५४॥ और कवच के पढ़ने से मरने पर देवताओं से भी दुर्लभ स्थान को ॥ महा माया के प्रसाद से मनुष्य पाता है ॥ ५५ ॥ और परम रूप प्राप्त होकर शिव के साथ आनन्द पाता है ॥५६॥ पाठ में ऐसा बोलना :—ॐ देव्याः कवचं श्री जगदम्बार्पणमस्तु ॥

इति श्री घनश्याम गोस्वामी कृत दुर्गा कवच भाषा समाप्तः ॥

तन्त्रान्तर से ॥

अर्गला के सिद्ध प्रयोगों का विधान क्रम से लिखा जाता है। "जयन्ती मंगला काली" इस श्लोक के सम्पुट से महामारी (प्लेग) शान्ति होती है तथा सब प्रकार के उपद्रव भी। "मधुकैटभ विद्रावि

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection